मौलाइल गाछक फूल

उपन्यास

जगदीश प्रसाद मण्डल

मौलाइल गाछक फूल

उपन्यास

जगदीश प्रसाद मण्डल

श्रुति प्रकाशन

दिल्ली

ISBN : ९७८-९३-८०५३८-०२-०

मूल्य : भा. रु.२५०/-

US $ 25 for Library and Institutions (India and abroad)

पहिल संस्करण : २००९

दोसर संस्करण : २०१३

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर,
नई दिल्ली-११०००८.

दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स-(०११)२५८८९६५७
Website :http ://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

Typeset by Sh. Umesh Mandal
Printed : Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor :
AJAY ARTS
4393/4A, Ist Floor, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110002.
Telephone : 2328-8341, 4362-8341

MAULAIL GACCHAK PHOOL by Shri Jagdish Prasad Mandal a Novel in Maithili Language.

परिचए-पात : जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : ५ जुलाइ १९४७ ई.मे

पिताक नाओं : स्व. दल्लू मण्डल।

माताक नाओं : स्व. मकोबती देवी।

पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।

पुत्र : सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल।

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।

मूलगाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०

मोबाइल : ०९९३१६५४७४२, ०९५७०९३८६११, ०९९३१७०६५३१

ई-पत्र : jpmandal.berma@gmail.com

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर साहित्यमे मनुखक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि।

सम्मान : गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; तथा समग्र योगदान लेल वैदेही सम्मान- २०१२; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह ''तरेगन'' लेल ''बाल साहित्य विदेह सम्मान'' २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।

साहित्यिक कृति :

उपन्यास : (१) मौलाइल गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीवन-मरण (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (५) जीवन संघर्ष (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (६) नै धाड़ैए (२०१३) प्रकाशित। (७) सधबा-विधवा, (८) बड़की बहिन तथा (९) भादवक आठ अन्हार शीघ्र प्रकाश्य।

नाटक : (१) मिथिलाक बेटी (२००९), (२) कम्प्रोमाइज (२०१३), (३) झमेलिया बिआह (२०१३), (४) रत्नाकर डकैत (२०१३), (५) स्वयंवर (२०१३) प्रकाशित।

लघु कथा संग्रह : (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अर्द्धांगिनी (२०१३), (३) सतभैंया पोखरि (२०१३), (४) उलबा चाउर (२०१३), (५) भकमोड़ (२०१३)

विहनि कथा संग्रह : (१) बजन्ता-बुझन्ता (२०१३), (२) तरेगन (बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह) (२०१० पहिल संस्करण, २०१३ दोसर संस्करण)

एकांकी संग्रह : (१) पंचवटी (२०१३)

दीर्घ कथा संग्रह : (१) शंभुदास (२०१३)

कविता संग्रह : (१) इंद्रधनुषी अकास (२०१३), (२) राति-दिन (२०१३), (३) सतबेध (२०१३)

गीत संग्रह : (१) गीतांजलि (२०१३), (२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१३), (३) सरिता (२०१३), (४) सुखाएल पोखरिक जाइठ (२०१३)

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहार
एवं
नव विहान अननिहारकेँ
समरपित...

उपन्यास लिखैक मादे

पोथी अपनेक हाथमे अछि। हँ, तखनि पोथी लिखैक मादे किछु कहब। जहिया एम.ए.क विद्यार्थी रही तहिएसँ नोकरीसँ विराग भऽ गेल। आठ बीघा जमीन रहए। खेतीसँ जीवन-यापन करैक बिसवास भऽ गेल। बिनु गार्जनक -पुरुष गार्जनक- परिवार १९६० ई.मे भऽ गेल। पिताक स्वर्गवास भेला पछाति दू भाँइ पिसियौत रहै छला। तत्काल गार्जनी हुनके दुनू भाँइपर। कोसीक उपद्रवसँ भागल पीसा बेरमे माने सासुरेमे बसि गेल रहथि। पिताक मृत्युक समए तीन बर्खक हम आ छह बर्खक जेठ भाए-रही। पिसियौत भाए १९६० ई.मे अपना गाम हरिनाही चलि गेला। दुनू भाँइ १९५४-५६ ई.मे गामक स्कूलसँ निकलि अपर प्राइमरी स्कूल कछुबीमे नाओं लिखौने रही। १९६० ई.सँ परिवारक बोझ पड़ल। पुरुष विहिन भेनौं माए ओहन परिवारक छेली, जइ परिवारमे नाना १९४२ ई.मे अंग्रेजक गोली खा चुकल छला। साहसी माए। अपन गहना, जमीन बेचि देल बच्चाकैं पढ़बै खातिर।

पैंतीस साल समाज सेवा कऽ हहरैत शरीर देखि किछु लिखै-पढ़ैक विचार जगल। २००२ ई.मे पहिने उमेशक माध्यमसँ किछु उपन्यास आ कथा संग्रह उपरे-झापड़े देखने रही। रहुआ, मधेपुरमे 'सगर राति दीप जरय', ८.११.२००८ ई.मे भाग लेलौं, लक्ष्मीनाथ गोसाईंक स्थानमे कार्यक्रम भेल। सिद्धपीठ। ओना केतेक बेर राजनीतिक मंचपर रहुआमे बाजि चुकल छेलौं, कर्म क्षेत्र छल, तँए कथा वचैमे संकोच नै भेल। मुदा दोसरो कारण छल। ओ कारण छल किनको चिन्हैत नै रहियनि। भिनसरु पहर डॉ. अशोक अविचल जीसँ पुरना चिन्हारए केर नवीकरण भेल। गाड़ीक दुआरे लग रहितो पाछू गेलौं। कथा पाठ केलौं। सभ प्रशंसा केलनि। डॉ. रमानन्द झा 'रमण' जी कथा मांगि लेलनि। किछुए मासक उपरान्त घर बाहर पत्रिकामे प्रकाशित भेल। सिद्ध पुरुषक स्थानमे प्रतिष्ठा भेटल। डायरी-कलम भेटल। चादरि-पाग भेटल। लक्ष्मीनाथ गोसाईंक मुरती भेटल।

मैथिली साहित्यक लेल 'सगर राति दीप जरय' कथाकारक ट्रेनिंग कौलेज सदृश अछि। विद्वान कथाकार सभक गाइड-लाइन। नव-पीढ़ि लेल ऐसँ उपयोगी भऽ की सकैए?

मौलाइल गाछक फूल दू हजार चारि ई.मे लिखल पहिल अपन्यास छी। अखनि धरि पाँचटा उपन्यास आ किछु कथा, लघुकथा, नाटक सभ अछि। छपबैक जे मजबूरी बहुतो गोटेकेँ छन्हि से हमरो रहल। मुदा तइसँ लिखैक क्रम नै टुटल। 'भैंटक लावा' कथा सेहो दू-हजार चारिक पहिल कथा छी। ओइसँ पहुलका कथादिक ठौर-ठेकान नै अछि। घर बाहरमे भैंटक लावा आ बिसांढ़ छपल आ फेर मिथिला दर्शनमे 'चुनवाली' कथा पढ़िते अनेको बधाइ फोन आएल जेना पञ्जीकार विद्यानन्द झा जीक। एकटा महत्वपूर्ण फोन श्री गजेन्द्र ठाकुर जीक रहल। हिनकर फोन सुनिते जिनगी ओहन चौबट्टी टपि गेलौं जे चौबीस घंटाक खुशी मनमे आबि गेल। जहिना बाल्यकालमे हनुमान सूर्यकेँ ग्रहण (बाल समय रवि भक्ष लियो) कऽ नेने छेला तद्‌सदृश गजेन्द्रजीओक टीम छन्हि। नवयुवक सभ छथि, हम तँ बेसी-सँ-बेसी यएह ने कहि सकै छियनि जे हमरो अरुदा लऽ अहीं सभ जीबू।

अंतमे, तीनू भाँइओ (सुरेश, उमेश, मिथिलेश) आ समाजोकेँ कहि दिअ चाहै छियनि जे मिथिला अहाँक देश छी। ऐठामक माटि-पानिसँ लऽ कऽ साहित्य-कला धरिक विकास करब सबहक दायित्व छी।

ऐठाम एतबे। फेर आगू...।

जगदीश प्रसाद मण्डल,
गाम-पोस्ट- बेरमा, थाना-मधेपुर
(आर. एस. शिविर झंझारपुर), प्रखंड- लखनौर,
सवडिवीजन- झंझारपुर,जिला- मधुबनी।
मो.०९९३१६५४७४२

मौलाइल गाछक फूल
उपन्यास

जगदीश प्रसाद मण्डल

मौलाइल गाछक फूल

१

दू सालक रौदीक उपरान्तक अखाढ़। गरमीसँ जेहने दिन तेहने राति। भरि-भरि राति बीअनि हौंकि-हौंकि लोक सभ बितबैत। सुतली रातिमे उठि-उठि पानि पीबए पड़ैत। भोर होइते घाम अपन उग्र रूप पकड़ि लैत। जहिना कियो केकरो मारैले लग पहुँच जाइत तहिना सुरूजो लग आबि गेला। रस्ता-पेराक माटि जमल सिमेंट जकाँ सक्कत भऽ गेल अछि। चलै बेर पएर पिछड़ैत। इनार-पोखरिक पानि अपन अस्मिता बचबैले पातालक रस्ता पकड़ि लेलक अछि। दू सालसँ एक्को बुन्न पानि धरतीपर नै पड़ने धरतीक सुन्दरता धीरे-धीरे नष्ट हुअ लगल अछि। पियाससँ दूबि सभ पाण्डुरोगी जकाँ पीअर भऽ-भऽ पराण तियागि रहल अछि। गाछ-पात बेदरंग भऽ गेल अछि। लताम, दारिम, नारिकेल इत्यादि अनेको तरहक फलक गाछ सूखि गेल। आम, जामुन, गमहाइर, शीशो गाछक निच्चाँ पातक पथार लगि गेल अछि। दसे बजेसँ बाधमे लू चलए लगैए। नम्हर-नम्हर दराड़ि फाटि धरतीक रूपे बिगाड़ि देने अछि। की खाएब? केना जीब? अपनामे सभ एक-दोसरासँ बतिआइए। घास-पानिक दुआरे मालो-जाल सूखि कऽ संठी सन भऽ गेल अछि। अनधुन मरबो कएल। अनुकूल समए पाबि रोगो-बियाधि बुतगर भऽ गेल। माल-जालसँ लऽ कऽ लोको सबहक जान अबग्रहमे पड़ि गेल अछि। खेती-बाड़ी चौपट्ट होइत देखि थारी-लोटा बन्हकी लगा-लगा लोक मोरंग, दिनाजपुर, ढाका भागए लगल। जएह दशा किसानक वएह दशा बोनिहारोक। कहिया इन्द्र भगवानक दया हेतनि ऐ आशामे अनधुन कबुला-पाती लोक करए लगल।

तीन दिनसँ अनुपक घरमे चुल्हि नै पजड़ल। नल-दमयन्ती जकाँ दुनू परानी अनुप दुखक पहाड़क तरमे पड़ल-पड़ल एक-दोसराक मुँह देखैत। केकरो किछु बजैक साहस नै होइत। बारह बर्खक बेटा-बौएलाल बोरापर पड़ल माएकेँ कहलक-

> “माए, भूखे पराण निकलल जाइए। पेटमे बगहा लगैए। आब नै जीबौ!”

बौएलालक बात सुनि दुनू परानी अनुपक आँखिमे नोर आबि गेलै। मुँहक बोल बुताए लगलै। लगमे बैसल रधिया उठि कऽ डोल-लोटा लऽ इनार दिस विदा भेल। इनारोक पानि निच्चाँ ससरि गेल छै, जइसँ डोलक उगहनिओ छोट भऽ गेल। केतबो निहुड़ि-निहुड़ि रधिया पानि पाबए चाहैत, तैयो डोल पानिसँ ऊपरे रहैत। रधियाक मनमे एलै, जखनि अधला होइबला होइ छै, तखनि अहिना कुसंयोग होइ छै। बौएलाल नै बँचत। एक तँ पाँचटा संतानमे एकटा पिहुआ बँचल, सेहो आइ जाइए। हे भगवान, कोन जनमक पापक बदला लइ छह। इनारसँ डोल निकालि लहरेपर डोल-लोटा छोड़ि रधिया उगहनि जोड़ैले डोरी आनए आँगन आएल। रधियाक निराश मन देखि अनुप पुछलक-

"की भेल?"

टुटल मने रधिया उत्तर देलक-

"की हएत, जखनि दैवेक डाँग लगल अछि, तखनि की हएत। उगहनि छोट भऽ गेल तँए जोड़ैबला डोरी लइले एलौं।"

रधियाक बात सुनि अनुप घरक ओसारेक बनहन खोलि देलक। खड़ौआ जौर लऽ रधिया इनारपर जा उगहनि जोड़लक। उगहनि जोड़ि पानि भरलक। पानि भरि लोटामे लऽ रधिया आँगन आबि बौएलालकेँ पीबैले कहलक। पड़ल बौएलालकेँ उठिए ने होइ। ओसारपर लोटा रखि रधिया बौएलालकेँ बाँहि पकड़ि उठा कऽ बैसौलक। अपने हाथे रधिया लोटासँ चुरुकमे पानि लऽ बौएलालक आँखि-मुँह पोछलक। बौएलालक देह थर-थर कँपैत। थरथरी देखि रधियोकेँ थरथरी पैसि गेल। लोटा उठा रधिया बौएलालक मुँहमे लगबए लागलि आकि थरथराइत हाथसँ लोटा छूटि गेल, जइसँ पानि बोरापर पसरि गेल। दुनू हाथे छाती पीटैत रधिया जोरसँ चिचिआए लागलि-

"आब बौएलाल नै जीत, जइ घड़ी जइ पहर अछि।"

रधियाक बोल सुनि अनुप जोरसँ कानए लगल। अनुपक कानब सुनि टोलक धियो-पुतो आ जनिजातिओ एक्के-दुइए आबए लगल। सबहक मुँह सुखाएले। के केकरा बोल-भरोस देत। सबहक एक्के गति। अनुपक

कानब सुनि रूपनी अँगनेसँ कानैत दौगल आएल। रूपनी अनुपक ममियौत बहिन। अनुपक आँगन आबि रूपनी बौएलालकेँ देखि बाजलि-

> “भैया, बौआकेँ पराण छेबे करह। अखनि मुइलहेँ नै। किए अनेरे दुनू परानी कानै छह। जाबे शरीरमे साँस रहतै, ताबे जीबैक आशा। चुप हुअ।”

कहि रूपनी बौएलालकेँ समेटि कोरामे बैसौलक। तरहत्थीसँ चाइन रगड़ए लागलि। बौएलाल आँखि खोलि बाजल-

“दीदी, भूखसँ पेटमे बगहा लगैए।”

बौएलालक बात सुनि रूपनी बाजलि-

“रोटी खेमे?”

“हँ।”

बौएलालक बात सुनि रधिया घरमे धएल फुलही लोटा जे रधियाकेँ दुरागमनमे पिता देने रहनि, निकालि अनुपकेँ देलक। लोटा नेने अनुप दोकान दिस दौगल। लोटा बेचि गहुम किनने आएल। अँगना अबिते रधिया हबड़-हबड़ चुल्हि पजारि गहुम उलौलक। दुनू परानी रधिया जाँतमे गहुम पीसए लगल। एक रोटीक चिक्कस होइते रधिया समेटि कऽ रोटी पकबए आबि गेली। अनुप गहुम पीसए लगल। रोटी पका रधिया बौएलाल लग लऽ गेल। अपनेसँ रोटी तोड़ि खाइक साहस बौएलालकेँ नै होइत। छाती दाबि-दाबि रधिया बौएलालकेँ रोटी खुआबए लगली। सौंसे रोटी बौएलाल खा लेलक। रोटी खाइत-खाइत बौएलालोकेँ हूबा एलै। अपने हाथे लोटा उठा पानि पीलक। पानि पीबिते हाफी हुअ लगलै। भुइँएमे ओंघरा गेल। जाँत लगक चिक्कस समेटि रधिया चुल्हि लग आनि सूपमे सानए लागलि। जांघपर पड़ल चिक्कस अनुप तौनीसँ झाड़ि, लोटा-डोल नेने इनार दिस बढ़ल। हाथ-पएर धोइ, लोटामे पानि लऽ आँगन आबि खाइले बैसल। छिपलीमे रोटी आ नून-मेरचाइ नेने रधिया अनुपक आगूमे देलक। भुखे अनुपकेँ होइ जे सौंसे रोटी मोड़ि-सोड़ि कऽ एक्के बेर मुँहमे लऽ ली मुदा से नै कऽ तोड़ि-तोड़ि खाए लगल। छिपलीक रोटी साठिते अनुप रधिया दिस देखए लगल मुदा तीनिएटा रोटी पका रधिया चिक्कसक

मुजेला कोठीपर रखि देने। रधियाकेँ देखि अनुप चुपचाप दू लोटा पानि पीब उठि गेल।

दिन अछैते नथुआ दौगल आबि हँसैत अनुपकेँ कहलक-

> ''गिरहत कक्का बड़की पोखरि उड़ाहथिन। काल्हिसँ हाथ लगतै। तोहूँ दुनू गोरे काज करए चलिहऽ।''

नथुआक बात सुनिते रधियाकेँ जेना अशर्फी भेट गेल होइ तहिना भेलै। अनुपोक मुँहसँ हँसी निकलल। अनुपक खुशी देखि नथुआ बाजल-

> ''अपने मुसना कक्का मेटगीरी करत। वएह जन सबहक हाजरी बनौत।''

नथुआ, अनुप आ रधियाक बीच गप-सप्प होइते छल आकि मुसनो औगताएल आएल। मुसना दिस देखि नथुआ बाजल-

> ''मुसनो कक्का तँ आबिए गेला। आब सभ गप फरिछा कऽ बुझबहक।''

मेटगिरी भेटलासँ मुसनाक मन तरे-तर गदगद होइत। ओना कहियो मुसना मेटगीरी केने नै मुदा गामक बान्ह-सड़कमे मेट सबहक आमदनी आ रोब देखने, तँए खुशी। मोने-मन सोचैत जे जेकरा मन हएत तेकरा जनमे रखब आ जेकरा मन नै हएत तेकरा नै रखब। ई तँ हमरे जुइतिक काज रहत किने। जेकरा मन हएत ओकरा बेसीओ कऽ हाजिरी बना देबै। पावर तँ पावर होइए। जौं पावर भेटए आ ओकर उपयोग फाजिल करि कऽ नै करी तँ ओहेन पावरे लऽ कऽ की हेतै? जौं से नै करब तँ मुसना आ मेटमे अनतरे की हएत। लोक की बूझत। मुस्की दैत मुसना अनुपकेँ कहलक-

> ''भैया, काल्हिसँ बड़की पोखरिमे काज चलतै, तोहू चलिहऽ। दू सेर धान आ एक सेर मरुआ भरि दिनक बोइन हेतह। तेतेटा पोखरि अछि जे कहुना-कहुना रौदी खेपिए जेबह। सुनै छी जे आनो गामक जन सभ अबैले अछि मुदा ओकरा सभकेँ माटि नै काटए देबै।''

मुसनाक बात सुनि बौएलाल फुड़फुड़ा कऽ उठि बाजल-

"कक्का, हमरो गिनती कऽ लिहए। हमहूँ माटि काटए जेबह।"

"बेस बौआ, तीनू गोरे चलिहऽ। हमरे हाथक काज रहत। दुपहरमे भानस करैले भौजीकेँ पहिने छुट्टी दऽ देबै।"

कहि मुसनो आ नथुओ चलि गेल।

दोसर दिन भोरे पोखरिमे हाथ लगैसँ पहिने चौगामाक जनसभ कियो कोदारि-टाला तँ कियो पथिया-कोदारि लऽ पोखरिक महारपर पहुँच थहाथही करए लगल। मेला जकाँ लोकक करमान लागि गेल। जेते गामक जन तइसँ कअए गुना बेसी आन गामक। जनक भीड़ देखि मुसनाक मनमे अहलदिल्ली पैसि गेलै। तामसो आ डरोसँ देह थर-थर कापए लगलै। मुसनाक मनमे एलै, हमर बात के सुनत? माथपर दुनू हाथ लऽ बैसि गेल। किछु फुरबे ने करैत। ठकमुड़ी लागि गेलै। सौंसे पोखरि, गौआँसँ अनगौआँ धरि, जगह छेकि-छेकि कोदारि लगा टल्ला ठाढ़ केने। सोचैत-सोचैत मुसनाक मनमे एलै जे गिरहत कक्का-रमाकान्तबाबू-केँ जा कऽ सभ बात कहियनि। सएह केलक। उठि कऽ रमाकान्त ऐठाम विदा भेल।

तैबीच गौआँ-अनगौआँ जनमे रक्का-टोकी शुरू भेल। अनगौआँ सभ जोर-जोरसँ बजैत जे कोनो भीख मंगैले एलौं। सुपत काज करब आ सुपत बोइन लेब। गौआँ जनसभ कहै, हमरा गामक काज छी तँए हम सभ अपने करब। सुखेतक भुटकुमरा आ गामक सिंहेसरा एक्केठाम पोखरिक माटि दफानने। दुनूक बीच गारि-गरौबलि हुअ लगलै। सभ हल्ला करैत तँए केकरो बात कियो सुनबे ने करैत। सभ अपने बजैमे बेहाल। गारि-गरौबलि करिते-करिते भुटकुमरो सिंहेसर दिस बढ़ल आ सिंहेसरो भुटकुमरा दिस। दुनूक बीच गारिओ-गरौबलि होइत आ पकड़ो-पकड़ी भऽ गेल। एक-दोसरकेँ पटकि छातीपर बैसए चाहैत। दुनू बुतगर। पहिने तँ भुटकुमरे सिंहेसराकेँ पटकलक किएक तँ सिंहेसराक पएर घुच्चीमे पड़ि गेलै, जइसँ ओ औगता कऽ खसि पड़ल। मुदा सिंहेसरो हारि नै मानलक। हिम्मत करि कऽ उठि भुटकुमरोकेँ छिड़की लगा खसौलक।

दरबज्जापर बैसि रमाकान्त बाबू बखारीक धान-मड़ूआक हिसाब मिलबैत रहथि। हलचलाएत मुसनाकेँ देखि रमाकान्त पुछलखिन। मुसनाक बोली साफ-साफ निकलबे ने करैत। मुदा तैयो मुसना कहए लगलनि-

> "काका, तेते अनगौआँ जन सभ आबि गेल अछि जे गौआँकेँ जगहे ने हएत। केतबो मनाही केलिऐ कोइ मानैले तैयारे ने भेल। कनी अपनेसँ चलि कऽ देखियौ।"

कागत-कलम घरमे रखि रमाकान्त विदा भेला। आगू-आगू रमाकान्त आ पाछू-पाछू मुसना। पोखरिसँ फड़िक्के रमाकान्त रहथि आकि पोखरिमे हल्ला होइत सुनलखिन। मन चौंकि गेलनि। मनमे हुअ लगलनि जे अनगौआँ सभ बात मानत की नै! अगर काज बन्न कऽ देब तँ गौआँे कामइ हएत। जौं काज बन्न नै करब तँ अनगौआँे मानबे ने करत। विचित्र स्थितिमे रमाकान्त। निअरलाहा सभ गड़बड़ भऽ जाएत। पोखरिक महारपर रमाकान्तकेँ अबिते चारूभरसँ जनसभ घेरि लेलकनि। सभ हल्ला करैत जे जौं काज चलत तँ हमहूँ सभ खटब। ततमतमे पड़ि रमाकान्त अनगौआँ सभकेँ कहलखिन-

> "देखू, रौदियाह समए अछि। सभ गाममे काजो अछि आ करौनिहारो छथि। चलै चलू, अहाँ सबहक संगे हमहूँ चलै छी आ हुनको सभकेँ कहबनि जे अपना-अपना गामक बोनिहारकेँ अपना-अपना गाममे काज दियौ।"

आन सभ गामक लोक कोदारि, छिट्टा, टल्ला नेने विदा भेल। रमाकान्तो संगे विदा भेला। किछु दूर गेलापर रमाकान्त मुसनाकेँ इशारामे कहि देलखिन जे जखनि आन गामक लोक निकलि जाएत तखनि गौआँ जनकेँ काजमे लगा दिहक। तैबीच कियो जा कऽ सिंहेसरा घरवालीकेँ कहि देलक जे पोखरिमे तोरा घरबलाकेँ ओंघरा-ओंघरा मारलकौ। घरबलाक मारिक नाओं सुनिते सिंहेसराक घरोवाली आ धियो-पुतो गामे परसँ गरियबैत पोखरि लग आबि गेल। मुदा तइसँ पहिने अनगौआँ सभ चलि गेल छल।

पोखरिक काज शुरू भेल। तीनू गोटे अनुप एक्केठाम खताक चेन्ह देलक। कोदारिसँ माटि काटि-काटि अनुप पथिया भरैत, रधिया आ

बौएलाल माथपर लऽ लऽ महारपर फेकए लगल। बारहक अमल भऽ गेल। रमाकान्त घूमि कऽ आबि पोखरिक पछबरिया महारपर ठाढ़ भऽ देखए लगला। मुसनाकेँ नजरि पड़िते दौग कऽ रमाकान्त लग पहुँचल। मुसनाकेँ पहुँचिते रमाकान्त आँगुरक इशारासँ बौएलालकेँ देखबैत पुछलखिन-

"ओ के छी। ओकरा साँझमे कहिहक भेँट करैले।"

कहि रमाकान्त घर दिसक रस्ता पकड़लनि। बारह बर्खक बौएलालक माटि उघब देखि सभकेँ छगुन्ता लगैत। जाबे दोसर कियो एक बेर माटि फेकैत ताबे बौएलाल तीन बेर फेक अबैत। बौएलालक काज देखि अनुप मोने-मन सोचए लगल जे बोनिआतीसँ नीक ठिक्का होइतए। मुदा हमरे सोचलासँ की हेतै। ताबे मुसनो रमाकान्तकेँ अरियाति घूमि कऽ अनुप लग आबि कहलक-

"भैया, मालिक दुनू बापूतकेँ साँझमे भेँट करैले कहलखुनहेँ।"

मालिकक भेँट करब सुनि अनुपक हृदैमे खुशीक हिलकोर उठए लगल। मुदा अपनाकेँ सम्हारि अनुप मुसनाकेँ कहलक-

"जखनि मालिक भेँट करैले कहलनि तँ जरूर जाएब।"

सुरूज पछिम दिस एकोशिया भऽ गेला। घुमैत-फिरैत मुसना अनुप लग आबि रधियाकेँ कहलक-

"भौजी, अहाँ जाउ। भरि दिनक हाजरी बना देने छी। भानसोक बेर उनहि जाएत।"

रधिया आँगन विदा भेल। अनुप आ बौएलाल काज करिते रहल। चारि बजे सभ गोटे काज छोड़ि देलक। गामपर आबि अनुप दुनू बापूत नहा कऽ खेलक। कौल्हुके गहुमक चिक्कसक रोटी आ अरिकंचन पातक पतौरा बना पकौने छलि, ओकर चटनी बनौने छलि। खा कऽ तीनू गोटे अनुप, बौएलाल आ रधिया ओसारपर बैसि गप-सप्प करए लगल। अनुप रधियाकेँ कहलक-

"भगवान बड़ी गो छथिन। सभपर हुनकर नजरि रहै छन्हि।

देखियौ एहेन कहात समैमे कोन चक्कर लगा देलखिन।''

गप-सप्प करिते गोसाँइ डुमि गेल। झलफल होइते अनुप दुनू बापूत रमाकान्त ऐठाम विदा भेल। रस्तामे दुनू बापूतकेँ ढेरो तरहक विचार मनमे उठैत आ समाप्त होइत। ओना दुनू बापूतक मन गदगद।

दरबज्जापर बैसि रमाकान्त मुसनासँ जनक हिसाब करैत रहथि। मुसना जनक गिनतीओ केने आ नामो लिखने। मुदा अपन नाओं छुटल तँए हिसाब मिलबे ने करैत। अही घोंघाँमे दुनू गोटे। तैबीच दुनू बापूत अनुप पहुँचल। फरिक्केसँ अनुप दुनू हाथ जोड़ि रमाकान्तकेँ गोर लागि बिछानपर बैसल। बौएलालो गोर लगलकनि। बौएलालकेँ देखि रमाकान्त बिहुँसैत अनुपकेँ कहलखिन-

''अनुप, तोँ अपन ई बेटा हमरा दऽ दैह।''

मोने-मन अनुप सोचए लगल जे ई की कहलनि? कनीकाल गुम्म भऽ अनुप उत्तर देलकनि-

> ''मालिक, बौएलाल की हमरेटा बेटा छी, समाजक छिऐ। जक्खनि अपनेकेँ जरूरति हएत लऽ लेब।''

अनुपक उत्तर सुनि सभ छगुन्तामेँ पड़ि गेला। मास्टर साहैब अनुपकेँ निङहारि-निङहारि देखए लगला। एकटा युवक, जे दू दिन पहिने भाग्यक मारल आएल छल, ओहो आशा-निराशामे डुमल। ओइ युवककेँ तीन बरख कृषि विज्ञानक पढ़ाइ पूरा भेल छेलै, खाली एक बरख बाँकी छेलै। अपन सभ खेत बेचि पिताक बिमारीक इलाज करौलक मुदा ओ ठीक नै भऽ मरि गेलखिन। कर्जा लऽ पिताक श्राद्ध-कर्म केलकनि। खरचा दुआरे पढ़ाइओ छूटि गेलनि आ जीबैक कोनो उपएओ ने रहलनि। जिनगीक कठिन मोड़पर आबि युवक निराश भऽ गेल छला। साल भरि पहिने बिआहो भऽ गेल छेलनि। एक दिस बूढ़ माए आ स्त्रीक भार दोसर दिस जीबैक कोनो रस्ता नै। सोगसँ माएओक देह दिने-दिन निच्चे मुहेँ हहड़ल जाइत। रमाकान्त उदार विचार सुनि ओ युवक आएल रहए।

सभ दिन रमाकान्त चारि बजे पिसुआ भाँग पीबै छथि। दोसरि-तेसरि साँझ होइत-होइत रमाकान्तकेँ भाँगक निशाँ चढ़ि जाइ छन्हि। भाँगक आदति रमाकान्तकेँ पितासँ लागल छेलनि। रमाकान्तक

पिता न्याय शास्त्रक विद्वान्। ओना गाममे कम्मे-सम्म रहै छला, बेसी काल बाहरे-बाहर। हुनके प्रभाव रमाकान्तक ऊपर। तँए रमाकान्त जेहने इमानदार तेहने उदार विचारक सेहो।

पोखरिक चर्चा करैत रमाकान्त मुसनाकेँ कहलखिन-

''काल्हिसँ बौएलालकेँ दोबर बोइन दिहक।''

दोबर बोइन सुनि, कनीकाल गुम्म भऽ मुसना कहलकनि-

''मालिक, एक गोरेकेँ बोइन बढ़ेबै ते दोसरो-तेसरो जन मांगत। ऐसँ झंझटि शुरू भऽ जाएत। झंझटि भेने काजो बन्न भऽ जाएत।''

काज बन्न होइक सुनि रमाकान्त उत्तेजित भऽ कहलखिन-

''काज किएक बन्न हएत। जे जेतेक काज करत ओकरा ओते बोइन देबै।''

रमाकान्तक विचारकेँ सभ मुड़ी डोला समर्थन कऽ देलकनि। समर्थन देखि गदगद होइत रमाकान्त कहए लगलखिन-

''अखनि बौएलालकेँ बोइन बढ़ेलौं, बादमे दू बीघा खेतो देबै। मास्टर साहैब, अहाँ रातिके बौएलालकेँ पढ़ा दियौ। सिलेट-किताबक खरच हम देबै।''

खेतक चर्चा सुनि मुसना रमाकान्तकेँ कहलकनि-

''विपन्न तँ बौएलालेटा नै गाममे बहुतो अछि।''

मुसनाक प्रश्न सुनि रमाकान्तक हृदैमे सतयुगक हरिश्चन्द्र पैसि गेलनि। उदार विचार, इमानमे गंभीरता, मनुखक प्रति सिनेह हुनक विवेककेँ घेरि लेलकनि। अखनि धरि ने सुदिखोर महाजनक चालि आ ने धन जमा करैबला जकाँ अमानवीय बेवहार प्रवेश केने छेलनि। नीक समाजमे जहिना धनकेँ जिनगी नै बुझि, जिनगीक साधन बूझि उपयोग होइ छै तहिना रमाकान्तोक परिवारमे रहलनि। जखनि रमाकान्तक पिता गाममे रहै छेलखिन आ कियो किछु मंगै अबैत तँ खाली हाथ घुरए नै दइ छेलथिन। जे रमाकान्तो देखथिन। सदिखन पिता कहथिन जे जौं

किनको ऐठाम पाहुन-परक आबनि आ ओ किछु मांगए आबथि तँ हुनका जरूर देबनि। किएक तँ ओ गामक प्रतिष्ठा बचाएब होएत। गामक प्रतिष्ठा बेक्तिगत नै सामूहिक होइ छै। तैठाम जौं कियो सोचत जे गाम सबहक छिऐ, हमरा ओइसँ कोन मतलब? गलती हेतै। गाममे अधिकतर लोक गरीब आ मुर्ख अछि, ओ ऐ प्रतिष्ठाकेँ नै बुझैए। तँए जे बुझनिहार छथि हुनकर ई खास दायित्व बनि जाइ छन्हि। ऐ धरतीपर जेतेक जीव-जन्तुसँ लऽ कऽ मनुख धरि अछि, सभकेँ जीबैक अधिकार छै। तँए, जे मनुख केकरो हक छिनए चाहैए ओ ऐ भूमिपर सभसँ पैघ पापी छी। जनकक राज मिथिला छिऐ तँए मिथिलावासीकेँ जनकक कएल रस्ताकेँ पकड़ि कऽ चलक चाही। जइसँ ओ प्रतिष्ठा सभदिन बरकरार रहतै।

OOO

२

सुखी-सम्पन्न रमाकान्त जेहने उदार तेहने इमानदार समाजमे बूझल जाइ छथि। मरौसी जमीन तँ बेसी नै मुदा पिताक अमलदारीमे जथा बहुत भेलनि। पितो किनने तँ नहियेँ रहथिन मुदा पुरस्कार स्वरूप पैघ-पैघ दरबार सभसँ भेटल छेलनि। रमाकान्तक पिता मधुकान्त अध्यात्म, वैयाकरण आ न्यायशास्त्रक विद्वान छेलथि। बच्चेसँ मधुकान्तक झुकाउ अध्ययन दिस देखि पिता बनारस पढ़ैले पठौलखिन। बनारसमे अध्ययन कऽ मधुकान्त तीन बरख काशीक एकटा न्यायशस्त्रक पंडित ऐठाम अध्ययन केने रहथि। अध्ययनक उपरान्त मधुकान्त पूर्णरूपेण बदलि गेल रहथि। अध्ययन-अध्यापनक असुविधा दुआरे गाममे मोन नै लगनि। ने अपन मनोनुकूल लोक भेटनि आ ने क्रिया-कलापमे सामंजस्य होन्हि। तँए जिनगीक अधिक समए अनतै बितबैत रहथि। जेहने प्रतिष्ठा मधुकान्तकेँ अपना राजमे, तेहने आनो-आनो राजमे रहनि। भारतीय चिन्तनकेँ बुनियादी ढंगसँ व्याख्या करब मधुकान्तक खास विशेषता रहनि। सामाजिक बेवस्थाक गुण-अवगुनक चर्च अनेको लेखमे लिखने रहथि, जे असुविधाक चलैत अप्रकाशिते रहलनि। तगमा, प्रशस्ति पत्र टाँगि दरबज्जाक शोभा बढ़ौने छला। जखनि गाममे रहै छला तँ सबहक ऐठाम जा-जा सामाजिक बेवस्थाक कुरीति बुझबथिन। खास कऽ कर्मकाण्डक। तँए समाजमे सभ चाहनि। अपनो जिनगीक बात दोसरकेँ कहथिन आ दोसरोक जिनगीक अध्ययन करैत रहै छला। छल-प्रपंचक मिसिओ भरि गंध जिनगीकेँ नै छुलकनि। समाजमे मनुख केना मनुखक बाधा बनि ठाढ़ अछि आ ओइसँ केना छुटकारा भेटतै, नीक-नहाँति मधुकान्त बुझथिन। सत्तरि जाड़ ऐ धरतीपर कटलनि।

सभ दिन चारि बजे रमाकान्त भाँग पीब, पान खा टहलैले निकलि दोसर साँझ धरि घूमि कऽ घरपर अबै छला। घरपर अबिते हाथ-पएर धोइ दरबज्जापर बैसि दुनियाँ-दारीक गप-सप्प करै छला। टोल-पड़ोसक लोक एका-एकी आबि-आबि बैसए। रंग-बिरंगक गप-सप्पक संग चाहो-पान आ हँसीओ-मजाक चलैत रहै छेलै। मास्टर साहैब हीरानन्द आ युवक शशिशेखर सेहो टहलि-बूलि कऽ एला। चाह पीब रमाकान्त शशिशेखरकेँ

पुछलखिन-

''बौआ, अहाँ की चाहै छी?''

मजबूरीक स्वरमे शशिशेखर कहए लगलनि-

''एहेन दल-दलमे हम फँसि गेल छी जे एकटा पएर निकालै छी तँ दोसर धँसि जाइए। ऐसँ केना निकलब?''

कृषि कौलेजमे प्रवेशक प्रतियोगितामे सफल होइते शशिशेखरकेँ सुखद भविष्यक ज्योति भेटिलनि। बेटाक सफलता सुनि पिताक उत्साह हजार गुना बढ़ि गेलनि, जेते जिनगीमे कहिओ नै भेल छेलनि। जहिना काँटक गाछमे अमरफल बेल फड़ैए, गुलाबक फूल फुलाइए तहिना पछुआएल परिवारमे शशिशेखर भेला। शशिशेखरक पिता मनमे अरोपि लेलनि जे बीत-बीत कऽ खेत किएक ने बीकि जाए मुदा बेटाकेँ कृषि वैज्ञानिक बना कऽ छोड़ब। शशिशेखरोक मनमे पैघ-पैघ अरमान आबए लगलनि। कृषि वैज्ञानिक होएब, नीक नोकरी भेटत, माए-बापक सिहन्ता कमा कऽ पूरा करब। सिरिफ परिवारेक नै, जहाँ धरि समाजोक भऽ सकत सेवा करब। मुदा बिच्चेमे समए एहेन मोड़पर आनि देलकनि जे सभ अरमान हवामे उड़ि गेलनि। जहिना बीच धारमे नाव चलौनिहारक हाथसँ करूआरि छूटि गेलापर नावमे यात्रा केनिहार आ चलौनिहारकेँ होइत तहिना शशिशखरोकेँ भेलनि। चारि सालक कोर्समे तीन साल पुरला पछाति पिता दुखित पड़लखिन। चारिम सालक पढ़ाइ छोड़ि शशिशेखर पिताक सेवामे जुटि गेला। एक दिस पिताक इलाज तँ दोसर दिस परिवारक बोझ पड़ि गेलनि। आमदनीक कोनो स्रोत नै, मात्र खेतेटा। खेतो बहुत अधिक नै। तहूमे अदहासँ बेसी बीकिए गेल छेलनि। शशिकेँ बचपनाक बुधि। जिनगी आ दुनियाँसँ भेट नै। छोट बुधिसँ पैघ समस्याक समाधाने नै होइ छेलनि। अंतमे निराश भऽ खेत बेचि-बेचि परिवारो आ पितोक इलाज करबए लगला। बीति-बीति भरि खेत बिक गेलनि। जहन कि दुनू समस्या (परिवार आ इलाज) बरकरारे रहलनि। बेबश भेल छला शशि। पितो मरि गेलखिन। कर्ज करि कऽ पिताक श्राद्ध-कर्म केलनि। दुनियाँमे केतौ इजोत देखबे नै करथि। सौंसे दुनियाँ अन्हारे-अन्हार लागए लगलनि।

बेबस भेल शशि मोने-मन सोचए लगला जे जौं हम ट्यूशनो पढ़ा कऽ अपनो पढ़ब तहन परिवारक की दशा होएत! ओतेक तँ ट्यूशनोसँ नै कमा सकै छी जइसँ अपनो काज चलाएब आ परिवारो चला लेब। अधिक कमाइले अधिक समैओ लगबए पड़त। जे संभव नै अछि। अगर जौं सभ समए ट्यूशनेमे लगा देब तँ अपने कखनि पढ़ब आ क्लास केना करब। जहियासँ पिता मुइला तहियासँ माएओक देह सोगसँ हहड़ले जा रहल छन्हि। एक तँ बूढ़ छथि दोसर सोगसँ सोगाएल। मनुखमे जनम लेलापर कियो माए-बापक सेवा नै करै तँ ओ मनुखे की? मनुखक मात्र नकल छी। हम से नै करब। चाहे दुनियाँक लोक नीक कहै वा अधला, तेकर हमरा गम नै अछि। डिग्री लऽ कऽ हम नीक नोकरी करब। नीक दरमाहा भेटत। जइसँ खाइ-पीबै, ओढ़ै-पहिरै आ रहैक सुविधा भेटत मुदा जिनगी तँ ओतबेटा नै अछि। जिनगी लेल ज्ञान, कर्म आ बेवहारक जरूरति सेहो होइए। जिनगी पाबि जौं मनुख प्रतिष्ठित नै बनि सकल तँ ओ जिनगीए की? आइ जौं हम माएकेँ छोड़ि दियनि आ हुनका कष्ट होन्हि, ओइ कष्टक भागी के बनत? दिन-राति हुनका सेवाक जरूरति छन्हि, उठौनाइ-बैसोनाइसँ लऽ कऽ खुऔनाइ-पिऔनाइ धरि। हम सभ ओइ धरतीक सन्तान छी जैठाम श्रवणकुमार सन बेटा जनम लऽ चुकल छथि...।

यएह विचार शशिशेखरक पढ़ाइ छोड़ौलकनि। दुनियाँमे कोनो सहारा नै देखि शशि रमाकान्त ऐठाम एला। अपन जीवनक सभ बात शशि हीरानन्दकेँ कहलखिन। शशिक बातसँ हीरानन्दक हृदए पघलि गेल छेलनि। हीरानन्द मोने-मन सोचैत रहथि जे जे नबयुवक देश सेवामे एकटा खुट्टाक काज करत ओ अपने नष्ट भऽ रहल अछि, तँए ओहेन युवककेँ सोंगर लगा ठाढ़ करैक जरूरति अछि।

सोझमतिया रमाकान्त दोहरबैत शशिकेँ पुछलखिन-

"नीक जकाँ अहाँक बात हम नै बूझि सकलौं?"

बिच्चेमे मास्टर साहैब रमाकान्तकेँ बुझबैत कहलखिन-

"शशि महाग संकटमे फँसि गेल छथि। हुनका अहींक मदतिक जरूरति छन्हि। तखने ई उठि कऽ ठाढ़ हेता।"

मास्टर साहैबक बात सुनि धाँइ दऽ रमाकान्त कहलखिन-

> ''अगर हमर मदतिसँ शशिकँ कल्याण हेतनि तँ जरूर करबनि।''

रमाकान्तक आश्वासनसँ शशिक हृदैमे भोरक सुरूज देखि दिनक आशा जगलनि। शशिक मुँहसँ हँसी निकललनि। जिनगीक आमावश्या पूर्णिमामे बदलए लगलनि। गंभीर भऽ हीरानन्द शशिकँ कहए लगलखिन-

> ''चिन्ता छोड़ू। नव जिनगी दिस डेग उठाउ। ई कर्मभूमि छिऐ। ऐठाम कर्मनिष्ठे लोक मनुखक जिनगी पाबि सकैए।''

हीरानन्दक विचार सुनि शशि उठि कऽ ठाढ़ भऽ हुनक हाथ पकड़ि जिनगी भरिक मित्रताक व्रत लैत कहलखिन-

> ''जहिना कोनो रोगाएल गाछकँ माली तामि-कोड़ि पानि दऽ पुनः नव जिनगी दइए तहिना अहाँ दुनू गोटे हमरा देलौं। तइले हम ऋणी छी। जहाँ धरि भऽ सकत सेवा करैत रहब।''

शशिक विचार सुनिते रमाकान्तक हृदैमे कर्णक रूप सन्निहा गेलनि। खुशीसँ गद्-गद् होइत कहलखिन-

> ''बौआ, हम तँ पढ़ल-लिखल नै छी। पिताजी गाममे नै रहै छला तँए परिवार सम्हारए पड़ै छल। ओना कोनो वस्तुक अभाव जिनगीमे ने पहिने भेल आ ने अखनि अछि। जहिया पिताजी गाम अबै छला तहिया बुझा-बुझा कऽ कहै छला। अखनो मनमे वएह विचार अछि।''

रमाकान्तकँ दू गोट बेटा। दुनू डाक्टरी पढ़ि मद्रासमे नोकरी करै छन्हि। कहियो काल दू-एक दिन लेल गाम अबै छन्हि। दुनू भाँइ मद्रासेमे बिआहो कऽ नेने छथि। दुनू पुतोहुओ डाक्टरे छथिन। एक परिवारमे चारि डाक्टर, तँए आमदनीओ नीक छन्हि। दस बर्खक नोकरीमे कमा कऽ ढेर लगा नेने छथि। अपन तीन मंजिला मकान मद्रासेमे बनौने छथि। चारिटा गाड़ी सेहो रखने छथि। अपन क्लिनिक सेहो बनौने छथि। बेटा लग जेबाक विचार रमाकान्त बहुत दिनसँ करै छथि मुदा दुरस्तक दुआरे

निआरिए कऽ रहि जाइ छथि।

पुनः रमाकान्त बजला-

> ‘‘पोखरिओक काज सुढ़िआइए गेल अछि ओकरा सम्पन्न करि कऽ मद्रास जाएब। मद्राससँ एला पछाति अहाँक सभ जोगार कऽ देब। ताधरि अहाँ पत्नीओ आ माएओकेँ ऐठाम लऽ अबियनु। एतै रहू।’’

बेरू पहर हीरानन्द आ शशिशेखर टहलैले निकलला। दरबज्जाक सोझहे पोखरिक महारक निच्चाँ, उत्तर-पूब कोनमे एकटा भरिगर सरही आमक गाछ। दुनू गोटे ओइ गाछक निच्चाँ दुबिपर बैसि गप-सप्प करए लगला। हीरानन्द अपन खेरहा कहए लगलखिन-

> ‘‘मैट्रिक पास केला पछाति मास्टरी लेल इन्टरभ्यू दइले गेलौं। जखनि ओइठाम गेलौं आ देखलिऐ तँ बूझि पड़ल जे इन्टरभ्यू मात्र देखाबा अछि। मोल-जोल तेजीसँ चलै छल। मुदा सोझहे घुमिओ जेनाइ उचित नै बूझि रूकि गेलौं। मनमे आएल जे मोल-जोलक विरोध करी। संगी भँजिआबए लगलौं। मुदा मोल-जोलक पाछू सभ लागल। एकोटा संग दइबला नै देखि मनकेँ असथिर केलौं। फेर भेल जे विरोध कऽ हंगामा ठाढ़ कए दिऐ। मुदा दुनू पक्ष एक दिशाहे, सिरिफ हमहींटा कातमे। तामसे देह थर-थर कँपै छल। लाभ-हानिक हिसाब जोड़ी तँ हानिए बेसी बूझि पड़ै छल। मुदा मन तैयो मानैले तैयार नै हुअए। हुअए जे, जे बहालीक ऊपरका सीढ़ीपर अछि ओकरा चारि धौल लगा दिऐ। दस दिन जहलेमे रहब। फेर हुअए जे जखनि डिग्री आ योग्यता अछि तखनि एहेन-एहेन नोकरी केतेको आएत आ जाएत। फेर हुअए जे हजारो नबयुवक देशक आजादी लेल खून बहौलक। हमरा बुते एतबो ने हएत। समुद्रक लहरि जकाँ मनमे संकल्प-विकल्प उठैत आ शान्त होइत रहल। सभ कियो चलि गेल। हम असगरे रहि गेलौं। अचता-पचता कऽ विदा भेलौं। डेगे ने उठै छल मुदा तैयो घरपर एलौं। घरपर अबिते पत्नी बूझि गेली। मुदा आशा जगबै दुआरे लोटामे पानि नेने आगू आबि

कहलनि, थाकि गेल हएब। हाथ-पएर धोइ लिअ, थाकनि कमि जाएत। जलखै नेने अबै छी। जाबे हम पएर-हाथ धोलौं ताबे थारी नेने एली। पहिनेसँ जलखैक ओरियान कऽ कए रखने रहथि। जलखै खा, दरबज्जेक चौकीपर कुरता खोलि कऽ रखि देलिऐ आ बाँहिक सिरमा बना पड़ि रहलौं। मुदा मनमे ढेरो रंगक विचार सभ उठए लगल। मुदा दू तरहक विचार सोझहामे आबि गेल। पहिल विचार जे शिक्षके बहाली टामे घूसखोरी छै आकि सभ विभागमे छै? आँखि उठा-उठा सभ दिस देखए लगलौं तँ बूझि पड़ल जे अहूसँ बेसी आन-आनमे अछि। जखनि सभ विभागमे घूसखोरी अछि तखनि देश आगू मुहेँ केना ससरत? निच्चाँसँ ऊपर धरि एक्के रोग सगतरि पकड़ने अछि। मन औना गेल। मन औनाइते छल आकि दोसर विचार मनमे उपकल। मनकेँ असथिर कऽ सोचए लगलौं। अनासुरती मनमे आएल जे जहिना पुरबा-पछबा हवा धरतीसँ अकास धरि बहैए तहिना ई बेवस्थाक हवा छिऐ। तँए एकरा बदलैक एक्केटा रस्ता अछि बेवस्था बदलब। मुदा बेवस्था बदलब छौड़ा-छौड़ीक खेल नै छी। कठिन काज छी। बेवस्था सिरिफ लोकक चालिए-ढालि धरि सीमित नै अछि। ओ अछि मनुखक चालि-ढालिसँ लऽ कऽ ओकर बुधि-विचार विवेक धरिमे। मनुखकेँ जेहेन बुधि रहै छै ओहने विचार मनमे अबै छै। जेहेन विचार मनमे अबै छै तेहने ओ काज करैए। तँए जाधरि मनुखक बुधि नै बदलत ताधरि ओकर क्रिया-कलाप नै बदलि सकैए। जाधरि-क्रिया-कलाप नै बदलत ताधरि बेवस्था बदलब मात्र बौद्धिक व्यायाम हएत। तँए जरूरति अछि मनुखमे नव बुधिक सृजन कऽ नव क्रिया-कलाप पैदा करब। नव क्रिया-कलाप एलापर नव रस्ता बनत। नव रस्ता बनलापर कियो नव स्थानपर पहुँचत। नव जगह पहुँचलापर मनुख मनुखक बरबरिमे औत। आ छोट-पैघ, धनीक-गरीब, ऊँच-नीचक खाधि समतल हएत। तखनि भक्क खुगल। भक्क खुजिते हाइ स्कूलक शिक्षक देवेन्द्र बाबू मन पड़ला। देवेन्द्र बाबू, सदिखन छात्र सभकेँ कहथिन, मनुखकेँ कखनो निराश नै

हेबाक चाहिऐ। जखने मनुखमे निराशा अबै छै, तखने मृत्यु लग चलि अबै छै। तँए सदिखन आशावान भऽ जिनगी बितेबाक चाहिऐ। कठिनसँ कठिन समए किएक ने आबए मुदा विवेकक सहारा लए आगू डेग उठेबाक चाहिऐ। देवेन्द्र बाबूक विचार मन पड़िते संकल्प लेलौं, जहन शिक्षक बनैले डेग उठेलौं तँ शिक्षक बनि कऽ रहब। चाहे जते विघ्न-बाधा आगूमे उपस्थित हुअए।''

जखनि देवेन्द्र बाबू कौलेजमे पढ़ैत रहथि तखनि आजादीक आन्दोलन देशमे उग्र रूप धेने छल। देवेन्द्रबाबू पाँच-सात संगीक संग पोस्ट ऑफिसमे आगि लगा देलखिन। पोस्ट-ऑफिस जरि गेलै। तीन दिन पछाति हुनका पुलिस पकड़ि लेलकनि। मारबो केलकनि आ जहलो लऽ गेलनि। जहल जाइसँ पहिने कनी डरो होइ छेलनि। लोकक मुहेँ सुनने रहथिन जे जहलमे खाइले नै दइ छै। ऊपरसँ साँझ-भिनसर दुनू साँझ मारबो करै छै। मुदा जहलक भीतर गेलापर देखलखिन जे हजारो देशप्रेमी क्रान्तिकारी जहलमे छथि। हुनका सभले जेहने घर तेहने जहल। एक बरख ओहो जहलमे रहला। ओइ बरख दिनमे ओ बहुत सिखलनि। जिनगीए बदलि गेलनि। आब देबेन्द्र बाबू सिरिफ अपने आ अपना परिवारेटा लेल नै सोचै छथि। बल्की ओ बूझि गेलखिन जे देशक अंग समाज आ समाजक अंग बेकती वा परिवार होइए। तँए, सभकेँ अपनासँ लऽ कऽ देश धरिक सेवा करैक चाहिऐ। जहलसँ निकलि बी.ए.क फार्म भरलनि। बी.ए. पास केलापर हाइ स्कूलक शिक्षक बनला।

हाइ स्कूलमे बहुतो शिक्षक छेलथि मुदा हुनकर जिनगी भिन्न छेलनि। ट्यूशन माने खानगी पढ़ौनीकेँ पाप बूझि क्लासमे तेना पढ़बै छला जे विद्यार्थीकेँ ट्यूशन पढ़ैक जरूरते ने रहै छेलै। स्कूलक पजरेमे टटघर बना असगरे रहै छला। महिनामे एक दिन गाम जा बालो-बच्चाकेँ देखथि आ दरमहो परिवारमे दऽ अबथिन।

चौकीपर हीरानन्द पड़ले रहथि आकि एकटा अनठीया आदमी पहुँचलनि। ओ नै चिन्हलखिन। मुदा दरबज्जाक लाज रखैले आँगनसँ एक लोटा पानि आनि पएर धोइ बैसैले कहलखिन। पुनः आँगन जा पत्नीकेँ कहलखिन-

''एकटा अतिथि एला हेँ, तँए झब दे चाह बनाउ।''

कहि दरबज्जापर आबि ओइ आदमीक नाओं-गाँव पुछए लगलखिन। नाओं-गाँव पूछि काजक गप उठैबते रहथि आकि आँगनसँ पत्नी हाथक इशारासँ चाह लए जाइले कहलखिन। इशारा देखिते गपकेँ विराम दैत आँगन चाह अनैले गेला। आँगन जा दुनू हाथमे दुनू चाहक गिलास लऽ दरबज्जापर आबि दहिना हाथक गिलास अतिथिकेँ देलखिन आ बामा हाथक गिलास दहिना हाथमे लऽ अपने पीबए लगला। गप्पो चलैत आ चाहो पीबैत रहथि तँए पीबैमे देरी लगलनि। चाह सठलो ने छेलनि आकि आँगनसँ पत्नी जलखैक इशारा देलखिन। पत्नीक इशारा देखि हाथेक इशारासँ थोड़े काल बिलमि जाइले कहलखिन। चाह पीब लगले जलखै करब नीक नै होइए। हँ, चाह पीबैसँ पहिने जलखै नीक होइ छै। चाह पीब पान खा दुनू गोटे गप-सप्प करए लगला। अतिथिकेँ पुछलखिन-

"किम्हर-किम्हर अहाँ एलौं?"

अतिथि-

"एकटा बूढ़ हमरा गाममे छथि। सामाजिक सम्बन्धमे दादी हेती। बिधवा छथि। बेटो नै छन्हि। हुनका विचार भेलनि जे बच्चा सभकेँ पढ़ैले एकटा स्कूल बनाबी। चारि बीघा खेत छन्हि। समाजोक सभ आग्रह केलकनि जे सम्पति तँ राइ-छित्ती भइए जाएत तइसँ नीक जे स्कूल बना दियौ। अखनि ओ दू बीघा खेत स्कूलमे देथिन आ दू बीघा अपना लेल रखती। जखनि दादी मरि जेती तखनि चारू बीघा स्कूलेक हेतै।"

धियानसँ अतिथिक बात सुनि मुस्कीआइत हीरानन्द कहलखिन-

"बडड् नीक विचार छन्हि।"

"ओइ स्कूलकेँ चलबैले अहाँकेँ कहए अएलौं।"

"जरूर जाएब। राति एतै बीता लिअ। भोरे चलब।"

"कोसे भरि अछि दोसर साँझ धरि पहुँच जाएब।"

"एते अगुताइ किए छी? हमहूँ थाकल छी। भोरे चाह पीब दुनू गोटे चलब।"

हीरानन्दक आग्रह अतिथि मानि गेला। अँगनाक टाट लगसँ पत्नी दुनू गोटेक सभ बात सुनैत रहथिन। दुनू गोटे तमाकुल खा लोटा लऽ मैदान दिस विदा भेला। घुमैत-फिरैत दुनू गोटे तेसरि साँझमे घरपर एला। घरपर आबि दुनू गोटे, दरबज्जापर बैस, गप-सप्प करए लगला। भानस भेल, दुनू गोटे खा कऽ सुति रहला।

चारि बजिते दुनू गोटेक निन्न टूटि गेलनि। जाबे दुनू गोटे पैखानासँ आबि दतमनि केलनि ताबे पत्नी-आरती चाह बनौलनि। चाह पीबिते रहथि आकि सुरूजक उदय भेल।

अझुका सुरूजमे एक विशेष रंगक आकर्षण बूझि पड़ै छेलनि। सुरूजक रोशनीमे विशेष आकर्षण छल आकि सबहक हृदैमे छेलनि? आरतीक मनमे होइ छेलनि जे पति नोकरी करए जा रहल छथि तँए, विशेष आकर्षण। हीरानन्दक हृदैमे जिनगीक एक सीढ़ी बढ़ैक आकर्षण रहनि आ अतिथि-मटकन-क हृदैमे अपन बेटाक पढ़ैक आकर्षण छेलनि।

चाह पीब हीरानन्द झोरामे धोती-तौनी लऽ दुनू गोटे गप-सप्प करैत विदा भेला। गप-सप्पक क्रममे बूझि पड़लनि जे स्कूल बनबैमे रमाकान्तक विशेष हाथ छन्हि। तँए गाम पहुँचिते मटकनकेँ कहलखिन-

“पहिने रमाकान्तसँ भेट कऽ लेबनि तखनि दादी ऐठाम जाएब।”

दुनू गोटे रमाकान्त ऐठाम पहुँचला। साठि वर्षीय रमाकान्त गाएक नादिमे कुट्टी-सानी लगबैत रहथि। दलानपर दुनू गोटेकेँ देखि रमाकान्त हाँइ-हाँइ हाथ धोइ, लग आबि, बैसैले कहलखिन। हीरानन्द चौकीपर बैसला मुदा मटकन ठाढ़े रहल। मटकनकेँ रमाकान्त कहलखिन-

“तूँ आगू बढ़ि जाह। हम दुनू गोटे पाछूसँ अबै छी। जहन मास्टर साहैब दुआरपर एला तँ बिना जलखै करौने केना जाए देबनि।”

मटकन आगू बढ़ि दादीकेँ सभ समाचार सुना देलकनि। समाचार सुनि दादीक मन खुशीसँ नाचि उठलनि। दादीक मनमे हुअ लगलनि जे आब गामक बच्चा अन्हारसँ इजोत मुहेँ बढ़त।

जलखै कऽ चाह पीब दुनू गोटे -रमाकान्त आ हीरानन्द- दादी ऐठाम चललथि। दादीक घर थोड़बे हटल। रस्तामे रमाकान्तक मनमे

आबए लगलनि जे स्कूल तँ बेक्तिगत संस्था नै छी। सामाजिक छी। सामाजिक संस्थामे सबहक सहयोग हेबाक चाहिऐ। धैनवाद भौजीकेँ दइ छियनि जे अपन सभ सम्पति समाजकेँ दऽ रहल छथि। मुदा हमरो सबहक तँ किछु दायित्व होइए। तँए ऐले किछु करब जिम्मा भऽ जाइए। मास्टर साहैबक भोजन आ रहैक जोगार हम कऽ देबनि। दरमाहा रूपमे खेतक उपजा हेतनि आ समाजक सभ मिलि कऽ जौं स्कूलक घर बना दइ तँ सर्वोत्तम होएत। एते बात मनमे नचिते छेलनि आकि दादी ऐठाम पहुँच गेला। दादीकेँ रमाकान्त भौजी कहथिन। किएक तँ समाजिक सम्बन्धमे दादीक पतिसँ भैयारी रहनि। दादीओ मास्टर साहैबक रस्ता देखै छेली। भौजी ऐठाम पहुँचिते रमाकान्त मटकनकेँ कहलखिन-

> ''मटकन, स्कूल गामक एकटा पैघ संस्था छी। तँए समाजो लोककेँ खबरि दहुन आ सभ मिलि कऽ विचारि आगूक डेग उठाएब। ओना भौजीक तियागक प्रशंसा जेते कएल जाए कम हएत। जइ सम्पति लेल लोक नीच-सँ-नीच काज करैले उतरि जाइए ओइ सम्पतिक तियाग भौजी कऽ रहल छथि। जखनि मास्टर साहैब आबिए गेल छथि तखनि हड़बड़ करैक जरूरति नै। अखनि सौंसे गाममे सभकेँ कहि दहुन आ बेरमे सभ एकठाम बैसि विचारि लेब।''

बेर टगि गेल। समाजक सभ एका-एकी आबए लगला। सबहक मनमे जिज्ञासा रहनि। तँए सभ विशेष उत्सुक रहथि। सबहक बीचमे रमाकान्त कहलखिन-

> ''समाजक सभ जनिते छी जे भौजी अपन सभ सम्पति बच्चा सभले दए रहल छथि। जइसँ हमरे अहाँक कल्याण हएत। मुदा हमरो अहाँक दायित्व होइए जे हमहूँ सभ किछु भागीदार बनी। जाधरि हम जीबैत रहब ताधरि शिक्षकक रहैक आ भोजनक प्रबंध करैत रहबनि। अहाँ सभ स्कूलक घर बना दियौ।''

रमाकान्तक विचारकेँ सभ थोपड़ी बजा समर्थन कऽ देलकनि। मुस्कीआइत हीरानन्द कहलखिन-

> ''घर बनैमे किछु समए लगत, तैबीच अहाँ सभ अपन-अपन

बच्चाकेँ पठाउ। हम पढ़ाइ शुरू कऽ देब।''

मास्टरो साहैबक विचारकेँ सभ थोपड़ी बजा समर्थन कऽ देलकनि। थोपड़ी बन्न होइते दुखिया ठाढ़ भऽ अपन विचार रखैत बाजए लगल-

''खेती करैले केतएसँ हर-जन अनता। जेते बोनिहार छी सभ मिलि कऽ खेती कऽ देबनि। किएक तँ जहिना मास्टर साहैब हमरा सबहक सेवा करता तहिना तँ हमहूँ सभ मिलि कऽ हुनकर सेवा करबनि।''

OOO

३

छह माससँ सोनेलालक स्त्री सुगिया अस्सक छथि। परोपट्टाक डाक्टर, वैद्य, हकीम, ओझा-गुनी थाकि गेल मुदा सुगियाक रोग एक्कैसे होइत गेलै जे उन्नैस नै भेलै। फेदरति-फेदरतिमे सोनेलाल पड़ल। दिन-राति एक्को क्षण मन चैन नै। कखनो डाक्टर ऐठाम जाथि तँ कखनो दबाइ आनए बजार जाइ छला। कखनो बच्चाले दूध आनए जाथि तँ कखनो माल-जालकेँ खाइ-पीबैले दइ छला। अपना खाइओ-पीबैक सुधि नै रहै छेलनि। कखनो मनतरियाकेँ बजा आनथि, तँ कखनो साँढ़-पाराकेँ रोमैले खेत जाइ छला। स्त्री मरैक ओते चिन्ता नै जेते तीन बेटीपर सँ भेल चारिम बेटाक रहनि। कोरैले बेटा जनमैकाल सुगियाकेँ दुख पकड़ि लेलकनि। बच्चा जनमै काल तेहेन समए भऽ गेल छेलै जे सोनेलाल डाक्टर ऐठाम नै जा सकला। एक तँ जाड़क मास दोसर अनहरिया राति। कनीए-कनीए पछबा सिहकी दैत आ बर्खाक बुन्न जकाँ टप-टप गाछ सभपर सँ पालाक बुन्न खसै छेलै। समए देखि सोनेलाल बेवस भऽ गेला। पल्हनिक घर, लगमे रहितो बजबए गेल नै भेलनि। डरो होन्हि जे हम ओम्हर जाएब आ एम्हर हिनका किछु भऽ जान्हि। गुप-गुप अन्हार। हाथ-हाथ नै सुझै छेलै। विचित्र संकटमे सोनेलाल पड़ि गेला।

जहियासँ बच्चाक जनम भेलै आ स्त्री बिमार पड़लनि, तहियासँ सोनेलालक कोनो दशा बाँकी नै रहलनि। मुदा सोनेलालो हिम्मत नै हारलनि। जे कियो जे दबाइ वा प्रतिकारक कोनो वस्तुक नाओं कहनि ओ आनि सोनेलाल स्त्रीकेँ देथिन। अंतमे पाँच कट्ठा खेत पाँच हजारमे भरना लगा सोनेलाल लहेरियासराय जाइक विचार कऽ लेलनि। बच्चो सभ छोट-छोट तँए घरो आ बाहरो सम्हारैले आदमीक जरूरति भेलनि। घर सम्हारैले सारि आ लहेरियासराय जाइले बहिनकेँ बजौलनि। स्त्रीक दूध सुखि गेलनि तँए बच्चाकेँ बकरीक दूध उठौना केने रहथि। बहिनोक छोटका बच्चा नम्हर भऽ गेल छेलै। तँए ओकरो दूध सुखि गेल छेलै। मुदा बच्चाक दशा देखि बहिन मसुरी दालिक झोड़ो खाए लगली आ बच्चोकेँ छाती चटबए लगली, जइसँ कनी-कनी दूध पोनगए लगलनि।

लहेरियासराय जाइक तैयारीमे सोनेलाल लगि गेला। मालक घरमे

टाँगल खाटकेँ उतारि झोल-झार झाड़ए लगला। खाटक झोलो साफ केलक आ केतौ-केतौ जे जौर टुटल रहै ओकरो जोड़ि-जोड़ि बन्हलथि। बहिनकेँ सोनेलाल कहलखिन-

"दाइ, नुआ बिस्तर आइए खीचि लाए, भोरके गाड़ी पकड़ि कऽ चलैक छह। दस दिन जोकर चाउरो-दालि लइए लेब। चाउर तँ कोठीएमे छह, दालि दर्ड़रए पड़तह। सभ ओरियान आइए करि कऽ रखि लैह।"

बहिन कहलकनि-

"भैया, तोहर कोन-कोन कपड़ा साफ कए देबह?"

"दाइ, एक जोड़ धोती, अंगा आ चद्दरि हम्मर आ तूँ अपनो कपड़ा खीचि लिहऽ। अखनि तँ एकटा धोती पहिरनइ छी। अलगन्नीपर धोती छह, ओकरा अखने खीचि दहक जइसँ नहाइ बेर तकमे सुखि जाएत। नहा कऽ ओकरा पहिरि लेब आ पहिरलाहा धोतीकेँ खीचि लेब।"

सोनेलालक सारि सेहो लगेमे ठाढ़। सारिकेँ कहलखिन-

"अहाँ दुआर-दरबज्जासँ केतौ बाहर नै जाएब। अँगने-दुआरमे बच्चो सभकेँ रखब आ मालो-जालकेँ खाइ-पीबैले देबै। समए साल खराप अछि, तोहूमे ऐ गाममे देखते छिऐ जे नव कबरिया छौंड़ा सभ भाँग-गाँजा पीब लेत आ अनेरो लोककेँ गरियबैत रहत। जौं कियो उकट्ठे कऽ दिअए।"

बहिन कोठीसँ मसुरी आ चाउर निकालि, अँगनेमे बिछानपर सुखैले देलक। नवकुटुए चाउर, तँए सूरा-फाड़ा नहियेँ लागल छेलै। बहिन कपड़ा खिचए गेल आ सारि मसुरी दर्ड़ए लगली। सोनेलाल खाट ठीक कऽ दूटा बरहा दुनू भागक पाइसमे बन्हलनि। कपड़ा खीचि बहिन सोनेलालकेँ पुछलकनि-

"भैया, केते चाउर-दालि लऽ जेबहक?"

"दाइ, दुइए गोरे खेनिहार रहब ने, तइ हिसाबसँ चाउरो आ

दालिओ लऽ लेब। तीमन-तरकारी ओतै किनब।''

बहिन-

''भैया, नून तँ ओतौ कीनि लेब मुदा मिरचाइ, हरदि आ करुतेल एतैसँ नेने जाएब। एकटा थारी, एकटा लोटा आ दुनू छोटकी डेकची सेहो लइए लेब। डेकचीएमे सभ समान लऽ लेब, किएक तँ फुट-फुट कऽ लेलासँ अनेरे नम्हर मोटरी भऽ जाएत। खाइओक चीज-बौस रहत आ लत्तो-कपड़ा रहत मुदा तैयो मोटरी नम्हरे भऽ जाएत।''

सोनेलाल बाजल -

''मोटरी नम्हरे हएत तँ की करबै। जखनि गारामे ढोल पड़ल अछि तखनि की करबै।''

लहेरियासराय जाइक बहिन तैयारीओ करै आ मोने-मन सोचबो करै जे भगवान भारी विपतिमे भैयाकेँ फँसा देलखिन। जौं कहीं भौजी मरि जेतै तँ भैया फटो-फन्नमे पड़ि जाइत। असगरे की करत? बच्चो सभ लेधुरिए छै। केना खेती सम्हारत, धिया-पुताकेँ देखत आ माल-जालकेँ देखत। हे भगवान एहेन विपति सात घर मुद्दइओ रहै ओकरो नै दिहक। हमहीं की करबै? हमहूँ तँ असगरूए छी। हमरो चारिटा धिया-पुता, माल-जाल अछि। छी ऐठीम आ मन टाँगल अछि गामपर। मुदा एहेन बेरमे जौं भैयोकेँ नै देखबै तँ लोक की कहत। लोके की कहत। अपने मनमे केहेन लगत?

साँझ पड़िते सोनेलाल टीशन जाइले दूटा जन ताकए गेला। ओना तँ अपनो दियाद-वाद छन्हि मुदा बेरपर केकर के होइ छै। अचताइत-पचताइत सोनेलाल फुद्दीआ ऐठाम पहुँचला। फुद्दीआक जेहने नाओं तेहने काज। सोनेलालकेँ देखिते फुद्दीआ पुछलकनि-

''किम्हर-किम्हर एलह, भाय?''

''तोरेसँ काज अछि।''

''की?''

“काल्हि, भोरका गाड़ी पकड़ब। रेखिया माएकेँ लहेरियासराय लऽ जेबै। अपनेसँ तँ चलै-फिरैवाली नै अछि। खाटपर लऽ जाए पड़त। तँए दू गोटेकेँ काज अछि।”

“तोरा जौं हमर खूनक काज हेतह, हम सेहो देबह। तोहर उपकार हम जिनगी भरि नै बिसरब। हमरा ओहिना मन अछि जे बेटी विदागरी करैले तीन दिनसँ जमाए बैसल रहथि आ कपड़ा दुआरे विदागरी नै करिऐ। मगर जहिना आबि कऽ तोरा कहलियऽ तहिना तोहूँ रूपैआ निकालि कऽ देने रहऽ। एहेन उपकार हम बिसरि जाएब।”

“समाजमे एना सबहक काज सभकेँ होइ छै आ होइत रहतै। जँए तोरापर भरोस छल तँए ने एलौं। भोरेमे गाड़ी छै। तँए गाड़ी अबैसँ एक घंटा पहिने घरपर सँ विदा हएब।”

“बड़ बढ़ियाँ, चारिए बजेमे हमरा सभ दिन निन्न टूटि जाइए। हम दुनू भाँइ चलि एबह। तोहूँ अपन तैयारीमे रहिहऽ। भऽ सकैए जे कहीं निन्न नै टुटए तँए एक लपकन चलि अबिहऽ।”

फुद्दी ऐठामसँ आबि सोनेलाल बहिनकेँ पुछलखिन-

“दाइ, सभ चीज एक ठीन सेरियाए कऽ रखि लैह, नै तँ जाइ काल हरबड़मे छूटि जेतह।”

सोनेलालक बात सुनि बहिन मोने-मन सोचए लगल जे कोनो चीज छूटि तँ ने गेल। पुछलकनि-

“भैया, एक बेर फेरसँ सभ चीजक नाओं कहि दैह। अखने मिला कऽ सेरियाए लेब।”

दुनू भाए-बहिन एक-एक करि कऽ सभ वस्तुक नाओं लेलनि। सभ वस्तु देखि सोनेलाल बहिनकेँ कहलखिन-

“दाइ, चारि बजे उठैक अछि, जौं भानस भऽ गेलह तँ अखने खाइले दऽ दैह।”

हाथ-पएर धोइ सोनेलाल खाइले बैसला। चिन्तित मन, तँए खाएले

ने होन्हि मुदा तैयो जी जाँति कऽ कहुना-कहुना चारि कौर खेलथि। खा कऽ मालऽ घर गेला। माल-जालकेँ खाइले दऽ आबि कऽ सुति रहला। बहिनो खा कऽ बच्चाकेँ छाती लगा सुति रहली। सुतले-सूतल बहिन भौजाइकेँ पुछलकनि-

"भौजी, मन नीक अछि किने?"

"हँऽऽ।"

ओछाइनपर पड़ल सोनेलालकेँ निने ने होन्हि। विचित्र द्वन्द्वमे पड़ल रहथि। एक दिस भोरे उठै दुआरे सुतै चाहथि, तँ दोसर दिस पत्नीक चिन्ता नीन आबै ने दन्हि। कछ-मछ करै छला। कनीए कालक उपरान्त हाँफी भेलनि। नीन एलनि। नित्र अबिते चहा कऽ उठि बहिनकेँ पुछलखिन-

"दाइ, भोर भऽ गेलै?"

बहिनो जगले छलि, बाजलि-

"भैया, अखने तँ खा कऽ कड़ देलौं हेन। लगले भोर केना भऽ जेत्तै।"

फेर दुनू गोटे सुति रहला। तीन बजे दुनू भाँइ फुद्दीआ आबि डेढ़िया परसँ शोर पाड़लक-

"सोनेलाल भाय, हौ सोनेलाल भाय, अखनि तक सुतले छह। उठह-उठह, भुरूकुबा उगि गेलह।"

फुद्दीआक अवाज सुनि दुनू भाए-बहिन औगता कऽ उठल। आँखि मिड़िते सोनेलाल बाहर निकलि फुद्दीकेँ कहलखिन-

"की कहियऽ, बड़ी रातिमे नीन भेल। भने तूँ आबि कऽ जगा देलह। हम चीज-बौस निकालै छी आ तूँ खाटकेँ सुढ़ियाबऽ।"

अन्हारक दुआरे बहिन दूटा डिबिया नेसलक। एकटा डिबिया ओसारक खुट्टा लग रखलक आ एकटा घरमे। खाट निकालि फुद्दी पाइसमे बान्हल बरहाकेँ अजमा कऽ देखलक जे सक्कत अछि आकि नै।

दुनू कात पाइसमे बान्हल बरहाकेँ देखि फुद्दी सोनेलालकेँ कहलकनि-

"भाय, बरहा तँ ठीक अछि। बाँसक टोन कहाँ छह?"

बाँसक टोन घरक पँजरेमे राखल। टोनकेँ ओँगरीसँ देखबैत सोनेलाल कहलखिन-

"हैबएह छह।"

टोन आनि फुद्दी डिबियाक इजोतमे देखए लगल जे गिरह सभ छीलल छै आकि नै। छीलल छेलै। खाटपर बिछबैले सोनेलाल एक पाँज पुआर आनि फुद्दीकेँ कहलकनि-

"तोरा अँटियबैक लूरि छह कनी पुआर सेरियाए कऽ चौरस करि कऽ बिछा दहक।"

पुआरकेँ सेरियाए फुद्दी कहलकनि-

"भाइ, ऐपर बिछेबहक की?"

सोनेलाल घरसँ शतरंजी आ सिरमा आनि फुद्दीकेँ देलखिन। बिछान सेरियाए फुद्दी बाजल-

"भाय, रस्तामे कान्ह बदलै काल कहीं भौजी गिरि-तिरि ने पड़थि। तँए पँजरोमे दुनू भागसँ डोरी बान्हि देबै?"

फुद्दीक विचार सोनेलालकेँ जँचलनि। कनी गुम्म भऽ बाजल-

"की कहियऽ फुद्दी, दुख पड़लापर मनो बौआ जाइ छै। तोहूँ की अनारी छह जे नै बुझबहक। जे नीक बूझि पड़ह, से करह।"

खाटपर रोगीकेँ चढ़ा दुनू भाँइ फुद्दी कान्हपर उठौलक। कान्हपर उठैबते सोनेलालकेँ मन पड़लनि, बजला-

"फुद्दी, घरमे तँ धिए-पुते रहत कियो चेतन नहियेँ अछि। सारि सेहो आएल अछि, ओहो अनठीए अछि। तँए, तूँ राति कऽ एतै खइहऽ आ सुतिहऽ।"

'बड़ बढ़ियाँ' कहि फुद्दी आगू बढ़ल। चाउर-दालि आ वर्तन-बासनक

मोटरी माथपर लऽ सोनेलाल निकलल। बच्चाकेँ छाती लगौने बहिनो निकलली। डेढ़ियापर अबिते सुगिया खाटेपर सँ बाजलि-

''कनी अँटकि जाउ।''

फुद्दी ठाढ़ भऽ पुछलक-

''किए रोकलौं?''

खाटे परसँ सुगिया बाजलि-

''हे साधु-गुरु, अगर निकेना घूमि कऽ आएब तँ पचास मुर्तेक भनडारा करब।''

फुद्दी खाट उठा विदा भेल। रस्तामे कियो किछु ने बजैत रहथि। मोने-मन सभ सभ रंगक बात सोचैत रहथि। फुद्दी सोचैत जे भगवानो केहेन बेइमान अछि जे सोनेलाल भाय सन सुधा आदमीकेँ एहेन विपति देलखिन। सोनालाल सोचैत रहथि जे तीन बेटीपर बेटा भेल, जौं घरवाली मरि जाइत तँ बेटो मरि जाइत। चुमौन करब तइसँ बेटाक कोन गारंटी हएत। जौं कहीं बेटीए भेल तँ खनदानोक अंत होएत आ जिनगी भरि अपनो बिआहे दानक बन्र-फाँसमे पड़ल रहब।

बहिन सोचैत जे जौं कहीं भौजी मरि जेती तँ जिनगी भरि भैयाकेँ दुखे-दुख होइत रहतै।

स्टेशन पहुँच सोनेलाल मोटरी रखि गाड़ीक भाँज लगबै गेल। टिकट कटैत देखि बुझलथि जे गाड़ी अबैमे लगिचा गेल अछि। हमहूँ टिकट कटाइए लइ छी। टिकट कटौलक। कनीए काल पछाति गाड़ी आएल। दु गोटे फुद्दी आ सोनेलाल, तीनू गोटे मिलि कऽ सुगियाकेँ गाड़ीमे चढ़ौलनि। सोनेलाल गाड़ीमे ऊपरेमे रहला। मोटरी उठा कऽ फुद्दी देलकनि। मोटरी रखि सोनेलाल बहिनक कोरासँ बच्चाकेँ लेलनि। बहिनो चढ़ली। गाड़ी खुजिते दुनू गोटे खाट उठा घर दिस विदा भेल।

गाड़ी दरभंगा पहुँचल। छोटी लाइन दरभंगे तक चलैए। तँए गाड़ी दू घंटा उपरान्त फेर घूमि कऽ निर्मलीए जाएत। गाड़ीसँ यात्री सभ उतरए लगल। मगर सोनेलाल सबतूर बैसले रहलथि। मनमे कोनो हड़बड़ी नहियेँ रहनि जखनि सभ उतरि गेला तखनि सोनेलाल सीट परसँ उठि

बहिनकेँ कहलखिन-

"दाइ, तूँ एतै रहऽ, हम कोनो सबारी भँजियौने अबै छी।"

कहि सोनेलाल गाड़ीसँ उतरि प्लेटफार्मसँ निकलि बाहर एकटा टेम्पू लग पहुँचला। ड्राइवर निच्चाँमे ठाढ़ भऽ पसिन्जर सभकेँ तकै छल। सिरसिराइत सोनेलाल ड्राइवरकेँ कहलखिन-

"भाय, हमरा डाकडर ऐठाम जेबाक अछि, चलबह?"

सोनेलालक बोलीसँ ड्राइवर बूझि गेल जे देहाती आदमी छी, तँए एना बजैए। मुदा सोनेलालक प्रति ड्राइवरक आकर्षण बढ़ि गेलनि असथिरसँ ड्राइवर पुछलखिन-

"रोगी कहाँ छथि।"

"गाड़ीएमे।"

"बजौने अबियनु।"

"अपने पएरे अबैवाली नै छथि। पकड़ि कऽ आनए पड़त।"

गाड़ीकेँ सोझ कऽ ड्राइवर सोनेलालक संग प्लेटफार्मपर एला। गाड़ी लग पहुँच ड्राइवर रोगी आ समान देखि मोने-मन विचारलनि जे एक आदमीक काज आरो पड़त। प्लेटफार्म दिस नजरि उठा कऽ हियाबए लगला। गाड़ी साफ करैले दू गोटेकेँ अबैत देखि जोरसँ ड्राइवर कहलखिन-

"भैया"।

भैया सुनि झाड़ूबला आँखि उठौलक तँ ड्राइवरकेँ देखलक। ड्राइवरकेँ देखिते लफरि कऽ ड्राइवर लग आएल। ड्राइवर कहलकै-

"भाय, एकटा दुखित महिला ऐ कोठलीमे छथि, हुनका उतारि कऽ टेम्पूमे बैसाए दियनु।"

झाड़ू रखि दुनू झाड़ूओबला आ ड्राइवरो सुगियाकेँ उतारि टेम्पू दिस बढ़ला। सोनेलाल मोटरी लेलनि। आ बहिन बच्चाकेँ कन्हा लगा चलली। सुगियाकेँ चढ़ा कऽ झाड़ूबला गाड़ी साफ करैले घुमए लगल। दुनू

झाडूबलाकेँ रोकि सोनेलाल दसटा रूपैआ निकालि दिअ लगलखिन। रूपैआ देखि, अधबेसू झाडूबला बाजला-

"भाय हमहूँ रेलबेमे सरकारी नोकरी करै छी। दरमाहा पबै छी। अहाँक मदति केलौं। अखनि जइ मोसीबतमे अहाँ छी, ओइमे हमरा देहो आ रूपैओसँ मदति करक चाही। मुदा गरीब छी, कहुना-कहुना कमा कऽ गुजर कए लइ छी। किएक तँ अहूँ बुझिते हेबै जे सभ दुख गरीबेकेँ होइ छै। धनीक लोक सोनाक मुरूतकेँ खोआ-मलाइ चढ़ा धरम करैए। हमर भगवान यएह मरल-टुटल लोक छथि। हम सेवा केलौं। भगवान करथि जे हँसी-खुशीसँ अहाँ घर जाइ।"

झाडूबलाक बात सुनि सोनेलाल अचंभित भऽ गेला जे जेकरासँ लोक छूत मानैए, ओकर आत्मा केतेक पवित्र छै।

टेम्पू आगू बढ़ल। थोड़े दूर गेलापर सोनेलाल ड्राइवरकेँ कहलखिन-

"डरेबर साहैब, हम अनभुआर छी। कहियो ऐठाम नै आएल छी। अहाँ एतए रहै छी। सबटा बूझल-गमल अछि। तेहेन डाकडर लग चलू जे हमरा रोगीकेँ छूटि जाए।"

"बड़ बढ़ियाँ।" ड्राइवर कहलकनि।

मोने-मन ड्राइवर सोचए लगला, अस्पतालमे भरती करौनाइ नीक नै हेतनि। एक तँ अस्पतालमे बेवस्थो बढ़ियाँ नै छै, दोसर जेकरे लागि-भागि छै तेकरे सभकेँ सभ सुविधो भेटै छै। तँए सभसँ बढ़ियाँ डाक्टर बनर्जी लग लऽ चलियनि। डाक्टर बनर्जी रिटायर भऽ अपन घरो आ क्लिनिको बनौने।

बारह बाजि गेल। डाक्टर बनर्जीक पहिल पाली आठ बजे भिनसरसँ बारह बजे तक आ दोसर पाली चारि बजेसँ सात बजे साँझ धरि होइ छेलनि। सभ रोगीकेँ देखि डाक्टर बनर्जी डेरा जेबाक तैयारी करिते रहथि, टेम्पूकेँ ड्राइवर सोझहे फाटकसँ भीतर ओसार लग लऽ गेल। टेम्पू देखि डाक्टर बनर्जी फेर बैसि रहला। टेम्पू रोकि ड्राइवर उतरि कऽ सोझहे डाक्टर बनर्जी लग जा कहलकनि-

"डाक्टर साहैब, रोगी अपनेसँ चलै-फिरैवाली नै छथि, तँए पहिने एकटा डेरा दियनु।"

आँखिक इशारासँ डाक्टर बनर्जी कम्पाउण्डरकेँ कहलखिन। बगलेमे अपन डेरा रहनि। कम्पाउण्डर जा कऽ एकटा कोठरी खोलि कुँन्जी सोनेलालकेँ दऽ देलकनि। कम्पाउण्डर घूमि कऽ आबि, नोकरकेँ संग कऽ स्ट्रेचरपर सुगियाकेँ लऽ जा दुजनियाँ चौकीपर सुता देलकनि। स्ट्रेचर रखि कम्पाउण्डर डाक्टर बनर्जीकेँ कहलकनि-

"सभ बेवस्था कए देलियनि।"

डाक्टर बनर्जी आगू-आगू आ कम्पाउण्डर, ड्राइवर आ सोनेलाल पाछू-पाछू। सुगियाकेँ देखिते डाक्टरकेँ रोग चिन्हा गेलनि। मुदा आरो मजगूती लेल सुगियाकेँ पूछए लगलखिन। हताश मन सोनेलालक। मुँह सुखाएल। आँखि नोराएल। बहिनक आँखिसँ नोरक ठोप खसैत। डाक्टर बनर्जी कम्पाउण्डरकेँ सूइ लगबैले कहलखिन। कम्पाउण्डर सूइ आनए गेल। सोनेलाल डाक्टर बनर्जीकेँ पुछलखिन-

"डागडर साहैब, रोगीक दुख छुटतै की नै?"

सोनेलालक प्रश्न सुनि डाक्टर बनर्जीक हृदए पघलि गेलनि। उत्साह दैत सोनेलालकेँ कहलखिन-

"चौबीस घंटाक भीतर रोगी टहलए-बुलए लगती। अखनि एकटा सुइया दइ छियनि। पाँच बजे तक सूतल रहती। उठेबनि नै। अपने निन्न टुटतनि। निन्न टुटलापर कुर्ड़ा-आचमन करा चाह बिस्कुट देबनि।"

ताबे कम्पाउण्डर आबि सुगियाकेँ सूइ लगौलक। सूइ पड़िते सुगियाकेँ निन्न आबि गेलनि। डाक्टर बनर्जी सोनेलालकेँ कहलखिन-

"आब अहाँ सभ खाउ-पीबू गऽ।"

डाक्टर चलि गेला। ड्राइवर सोनेलालकेँ किछु-किछु बुझबैत कहलखिन-

"पानिक कल बगलेमे अछि। भानस करैले चुल्हो अछिए। अपने

भानस करब। बाहर चलू, दोकान देखा दइ छी। ऐसँ बाहर नै जाएब। लुच्चा लम्पट बेसी अछि। जेबीसँ पाइ निकालि लेत। तँए जेतबे काज हुअए तेतबे पाइ मुट्ठीमे नेने जाएब आ सामान कीनि लेब। आब हम जाइ छी। ऐठाम कोनो चीजक डर नै करब। सभ भार डाक्टर साहैबकें छन्हि।''

पाँच बजिते सुगिया आँखि खोललक। सुगियाक लगेमे सोनेलालो आ बच्चोकें कोरामे नेने बहिनो बैसल। आँखि खोलिते सुगिया सुतले सूतल बाजलि-

''किछु खाइक मन होइए।''

सुगियाक बात सुनिते सोनेलालकें मन पड़लनि जे डाक्टरो साहैब कहने रहथि। उठि कऽ चाह-बिस्कुट आनि सुगिया लग रखलनि। कलपर सँ लोटामे पानि आनि कऽ कुर्ड़ा करैले देलखिन। बैसले-बैसल सुगिया कुर्ड़ा कए चाहेमे डूमा-डूमा बिस्कुट खेलनि। चाह-बिस्कुट खा सुगिया मुँह पोछलक। सुगियाकें मुँह पोछिते सोनेलाल पुछलकनि-

''मन केहेन लगैए?''

''कनी हल्लुक लगैए।''

सोनेलालो आ बहिनोक मनमे खुशी आएल। मोने-मन बहिन भगवानकें कहए लगलनि जे हे भगवान, कहुना भौजीकें नीक कऽ दियनु।

सुगियाकें सुधार हुअ लगल। तेसर दिनसँ सुगिया बुलए-टहलए लगली। दिनमे दू बेर डाक्टरो साहैब आबि-आबि देखनि। सभ तरहक तरद्दुत सोनेलाल करैले हरिदम तैयार।

दसम दिन सुगियाकें डाक्टर साहैब छुट्टी दऽ देलखिन। सोनेलाल कम्पाउण्डरसँ सभ हिसाब केलनि। जेते हिसाब सोनेलालकें भेलनि तइसँ पाँच सए रूपैआ अधिक लऽ सोनेलाल डाक्टर साहैबक आगूमे रखि देलकनि। रूपैआ गनि डाक्टर साहैब फजिलाहा रूपैआ घुमबैत कहलखिन-

''जोड़ैमे पाँच सए बेसी आबि गेल। ई पाँचो सए रखि लिअ।''

डाक्टर साहैबक बात सुनि सोनेलाल कहलकनि-

"गनैमे गलती नै भेल। पाँच सए अहाँकेँ खुशनामा दइ छी।"

खुशनामा सुनि डाक्टर बनर्जी गुम्म भऽ गेला। मनमे एलनि, वेचाराक बगए-वाणि कहैए जे पैंच-उधार करि कऽ आएल हएत, तखनो देखू उद्‌गार। हमरा कोन चीजक कमी अछि जे ऐ वेचाराक फाजिल पाइ छूबै। मन पड़लनि, जमीनदारीक समैक पुनाह...।

जमीनदार सभ सालमे एक बेर पुनाह करै छला। जमीनदारक कचहरीमे पुनाह होइ छेलै। पुनाह होइसँ पनरह दिन पहिने रैयत सभकेँ जानकारी दऽ देल जाइ छेलै। जमीनदार दिससँ मोतीचूरक लड्डू बनौल जाइ छेलै। एक रूपैआमे एक लड्डू देल जाइ छेलै। रैयतोमे दू विचारक रैयत रहै छल। एक तरहक ओ छल जेकरा खाली अन्नेक आमदनी छेलै। ओइ तरहक रैयतक हालत कमजोर छेलै। मगर दोसर तरहक जे रैयत होइ छल ओकरा अन्नक संग-संग नगदो आमदनी छेलै। जेना कोनो-कोनो जातिकेँ दूध-दहीक, तँ कोनो-कोनो जातिकेँ तीमन-तरकारीक। कोनो जातिकेँ पानक तँ कोनो-जातिकेँ छोट-छोट कोल्हु इत्यादि। पुनाह धर्मसँ जोड़ल शब्द अछि। धार्मिक भावना सबहक मनमे रहै छेलै। तँए, एक-दोसरकेँ निच्चाँ देखबैले मोने-मन प्रतियोगिता करै छल। एकटा लड्डूक दाम मोसकिलसँ दू पाइ होइत हेतै। किएक तँ आठ अने चित्री आ रूपैआमे चारि सेर खेरही वा आन कोनो अन्न, जेकर लड्डू बनै छेलै। प्रतियोगिता दू तरहक होइ छेलै। पहिल, बेकती-विशेषमे आ दोसर, जाति-विशेषमे। लोक खूब खुशी रहै छल। गामे-गाम मलगुजारीसँ बेसी, पुनाहमे जमीनदार रूपैआ असुल कऽ लइ छला। जइ समाजमे मलगुजारीक चलैत लोकक खेत निलाम होइ छेलै, ओइ समाजमे पुनाहक नाओंपर लूट सेहो चलै छेलै। वएह बात डाक्टर बनर्जीकेँ मन पड़लनि। हँसैत डाक्टर बनर्जी सोनेलालकेँ कहलखिन-

"अहाँ, खुशी भऽ ऐठामसँ जा रहल छी, यएह हमर खुशनामा भेल। भगवान करथि परिवार फड़ए-फुलए।"

तीनू गोटे गामक रस्ता धेलनि। बच्चाकेँ सुगिया कोरामे नेने आ बहिन वर्तनक मोटरी माथपर नेने। खालीए देहे सोनेलाल सभ दरभंगा

स्टेशन आबि गाड़ी पकड़लनि।

अपना स्टेशनमे उतरि तीनू हँसी-खुशीसँ गाम दिसक रस्ता धेलक। रेलबे कम्पाउण्डसँ निकलि सुगिया सोनेलालकेँ कहलकनि-

> ''जाइ काल पचास मुर्ते साधुक भनडारा कबुला केने रही। कबुला-पाती उधार नै राखक चाही। काल्हिखन ओहो कबुला पुराइए लेब।''

सोनेलालोक मन खुशी रहनि। चाउर-दालि घरेमे रहनि। रूपैओ किछु उगरले रहनि। मुस्कीआइत सुगियाकेँ कहलखिन-

> ''काल्हि तँ भनडारा नै सम्हरत। दही पौरैक अछि, हाटसँ तीमन-तरकारी, नून-तेल आनए पड़त। चारि-पाँच दिनमे भनडारा कए लेब। अखनि दाइओ आएले अछि।''

दाइक नाओं सुनि बहिन बाजलि-

> ''भैया, तेहने गड्डूमे पड़ि गेल छेलह तँए अपन सभ किछु छोड़ि कऽ छिअह। तूँ नै बुझै छहक जे हमरो कियो दोसर करताइत नइए। काल्हि हम चलि जेबह।''

सोनेलालक मन गद्-गद्। जहिना चुल्हिपर चढ़ौल पानि देल वर्तनमे निच्चाँसँ आगिक ताउ लगिते निचला पानि गर्म भऽ ऊपर मुहेँ उठैत तहिना सोनेलालक मन खुशीसँ नचैत रहनि। स्टेशनसँ थोड़ेके दूर एलापर सोनेलाल कहलकनि-

> ''अहाँ दुनू गोरे ऐठाम बैसू। लगले हम चीज-बौस किनने अबै छी।''

सुगियो आ बहिनो, रस्ते कातमे आमक गाछक निच्चाँमे बैसली। सोनेलाल स्टेशन दिस विदा भेला। स्टेशने कातमे आठ-दसटा दोकान छेलै। एकटा दोकान माछक, दोसर मुरगी आ अण्डाक, एकटा सुधा दूधक, एकटा चाहक, एकटा पानक आ पान-छहटा तरकारीक। सोनेलालक मनमे एलनि जे पान-सात रंगक तरकारिओ, दूधो आ राहड़िक दालिओ कीनिए लेब। किएक तँ छह माससँ ने भरि पेट अन्न खेलौं आ

ने कहियो मन असथिर रहल। तँए आइ राति अपनो सभ परिवार आ फुद्दीओ दुनू भाँइकँ नोत दऽ खुआ देबनि। रेलबेक कम्पाउण्डमे जे तरकारी, दूध, माछ इत्यादिक दोकान छेलै ओ स्थायी नै। साधारण छपड़ी टाँगि-टाँगि दोकान चलबैए। कियो दोकानदार रेलबेसँ दोकानक पट्टो नै बनौने। स्टेशनेक स्टाफ, दोकानदारकँ दोकान लगबए देने छै, जइसँ बट्टीक बदला सभकँ परिवार जोकर तरकारी सभ दिन भऽ जाइ छेलै। जहिया कहियो रेलबेक अफसरक आगमन होइ छेलै, तइसँ पहिने स्टाफ दोकानदार सभकँ कहि दइ छेलै। अपन-अपन छपड़ी सभ हटा लइ छल।

दोकान आ रेलबेक बीच मोड़पर ठाढ़ भऽ सोनेलाल सोचए लगल जे दोकानमे जे राहड़िक दालि बिकाइए ओ अरबा रहैए। तँए दालिकँ उलबए पड़त। घरमे तँ लोक पहिने राहड़ि उला लइए। बिनु उलौल राहड़िक दालि तँ खेसारीए जकाँ होइए। मुदा उलौला पछाति आमील देल राहड़िक दालि तँ दालिए होइए। सभसँ नीक। लटखेना दोकान पहुँच सोनेलाल एक किलो राहड़िक दालि, अदहा किलो चिन्नी किनलक। दुनूक दाम दऽ तरकारीबला लग आबि सात-आठ रंगक तरकारी किनलक। तड़ै जोकर गोलका भाँटा-भाँटिन, गंगाकातक बड़का परोड़, हैदराबादी ओल टेबि कऽ किनलनि। दू किलो सुधा दूध सेहो लेलनि। सभ समानकँ गमछामे बान्हि, हाथमे लटकौने घूमि कऽ सुगिया लग एला। गमछामे बान्हल समान देखि बहिन पुछलकनि-

''भैया, की सभ कीनि लेलहक?''

बहिनक मनमे भेलनि जे धिया-पुता लेल भरिसक लाइ-मुरही कीनि लेलनि। मुदा मोटरी नम्हर, तँए पुछलकनि। बहिनक बात सुनि सोनेलाल हँसैत बाजला-

''दाइ, खाइ-पीबैक समान सभ किनलौं। आइ सभ परानी मिलि नीक-निकुत खाएब। वेचारा फुद्दीओ, नोकर जकाँ राइते-राइत कऽ घरक ओगरबाही करैत हएत। तँए ओकरो दुनू भाँइकँ नोत दऽ खुआ देबै। तँए तीमन-तरकारी, दूध आ दालि कीनि लेलौं। भानस करैले तोहूँ तीन गोटे (बहिन, स्त्री आ सारि) छेबे करह।

एक्कोदिन तँ तोरो सबहक मेजमानी हुअए। दाइ, जेते अनका भाएओसँ सुख नै होइ छै, तइसँ बेसी तोरासँ भेल। तोहर उपकार जिनगीमे नै बिसरब। भगवान तोरा सन बहिन सभकँ देथुन।''

सोनेलालक बात सुनि गद्-गद् होइत बहिन उत्तर देलकनि-

''भैया, हम अपन काज केलौं। तोहर उपकार की केलियऽ। एहेन बेरपर जे तोरा नै देखितिअ तँ हमरा सन बहिन केकरो रहिए कऽ की हेतै।''

बहिनक बात सुनि सुगिया पतिकँ कहलनि-

''दाइ तँ औगुताइए। कहैए जे काल्हि भोरे चलि जाएब। एकोटा धराउ घरमे साड़ीओ ने अछि जे देबनि। बिना साड़ी देने केना जाए देबनि। केहेन हएत?''

भौजाइक बात सुनि मुस्की दैत ननदि बाजलि-

''भौजी, चारू बेटा-बेटीक बिआहमे तँ हमरा चारि जोड़ साड़ी रखले अछि। मुदा एहेन बेरमे साड़ीक कोन काज छै। अपने तँ भैया पैंच-उधार लऽ कऽ काज चलौलक। तैपरसँ हमरोले करजा करत। हमरा जौं दियौ चाहत तँ नै लेबै।''

घरपर अबिते परिवारसँ गाम धरि खुशीक बर्खा बरिसए लगल। तीनू बेटी सुगियाक गरदनिमे लटपटा गेल। सुगिया बच्चाकँ कोरामे लऽ लऽ मुँह चुमए लगल। जहिना जाड़क मासमे गाछ-बिरिछ पालाक मारिसँ ठिठुर जाइए मुदा गरमी धबिते नव रूप धारण करैए तहिना सभकँ भेलै। छह मासक तबाही, सोग, निराश सोनेलालकँ छोड़ि पड़ा गेल। पास-परोसक जनिजाति सभ आबि-आबि सुगियाकँ देखबो करैत आ बिमारीक समैक खिस्सो सुनै छेली। एक्के-दुइए सौंसे अँगना धियो-पुतोक आ जनिजातिओक भीड़ हटल। तीनू गोटे भानसक जोगारमे लागि गेली। केते दिनसँ सोनेलाल भरि इच्छा नहाएल नै छल। साबुन लऽ कऽ नहाएले गेल।

भानस भेलै। सभ कियो भरि मन खेलनि। खाइते सभकँ ओङही

आबए लगलनि। सभ जा-जा कऽ सुति रहला।

पत्नीक संग सोनेलालकेँ लहेरियासराय जाइते गाममे चर्च चलए लगल छल। एक दिस जनिजाति सभ सोनेलालक बाहवाही करै छेली तँ दोसर दिस मर्दा-मर्दीक बीच इलाजक खर्चाक चर्च चलै छल। सौंसे गाम दुनू परानी सोनेलालेक चर्च चलैत रहए।

सबेरे स्कूलमे छुट्टी दऽ खसल मने हीरानन्द चलि एला। सबेरे हीरानन्दकेँ आएल देखि रमाकान्त पुछलखिन-

"सबेरे स्कूल बन्न कए देलिऐ?"

ओना रमाकान्तोकेँ सोनेलालक सम्बन्धमे बूझल छेलनि मुदा जइ गंभीरतासँ हीरानन्द सोचैत रहथि ओइ गंभीरतासँ ओ नै सोचै छला। तँए मनमे कोनो तेहेन विचार नै छेलनि। हीरानन्द उत्तर देलखिन-

"बच्चा सभकेँ पढ़बैमे मोन नै लगै छेलै, तँए छुट्टी दऽ देलिऐ।"

"किए नै पढ़बैमे मन लगै छेलै।"

चिन्तित भऽ हीरानन्द कहलखिन-

"एक तँ बाढ़िक मारल वेचारा सोनेलाल तैपरसँ बिमारीक। तेहेन चपेटमे पड़ि गेला जे कोनो कर्म बाँकी नै छन्हि। यएह बात मनमे घुरियाए लगल। पढ़बैमे एक्को रत्ती नीके नै लगै छेलए।"

सोनेलालक बात सुनिते रमाकान्तक मन मौलाए लगलनि। मौलाइत-मौलाइत जहिना हीरानन्दक मन रहनि तहिना भऽ गेलनि। पएरमे ठेँस लगलापर जहिना कियो मुँह भरे खसैत जइसँ छातीमे चोट लगैए तहिना रमाकान्तक हृदैमे मनक चोट लगलासँ भेलनि। मुदा जोरसँ नै कुहरि चुप्पेचाप कुहरए लगला। मनमे एलनि, जइ गाममे चारि-चारिटा डाक्टर छथि ओइ गामक लोक रोगसँ कुहरै, केते दुखक बात छी। एहने डाक्टरकेँ लोक भगवान बूझि पुजनि से कहाँ धरि उचित छी। जइ पढ़ल-लिखल लोककेँ अपना गामसँ सिनेह नै, अपन कुटुम्ब परिवार सर-समाजसँ सिनेह नै, अपने सुख भोगक पाछू बेहाल छथि। हुनका अनेरे दाइ-माइ किए छठियार दिन छातीमे लगा जीबैक असीरवाद देलकनि। फेर मोनमे एलनि, जहिना माल-जालकेँ डकहा बिमारी होइ छै तहिना तँ

मनुक्खोकेँ चटपटिया बिमारी होइ छै। जे छनमे छनाँक कऽ दइ छै। चारिटा बेटा-पुतोहु डाक्टर हमरे छथि जौं कहीं अपने आकि महेन्द्रक माइएकेँ वएह चटपटिया बिमारी भऽ जान्हि तँ की करता ओ सभ हमरा...। मन घोर-घोर, बाके बन्न भऽ गेलनि।

तीन दिन पछाति सोनेलाल भनडाराक कार्यक्रम बनौलनि। खाइ-पीबैक सभ ओरियान दिल खोलि कऽ केलनि। तुलसीफुलक अरबा चाउर, राहड़िक दालि, एगारहटा तरकारी तैसंग दही-चिन्नीक नीक बेवस्था केलनि।

गाममे दू पंथक साधू। पहिल पंथक महंथ रमापतिदास आ दोसर पंथक गंगादास। राम-जानकी मंदिर रमापतिदास बनौने छथि। दुनू साँझ पूजा करै छथि। मुदा गंगादासकेँ किछु नै। सेवकान दुनू गोटेकेँ छन्हि। आन-आन गाममे सेहो दुनू गोटेकेँ सेवक छन्हि।

सोनेलालक मनमे छल-प्रपंचक मिसिओ भरि लसि नै तँए पच्चीस मुर्ते साधुक दल रमापतिदासकेँ देलकनि आ पच्चीस मुर्तेक दल गंगादासकेँ। दल देला पछाति सोनेलाल दुआर-दरबज्जा चिक्कन-चुनमुन करए लगला। भानस करैक वर्तन सभ माँजि-मूजि तैयार केलनि। खाइले केरा पात काटि-धो कऽ सेहो रखलनि।

एक गाममे रहितो दुनू पंथक बीच अकास-पतालक अंतर छेलनि। पहिल पंथमे ऊँच जातिक बोलबाला जखनि कि दोसर पंथमे ऊँच जाति कम मुदा निम्न जातिक बेसी। छूत-अछूतक कोनो भेद नै। दिनुके समैमे भनडारा भेल।

दोसर पंथक साधु सभ सबेरे आबि चरण पखारि भजन शुरू केलनि। भजन शुरू होइते टोल-परोसक जनिजातिओ आ धियो-पुतो आबि कऽ सौंसे खड़िहाँन भरि देलकनि। खड़िहाँनेमे बैसारो केने रहथि। तीनटा भजन समाप्त भेला पछाति रमापतिदास चेला सभकेँ संग केने पहुँचलथि। फरिक्केसँ दोसर पंथक साधुकेँ देखि रमापतिदास मोने-मन जरए लगला। मुदा क्रोधकेँ दाबि दरबज्जापर पहुँचलथि। दरबज्जापर अबिते रमापतिदास सोनेलालकेँ कहलखिन-

"हमरा सबहक बैसार फूटमे करू।"

रमापतिदासकेँ प्रणाम कऽ सोनेलाल दलान दिस इशारा दैत

कहलकनि-

"अपने सभ दरबज्जेपर बैसियौ।"

सोनेलालक विचार सुनि रमापतिदास मोने-मन सोचए लगला जे जौं अखनि दोसरठाम बैसार बनबैले कहबै तँ औगताइमे संभव नै होएत। जौं झगड़ा करै छी तँ केकरासँ करू। वेचारा घरवारी की करत? घरवारी लेल तँ जहिना हम दल देला पछाति एलौं तहिना तँ ओहो सभ आएल अछि। तँए जेहने हम सभ तेहने ओहो सभ। अगर ओहो साधु सभसँ कहा-कही करै छी तँ दू धार्मिक पंथक बीच विवाद हएत। मुदा ऐठाम तँ भनडारा छी, पंथक नीक-अधलाक विवेचनक मंच नै! ईहो करब उचित नै। जौं अपनाकेँ उन्नैस मानि लइ छी तँ कायरता हएत। विचित्र स्थितिमे रमापतिदास पड़ि गेला। गुम्म-सुम्म भेल रमाापतिदास दरबज्जा आ खड़िहाँनक बीच खुट्टा जकाँ ठाढ़। ने डेग आगू बढ़नि आ ने पाछू होन्हि। जेते गोटे हमरा संग आएल छथि जौं हुनका सभसँ विचार पुछबनि आ ओ लोकनि हमरा मनक विपरीत विचार दथि तखनि की करब? आइ धरि तँ सेहो नै केलौं। करब उचितो नै। गुरु-चेला अन्तर समाप्त भऽ जाएत। रमापतिदासक मन औनाए लगलनि। चाइनपर पसीनाक रूप चमकलनि। ताबे कानपर रखनिहार हरिमुनियाँबलाक कान्ह अगिआ गेलै, ओ आगू बढ़ि ओसारक चौकीपर हरिमुनियाँ रखि देलक। हरिमुनियाँ रखैत देखि ढोलकिओ ढोलक रखि देलक। अहिना एका-एकी सभ अपन-अपन लोटा-गिलास धरि रखि देलक। मुदा बैसल कियो नै। तेकर कारण बिना चरण पखरबौने बैसब केना। आ जाबे गुरु महाराज नै बैसता ताबे हम सभ केना बैसब। सभकेँ अपन-अपन सामान -बाजा, लोटा, गिलास- रखैत देखि आ अपन गिलास-कमंडलकेँ सेहो रखलथि। रमापतिदासकेँ गर भेटिलनि। रमापतिदास विक्षिप्त मने कहलखिन-

"जखनि सबहक मन अछि तखनि किएक ने दरबज्जेपर बैसल जाए। घरवारीओ तँ आदर करिते छथि।"

एक दिस रमापतिदासकेँ मन जरैत रहथि, दोसर ईहो खुशी होन्हि जे स्वागत चरण पखरबा संग घरवारी हमरे बेसी महत देलनि। सभ कियो चरण पखारि बैसि जाइ गेला।

बिढ़नी जकाँ सुगिया नाचै छल। कखनो घर जा दही देखि अबैत, जे कहीं बिलाइ ने आबि कऽ खा लिअए। तँ लगले ओसारपर राखल सामान आँगन -चाउर-दालि, तरकारी- कँ देखैत जे कौआ ने आबि कऽ छूता दइ। फेर लगले अँगनामे राखल टौकना, कराह आ बाल्टीनकँ देखैत जे धिया-पुता ने गंदा कऽ दइ। तँ लगले आबि दलानक पाछूमे ठाढ़ भऽ टाटक भुरकी देने देखैत, जे लोकसँ भरल दरबज्जा-खड़िहाँन अछि, कहीं मारिए ने शुरू भऽ जाए। सुगियाक मनमे अहलदिल्ली पैस गेलै। तहिना मगज परहक पसीना केशक तर देने गरदनिपर होइत सोनेलालक धोतीकँ भिजबैत रहनि।

भजन सुननिहारमे धिया-पुतासँ लऽ कऽ गामक स्त्री-पुरुष धरि बैसल। मोतीआ माए पचास बर्खक बूढ़। भजन बन्न भेल देखि बुचाइदासकँ कहलखिन-

> ''हे यौ बुचाइदास, बिना भजन गौने जे पडहति करबै तँ पाप नै लिखत?''

मोतीआ माएक करूआएल बात सुनि बुचाइदास उत्तर देलखिन-

> ''बड़ी काल गाजा पीना भऽ गेल, तँए कनी पीब लइ छी। तखनि नाचो देखा देब आ कबीर साहैब की कहलखिन सेहो सुना देब। कनीए काल छुट्टी दिअ। हुअ हौ रघुदास, जलदी गुल दहक।''

बिना साजे बाजक, घुन-घुना कऽ गाबए लगलखिन-

> ''हटल रहियौ सन्तो बिलइया मारे मटकी...।''

बुचाइदासक पाँति आ मुँहक चमकी देखि धियो-पुतो आ जनिजातिओ सभ, खापड़िमे देल जनेरक लाबा जहिना भर-भरा कऽ फुटैए तहिना सभ हँसए लागल।

दलानोमे आ खड़िहाँनेमे भजन शुरू भेल। दोसर पंथक बैसारमे ढोलक, झालि, खजुरीक संग थोपड़ीओ बाजए लगलै। मुदा पहिल पंथ दिस पखाउज, झालर, हरिमुनियाँक संग सितार बाजब शुरू भेल। एक सूर एक लय आ एक तालमे भजन शुरू भेल-

"केशव! कही न जाए का कहिए!"

मुदा दोसर पंथ दिस भजन तेते जोरसँ होइत जे पहिल पंथक भजन सुनाइए ने पड़ै छल। महंथ रमापतिदास बाहर निकलि घुमबो करथि आ भजनो सुनथि। रमौत भजनक अवाज दलानक घरसँ बाहर निकलबे ने करै छल। जइसँ रमापतिदास तामसे माहुर होइत रहथि। मोने-मन भनभनेबो करथि। सोनेलालकँ शोर पाड़ि कहलखिन-

"ई कोन बखेरा ठाढ़ करबा देलिऐ?"

थरथराइत दुनू हाथ जोड़ि सोनेलाल उत्तर देलकनि-

"सरकार, हम अनाड़ी छी। नै बुझलिऐ जे एना होइ छै। जे भऽ गेलै से तँ भइए गेलै। अपने तमसाइयौ नै। जौं कनी गलतीए भऽ गेल तँ माफ कऽ दियौ। अपने समुद्र छिऐ। नीक-अधला पचबैक सामर्थ्य छै अपनेमे। अखनि धरि भोजन बनबैक अहड़ीओ नै खुनल गेल अछि, आदेश दियौ।"

तरंगि कऽ रमापतिदास बजला-

"हमर जेते साधु छथि ओ फुटेमे अहड़ीओ खुनता आ भोजनो बनौता। तँए वर्तनसँ लऽ कऽ चाउर-दालि, तरकारी धरि सभ किछु हमरा फुटा दिअ।"

'बड़ बढ़ियाँ' कहि सोनेलाल सभ किछु दू भाग कऽ देलकनि। चारि-चारि गोटे भानसक जोगारमे लगि गेला। दूटा अहरी, हटि-हटि कऽ खुनल गेल। सोनेलाल सभ वर्तनो आ चाउरो-दालि आनि-आनि दुनू अहरी लग रखि देलकनि।

दलानक भजन बन्न भऽ गेल। मुदा खड़िहाँनक भजन चलिते रहल। बुचाइदास अगुआ मुर्ते। भजनियाँ सभ गोल-मोल भेल बैसल, तँए बीचमे जगह खाली रहए। ओइ खाली जगहमे बुचाइदास ठाढ़ भऽ आगू-आगू भजनक पाँतिओ गाबए आ नाचबो करए। बीच-बीचमे पाँतिक अर्थ सेहो अर्थाबए।

रमापतिदास सोनेलालकँ हाथक इशारासँ शोर पाड़ि कहलखिन-

"बड़ड अनघोल होइए। भजन बन्न करबा दियौ।"

बुचाइदास लग आबि सोनेलाल बाजल-

"गोसाँइ साहैब, भजन बन्न कऽ दियौ। महंथजीकेँ तकलीफ होइ छन्हि।"

सोनेलालक आग्रह सुनिते, के छोट के पैघ सभ एक्के बात कहए लगलनि जे हम सभ बिना भजन गौने पङहति नै करब।

सोनेलाल अबाक भऽ गेला। सौंसे देह सोनेलालक केरा भालड़ि जकाँ डोलए लगलनि। मुदा की करितथि? कियो तँ बिनु दले नै आएल छन्हि। तँए सभ साधुक महत बरबरि बुझथि।

अँगनाक टाट लग ठाढ़ सुगिया मोने-मन सोचै छलि जे जौं कहीं साधु सभ अपनामे झगड़ा कऽ बिना भोजन केने चलि जेता, तखनि तँ हमर कबुला पूरा नै हएत। कबुला नै भेने दुखो घूमि कऽ आबि सकैए। आब जौं दुखित पड़ब तँ जीब की मरब, तेकर कोन ठेकान। हे भगवान साधु सभकेँ मति बदलि दियनु जे असथिर भऽ जेता। मोने-मन साधु-साधुक जाप करए लागलि।

दू बजैत-बजैत निर्गुण पंथ दिस भोजन बनि कऽ तैयार भऽ गेल। भोजन तैयार होइते गंगादास सोनेलालकेँ कहलखिन-

"भोजन बनि गेल तँ आब भोजनक जगह तैयार करू।"

गंगादासक आढ़ैत सुनि सोनेलालक करेज आरो थरथर काँपए लगलनि। ई केहेन हएत। एक दिस साधु सभ भोजन करता आ दोसर दिस बनिते अछि। एक तँ जखनेसँ साधु सभ दरबज्जापर एला तखनेसँ झंझटि होइए। कहुना-कहुना अखनि धरि पार लगल, मगर आब आखरी बेरमे ने कहीं झगड़ा फँसि जाए। बाढ़नि आनै लाथे सोनेलाल आँगन गेल। आँगनमे जा बाढ़नि ताकै लाथे बैसि रहल। बैसैक कारण रहनि, समए लगाएब। कनीए काल पछाति सुनलनि जे हिनको सबहक भोजन तैयार भऽ गेलनि। बाढ़नि नेने सोनेलाल अँगनासँ निकलि खड़िहाँन आबि बाहरए लगल। खड़िहाँन बहारि सोनेलाल पानिक छिच्चा मारलनि। छिच्चा दऽ खरही बिछौलनि। खरही बिछैबिते साधु सभ हरे-हरे कऽ उठि खरहीपर बैसला। खरहीपर बैसिते पात उठल। पातक बँटबारा शुरू

होइते रमापतिदास अपन सत्तरिमे घूमि-घूमि जय-जयकार करए लगला। दोसर दिस भजन मंगल शुरू भेल।

सभ साधु भोजन केलनि। भोजन कऽ सभ उठला। दोसर पंथ दिसक सत्तरिमे एक्कोटा अन्न वा कोनो वस्तु पातपर छूतल नै। जखनि कि पहिल पंथक सत्तरिमे बरियातीक भोजन जकाँ छूतल। सभकेँ उठिते चारूभरसँ कौआ-कुकुर आबि-आबि खाए लगल।

भोजन कऽ दोसर पंथबला सभ ढोलक-झालि लऽ विदा हुअ लगल। मुदा रमौत दिससँ दछिनाक तगेदा भेल। अनाड़ी सोनेलाल सिक्कीक चङेरीमे पान-सुपारी लऽ बीचमे ठाढ़ रहथि। हाथक इशारासँ रमापतिदास सोनेलालकेँ शोर पाड़ि कहलखिन-

"आब हम सभ चलब तँए झब दे दछिना लाउ।"

सोनेलाल-

"केना की दछिना...।"

रमापतिदास आदेश दैत कहलखिन-

"एक सए एकाबन स्थानक चढ़ौआ, एक सए एक हमर, साधु सभकेँ एकाबन-एकाबन आ भोजन बनौनिहारकेँ एकासी-एकासी दऽ दियनु।"

भोजन बनौनिहारक आ महंथजीक दछिना तँ सोनेलालकेँ जँचल मुदा...।

गंगादास आ बुचाइदास सेहो सभ देखथि आ सुनथि रहथि। आँखिक इशारासँ गंगादासकेँ बुचाइदास कहलखिन-

"अधिकार अधिकार छी। जेते दछिना रमापतिदासकेँ हेतनि तइसँ एक्को पाइ कम हमहूँ सभ नै लेब।"

हिसाब जोड़ि सोनेलाल अँगनासँ रूपैआ आनि रमापतिदासक हाथमे दऽ देलकनि। रूपैआ ठीकसँ गनि रमापतिदास सोनेलालकेँ असिरवाद दैत उठि कऽ विदा भेला। रमापतिदासक पाछू-पाछू सोनेलालो अरियातने किछु दूर धरि गेल। फेर घूमि कऽ आबि गंगादास लग ठाढ़ भऽ पुछलकनि-

''गोसाँइ साहैब, अहाँकेँ दछिना केते हएत?''

सोनेलालक कलपैत मोनकेँ गंगादास आँकि लेलखिन। दयासँ हृदए बरफसँ पानि बनए लगलनि। मुँहसँ बोली नै फुटनि। सोनेलालकेँ की कहथिन से फुरबे ने करनि। बुचाइदास दिस देखि पुछलखिन-

> ''की यौ बुचाइदास, अहूँ तँ अगुआ मुर्ते छी, बिना अहाँ सबहक विचार नेने हम केना जवाब देबनि। किएक तँ ऐठाम तीनटा प्रश्न अछि। पहिल दू पंथक अधिकारक सबाल अछि से दोसर पंथकेँ निच्चाँ मुहेँ जेनाइ हएत। आ तेसर, सोनेलाल कबुला पुरबैले भनडारा केलनि। एक तँ बिमारीक फेड़िमे पड़ि पस्त भेल छथि, तैपरसँ हमहूँ सभ भार दियनि, ई हमरा नीक नै बूझि पड़ैए।''

गंगादासक प्रश्न सुनि दोसर पंथक सभ साधु गुम्म भऽ मोने-मन सोचए लगला जे की कएल जाए? मुदा सोचबोक रस्ता अलग-अलग होइ छै। एक्के प्रश्नक उत्तर पबैले वैरागीक रस्ता अलग होइए। जहन कि रागीक विचार अलग। भलहिं दुनू गोटे एक्के रंग विद्वान किएक ने होथि। तेतबे नै ई आध्यात्मिक चिन्तक आ भौतिकवादी चिन्तकक बीच सेहो होइए। जहन कि निष्पक्ष चिन्तकक अलग होइए। पंथक बीच बँटल समाजमे निष्पक्ष चिन्तक होएब कठिन अछि। किएक तँ पंथ खाली वैचारिकते टा नै होइत, बेवहारिक सेहो होइए। जे परिवार आ समाजसँ सेहो जोड़ल रहैए। जइसँ जिनगीक गाड़ी चलै छै।

कोनो विषयपर गंभीर चिन्तन करैले एकटा आरो भारी उलझन अछि। ओ अछि भुखल आ पेट भरल शरीरक मन। मनकेँ बहुत अधिक प्रभावित करैए शरीरक इन्द्रिय। इन्द्रियकेँ संचालित करैए शरीरक उर्जा। उर्जाक निर्माण करैए उर्जा पैदा करैक वस्तु। ओ वस्तु अबैत भोजनसँ। मुदा सिरिफ भोजने टासँ उर्जा पैदा नै होइत। उर्जा पैदा करैक दोसरो वस्तु अछि जेकर भोजन शरीरक भोजनसँ अलगो होइए।

बीच-बचाउ करैत बुचाइदास गंगादासकेँ विचार देलखिन-

> ''गोसाँइ साहैब, हमहूँ सभ अपना पंथक सिपाही छी, तँए मरैदम तक पाछू हटब धोखाबाजी हएत मुदा पवित्र धर्मक रक्षा करब सेहो हमरे सभपर अछि। तँए सोनेलाल जेते रूपैआ

रमापतिदासकेँ देलखिन, तेते हमरो सभकेँ दऽ दथु। छ मासक दुख-तकलीफ हम सभ सोनेलालक सुनबे केलौं तँए हुनकर दुखमे हमहूँ सभ शामिल भऽ रूपैआ घुमा दियनि।"

सएह भेल। सभ कियो हँसी-खुशीसँ भनडारा सम्पन्न कऽ जय-जयकार करैत विदा भेला।

OOO

४

मद्रास स्टेशन गाड़ी पहुँचिते रमाकान्त नम्हर साँस छोड़लनि। दू राति आ तीन दिनसँ गाड़ीमे बैसल-बैसल रमाकान्त, श्यामा -पत्नी- आ जुगेसर -नोकर- तीनू गोटेक देह अकड़ि गेल छेलनि। गाड़ीकेँ रूकिते रमाकान्त हुलकी मारि प्लेटफार्म दिस तकलनि तँ दोसरि-तेसरि लाइनपर गाड़ीए सभकेँ ठाढ़ भेल देखलखिन। अपना सबहक स्टेशन जकाँ नै जे कखनो कताल गाड़ीओ अबैत आ भीड़-भाड़ नै रहने पुलोक जरूरति नै पड़ैत। सगतरि रस्ते। जेम्हर मन हुअए तेम्हर विदा भऽ जाउ। गाड़ीओ छोट आ लाइनो तहिना। गाड़ीमे रमाकान्तकेँ अनभुआर जकाँ नै बूझि पड़लनि किएक तँ बिहारेक गाड़ी आ बिहारेक पसिन्जरो रहए।

गाड़ीसँ यात्री सभ उतरए लगल। तीनू गोटे रमाकान्तो अपन झोरा-मोटरीक संग उतरि, थोड़े आगू पुलपर चढ़ए लगला। पुलपर लोकक करमान लागल मुदा अपना सभ स्टेशन जकाँ एँड़ी-दौड़ी नै लगैत। जेकरा हियासि कऽ रमाकान्त अपनो चेत गेला आ श्यामो-जुगेसरकेँ कहि देलखिन। अखनि धरि स्टेशनमे दुनू कात गाड़ीए देखथिन मुदा पुलपर जेना-जेना ऊपर चढ़ैत जाइ छला, तेना-तेना आनो-आनो चीज सभ देखए लगलखिन। पुलक सीढ़ीपर चलैत-चलैत श्यामो आ रमाकान्तोक जांघ चढ़ि गेलनि। पुलक ऊपर पहुँचिते रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन-

> ‘‘जुगे, मोटरी कतबाहिमे रखि दहक आ कनी तमाकुल लगाबह।
> ताबे हमहूँ कनी बैसि लइ छी। चलैत-चलैत जांघ चढ़ि गेल।’’

जुगेसर मोटरी भुइयैंमे रखि तमाकुल चुनबए लगल। गाड़ीक जेते चिन्हार पसिन्जर रहनि, सभ हरा गेलनि। नव-नव लोक पुलोपर आ निच्चोमे देखए लगलखिन। खाली लोकेटा नव नै, ओकर पहिराबा आ बोलीओ। तमाकुल खा झोरा-मोटरी उठा तीनू गोटे पुल परसँ उतरि हियाबए लगला जे केकरोसँ पूछि लियनि। मुदा केकरो बाजब बुझबे नै करथि। रमाकान्तो लोक सभकेँ देखैत आ लोको सभ रमाकान्तकेँ देखनि। तमाशा दुनू बनल रहथि। रमाकान्त आ जुगेसरक धोती पहिरब देखि ओइठामक लोक निङहारि-निङहारि देखैत रहनि आ रमाकान्तो तीनू

गोटे ओइठामक मरदो आ मौगीओक कपड़ा पहिरब देखि मोने-मन हँसबो करथि। अनुभवी लोक सभ तँ बूझि जाइ छला जे बिहारी छथि। मुदा जेकरा नै बूझल छल ओ सभ ठाढ़ भऽ भऽ तजबीज करनि। एक जेर मौगी रस्ता धेने गप-सप्प करैत जाइ छेली, ओ सभ अपने सबहक मरद जकाँ ढेका खोंसने। मौगी सबहक ढेका देखि श्यामा मुस्की दैत रमाकान्तकेँ कहलखिन-

"देखियौ ऐठामक मौगी सभकेँ ढेका खोसने।"

श्यामाक बात सुनि रमाकान्त हँसला मुदा किछु बजला नै। रमाकान्त आँखि उठा-उठा चारू दिस ताकि मोने-मन सोचथि जे वाह रे ऐठामक सरकार। केते सुन्दर आ चिक्कन-चुनमुन बनौने अछि। केतौ बैसि जाउ। केतौ सुति रहू। सरकार बनौने अछि। अपना सभ दिस, कोनो स्टेशन एहेन नै अछि जैठाम भरि ठेहुन गंदगी नै रहैत हुअए। प्लेटफारमेपर केराक खोंइचा, पानक पीक, चिनियाँ बदामक खोंइचा, कागतक टुकड़ी, रंग-बिरंगक गुटखा सबहक पन्नी छिड़ियाएल रहैए। तेतबे नै! जेरक-जेर भिखमंगा, पौकेटमार, उचक्का रेलबे स्टेशनसँ लऽ कऽ बस स्टेण्ड धरि पसरल रहैए। मुदा ऐठाम तँ एक्कोटा नजरिए ने पड़ैए।

गाड़ीक झमारसँ तीनू गोटेक देह भँसिआइ छेलनि। मुदा की करितथि। जुगेसर तमाकुल चुनबैत रहए। मोने-मन रमाकान्त सोचथि जे बड़का फेरामे पड़ि गेल छी। की करब। किछु फुरबे नै करै छेलनि। बड़ी काल धरि उगैत-डुमैत रहला। जइ गाड़ीसँ गेल रहथि ओइ गाड़ीक भीड़ छँटल। लोक पतराएल। तैबीच एक गोटे मोटर साइकिलसँ आबि रमाकान्तेक आगूमे गाड़ी लगौलक। रमाकान्त ओइ आदमी दिस ताकए लगला आ ओहो आदमी रमाकान्त दिस। जेना नजरिएसँ दुनू गोटेक बीच चिन्हा-परिचए भऽ गेल होन्हि। रमाकान्त उठि कऽ ओइ आदमी लग जा, जेबीसँ पुरजी निकालि देखए देलखिन। पुरजीमे पता लिखल छेलै। पुरजी देखि ओ आदमी एकटा टेम्पूबलाकेँ हाथक इशारासँ शोर पाड़लक। टेम्पूबलाक अबिते पता बता लऽ जाइले कहलखिन। तीनू गोटे टेम्पूमे बैसि विदा भेला। मुदा ड्राइवर ने हिन्दी जनैत आ ने मैथिली। तँए ड्राइवर संग कोनो गप-सप्प रस्तामे नै होइ छेलनि। स्टेशनक हातासँ निकलिते रमाकान्त आँखि उठा-उठा बजारो दिस देखथि आ लोको सभकेँ

देखै छला। बाजारमे ओते अन्तर नै बूझि पड़नि, जेते लोक आ बोलीमे। मोने-मन रमाकान्त अपना इलाकासँ इलाका मिलबए लगला। अपना ऐठाम पिण्डश्याम आ गोर वर्ण एकरंगाह अछि मुदा ऐठाम पिण्डश्याम वर्णक लोक अधिक अछि। लोकक बाजबो दोसरे रंगक। जेना मधुमाछी भनभनाइए तहिना। मुदा अपना ऐठामक लोक जकाँ ठक ओइठाम नै। बजारक रस्तासँ जाइत रहथि तँए गरीबी-अमीरीमे अन्तर बुझिए नै पड़नि। मुदा अपना इलाकाक बजारसँ ओइठामक बजार बेसी चिक्कन-चुनमुन आ सुन्दर। गंदगीक केतौ दरस नै बूझि पड़नि।

मुख्य मार्गसँ निकलि पूब मुहेँ एकटा रस्ता गेल छेलै। ओइ रस्तामे डाक्टर महेन्द्रक घरो आ क्लिनिको। मुदा जइ अस्पतालमे महेन्द्र नोकरी करैत रहथि ओ मुख्य मार्गमे छेलै। ओइ गलीक मोड़पर टेप्पूक ड्राइवर तीनू गोटेकेँ उतारि भाड़ा लऽ आगू बढ़ि गेल। सड़कक दुनू भाग बड़का-बड़का मकान सभ। ओही मोड़पर तीनू गोटे मोटरी रखि बैसि रहलथि। गाड़ीक झमारसँ तीनूक देह-हाथ बथै छेलनि। ठाढ़ रहले नै होइ छेलनि। जहिना अमावस्याक रातिमे वादल पसरि आरो अन्हार कऽ दइए तहिना रमाकान्तोकेँ होइ छेलनि। एक तँ अनभुआर जगह दोसर बोलीक भिन्नता। बोली मनुख मनुखक बीच केते दूरी बनबैए ई बात रमाकान्त आइए बुझलनि। श्यामा मोने-मन सोचथि जे हे भगवान केहेन जगह अछि जे अछैते मनुखे हम सभ हराएल छी। तीनू गोटे निराशाक समुद्रमे डुमल। मोने-मन रमाकान्त सोचथि जे आब की करब? आइ धरि जिनगीमे एहेन फेरा नै पड़ल छल। अपन सभ बुधि-अकील हरा गेल अछि। रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन-

> "जुगेसर, मन घोर-घोर भऽ गेल अछि। कनी तमाकुल लगाबह।"

जुगेसर तमाकुल चुनबए लगल। सभ सबहक मुँह देखि पुनः नजरि निच्चाँ कऽ लइ छला। तैबीच रमाकान्तक जेठ बेटा डाक्टर महेन्द्र फिएट कारसँ अस्पतालसँ घर अबैत रहथि आकि सड़कक कातमे तीनू गोटेकेँ बैसल देखलनि। पहिने तँ थोड़े धखेला मुदा चिन्हल चेहरा तँए मेन रोडसँ गाड़ी बढ़ा अपन रस्तापर लगौलथि। गाड़ी ठाढ़ कऽ महेन्द्र उतरि रमाकान्तकेँ गोर लगलकनि। पिताकेँ गोर लागि महेन्द्र माएकेँ गोर

लगलनि। गोर लागि महेन्द्र पिताक झोरा लऽ गाड़ीमे रखलनि। तीनू गोटे उठि गाड़ी दिस बढ़ला। जुगेसरो अपना हाथक मोटरी गाड़ीमे रखलक। चारू गोटे गाड़ीमे बैसि आगू बढ़ला। महेन्द्र अपने ड्राइवरी करैत रहथि। महेन्द्रकेँ गाड़ी चलबैत देखि माए पुछलकनि-

"बच्चा, मोटर अपने हँकै छह?"

"हँ।"

"डरेबर नै छह?"

माएक प्रश्न सुनि महेन्द्र मुस्कीआइत कहलकनि-

"जखनि गाड़ीमे रहै छी तखनि दोसर काजे कोन रहैए जे डरेबर रखब। अनेरे खरचा बढ़त।"

घरक आगू गाड़ी पहुँचिते महेन्द्र हौरन बजेला। गाड़ीक अवाज सुनि भीतरसँ नोकर आबि गेटक ताला खोलि देलकनि। महेन्द्र गाड़ी भीतर लऽ गेला। गाड़ी ठाढ़ कऽ महेन्द्र उतरि गाड़ीक तीनू फाटक खोलि तीनू गोटेकेँ उतारलनि। गाड़ीसँ उतरिते रमाकान्त मकान दिस तकलनि। तीन तल्ला बड़का मकान। आगूक फुलवाड़ी देखि रमाकान्त मोने-मन सोचए लगला जे सम्पति तँ गामोमे बहुत अछि मुदा एहेन घर...। अपन कोन जे परोपट्टामे एहेन मकान केकरो नै छै। मनमे उठलनि जे अपन कमाइसँ महेन्द्र एहेन घर बनेलक आकि बैंक-तैंकसँ करजा लऽ कऽ बनेलक आकि भाड़ामे नेने अछि। ओना कहने छेलए जे जमीन कीनि कऽ मकान बनेलौं। मुदा एहेन घर बनबैमे पचास लाखसँ ऊपरे खरच भेल हेतै। एतबे दिनमे केते कमा लेलक।

आगू-आगू महेन्द्र आ तइ पाछू तीनू गोटे मकानमे प्रवेश केलनि। मकानक सिमेंट एहेन जमौल जे पएर पिछड़ैत। सभसँ ऊपरका तल्लामे लऽ जाए एकटा कोठरी रमाकान्त आ जुगेसरकेँ दोसर माएकेँ सुमझा देलनि। ताबे नोकर जलखै आ पानि नेने पहुँच गेलनि। हाथो-पएर नै धोइ रमाकान्त पलंगपर पड़ि रहला। पंखा चलैत रहए। दूटा पलंग कोठरीमे लगौल रहै। दूटा टेबूल, एकटा नम्हर ऐना, देवी-देवताक फोटो देबालमे सेहो छेलै। नील रंगसँ कोठरी रंगल। दूटा अलङा सेहो देबाल

दिस राखल। खूब मोटगर गद्दीदार ओछाइन पलंगपर बिछौल। मसलन सेहो दुनू पलंगपर। पानिक टँकी सेहो कोठरीक मुहँपर केबाडक बगलमे छेलै।

पलंगसँ उठि रमाकान्त कुरुड़ कऽ जलखै करए लगला। दू कौर खा पानि पीब रमाकान्त चाह पीबए लगला। जुगेसरो जलखै खा कऽ चाह पीबए लगल। महेन्द्र ठाढ़े-ठाढ़ चाह पीबए लगला। चाहक चुस्की लैत रमाकान्त महेन्द्रकेँ पुछलखिन-

"बौआ, मकान अपने छी?"

"हँ।"

"बनबैमे केते खरच भेल?"

खर्चाक नाओं सुनि मुस्की दैत महेन्द्र कहलखिन-

"बाबू, खरच तँ डायरीमे लिखल अछि तँए बिना देखने नीक-नाहाँति नै कहि सकै छी मुदा तीन लाखमे जमीन किनलौं से मन अछि। जखनि जमीन भऽ गेल तखनि चारू गोटे कमेबो करी आ घरो बनबी। तँए ठीकसँ बिना डायरी देखने नै कहि सकै छी।"

चाह पीब टेबुलपर कप रखि रमाकान्त कहलखिन-

"चारि दिन नहेना भऽ गेल। देहमे एक्को रत्ती लज्जति नै बूझि पड़ैए। तँए पहिने नहाएब, खाएब आ भरि मन सूतब।"

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि महेन्द्र कोठरीसँ निकलि नोकरकेँ कहलखिन-

"तीनू गोटेकेँ (भाए, स्त्री आ भाबो) फोनसँ कहि दहक जे बुरहा-बुरही एला अछि।"

नोकरकेँ कहि रमाकान्त लग आबि महेन्द्र कहलखिन-

"चलू, नहाइक घर देखा दइ छी।"

आगू-आगू महेन्द्र आ पाछू-पाछू रमाकान्त, जुगेसर चलला। स्नान

घरक केबाड़ खोलि महेन्द्र कहलकनि-

"दूटा जोड़ले कोठरी अछि, दुनू गोटे नहाउ।" - कहि दुनू कोठरीक बौल जरा देलखिन।

कोठरीकेँ निङहारि-निङहारि दुनू गोटे देखए लगला। पानिक झरना, टँकी, साबुन रखैक ताक, कपड़ा रखैक अलगनी इत्यादि सभ किछु रहए। रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन-

"जुगे, चाह पीलौं आ तमाकुल खेबे ने केलौं। मन लुलुआएले अछि। जा पहिने तमाकुल नेने आबह।"

जुगेसर स्नान घरसँ निकलि कोठरी आबि, तमाकुल-चुन लऽ आबि चुनबए लगल। तमाकुल चुना जुगेसर रमाकान्तोकेँ देलकनि आ अपनो ठोरमे लेलक। थूक फेकैत रमाकान्त बजला-

"जुगे गाममे हमहूँ सम्पतिबला लोक छी मुदा आइ धरि एहेन पैखाना कोठरी आ नहाइक घर नै देखने छेलिऐ। सभ दिन खुल्ला मैदानमे पैखाना जाइ छी आ पोखरिमे नहाइ छी।"

"कक्का, अपना सभ गाममे रहै छी ने। ई सभ शहर-बजारक छिऐ। जौं शहर-बजारक लोक गाम जकाँ चाहबो करत से थोड़े हेतै। ऐठाम लोक बेसी अछि आ जगह कम छै, तँए लोककेँ एना बनबए पड़ै छै। मुदा पोखरिमे लोक पानिमे पैसि कऽ नहाइए आ ऐठाम पानि ढारि कऽ नहाइए। जहिना अपना सभ कहियो काल लोटासँ पानि ढारि कऽ नहाइ छी। मुदा पानिमे पैसि कऽ नहेलासँ संतोख होइ छै, जे ऐमे नै हेतै।"

"एहेन जिनगी जीनिहारकेँ गाममे रहब पार लगतै?"

"से केना लगतै।'

"बाबू हमरा बेसी काल कहै छला जे मनुखक शरीर देखैमे एक रंग लगनौं, जीबैक जे ढंग छै ओ दू रंग बना दइ छै।"

"अहाँक गप हम नै बुझलौं काका।"

“देखहक, जे आदमी भरिगर काज सभ दिन करैए ओकरा जइ दिन भरिगर काज नै हेतै तँ देहो-हाथ दुखैतै आ अन्नो रुचिगर नै लगतै। तहिना जे आदमी हल्लुक काज करैए आ जौं ओकरा कोनो दिन भरिगर काज करए पड़तै तँ ओकरो देह-हाथ ओते दुखेतै जे अन्नो ने खा हेतै।”

“हँ, से तँ होइ छै। हमरो कए दिन भेल अछि।”

“तहिना गामक लोक जे शहर-बजारमे आबि जिनगी बदलि लइए ओ फेर गाम अही दुआरे नै जाए चाहैए।”

“गामक लोक गरीब अछि काका! खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ ओढ़े-पीनहै, रहै, दबाइ-दारू, पढ़ै-लिखैक सभ चीजक अभाव छै, तँए लोक नै रहए चाहै गाममे।”

महेन्द्र पिताकेँ स्नानघर पहुँचा घूमि कऽ अपना कोठरी आबि भाए डाक्टर रविन्द्र, पत्नी डाक्टर जमुना, भाबो डाक्टर सुजाताकेँ फोनसँ कहि देलखिन जे गामसँ माए-बाबू आ जुगेसर एला हेन। तीनू गोटेकेँ जानकारी दऽ अपने भंसा घर जाए मोने-मन सोचए लगला, जे ऐठामक जे खान-पान अछि ओ हुनका सभकेँ पसिन्न हेतनि की नै? तँए गामक जे खान-पान अछि, सएह बनेनाइ नीक हएत। मुदा भनसिया तँ ऐठामक छी, बना सकत कि नै। तँए अपनेसँ बनाएब। ओना भात-दालि आ रसगर तरकारी तँ भनसीओ बना सकैए। खाली तेतेरि परहेज करैक अछि। तेतेरिक अलगसँ खटमिट्ठी बना लेब। जौं तरूआ तरकारी नै बनाएब तँ पिता अपमान बुझता। ओना दूधो-दही जरूरी अछि। मुदा एक्कोटा चीजसँ काज चलि सकैए। दहीओ तँ घरमे नहियेँ अछि। लगक दोकान सबहक दही दब रहै छै तँए रविन्द्रकेँ कहि दियनि जे दरभंगाबलाक होटलसँ दही किनने आबथि। ई बात मनमे अबिते महेन्द्र मोबाइलसँ रविन्द्रकेँ कहलखिन। रविन्द्र अस्पतालसँ सोझहे दरभंगाबला होटल विदा भेला। महेन्द्र अपनेसँ तिलकोरक पात, परोड़, झिंगुनी, भाँटा आ आलू तड़ए लगला। गैस चुल्हि, तँए लगले सभ किछु बनि गेलनि।

पैखाना जाइसँ पहिने रमाकान्त हाथ मटियबैले माटि तकए लगला। मुदा माटिक केतौ पता नै। नहाइसँ लऽ कऽ हाथ धोइ धरि साबुने।

रमाकान्त जुगेसरकेँ पुछलखिन-

"जुगेसर, बिना माटिए हाथ केना मटियाएब?"

रमाकान्तक बात सुनि मुस्कीआइत जुगेसर कहलकनि-

"कक्का, जेहेन देश ओहेन भेस बनबए पड़ै छै। गाममे तँ भरि दिन माटिएपर रहै छी मुदा ऐठाम तँ माटिसँ भेँटो मश्किल अछि। किएक तँ देखते छिऐ जे माटि तरमे पड़ि गेल अछि। ने माटिक घर अछि आ ने रस्ता-पेरा। साबुनो तँ गमकौए छी। की हेतै साबुनेसँ हाथ धोइ लेब।"

"कहलह तँ ठीके जुगेसर मुदा हाथ धोअब आ मनकेँ मानब दुनू दू बात अछि। हाथ धोइए लेब मुदा मन नै मानत तँ ओ हाथ धोअब केना भेल?"

"हँ कक्का, ई बात तँ हमहूँ मानै छी मुदा गंदगी साफ करैक सबाल छै किने, से तँ हएत। मनकेँ बुइधे चलबै छै, तँए मनकेँ बुधि मना लेत।"

"तोहूँ तँ आब बच्चा नै छह जे नै बुझबहक। एकटा बात कहऽ जे लोक पेटमे खाइए। पेट भरै छै, तखनि लोक किए कहै छै जे भरि मन खेलौं वा पेट भरला पछाइतो कहै छै जे मन नै भरल।"

"अपना सभ कक्का मिथिलामे रहै छिऐ ने। मिथिलाक माटिओ पवित्र छै। मुदा ई तँ मद्रास छी ने तँए ऐठामक लोक जे करैत हुअए, सएह करब उचित।"

"बड़ बढ़ियाँ।"

कहि दुनू गोटे अपन क्रिया-कलापमे लगि गेला।

रमाकान्त आ जुगेसर स्नाने घरमे रहथि, तैबीच रविन्द्र, जमुना आ सुजाता तीनू गोटे अपन-अपन गाड़ीसँ आबि गेलथि। सबहक मनमे अपन-अपन ढंगक जिज्ञासा रहनि। तँए गाड़ीसँ उतरिते सभ, पिता रमाकान्त, ससुर रमाकान्तकेँ देखैले उताहुल। मुदा कोठरी अबिते पता चललनि जे

ओ नहाइ छथि। नहाएब सुनि सभ अपन-अपन कपड़ा बदलए अपना-अपना कोठरी गेलथि। पेन्ट-शर्ट खोलि रविन्द्र लुंगी पहिरते माएक कोठरी दिस बढ़ला। कोठरीमे पहुँचिते रविन्द्र माएकेँ गोर लागि आगूमे ठाढ़ भऽ गेला। रविन्द्रकेँ माए चिन्हलकनि नै मुदा गोरक जवाब बिना चिन्हनहि दऽ देलखिन। रविन्द्र मुस्कीआइत रहथि। मुदा अनचिन्हार जकाँ माए बेटाक मुँह दिस टकर-टकर तकैत। तैबीच जमुना आ सुजाता आबि माएकेँ गोर लगलनि। दुनू पुतोहुओकेँ सासु असिरवाद देलखिन। रविन्द्र बूझि गेलखिन जे माए नै चिन्हलनि। मुस्कीआइत रविन्द्र माएकेँ कहलखिन-

"माए, हम रविन्द्र छी।"

रविन्द्र नाओं सुनिते माए हक्का-बक्का भऽ गेली। अनासुरती मुँहसँ निकललनि-

"रविन्द्र।"

चारि सालसँ रविन्द्र गाम नै आएल छला। पहिने रविन्द्रक देह एकहारा छेलनि। खिरकिट्टी जकाँ। जे अखनि मस्त-मौला भऽ गेला। पुष्ट देह भेने रविन्द्रक रूपे बदलि गेलनि। कोरैला बेटा होइक नाते माएक ममता बाढ़िक पानि जकाँ उमड़ि गेलनि। मुँहक बोली पड़ा गेलनि। खाली आँखिएटा क्रियाशील रहलनि। जे अश्रुधारासँ सिमसि गेलनि। आँचरसँ नोर पोछिते ओ दिन मनमे नचए लगलनि, जइ दिन रविन्द्र ऐ आँचरमे नुकाएल रहै छेलए। सौझुका तरेगन जकाँ श्यामाक हृदैमे सुखद जिनगीक मनोरथ सभ चमकए लगलनि। हाथक इशारासँ माए दुनू पुतोहुकेँ बैसैले कहलखिन। दुनू पुतोहु माएक दुनू भाग बैसली। दुनू कान्हपर दुनू हाथ दऽ सासु ओइ दुनियाँमे बौआए लगली जइ दुनियाँमे दुखक कोनो जगह नै होइत। मुदा सुखोक तँ दूटा दुनियाँ अछि। एक दुनियाँ श्यामाक आ दोसर रविन्द्रक। जे दुनियाँ श्यामा दुनू परानीक भेल जाइ छेलनि, ओ तियाग, करूणा, दयाक सवारीसँ वैरागक मंजिल दिस बढ़ैत जाइत रहनि। जखनि कि दुनू भाँइ रविन्द्रक जिनगी अधिक-सँ-अधिक धन उर्पाजन कऽ दैहिक सुख दिस बढ़ल जाइ छेलनि।

रमाकान्त आ जुगेसर नहा कऽ कोठरी एला। नहेला उपरान्त दुनू गोटेक देहक थाकनि मेटा गेलनि। नव-नव स्फूर्ति आ ताजगी आबि

गेलनि। नव ताजगी अबिते भूखो जगलनि। रविन्द्र कोठरीसँ निकलि पिताक कोठरी दिस बढ़ला। ताबे महेन्द्र सेहो पिता लग आबि भोजन करैक आग्रह केलकनि।

एम्हर सासु लग दुनू पुतोहु बैसि एक-दोसराक खनदान, परिवार आ मानवीय सम्बन्ध बनबैले वस्तु-जात एकत्रित करए लगली। गामक देहाती जिनगी बितौनिहारि पचपन बर्खक माए आ बजारू जिनगी जीनिहारि दुनू दियादनी पुतोहु, तीनूक मन अपन-अपन जिनगीक रस्तासँ भ्रमण करैत रहनि। मुदा सासु-पुतोहुक रस्तामे केतौ सम्बन्ध नै रहनौं मानवीय संवेदना आ जिनगीक बेवहारिक प्रक्रिया तीनूकेँ लग आनि सटबैत रहनि। बितल जिनगी तँ स्मृति आ इतिहास बनि जाइए मुदा अबैबला जिनगीक रूप-रेखा तँ अखने निर्धारित होएत। एककेँ जिनगीक पचपन बर्खक अनुभव, तँ दोसरि-तेसरि आधुनिक शिक्षासँ लैश। सोचमे दूरी रहनौं, सभ एक्के परिवारक छी, ई विचार सभकेँ बलजोरी खींचि कऽ एकठाम सटबैत रहनि। सासु श्यामाक मनमे प्रश्न उठै छेलनि जे हम हजारो कोस हटि कऽ बेटा-पुतोहुसँ दूर रहै छी, हमरा पुतोहुक सुख केते हएत? समाजमे देखै छी जे अस्सी बर्खक बूढ़-पुरानसँ लऽ कऽ पेटक बच्चा धरि एकठाम रहि हँसी-खुशीसँ जिनगी बितबैए। खाएब-पीब कोनो वस्तु नै छी। किएक तँ जेकरा हम नीक वस्तु बुझै छिऐ ओहो भोज्य-पदार्थ छी आ जेकरा दब वस्तु बुझै छिऐ ओहो भोज्ये-पदार्थ छी। हँ, ई विषमता समाजमे जरूर छै जे कियो नीक वस्तु थारीमे छूता कऽ उठैए जे कुकुर खाइत आ कियो भुखल सुतैए। मुदा हम देखै छी हजारो किसिमक भोज्य-वस्तु घरतीपर पसरल अछि जेकरा ने सभ चिन्हैए आ ने उद्यम कऽ आनए चाहैए। जखनि कि जमुना आ सुजाता सोचैत जे परिवारकेँ आगू बढ़बैले सन्तान जरूरी अछि। नोकर-दाइक सहारासँ छोट बच्चाक पालन हएत सेवा नै किएक तँ माए अपन बच्चाकेँ दूधो नै पीआबै चाहैत। बच्चा जखनि स्कूल जाइ जोकर हएत तखनि आवासीय विद्यालयमे भरती करा शिक्षा-दीक्षा दइत। शिक्षा प्राप्त केला पछाति कमाइक जिनगीमे प्रवेश करत। जिनगीक एक चक्र ईहो छी।

जे जमुना आ सुजाताक मनमे चकभौर लइ छेलनि। श्यामाक मन अपन पारिवारिक खनदानी फुलवाड़ीमे औनाइ छेलनि। ने आगूक रस्ता

देखै छेली आ ने पाछूक।

आगूक रस्ता कठिन अछि आकि सघन आकि संवेदन रहित वा सहित? एक-दोसर मनुखक सम्बन्ध हेबाक चाहिऐ, ओ जरूरीए नै अनिवार्य आ आवश्यक सेहो अछि। जे मनुख ऐ धरतीपर जनम लेलक, ओकरो ओतेक जीबैक अधिकार छै जेते दोसरकेँ छै। जौं से नै अछि तँ लड़ाइ-दंगाकेँ कोन शक्ति रोकि सकैए? मुदा प्रश्न जटिल अछि, आइ धरिक जे दुनियाँक मनुखक जिनगी बनि गेल अछि ओ एतेक विषम बनि गेल अछि, जे सामूहिक मनुखक कोन बात जे दू सहोदर भाइक बीच समता रहब कठिन भऽ गेल अछि। तँए की?

भोजनालय। नमगर-चौड़गर कोठरी। देबालपर बहुरंगी फूलक चित्र बनौल। सुन्दर हल्का गुलाबी रंगसँ कोठरी ढोंरल, एअरकंडीशन लागल। गोलनुमा नमगर-चौड़गर खाइक टेबुल। जेकर चारूकात खेनिहार लेल पनरहोसँ बेसीए कुरसी लागल। देबालक खोल्हियामे साउण्ड बॉक्स। जइसँ मधुर स्वरमे गीतक ध्वनि बहराइत।

भोजन करैक बाजारू बेवस्थाकेँ महेन्द्र अपनौने। मुदा माता-पिताक एलासँ आइ महेन्द्र धर्मसंकटमे पड़ि गेला। मोने-मन सोचए लगला जे हम दुनू भाँइ आ दुनू दियादनी चारू गोटे तँ एक्के टेबुलपर खाइ छी मुदा माए तँ बाबू सोझहामे नै खेती। तेतबे नै हमरा दुनू भाँइक संगे तँ ओ खेता मुदा दुनू पुतोहुक संग तँ नै खेता। अगर जौं जोर करबनि तँ कहीं बिगड़ि ने जाथि। जौं बिगड़ि जेता तँ आरो विचित्र भऽ जाएत। तखनि की करब नीक होएत? गुनधुनमे महेन्द्र। अनासुरती मनमे एलनि जे माएसँ विचार पूछि लियनि। माए लग जा पुछलखिन-

''माए, हमसब तँ एक्के टेबुलपर खाइ छी मुदा...?''

महेन्द्रक बात सुनि माए बुझबैत कहलखिन-

''बौआ, हमरो उमेर पचास-साठि बर्खक भेल हएत। आइ धरि जइ काजकेँ अधला बुझलिऐ, आब केना करब? केते दिन आब जीबे करब! तइले किए अपन बाप-दादाक बतौल रस्ता तोड़ब। एहेन बेवहार सिरिफ अपनेटा परिवारमे तँ नै अछि, समाजोमे छै। जाधरि ऐठाम छी ताधरि मुदा गाम गेलापर तँ फेर वएह

बेवहार रहत। तइले एहेन काज करब उचित नै। गामक जिनगीक अनुकूल चलनि अछि। कोनो चलनि समाज आ जिनगीक अनुकूल होइए, जे जिनगी लेल नीक होइए। भलहिं दोसर तरहक जिनगी जीनिहारकें ओ अधला लगै।''

माएक विचार सुनि महेन्द्र दू तोर कऽ खाएब नीक बुझलक। पहिल तोरमे अपने, जुगेसर आ पिता तथा दोसर तोरमे बाँकी सभ कियो।

भोजन करिते रमाकान्त हफुआए लगला। जुगेसर सेहो हफुआए लगल। हाथ-मुँह धोइ दुनू गोटे सुति रहला।

तीन रातिक जगरना। तैपर अन्नक निशाँ सेहो लगल रहनि। एक्के बेर चारि बजे रमाकान्तकेँ निन्न टुटलनि। नीन टुटिते, सुतले-सूतल रमाकान्त देबालक घड़ीपर नजरि देलनि। चारि बजैत। भाँग पीबै बेर भऽ गेल रहनि। भाँगक आदति रमाकान्तकेँ पहिनेसँ रहनि। तँए मद्रास अबैए काल झोरामे भाँगक पत्ती लऽ नेने रहथि। श्यामा सेहो बूझि गेली जे हुनका भाँग पीबैक बेर भऽ गेलनि। भाँगक सभ समान- मरीच, सोंफ अननैए छी। सिरिफ पीसैक जरूरति अछि। पलंगपर सँ उठि झोरा खोलि भाँगक सभ समान निकालए लगली। तैबीच सुजाता ब्राण्डीक किलोबला बोतल आ गिलास नेने सासु लग आबि ठाढ़ भऽ गेली। खाइए बेरमे सासु पुतोहकेँ कहि देने रहथिन जे बुढ़ा सभ दिन चारि बजे पीसुआ भाँग पीबै छथि। भाँगक सम्बन्धमे सुजाता अनाड़ी रहथि। किछु ने बूझल रहनि। मुदा ब्राण्डीक सम्बन्धमे तँ बूझल रहनि। तँए सुजाता, श्यामा आ रमाकान्त सभ अपन-अपन ढंगसँ साकांछ रहथि।

पलंगपर सँ उठि रमाकान्त जुगेसरकेँ जगा टँकीपर मुँह-हाथ धोइले गेला। खट-खुट अवाज सुनि श्यामा बूझि गेली। बोतल लऽ सुजाता तैयारे रहथि। मुदा सुजाताक मनकेँ मिथिलाक संस्कृति झकझोड़ैत रहनि। किएक तँ मिथिलाक संस्कृतिक बेवहारिक पक्ष जनैत नै छेली तँए जहिना अनभुआर जंगलमे कोनो जानवर औनाइत रहैत तहिना सुजातो। मोने-मन सोचथि जे ऐठाम जहिना पुतोहु ससुरक बीच बेवहार होइए तहिना मिथिलोमे होइत आकि नै। दोसर प्रश्न उठनि जे पढ़ल-लिखल समाजमे तँ पुरान बेवहारो बदलि नव रूप लऽ लइए। तँए सुजाता हाथमे ब्राण्डीक

बोतल आ गिलास रखने विचारक दुनियाँमे बौआइ छेली। रमाकान्तकेँ भाँग पीबैक समए भऽ गेल छेलनि तँए विचारमे मधुरता आबि गेल छेलनि। श्यामा आबि रमाकान्तकेँ कहलकनि-

> ''अखनि भाँग नै पिसलौं हेन। पुतोहुजनी एकटा बोतल रखने छथि से की कहै छियनि?''

भाँग नै पीसब सुनि रमाकान्तक मनमे कनी क्रोध आबए लगलनि मुदा बोतलक नाओं सुनि दबि गेलनि। मुस्कीआइत रमाकान्त पत्नीकेँ कहलखिन-

> ''बेटी आ पुतोहुमे की अन्तर छै। जहिना बेटी तहिना पुतोहु। ताहूमे छोटकी पुतोहु, ओ तँ कोरैला बेटी सदृश्य होइत। एक तँ दुनियाँमे कोनो सम्बन्ध अधला नै छै मुदा जखनि ओ सीमामे रहैए तखनि। जखनि सीमाक उल्लंघन लोक करए लगैत तखनि लाज आ परदाक जरूरी भऽ जाइए। जे परम्परा बनि आगूमे ठाढ़ भऽ गेल अछि। मुदा ओहनो पछिला बेवहार निपुआंग मरि नहियेँ गेल अछि। तँए नीक बेवहार जिनगीमे धारण करब अधला तँ नै।''

रमाकान्तक बात सुजातो सुनै छेली। मोने-मन खुशीओ होइ छेली जे ज्ञानवान ससुर छथि। मुदा बिना सासुक सहमतिए तँ आगू बढ़ब उचित नै। तँए बोतल-गिलास नेने अढ़मे ठाढ़ छेली। रमाकान्तक विचार सुनि श्यामा सुजाताकेँ कहए आगू बढ़ली। पर्दाक अढ़मे सुजाता ठाढ़। कहलखिन-

> ''जाउ, भगवान अहाँकेँ भोलेनाथ ससुर देने छथि। मुदा ससुर जकाँ नै पिता जकाँ बेवहार करबनि।''

बामा हाथमे बोतल आ दहिना हाथमे गिलास नेने सुजाता ससुर लग आबि मुन्ना खोललनि आकि सौंसे कोठरी महक पसरि गेल। महकसँ हवोमे मस्ती आबि गेल। एक गिलास पीब रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन-

> ''जुगेसर, तोहू एक गिलास पीबह।''

जुगेसर-

“कक्का, अहाँ लग बैसि केना पीब?”

“अखनि, ने तूँ छोट छह आ ने हम पैघ छी। सभ मनुख छी। मनुख तँ मनुखे लगमे रहि ने जिनगी बितौत।”

तैबीच सुजाता गिलास जुगेसरो दिस बढ़ौलनि। जुगेसर एक्के सुढ़िमे सौंसे गिलास पीब गेल। पेटमे ब्राण्डी पहुँचिते गुदगुदबए लगलै। दोसर गिलास पीबिते रमाकान्त सुजाताकेँ कहलखिन-

“बेटी, किछु निमकी खाइले लाउ?”

रमाकान्तक आढ़ति सुनि सुजाता गिलास-बोतलकेँ टेबुलपर रखि कीचेनसँ मद्रासी भुजिया दूटा पलेटमे नेने एली। एकटा पलेट रमाकान्तक आगूमे आ दोसर जुगेसरकेँ आगूमे देलकनि। दू-चारि फक्का भुज्जा फाँकि रमाकान्त फेर दू गिलास ब्राण्डी चढ़ा लेलनि। ओना भाँगक निशाँ रमाकान्तकेँ बूझल जे पीलाक उपरान्त घंटा-दू-घंटा पछाति निशाँ अबैए मुदा ब्राण्डीक निशाँ तँ पीबिते आबि गेलनि। ओना जुगेसर दुइए गिलास पीलक मुदा तहीमे मन उनटि गेलै। सौंसे बोतल पीब रमाकान्त ढकार केलनि। सुजाताकेँ कहलखिन-

“बेटी, इलाइची देल पान खुआउ?”

सुजाताकेँ बूझल। सासु पतिक खान-पानक सम्बन्धमे सभ बात कहि देने रहथिन। दू खिल्ली पान, सुअदगर तेज जरदा डिब्बा, इलाइची, सेकल सुपारीक कतरा पलेटमे नेने सुजाता आबि रमाकान्तक आगूमे रखि देलखिन। शराबक रंगमे जहिना रमाकान्त तहिना जुगेसर रंगि गेला। बजैले दुनूक मन लुसफुसाइत। पान मुँहमे लैत रमाकान्त सुजाताकेँ पुछलखिन-

“बेटी, अहाँ डाक्टरी केना पढ़लौं?”

ससुरक सबाल सुनि सुजाता बगलक कुरसीपर बैसि संकुचित भऽ कहए लगलनि-

“बाबू जी, हमर पिता आ माए अपन महल्लाक कपड़ा साफ करै

छेलथि। सभ दिना काज छेलनि। ऐसँ जेना-तेना गुजर चलै छेलनि। एक्केटा घर रहए। अनके कलपर नहेबो करै छेलौं आ पानिओ पीबै छेलौं। पिता ताड़ी पीबथि। एक दिन साँझू पहरमे ताड़ी पीब अबैत रहथि। बहुत बेसी निशाँ लागि गेल रहनि। रस्तापर एकटा खाधि-गढ़ा रहए। ओइ खाधिमे ओ खसि पड़ला। तखने समए एकटा ट्रक, बिना इजोतेक पास करैत रहए। ट्रक हुनका ऊपरे देने टपि गेलै कुड़कुट-कुड़कुट सौंसे शरीरक हड्डी भऽ गेलनि। हम सभ बुझबो ने केलिऐ। दोसर दिन भिनसरमे हल्ला भेलै। हमहूँ माए, भाए तीनू गोटे देखए गेलौं। देहक दशा देखि चिन्हबो ने केलियनि। मुदा कपड़ा आ चप्पल देखि मन खुट-खुट करए लगल। तीनू गोटे दुनू वस्तुकेँ चिन्हि गेलिऐ। तखनि हुनका उठा कऽ आनि जरौलियनि।

बिच्चेमे जुगेसर बाजि उठल-

“अरे बाप रे।”

जुगेसरक ‘अरे बाप रे’ सुनि सुजातक आँखिमे नोर आबि गेलनि।

सुजाताक बात रमाकान्त आँखि मूनि कऽ सुनैत रहथि। जुगेसरक बात सुनिते आँखि खोललनि। हृदए पसीज गेल रहनि। ताड़ी पीआकक बात सुनि रमाकान्त मोने-मन विचारैत रहथि जे निशाँपान तँ हमहूँ करै छी मुदा ऐठामक जिनगी आ गामक जिनगीमे बहुत अन्तर अछि। तेतबे नै पेटबोनियाँ आदमीक सबाल सेहो अछि। हमरा सबहक ग्रामीण जिनगी शान्तिपूर्ण अछि। धनक अभाव तँ जहिना एतौ छै तहिना गामोमे छै। ऐठाम किछु गनल-गूथल उद्योग आ बेपारी कारोबारी अछि जे समृद्धशाली अछि। मुदा पेटबोनिओ ओकरे देखौंस करए चाहैए, जइसँ ओकर जिनगी अशान्त भऽ जाइ छै। ओइ अशान्तिकेँ शान्ति करै दुआरे लोक सड़ल-गलल निशाँपान करैए। जइसँ जिनगी बाटेमे टूटि जाइ छै। एते बात मनमे अबिते रमाकान्त पलंगसँ उठि पीक फेकैले निकलला। बाहरक नालीमे पान थूकड़ि कऽ फेक, टँकीमे कुरुड़ कऽ कोठरी आबि सुजाताकेँ कहलखिन-

“बेटा, चाह पिआउ?”

आँचरसँ आँखि पोछैत सुजाता चाह बनबैले किचेन गेली। रमाकान्तक हृदैमे सुजाताक प्रति विशेष आकर्षण बढ़ि गेलनि। जेना हनुमानक हृदैमे राम-लक्ष्मण बैसल तहिना सुजातो रमाकान्तक हृदैमे एकटा छोट-छीन घर बना लेलकनि। रमाकान्तक प्रति सुजातोक हृदैमे तस्वीर बनए लगलनि। आइ धरि जे बात सुजातासँ कियो ने पुछने छेलनि से बात सुनि ससुरक हृदए पघलि गेलनि। जरूर रमाकान्तक हृदैमे सुजाता अपन जगह बना लेलनि। चाह आनि सुजाता रमाकान्तो आ जुगेसरोकेँ देलनि। हाथमे चाह लैते रमाकान्त अपन अस्तित्व बिसरि गेला। सुजाताक आँखिमे अपन आँखि दऽ एक-टकसँ देखए लगला। आद्र भऽ रमाकान्त सुजाताकेँ कहलखिन-

“ओइ समैक जिनगी ओहिना मन अछि आकि बिसरबो केलौं हेन?”

“बिसरब केना! ओ घटना तँ हमर जिनगीक इतिहासक एक महतपूर्ण कालखंड छी।”

“तेकर बाद की भेल?”

“हम, दू भाए-बहिन छी। एगारह बर्खक हम रही आ आठ बर्खक भाए। दुनू गोरे स्कूल जाइत रही। महल्लेमे स्कूल। भाए तँ छोट रहए तँए कोनो काज नै करै मुदा हम माएक संग कपड़ो खीची, परतीपर सुखेबो करी, लोहो दिऐ आ माइएक संग महल्लासँ कपड़ा आनबो करी आ दओ अबिऐ। ओइसँ जे कमाइ हुअए तइसँ गुजर करी। पढ़ल-लिखल परिवारसँ लऽ कऽ बनिया-बेकाल धरिक परिवारमे आबा-जाही रहए। पढ़ल-लिखल परिवारमे जखनि जाइ तँ फाटल-पुरान किताब मांगि ली। ओइसँ पढ़ैले किताब भऽ जाए। खाइक जोगार कमाइएसँ भऽ जाए। ऐ तरहेँ मैट्रिक फस्ट डिविजनसँ पास केलौं। जखनि मैट्रिकक रिजल्ट निकलल रहए, तखनि महल्ला भरिक लोक बाहबाही केलक। हमरो उत्साह बढ़ल। मनमे अरोपि लेलौं जे बी.एस.सी. करब। ओइ समए हमरा मनमे डाक्टरक विचार रहबे ने करए। केना रहैत? जेतबे बुधि रहए तेतबे ने सोचितौं।

कौलेजमे एडमीशन शुरू भेल। महेन्द्र भैयाक कपड़ा दइले माए-भाए आ हम तीनू गोरे भिनसुरके पहरमे एलौं। भैया ताबे अस्पतालेक क्वाटरमे रहैत रहथि। तखनि ओसारपर बैसि दाढ़ी बनबैत रहथि। माए कपड़ाक मोटरी रखि जमुना दीदीकेँ शोर पाड़ि कहलखिन-

"मलिकाइन, कपड़ा लिअ।"

हम-दुनू भाए-बहिन ठाढ़े रही। कोठरीसँ निकलिते दीदीक नजरि हमरापर पड़लनि। दीदी -जमुना- माएकेँ कहलखिन-

"बेटी पास केलक, मिठाइ खुआउ।"

जमुना दीदीक बात सुनि महेन्द्र भैया दाढ़ी बनेनाइ छोड़ि हमरा दिस मुड़ी उठा कऽ तकलनि। बिना किछु बजने थोड़े काल देखि, फेर हाँइ-हाँइ दाढ़ी काटए लगला। दाढ़ी काटि, दाढ़ी कटैक सभ समान सैंति कऽ रखि हमरा शोर पाड़लनि। हमरा मनमे कोनो तरहक विचार उठबे ने कएल। किएक तँ तेसरा-चारिम दिनपर बरबरि अबै छेलौं। दीदीकेँ भैया कहलखि, कनी चाह बनाउ। भैयाक बोली हम नै बुझलियनि मुदा दीदी बूझि गेलखिन। ओ पाँच कप चाह बनौलनि। दू कप अपने दुनू परानी आ तीन कप हमरा तीनू गोरेकेँ देलनि। पहिल दिन हम भैयाक डेरामे चाह पीने रही। भैया, नाओं पुछलनि, हम कहलियनि। मैट्रिकक रिजल्ट सम्बन्धमे पुछलनि। सेहो कहलियनि। भैया नाओं लिखबैसँ लऽ कऽ किताब-कापी धरिक भार उठबैत माएकेँ कहलखिन-

"स्कूल-कौलेज तँ लगे माने महल्लेमे अछि तँए बाहर जा कऽ पढ़ैक समसिए नै अछि। घरेपर रहि पढ़ि सकैए। तखनि स्कूल-कौलेजक खर्चासँ लऽ कऽ पढ़ैक सभ सामग्री धरिक खरच आइसँ दुनू भाए-बहिनक हम देब।"

भैयाक बात सुनि खुशीसँ हमर मन नाचि उठल। हम बड़ी काल धरि टकर-टकर भैयाक मुँह देखिते रहि गेलौं। जाधरि डाक्टर बनलौं ताधरि भैया सभ खरच दैते रहला।"

सुजाताक बात सुनि रमाकान्तक मनमे एलनि जे जौं कनीओं मदति गरीबकेँ कएल जाए तँ जिनगीक उद्धार भऽ सकैए। पितो बहुत केलनि।

बेटो केलक। बीचमे हम तँ किछु नै केलौं। ओना दोसरा लेल रमाकान्तो बहुत किछु केनौं रहथि आ करबो करथि। मुदा सभ केलहा बिसरि गेला।

रातिक आठ बजि गेल। एका-एकी तीनटा गाड़ी आएल। महेन्द्र अपन गाड़ी कोठरीमे रखि, कपड़ा बदलि, सोझहे पिता लग एला। महेन्द्रकँ देखिते रमाकान्त कहलखिन-

> ''बौआ, हम बेसी दिन नै अँटकब। हम तँ दस गोटेमे समए बितबैबला छी। ऐठाम असगरमे नीक नै लागत।''

महेन्द्र-

> ''गाड़ीक झमारल छी तँए पहिने चारि दिन अराम करू। तेकर बाद देखि-सुनि कऽ जाइक विचार करब।''

OOO

५

मद्रास एला रमाकान्तकेँ आइ दस दिन भऽ गेलनि। दस दिन केना बितलनि से बुझबे ने केला। ऐ दस दिनक बीच महेन्द्र अपने गाड़ीसँ तीनू गोटेकेँ उदकमंडलम्, कोडाइकनाल आ एकडि हिलस्टेशन सहित शुचीन्द्रम, रामेश्वरम्, तिरुचेंदूर, मदुराइ, पलनी, तिरुचिरापल्ली, श्रीरंगम, तंजोर, कुम्बकोणम, नागोर, वेलांकण्णि, वैत्तीश्वरन कोइल, चिदम्बरम्, तिरुवण्णामलै, कांचीपुरम, तिरुत्तणि और कन्याकुमारी घुमा देलकनि। मुदा अपना सभसँ भिन्न रीति रेवाज, बेवहार आ जीबैक ढंग ओइठामक लोकक बूझि पड़लनि। रमाकान्तकेँ एकटा बात जरूर बूझि पड़लनि जे अपना सभसँ ओ सभ अधिक मेहनतिओ आ इमानदारो अछि।

भारतक आजादीक उपरान्त राज्य पुनर्गठन अधिनियमक अन्तर्गत चौदह जनवरी उन्नैस सए उनहत्तरिमे मद्रास राज्यक नाओं तमिलनाडु राखल गेलै। पुरना केरलक किछु हिस्सा आ आंध्रप्रदेशक किछु हिस्सा जोड़ि कऽ ऐ राज्यक निर्माण भेल।

तमिलनाडु द्रविड़ सभ्यताक केन्द्र अदौसँ रहल अछि। ई.पू. चारिम शताब्दीमे चोल, पाण्ड्य आ चेर राजवंशक समैमे द्रविड़ सभ्यता अपन चरम सीमापर फुलाएल-फड़ल।

तेरहमी शताब्दीक आरंभमे ऐठाम काकतीयक शासन रहल। तेरह सए तेइस ईस्वीमे दिल्लीक तुगलक सुल्तान काकतीय शासककेँ भगौलक। गोलकुंडाक कुतुबशाही सुल्तान अखनुका हैदरावादक न्यों लेलक। सम्राट औरंगजेब सुल्तानकेँ हरा आसफ जा केँ गवर्नर बना देलक। मुगल शासनक आखिरी समैमे आसफ जा अपनाकेँ निजामक उपाधि धारण कऽ स्वतंत्र शासक घोषित कऽ लेलक।

सोलह सए उनचालीस ईस्वीमे ईस्ट इंडिया कम्पनीक पएर मद्रासमे जमि गेल ताधरि देशक अधिकांश भागमे अंग्रेजक अधिकार भऽ गेल छेलै। तमिलनाडुक पूबमे बंगालक खाड़ी, दछिनमे हिन्द महासागर, पछिममे केरल आ उत्तरमे कर्नाटक आ आन्ध्रप्रदेश अछि।

पैछला राति गप-सप्प करैत सभकेँ डेढ़ बजि गेलनि। गपक विषैओ नम्हर सात दिनक देखल मद्रास छेलनि।

अढाइ बजे भोरमे एकठाम गाड़ी दुर्धटना भऽ गेलै। चारू गोट डाक्टरकेँ फोन एलनि जे जलदी दुर्घटनाक जगहपर अबियौ। फोन सुनि महेन्द्र तीनू गोटे रविन्द्र, जमुना आ सुजाताकेँ जानकारी दैत कहलखिन-

“जल्दी तैयार भऽ चलै चलू।”

एक्के गाड़ीसँ चारू गोटे विदा भेला। दुर्घटनाक जगह पहुँच महेन्द्र देखलखिन जे गाड़ी एकटा सड़कपर राखल रौलरसँ टकरा गेल अछि। जइसँ थौआ-थाकर भेल अछि। गाड़ीमे एक्के परिवारक आठ गोटे सवार रहथि। उद्योगपतिक परिवार। एकटा जवान आ एकटा बच्चाक मृत्यु भऽ गेल छेलै। एकटा बुढ़क माथ फटि गेल रहनि, जइसँ अड़-दर्र बजैत रहथि। दोसर महिलाक छाती टूटि गेल रहनि। मुदा वायपर ओहो बजै छेली। एकटा जुआन महिलाक दुनू जांघ टूटि गेल रहनि। दूटा ढेरबा बचियाक एक-एकटा आँखि फुटि गेल रहनि आ एक-एकटा डेन टूटि गेल रहनि। अबोध बच्चाकेँ किछु नै भेल छेलै। डॉ. महेन्द्रकेँ पहुँचिते धाँइ-धाँइ अस्पतालक आनो-आनो डाक्टर, नर्स आ स्टाफो सभ आबए लगला। थाना पुलिससँ लऽ कऽ जिला पुलिस धरि पहुँच गेलै। डाक्टर सभ रोगी सभकेँ देखि विचार केलनि जे अस्पताले लऽ जेनाइ नीक होएत। डाक्टर सबहक संगमे सिरिफ आलेटा। ने कोनो दबाइ आ ने कोनो औजार रहनि।

आठो गोटेकेँ, थानोक पुलिस आ अस्पतालोक कर्मचारी, उठा-पुठा कऽ अस्पताल अनलकनि। अस्पतालमे जाँच-पड़ताल होइते समए दू गोटेक मृत्यु भऽ गेलै। बाँकीक उपचार चलए लगलै।

साढ़े पाँच बजे चारू गोटे महेन्द्र डेरा पहुँचला। गाड़ीक हड़हरेनाइ सुनि रमाकान्तोक निन्न टूटि गेलनि।

सुतैक समए नै देखि चारू गोटे गाड़ीसँ उतरि अपन-अपन नित्य-कर्ममे लगि गेला। ओछाइने पर पड़ल-पड़ल रमाकान्त सोचए लगला जे आइ एगारहम दिन छी मुदा एक्को-टा पोता-पोतीक मुँह नै देखि सकलौं। जइ परिवारमे पाँच-पाँचटा पोता-पोती रहत ओइ परिवारक बच्चासँ भेँट नै हुअए, केते दुखक बात छी? माए-बाप, दादा-दादीक सिनेह बच्चाक प्रति की होइ छै तेकर कोनो नामो-निशान नै देखि रहल छी। जइ बच्चाकेँ माए-बापक सिनेह नै भेटितै, ओइ बच्चाकेँ माता-पिताक प्रति

केहेन धारणा बनतै? हँ, ई बात जरूर जे दुनियाँक सभ मनुख-मनुख छी, तँए सबहक प्रति सभकेँ सिनेह हेबाक चाहिऐ। मुदा जइ परिवेशमे हम सभ जीब रहल छी, जैठाम बेक्तिगत सम्पति आ जवाबदेहीक बीच मनुख चलि रहल अछि, तैठाम सिनेही तँ खंडित होइए। मनुखक जिनगी स्थायी नै, अस्थाइ होइए। उमेरक हिसाबसँ शरीर क्रियाशील रहैए। जहिना बच्चाक उत्तरदायित्व माए-बापपर रहै छै तहिना रोगसँ ग्रसित वा अधिक बएस भेलापर जखनि शरीरक अंग शथिल हुअ लगै छै, तखनि तँ दोसरेक सहाराक जरूरति होइ छै। जौं से नै होइ तँ जिनगी कष्टमय हेबे करत। लोक एक राज्यसँ दोसर राज्य, एक देशसँ दोसर देश कमाइले जाइए। किएक? अहीले ने जे अपनो आ परिवारोक जिनगी चैनसँ चलत...। रंग-बिरंगक प्रश्न सबहक बीच रमाकान्त पड़ल रहथि।

महेन्द्रकेँ तीन आ रविन्द्रकेँ दू सन्तान। दुनू मिला कऽ पाँच भाए-बहिन। महेन्द्रक जेठ बेटा हाइ स्कूलमे पढ़ैत, बाँकी चारू नर्सरीमे। महेन्द्रक जेठ बेटा रमेश हाइ स्कूलक होस्टलमे रहैए आ बाँकी चारू आवासीय स्कूलमे। महिना दू महिनापर महेन्द्र अपनेसँ जा कऽ खरचा पहुँचबै छथि।

बाबा-दादीक जोर केलापर बच्चा सभकेँ भेँट करैक कार्यक्रम महेन्द्र बनौलनि। रवि दिन स्कूलो बन्न रहतै, तँए भेँट-घाँट करैमे सुविधा सेहो हेतनि। सात बजे डेरासँ चलबाक कार्यक्रम बनल। रमाकान्त, श्यामा आ जुगेसर समैसँ पहिने तैयार भऽ गेल छला मुदा भरि रातिक जगरना दुआरे महेन्द्र पछुआएल रहथि। ओछहीसँ देह भँसिआइत रहनि। मुदा निन्न तोड़ैक दबाइ खा रमाकान्त लग आबि कहलखिन-

> "बाबू, हम तँ भरि राति जगले रहि गेलौं। जखनि ओछाइनपर गेलौं, निन्न पड़लो ने रही आकि फोन आबि गेल जे एकटा गाड़ीक दुर्घटना भऽ गेलै, जइमे सबार एक्के परिवारक आठ गोटे छला, ओ पैघ उद्योगपतिक परिवारक छल। हुनके सभकेँ देखैत-सुनैत भोरमे एलौं।"

बिच्चेमे जुगेसर बाजल-

"मरबो केलइ?"

“हँ। जे दुनू मुख्य कारोबारी छला ओ मरि गेला। एक गोटेकेँ ब्रेन हेम्रेज भऽ गेलनि। आब ओ सभ दिन पगलाएले रहती। एक गोटेकें छातीक हड्‌डी थकुचा भऽ गेल छन्हि, ओ दू-चारि मासक मेहमान छथि। तीनटा अधमरू भऽ कऽ जीता। एकटा चारि सालक बच्चाटा सुरक्षित अछि।”

रमाकान्त महेन्द्रक बातो सुनथि आ मोने-मन सोचबो करथि जे यएह छी जिनगी। अहीले लोक एते नीच-सँ-नीच काजपर उतरि मनुखकेँ मनुख नै बुझैए। अनका बुझबैले धरमक नाटक रचि पूजा-पाठ, कीरतन-भजन करैए। हजारो-लाखो रूपैआ खरच कऽ पाथरक मूर्ति स्थापित करैए। नीक-नीक प्रसाद चढ़बैए। मुदा जइ मनुखकेँ पेटमे अन्न नै, देहपर वस्त्र नै, रहैक घर नै आ जीबैक कोनो ठेकान नै छै, ओकरा तँ देखिनिहारो कियो नै। यएह छी कर्मकाण्डक आडम्बर आ चक्रव्यूह।

रमाकान्तकेँ गंभीर देखि मुस्की दैत महेन्द्र पुछलकनि-

“बाबू, नोकरीक जिनगीए एहेन होइ छै। एक रातिक कोन बात जे एकलखाइत पाँचो राति जागल रहब तैयो किछु नै बुझबै। एहेन-एहेन दबाइ सभ अछि जे खाइत देरी निन्न निपत्ता भऽ जाइए। जाबे अहाँ सभ चाह-पान करब ताबे हमहूँ तैयार भऽ जाइ छी।”

कहि महेन्द्र उठि कऽ तैयार होइले अपना कोठली चलि गेला।

चारू गोटे कारमे बैसि विदा भेला। महेन्द्र अपने ड्राइवरी करैत रहथि। दुनू स्कूल एक्केठाम। एक दोसरसँ थोड़बे हटल रहैए। चारू गोटे पहिने रमेशक होस्टल पहुँचला। छहरदेवालीक बीचमे होस्टल अछि। अबै-जाइक एक्केटा दरबज्जा, जइ दरबज्जामे लोहाक फाटक लागल ओतए एकटा दरमान बैसल। दरमान महेन्द्रकेँ चिन्हैत रहनि। किएक तँ मासे-मास ओ अबै छथि। चारू गोटे भीतर गेला। भीतरमे गार्जन सभले एकटा खुला घर बनल अछि, जइमे चारूकात कुरसी सजल। चारू गोटे ओइ घरमे बैसला। महेन्द्र रमेशकेँ समाद देलखिन। रमेश आबि पिताकेँ गोर लगलकनि। पिताकेँ गोर लागि रमेश ठकुआ कऽ आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। ने रमेश बाबा दादीकेँ चिन्हैत आ ने बाबा-दादी रमेशकेँ। ठकुआ

कऽ ठाढ़ देखि रमेशकेँ महेन्द्र कहलखिन-

"बौआ, बाबा-दादीकेँ गोर लगियनु।"

महेन्द्रक कहलापर रमेश तीनू गोटेकेँ गोर लगलकनि। शिष्टाचार निमाहैत तीनू गोटे असिरवाद दऽ देलखिन। मुदा रमाकान्तक मनमे तूफान उठि गेलनि। सोचए लगला, जे पोता चिन्हबो ने करैए ओ सेवा की करत? पढ़नाइ-लिखनाइ, सभ मनुख लेल जरूरी अछि। ऐसँ ज्ञान होइ छै, जे जिनगी जीबैक ढंग सिखबैए। मुदा जौं बच्चाकेँ परिवारसँ अलग जिनगी बना पढ़ौल-लिखौल जाए तँ ओ परिवारकेँ केना चिन्हत आ परिवारक दायित्वकेँ केना बूझत? परिवारोक तँ सीमा छै। एक परिवार पैछला पीढ़ीकेँ जोड़ि बनैत, जे संयुक्त परिवार कहबैए। जे मिथिलाक धरोहर छी। आ दोसर अपने लगसँ आगू बढ़ि बनैए, जे एकल परिवार कहबैए। जइमे लोक बापो-माएकेँ बीरान बूझि कुभेला करैए। जौं ऐ तरहक परिवारक संरचना हुअ लगत तँ बापो-माएकेँ धिया-पुतासँ कोन मतलब रहतै। तखनि समाजक की दुर्दशा हेतै? जौं से हेतै तँ मनुख आ जानवरमे अन्तरे की रहतै? अखने देखि रहल छी जे अपन खून रहितो बूझि पड़ैए जे जहिना हाट-बजार वा मेला-ठेलामे हजारो मनुख देखलोपर अनचिन्हारे-अनचिन्हार बूझि पड़ैत तहिना तँ अखनो भऽ रहल अछि। ऐसँ नीक जे जहिना मनुखक समूहसँ परिवार बनैत आ परिवारक समूहसँ समाज बनैत तँ समाजेक सदस्यकेँ किएक ने अंगीकार कएल जाए, जइसँ जिनगी हँसैत-खेलैत बीतैत रहत। पिताकेँ गुम्म देखि महेन्द्र कहलकनि-

"बाबू, ऐठामसँ चलू। ऐठाम सभ बच्चाक रुटिंग बनल छै। अगर अपना सभ बेसी समए अँटकबै तँ बच्चाक रूटिंग गड़बड़ा जेतै।"

ममता भरल मनकेँ मारि रमाकान्त उठि कऽ ठाढ़ होइत कहलखिन-

"हँ, हँ, चलू। ओहू बच्चा सभकेँ देखैक अछि।"

रमेश चलि गेल आ ईहो चारू गोटे गाड़ीमे बैसि बढ़ला। नर्सरी विद्यालय लगेमे रहए। महेन्द्रकेँ दरमान चिन्हिते रहनि तँए, कोनो रोक-राक नहियेँ भेलनि। चारू बच्चाकेँ दरमान बजा अनलक। चारू बच्चा

आबि महेन्द्रकेँ गोर लगलकनि। गोर लागि चारू गोटे ठमकि गेल। हाथक इशारासँ रमाकान्त आ श्यामाकेँ देखबैत बच्चा सभकेँ महेन्द्र कहलखिन-

''बौआ, बाबा-दादी छथुन। गोर लगहुन।''

महेन्द्रक कहलापर चारू बच्चा तीनू गोटेकेँ गोर लगलकनि। रमाकान्तो आ श्यामोक मन तरे-तर टुटए लगलनि। मुदा की करितथि? सोचए लगला जे की सोचि ऐठाम एलौं आ की देखि रहल छी। आब एक्को दिन ऐठाम रहब उचित नै मुदा जखनि आबि गेलौं तखनि तँ बेटे-पुतोहुक विचारसँ ने गाम जाएब। किछु देखैले सेहो बाँकी अछि। टुटल मने रमाकान्त महेन्द्रकेँ कहलखिन-

''बच्चा सभकेँ देखिए लेलौं, आब ऐठामसँ चलू। गामक सुरता घींच रहल अछि। जल्दीए चलि जाएब।''

पिताक बात महेन्द्र नै बूझि सकला। जाधरि महेन्द्र गाममे रहला विद्यार्थीए छला। डाक्टर बनला पछाति मद्रासे चलि एला। जइसँ मद्रासेक परिवेशमे ढलि गेला।

बेर टगिते चारू गोटे ब्रह्मचारी आश्रम विदा भेला। बह्मचारी आश्रममे मंदिर नै। मात्र दूटा घर। एकटा घर धर्मशाला जकाँ सार्वजनिक आ दोसर घरमे ब्रह्मचारीजी अपने रहै छला। ओहीमे एक भाग सुतबो आ भानसो करै छथि। वर्तन-बासन सभ एक भागमे ओही घरमे रखने छथि। ब्रह्मचारीजी मिथिलेक। अद्वैत दर्शनक प्रकाण्ड पंडित छथि। ब्रह्मचारी जीक नस-नसमे अद्वैत दर्शन समाएल छन्हि। ब्रह्मचारी आश्रम लगमे रहितो महेन्द्र नै जनै छला। मुदा जखनि रामेश्वरम् गेल रहथि तँ ओतै एकटा पुजेगरी कहलकनि।

मुख्य मार्गसँ ब्रह्मचारीक आश्रम दस लग्गी पछिम। एकपेड़िया रस्ता तँए महेन्द्र मुख्य मार्गक कतबाहिमे गाड़ी लगा, चारू गोटे आश्रम दिस बढ़ला। आश्रमक सीमापर पहुँचिते रमाकान्तो आ महेन्द्रो आँखि उठा-उठा तजबीज करए लगला। ने कोनो तरहक तड़क-भरक आ ने लोकक भीड़ आश्रममे देखथि। घर तँ ईंटाक बनल छै मुदा धर्मस्थान जकाँ नै बूझि पड़ै छै। साधारण गृहस्तक घर जकाँ आश्रम। मुदा नव चीज दुनू गोटेकेँ बूझि पड़लनि। जे हम सभ मद्रासक जमीन छोड़ि मिथिला चलि एलौं।

ब्रह्मचारीजी करजानमे हाँसूसँ केरा गाछक सूखल डपौर सभ कटैत रहथि। केरा गाछक अढ़मे रहथि। तँए ने ब्रह्मचारीजी रमाकान्त सभकेँ देखलखिन आ ने रमाकान्त सभ ब्रह्मचारीजीकेँ। मुदा गाड़ीक अवाज ब्रह्मचारीजी सुनने रहथि। ओना गाड़ी तँ सदिखन चलिते रहैए, तँए गाड़ीक अवाजपर ब्रह्मचारीजी धियाने नै देलनि। अपन काजमे मस्त रहथि।

एक बीघा जमीन आश्रममे। ओइमे सभ किछु बनल रहै। दू कट्ठामे दुनू घर, आँगन आ गाएक थैर रहनि। चारि कट्ठाक एकटा छोटेटा पोखरि। पाँच कट्ठामे गाछी-कलम। दू कट्ठामे गाए लेल घासऽ खेती आ सात कट्ठामे अन्न उपजैए।

सभसँ पहिने चारू गोटे पोखरि घाटपर पहुँचलथि। पोखरि घाट पजेबा-सिमटीसँ बनल। घाटपर ठाढ़ भऽ चारू गोटे पोखरिकेँ हियासि-हियासि देखए लगला। पोखरिक किनछरिमे पान-सातटा मिथिलेक बगुला चरौर करैत रहए। एक टकसँ रमाकान्त बगुलाकेँ देखि सोचए लगला जे जहियासँ ऐठाम एलौं, आइए अपन इलाकाक बगुला देखलौं। ओना बगुला तँ एतौ अछि मुदा मिथिलाक बगुला तँ दोसरे चालि-ढालिक होइए। बगुला परसँ नजरि हटा पोखरि दिस देलनि। पोखरिमेँ दस-बारहटा कुमहीक छोट-छोट समूह फूल जकाँ छिड़ियाएल रहए। जे हवाक सिहकीमे नचैत। तैबीच दूटा पनिडुम्मी भुक दनि जागल, जेकरा अपना सभ पिहुओ कहै छिऐ। पिहुआकेँ तजबीज करिते रहथि आकि एक जेर सिल्ली उड़ैत आबि पोखरिमे बैसल। तैबीच जुगेसर रमाकान्तकेँ कहलकनि-

> "कक्का, ई तँ अपने इलाकाक पुरनि गाछ छी। फूलो ओहने बूझि पड़ैए।"

जुगेसरक बात सुनि रमाकान्त मुड़ी उठा पुरनिकेँ देखि कहलखिन-

"हँ, हौ जुगेसर। छी तँ कमले।"

हाथ-पएर धोइ चारू गोटे घाटक ऊपरका सीढ़ीपर आबि ब्रह्मचारीजीकेँ हियाबए लगला। ब्रह्मचारीजीकेँ नै देखि रमाकान्त सोचए लगला जे भरिसक ब्रह्मचारीजी केतौ गेल छथि। तैबीच जुगेसरक नजरि करजान दिस गेल। करजानमे ब्रह्मचारीजीकेँ देखि जुगेसर रमाकान्तकेँ

कहलकनि-

> “काका, एक गोटे करजानमे काज कऽ रहल अछि। हम जा कऽ पूछि लइ छियनि।”

जुगेसरक बात सुनि रमाकान्तो आ महेन्द्रो आँखि उठा कऽ देखलनि। मुदा ब्रह्मचारीजीक छुछुन चेहरा देखि रमाकान्तकेँ भेलनि जे कियो जन-मजदूर काज करैए। तैबीच ब्रह्मचारीए जीक कानमे रमाकान्तक अवाज पहुँचलनि, कानमे अवाज पहुँचिते ब्रह्मचारीजी हाथक हँसुआ नेनै पहुँचला।

ब्रह्मचारीजी अनेको भाषा आ बोलीक जानकार छथि। चारू गोटेकेँ देखि ब्रह्मचारीजी बूझि गेला। ई मिथिलेक छथि किएक तँ जुगेसर आ रमाकान्तकेँ मिथिलेक ढंगसँ धोती पहिरने देखलनि। मुदा महेन्द्रकेँ देखि तत-मतमे पड़ल रहथि। श्यामाक साड़ी पहिरब देखि ब्रह्मचारीजीक मन मानि गेलनि जे ई सभ मिथिलेक छथि। रमाकान्त ब्रह्मचारीजीकेँ नै चीन्हि पुछलखिन-

> “ब्रह्मचारीजी केतए छथि?”

ब्रह्मचारीजी साधारण धोती पहिरने रहथि। सेहो फाँड़ बन्हने। देहपर गमछा रहनि। ने बाबरी छटौने आ ने दाढ़ी रखने रहथि। ने गरदनिमे कंठी-माला आ ने देहमे जनेउ। मुस्कीआइत ब्रह्मचारीजी उत्तर देलखिन-

> “अहाँ सभ मिथिलासँ एलौं। एना-ठाढ़ किए छी। चलू बैसि कऽ गप-सप्प करब। ब्रह्मचारीजी अपने आबि जेता।”

कहि ब्रह्मचारीजी पोखरि घाटपर हाँसू रखि हाथ-पएर धोइ अँगनेमे मोथीक बिछान बिछौलनि। चारू गोटेकेँ बैसाए ब्रह्मचारीजी घरसँ एक घौर केरा निकालि अनलनि। केराक रंग-रूप देखि रमाकान्त बूझि गेला जे ई तँ मिथिलेक गौरिया-मालभोग छी, अँठियाहा नै छी। घौरो नम्हर। गछपक्कू, अँठि-अँठि जुआएल छेलै। सुआदो नीक हेतै अपनेसँ पूर्ण जुआ कऽ पाकल अछि। धुकलाहा नै छी। केरा घौर बीचमे राखल आ सभ कियो हाथ बगने। जुगेसर सोचैत जे खेने छी, पेटमे जगहे ने अछि, नै तँ

सौंसे घौर खा जैतियनि। रमाकान्त ब्रह्मचारीजीकेँ कहलखिन-

"अखने, एक घंटा पहिने, भोजन केलौं, तँए खाइक क्षुधा नै अछि। मुदा ब्रह्मचारी आश्रमक परसाद छी, तँए दू छीमी जरूर खाएब।"

कहि दूटा छीमी ऊपरका हत्थासँ तोड़ि खेलनि।

रमाकान्तकेँ देखि महेन्द्रो आ जुगेसरो दू-दू छीमी तोड़ि खेलनि। श्यामा हाथ बगने चुपचाप बैसल छेली। श्यामाकेँ हाथ बागल देखि ब्रह्मचारीजी कहलखिन-

"बहिन, अहाँ जइ दुआरे हाथ बगने छी ओ हमहूँ बुझै छी। मुदा अपन मिथिलामे दुनू चलनि अछि। पति आगूमे पत्नीकेँ नै खाएब आ बिआहक प्रकरणमे समाजक माए-बहिन मिलि मौहक करै छथि। जइमे पति-पत्नीकेँ संगे खुऔल जाइए। तँए अहूँकेँ लजेबाक नै चाही। ई तँ सहजे आश्रम छी। दोसर धर्मस्थानो छी।"

ब्रह्मचारीजीक विचार सुनि श्यामाक मन डोललनि मगर बेवहार मनकेँ रोकै छेलनि। असमंजसमे श्यामाकेँ देखि जुगेसर फनैक कऽ बाजल-

"काकी, जब हमरा घरनीकेँ हाथ ढेकीमे कटि गेल रहनि, तखनि हम अपने हाथे खुआबियनि। अहाँ तँ सहजे वृद्ध भेलौं।"

जुगेसरक बात सुनि रमाकान्त मुड़ी झुका लेलनि। दू छीमी केरा श्यामो खेलनि। चारू गोटे केरा खा, हाथ-मुँह धोलनि।

ब्रह्मचारीजी रमाकान्तकेँ पुछलखिन-

"ऐठाम अपने केना-केना एलिऐ?"

महेन्द्रकेँ देखबैत रमाकान्त कहलखिन-

"ई जेठ बेटा छथि। डाक्टरी पढ़ि, नोकरी करए ऐठाम चलि एला। सालमे एक बेर अपनो गाम जाइ छथि। बाल-बच्चा आ स्त्री आइ धरि गाम नै गेलखिन। ओहो सभ अहीठाम रहै छथि।

तँए दुनू परानीक मनमे आएल जे देशो-कोस आ बच्चो सभकेँ देखि आबी। तँए एलौं?''

महेन्द्र दिस देखि ब्रह्मचारीजी पुछलखिन-

''केते दिनसँ ऐठाम छी?''

कनीकल गुम्म रहि समए मन पाड़ि महेन्द्र कहलकनि-

''ई बाइसम बरख छी।''

''एते दिनसँ ऐठाम रहै छी मुदा कहियो भेँट-घाँट नै भेल।''

अपन विबसता देखबैत महेन्द्र उत्तर देलखिन-

''एक तँ नोकरी करै छी तैपर डाक्टरी एहेन पेशा छी जे भरि मन कहियो अरामो नै कऽ पबै छी। घुमनाइ-फीरिनाइक कोन बात। मुदा तैयो कहुना ने कहुना समए निकालि ऐबो करितौं से बुझले नै छल।''

''आइ केना एलौं?''

''चारिम दिन रामेश्वरम् गेल रही, ओइठाम एकटा पुजेगरी अपनेक सम्बन्धमे कहलनि।''

महेन्द्रक बात सुनि ब्रह्मचारीजी मुस्कीआइत कहलखिन-

''मासमे एक बेर हमहूँ रामेश्वरम् जाइ छी। समाजरूपी समुद्रक कातमे स्थापित रामेश्वर लग जाए समुद्रमे उठैत लहरिकेँ धियानसँ देखबो करै छी आ विचारबो करै छी। दुनू तरहक लहरि समुद्रमे उठैए- नीको आ अधलो। नीक लहरि देखि मन प्रसन्न होइए आ अधला देखि मन जरए लगैए। मुदा तैयो सोचैत रहै छी जे अधला लहरि बेसी उग्र नै हुअए। आ नीक लहरि सदिखन उठैत रहए।''

ब्रह्मचारीजीक विचार जेना महेन्द्रक सूतल बुधिकेँ जगा देलकनि। अनासुरती महेन्द्रकेँ हुअ लगलनि जे अन्हारसँ इजोतमे आबि गेलौं, आकि इजोतेसँ अन्हारमे चलि गेलौं। विचित्र स्थितिमे महेन्द्र पड़ि गेला। जइ

रूपमे माए-बाप आ जुगेसरकेँ अखनि धरि देखै छला ओ अनासुरती बदलए लगलनि। बीचसँ उठि महेन्द्र गाछी दिस टहलैले विदा भऽ गेला। ब्रह्मचारीजी बूझि गेलखिन।

रमाकान्त ब्रह्मचारीजीकेँ पुछलखिन-

"अपने मिथिला छोड़ि ऐठाम किए आबि गेलौं? जखनि कि ई इलाका दोसर धर्म, संस्कृति आ जातिक छी?"

मुस्कीआइत ब्रह्मचारीजी कहए लगलखिन-

"कोनो जाति पंथ आ संस्कृतिक आधार होइ छै जिनगी। जिनगीक आधार होइ छै मनुखक बुधि, विचार आ कर्म। जखने मनुख अपन सुपत कर्मसँ जिनगी ठाढ़ करैए तखने धर्म, संस्कृति, विचार आ आचार सभ किछु बदलि, सही मनुखक निर्माण करैए। जेकरा हम महामानव, धर्मात्मा आ उच्च कोटिक मनुख बुझै छी, जे मिथिलांचलमे क्षीण भऽ रहल अछि। सोलहन्नी मरल नै अछि मुदा दबाइत-दबाइत दुब्बर भऽ गेल अछि। मिथिलाक जे मूलबासी छथि हुनका अभिजात वर्ग वा कही तँ परजीवी वर्ण वा बाहरी लोक आबि सभ किछुकेँ बदलि, एहेन सामाजिक ढाँचामे ढालि देलकनि, जइसँ अदौसँ अबैत संस्कृति दाबि अभिजात संस्कृतिकेँ बढ़ा देने अछि। जिनगीक सच्चाइकेँ दाबि बनौआ जिनगीमे बदलि देने अछि, जइसँ लोकक जिनगी वास्तविकतासँ हटि बौआ गेल अछि। ओना निर्मूल नष्ट नै भेल अछि मुदा एतेक क्षीण जरूर भऽ गेल अछि जे नीक-अधलाकेँ बेराएब कठिन भऽ गेल अछि। हम तँ सभ मनुखकेँ मनुख बुझै छी। ने कियो कारी अछि आ ने कियो गोर। मुदा जिनगीक ढाँचा एहेन बनि गेल अछि जे स्पष्ट रूपमे एक-दोसरसँ पैघ आ छोट बनि गेल अछि। ओना देखबै तँ बूझि पड़त जे सभ, एक दोसरसँ पैघ आ एक-दोसरसँ छोट अछि। मगर मकड़ा जकाँ अपने पेटसँ सूत निकालि, जाल बुनि, ओइमे सभ ओझरा गेल अछि।"

ब्रह्मचारीजी आँखि बन्न केने बजिते रहथि आकि बिच्चेमे रमाकान्त

पूछि देलखिन-

"अपने तँ प्रकाण्ड पंडित छी तखनि मिथिलाकेँ किएक छोड़ि ऐठाम चलि एलौं?"

रमाकान्तक प्रश्न सुनि ब्रह्माचारीजी गंभीर होइत कहए लगलखिन-

"अहाँक बात हम मानै छी मुदा पढ़ल-लिखलसँ मुरुख धरिक विचार एहेन बनि गेल अछि जइमे नीक विचारकेँ सन्हिआइए नै देल जाइए। कहलो गेल छै जे 'असगर ब्रहस्पतिओ फूसि।' तेतबे नै जेकरा कल्याणक जरूरति अछि ओहो नीक रस्ता धड़ैले तैयारे नै अछि! 'जेकरा लेल चोरि करी सएह कहए चोरा।' की करबैक? जौं सिरिफ वैचारिके स्तरपर संघर्ष होइ तँ संघर्ष कएल जा सकैए मुदा तेतबे नै अछि। जिनगीक क्रियामे उपद्रव जे करैए से तँ करबे करैए जे जानोसँ खेलबारि करैमे नै चुकैए! अभिजात वर्ग एते सशक्त बनि गेल अछि जे जहिना कोनो साँढ़-पारा पाँकमे चलैकाल फँसि जाइए आ परोपट्टाक नढ़िया, कुकुरक संग गीध, कौआ आबि-आबि जीवितेमे आँखि फोड़ि-फोड़ि खाए लगैए तहिना इमानदार मनुखोक संग होइए। मुदा हारि मानैले ने हम तैयार छी आ ने मानब। जहिना नव सुरूजक संग नव दिन शुरूआत होइत तहिना नव मनुख नव जिनगी बनबैक दिसामे बढ़ैए, तँए संतोख अछि।"

रमाकान्त-

"अपनेक परिवारमे के सभ छथि?"

ब्रह्मचारी-

"पिता गिरहस्त छला। पनरह बीघा खेत रहनि। ओइ खेतकेँ माता-पिता दुनू परानी उपजबै छला, जइसँ परिवार नीक जकाँ चलै छेलनि। ओना रौदी-दाही होइते छेलै मुदा तैयो सहि-मरि कऽ ओइसँ गुजर करै छला। हम दू भाँइ छी। घरे लग नवानी विद्यालयमे हम पढ़लौं, किछु दिन लोहना पाठशालामे सेहो पढ़लौं। हमर छोट भाए बच्चेसँ पिताजीक संग खेती करै छला।

नै पढ़लनि। माएओ आ बाबूओ मरि गेला। हम बिआह नै केलौं। भाएकेँ बिआह करा सभ किछु छोड़ि अपने घरसँ निकलि गेलौं। मनमे छेलए जे मिथिलामे जे कुरीति, कुबेवस्था आ कुचालिमे समाज फँसल अछि ओकरा सुधारि सुरीति, सुबेवस्था आ सुचालि दिस लऽ चली। तइ पाछू लगि गेलौं। मुदा वेबस भऽ छोड़ि चलि एलौं। कारण ओइठामक निआमक आ निआमकक पाछू पढ़ल-लिखल- जे अपनाकेँ बुधियार बुझै छथि- लोकसँ लऽ कऽ अभिजात लोकनि, सभ मनुखक साँचकेँ ओहेन बना देने छथि, जइसँ कुपात्र छोड़ि सुपात्रक निर्माणे नै होइत। जेकरा चलैत छीना-झपटी, बलत्कारी, चोरी, छिनरपनी, जातीय उन्माद, धार्मिक उन्माद वा ई कहियौ जे मनुख बनैक जेते रस्ता अछि सभ नष्ट भऽ गेल अछि। सबहक जड़िमे सम्पति घूसि कऽ काज कऽ रहल अछि। जइ पाछू पड़ि सभ बताह भऽ गेल अछि। सभसँ दुखद बात तँ ई अछि, जे नीक-सँ-नीक, पैघ-सँ-पैघ आ विद्वान-सँ-विद्वान धरि, बजता किछु आ करता किछु। जइसँ समाजक बीच सत बजनाइए मेटा गेल अछि। एहेन समाजमे नीक लोकक रहब केना संभव हएत। तँए छोड़ि कऽ पड़ा गेलौं। देहक सुखक पाछू सभ आन्हर भऽ गेल अछि।''

ब्रह्मचारीजीक बात सुनि रमाकान्तकेँ धनक प्रति मोह भंग हुअ लगलनि। सोचए लगला जे हमरो दू सए बीघा जमीन अछि, ओते जमीनक कोन प्रयोजन अछि। जौं ओइ जमीनकेँ निर्भूमि-गरीबक बीच बाँटि दिऐ तँ केते परिवार आ केते लोक सुख-चैनसँ जिनगी जीबए लगत। जेकरा लेल जमीन रखने छी ओ तँ अपने तेते कमाइ छथि जे ढेरियौने छथि। अदौसँ मिथिला तियागी महापुरुषक राज रहल, किएक ने हमहूँ ओइ परम्पराकेँ अपनाए, पुनर्जीवित कऽ दिऐ। एते बात मनमे अबिते रमाकान्त ब्रह्मचारीजीकेँ पुछलखिन-

''अपने ऐ जिनगीसँ संतुष्ठ छी?''

रमाकान्तक प्रश्न सुनि हँसैत ब्रह्मचारीजी उत्तर देलखिन-

''हँ, बिल्कुल संतुष्ट छी। ऐसँ नीक जिनगी की भऽ सकै छै।

दुनियाँक जेते भाषा अछि, ओइ भाषाक उद्भव, विकास आ साहित्यक सभ पोथी पुस्तकालयमे रखने छी। तेतबे नै, दुनियाँमे जेते धार्मिक सम्प्रदाय अछि ओकरो पुस्तक रूपमे रखने छी आ अध्ययन करै छी। वेद, उपनिषद, ब्राह्मण संहिता, स्मत्रिृत, ज्योतिष, पुराण, रमायणक संग बाइबिल, कुरान, गुरु ग्रन्थ सेहो रखने छी। सभ दर्शनक पोथी सेहो अछि। शरीर निरोग रखै दुआरे किछु समए शारीरिक श्रम करै छी, बाँकी समए अध्ययन आ चिन्तन-मननमे रमल रहै छी। मासमे एक दिन सभ धार्मिक सम्प्रदायिक पंडित सभकेँ बजा, अपन-अपन सम्प्रदायपर व्याख्यान करबै छी। एक दिन राजनीतिक व्याख्यान, एक दिन साहित्यिक व्याख्यान मासमे करबै छी। ऐ सबहक अतिरिक्त एक-एक किसान गोष्ठी, चिकित्सा गोष्ठी, विज्ञान गोष्ठीक संग आइक वैश्वीकरणक दुनियाँमे विज्ञानसँ नीक-अधलापर विचार-विमर्श करबै छी। समए केना बीति जाइए से बुझबे ने करै छी।''

ब्रह्मचारीजी बजिते रहथि आकि महेन्द्र सेहो आबि गेला। उन्मत्त पागले जकाँ महेन्द्रक चेहरा बूझि पड़ै छेलनि। रमाकान्तो बाहरी दुनियाँसँ निकलि भीतरी दुनियाँक बाट पकड़ि लेलनि।

चारू गोटे ब्रह्मचारीजीक पएर छूबि गोर लागि चलै विचार केलनि। चारू गोटेकेँ अरियाति ब्रह्मचारीजी गाड़ीमे बैसाए अपने घूमि गेला। गाड़ीमे कियो केकरोसँ गप-सप्प नै करए चाहैत। सभ अपने-आपमे डुमि गेला। डेरा अबिते रमाकान्त महेन्द्रकेँ कहलखिन-

''बौआ, आब हम एक्को दिन नै अँटकब। गामक सुरता घींच लेलकहेँ, तँए जेते जल्दी भऽ सकै विदा कऽ दिअ?''

''बड़बढ़ियाँ। आइए टिकट बनबा लइ छी। ऐठामसँ दरभंगाक गाड़ी साप्ताहिक अछि तँए अपना औगतेने तँ नै ने होएत। अगर टिकटो बनि जाएत तैयो पाँच दिन रहै पड़त।''

आठ बजे रातिमे सभ कियो एकठाम बैसि अपन गामक सम्बन्धमे गप-सप्प करए लगला। गाममे अपन बितल दिनक चर्चा करैत महेन्द्र बजला-

“की जिनगी छल आ अखनि की अछि, ऐ विषयपर अखनि धरि विचारैक अवसरे नै भेटल। जहिना आकासमे चिड़ै-चुनमुनी उन्मुक्त भऽ उड़ैए तहिना बच्चामे छल। ने कोनो चिन्ता आ ने फिकिर। जहिना मध्यम गतिसँ गाड़ी-सवारी चलैए तहिना छल। ने कोनो प्रतियोगिता परीक्षा लेल चिन्ता आ नोकरीक जिज्ञासा छल। साधारण गतिसँ आई.एस.सी. पास केलौं आ मेडिकल कौलेजमे नाओं लिखा डाक्टर बनलौं। डाक्टर बनला पछाति नोकरी आ पाइक भूख जागए लगल। जइसँ अपन गाम, अपन इलाका छोड़ि हजारो कोस दूर आबि गेल छी। ऐठाम आबि बजारू समाज आ संस्कृतिमे फँसि अपन परिवार, समाज सभ छूटि गेल। जेते पाइ कमा सुख-भोगक कल्पना करै छी, ओते काजक बोझ बढ़ल जाइए। फेर सुख-भोग लेल समए कहाँ बचैए। समैक एते अभाव रहैए जे केता दिन अखबारो नै पढ़ि पबै छी। अखनि धरिक जे विचार जिनगीक सम्बन्धमे छल, आइ बुझै छी जे भ्रमक छल। एते दिन अपने सुखटा कैं सुख बुझैत रहलौं मुदा आब बूझि पड़ैए जे अपने सुखटा सुख नै छी। हर मनुखकैँ जिनगी चलैक जे आवश्यक वस्तु अछि ओ पूर्ति हेबाक चाहिऐ तखने ओ चैनसँ जिनगी बिता सकैए। मनुखसँ परिवार बनै छै आ परिवारसँ समाज। मनुखोक करतबे बनै छै जे सभसँ पहिने ओ अपना पएरपर ठाढ़ भऽ परिवारकैँ ठाढ़ करए। परिवार ठाढ़ भऽ जाएत तँ समाज स्वतः ठाढ़ भऽ आगू बढ़ए लगत। ओना सुख की छी? सभसँ पहिने ऐ बातक विचार कऽ लेबाक चाही। पंचभौतिक शरीर आ आत्माक संयोगसँ मनुख बनैए। सुख-दुख, नीक-अधला आत्माक अनुभूति छी नै कि शरीरक। ओना दुनियाँक जेते मनुख अछि सभकैँ एक स्तरसँ चलैक चाहिऐ मुदा से तँ नै अछि! दुनियाँ देशमे बँटल अछि आ देशक शासन बेवस्था आ समाज खण्ड-पखण्ड भऽ भिन्न-भिन्न भाषा, भिन्न-भिन्न संस्कृति आ भिन्न-भिन्न जातिमे बँटल अछि, जइसँ खान-पान, रीति-रेबाज, चालि-ढालिमे भिन्नता छै। कहैले तँ हमहूँ मनुखेक सेवा करै छी मुदा पाइक दुआरे हम पाइबलाक सेवा

करै छी। बिनु पाइबलाक सेवा कहाँ भऽ पबैए, जेकरा सभसँ बेसी जरूरति छै। अभावमे ओ खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ घर-दुआर, कपड़ा-लत्ता, दबाइ-दारू, सभसँ बंचित रहि जाइए। जेकर चलैत गरीब लोकक जिनगी जानवरोसँ बत्तर बनि गेल अछि। ओ सभ मनुखक शकलमे जानवर बनि जीबैए। जइ मनुखक जरूरति ओकरा सभकेँ छै ओ अपने पाछू तबाह अछि।''

डाक्टर महेन्द्रक बात, सभ कियो धियानसँ सुनलनि। रमाकान्त कहलखिन-

''बौआ, जइ गाममे तोहर जनम भेलह आ जइ माटि-पानिमे रहि डाक्टर बनलह, ओइ गामक लोक उचित इलाजक दुआरे मरि जाए, ई केते दुखक बात छी?''

रमाकान्तक प्रश्न सुनि सभ कियो गुम्म भऽ गेला। कियो किछु नै बाजि पबैत रहथि। सभ सबहक मुँह देखै छला। हजारो कोसपर गाम अछि। केना ऐठामसँ ओइठाम इलाज भऽ सकै छै? सबहक मनमे सबाल नचै छेलनि। बड़ीकाल पछाति महेन्द्र मुँह खोललनि-

''बाबू, सबाल तँ एहेन भारी अछि जे जवाबे ने फुरैए। मुदा एकटा उपए मनमे आएल।''

''की?''

''अहाँ गाम जाएब तँ दू गोटेकेँ एकटा लड़का, एकटा लड़की जे कम्मो पढ़ल लिखल हुअए तेकरा ऐठाम पठा दिअ। ओइ दुनू गोटेकेँ ऐठाम रखि छह मास पढ़ा पठा देब। जे तत्काल इलाज करब शुरू कऽ देतै। संगहि हम सभ चारि गोटे सालमे एक-एक मास लेल जाइत रहब आ जहाँ धरि भऽ सकत तहाँ धरि इलाज करैत रहब। तैबीच जौं कोनो जरूरी रोग उपकि जाए तँ फोनसँ कहि सेहो बजा लेब। नै तँ लहेरियासराय अछिए।''

महेन्द्रक विचार रमाकान्तकेँ जँचलनि। मुस्कीआइत कहलखिन-

''बौआ, गामक लोक तँ गरीब अछि, ओ केना इलाज करा सकत?''

गरीबक नाओं सुनि धाँए दऽ रविन्द्र उत्तर देलकनि-

''बाबू, हम सभ बहुत कमाइ छी। जेते इलाजमे खरच हेतै से देबै। तेतबे नै! अखनि अहाँ जाउ, पहिने दू गोरेकेँ पठा दिअ। अगिला मासमे आएब, एकटा स्वास्थ्य केन्द्र बनाएब। जइमे सबहक इलाज हेतै।''

रविन्द्रक विचारसँ सबहक ठोरपर हँसी एलनि। रमाकान्तक मनमे उठलनि, हमरे दू सए बीघा जमीन अछि मुदा छी कअए गोटे? जौं इमनदारीसँ देखल जाए तँ की हमहीं चोर नै। महाभारतोमे कहल गेल छै जे जे जरूरतिसँ बेसी सम्पति रखने अछि, ओ चोर अछि। जे बात पिताओजी बरबरि कहैत रहै छला। ओना अनका जकाँ हम बेइमानी करि कऽ खेत नै अरजने छी मुदा ढेरिया कऽ तँ रखनहि छी।

गप-सप्प करैत साढ़े दस बजि गेल। भानसो भेल। सभ कियो गप-सप्प छोड़ि खाइले बैसला।

दोसर दिनसँ चारू गोटे विदाइक जोगारमे लगि गेलथि। केतेक गोटेसँ दोस्ती चारू गोटेकेँ, जेकरा सबहक काज उद्यममे ईहो सभ नोत पुरने। तँए सभकेँ जानकारी देब उचित बूझि चारू गोटे अपन-अपन अपेछीतकेँ जानकारी दिअ लगलखिन। अपनो सभ फुट-फुट माता-पिताक विदाइमे जुटि गेल।

ऐ चारि दिनक बीच रमाकान्त टहलब-बुलब छोड़ि, दिन-राति आत्मनिष्ट भऽ, सोचमे डुमल रहए लगला। चाह पीबै बेर चाह पीब पान खा, भोजन बेर भोजन कऽ, भरि दिन पलंगपर पड़ल-पड़ल जिनगीक सम्बन्धमे सोचए लगला। अखनि धरि एक्केटा दुनियाँ बुझै छेलिऐ जे आब दोसरो दुनियाँ देखै छिऐ। एक दुनियाँ बाहरी, जेकरा ऊपरका आँखिसँ देखै छी, दोसर दुनियाँ शरीरक भीतर अछि, जइ दुनियाँकेँ अखनि धरि नै देखै छेलौं। बाहरी दुनियाँसँ भीतरी दुनियाँ फुलवाड़ी जकाँ सुन्दर अछि। जइमे आशाक जंगल पसरल अछि।

पाँच बजे साँझमे मद्रास स्टेशनसँ दरभंगाक गाड़ी खुजैए। आरक्षित

टिकट तँए मनमे बेसी हलचलो नहियेँ छेलनि। गाड़ी पकड़ैक हलचल तँ ओइ यात्रीकेँ होइत जे साधारण बोगीमे टटका टिकट कटा सफर करैए। मुदा आरक्षित बोगीमे तँ गनल सीट आ गनल टिकट होइए। बाइली यात्रीकेँ तँ चढ़ए नै देल जाइए। दुइए बजेसँ सभ समान अटैची काटुनमे सैंति तैयार केलनि। रस्ता लेल फुटसँ एकटा झोरामे खाइक सभ सामान सेहो दऽ देलकनि। दस लिटरा गैलेनमे पानि। थर्मसमे चाह। पनबट्टीमे पान। एक काटुन विदेशी शराब जे डाक्टर सुजाता रमाकान्तकेँ आँखिक इशारासँ कहि देने रहनि।

चारि बजे, परोठा-भुजिया खा रमाकान्त, श्यामा आ जुगेसर तीनू गोटे नव वस्त्र पहिरि तैयार भऽ गेला। स्टेशनो लगे, तँए विदा हेबाक हड़बड़ीओ नहियेँ। मुदा सामान बेसी तँए गाड़ी खुजैसँ पहिने स्टेशन पहुँचब जरूरी छन्हि। ओना गाड़ी मद्रासेसँ बनि कऽ चलैत तँए सामानो रखैमे परेशानीओ नहियेँ रहनि। सबा चारि बजे सभ डेरासँ विदा भऽ गाड़ी पकड़ैले चलला।

OOO

६

छुट्टी दिन रहितो हीरानन्द गाम नै गेला। ओना लगमे गाम रहने शनिए-शनि गाम आ सोमे-सोमकेँ स्कूल खुजबासँ पहिने चलि अबै छला। मुदा रमाकान्त नै रहने, परिवारक सभ भार देने गेल रहथिन। गोसाँइक धाही निकलिते हीरानन्द नहा कऽ चाह पीब बौएलाल ऐठाम चलला। मोने-मन यएह होन्हि जे रमाकान्त कहने रहथि जे मद्रास जाइ छी, धिया-पुताकेँ देख-सुनि लगले घूमि जाएब। मुदा आइ पनरहम दिन भऽ रहल अछि अखनि धरि किएक ने एला। ओना दुरसो छै आ परिवारोक सभ तँ ओतै छन्हि तँए जौं बिलम्मो भेनाइ तँ स्वभाविके छै। रस्तामे जे धिया-पुता देखैत, हाथ जोड़ि-जोड़ि प्रणाम करनि। हीरोनन्द सभकेँ असिरवाद दैत आगू बढ़ैत जाइत रहथि। बौएलालक घरसँ थोड़े पाछूए रहथि आकि बौएलाल देखलकनि। देखिते आगू बढ़ि, प्रणाम कऽ, संगे-संग अपना ऐठाम लऽ गेलनि। हीरानन्दकेँ पाबि बौएलाल बहुत किछु सिखबो केलक आ सुधरबो कएल। अपन एकचारी-बैसकीमे बैसबैत पानि आनए आँगन गेल। आँगनसँ लोटामे पानि नेने आबि पएर धोइले कहलकनि। लोटामे पानि देखि हीरानन्दक मनमे मिथिलाक वेबहार नाचि उठल। सोचए लगला जे पूर्वज केते विचारवान छला जे एते चलौलनि। पएर धोइ हीरानन्द चौकीपर बैसला। बौएलाल चाह बनबए आँगन गेल। माएकेँ चाह बनौल नै होइ छेलै। तैबीच अनुपो वाड़ीएमे खुरपी छोड़ि, मटियाएले हाथे आबि मास्टर साहैबकेँ प्रणाम कऽ चौकीक निच्चाँमे एकचारीक खुँटा लगा बैसल। मटियाएल हाथ देखि मास्टर साहैब पुछलखिन-

''कोन काज करै छेलौं?''

मटियाएल हाथ रहितो अनुपकेँ संकोच नै होइ छेलै। निःसंकोच भऽ उत्तर देलकनि-

> ''बाड़ीमे गेनहारी साग बागु केने छी ओहीमे तेते मोथा जनमि गेल अछि जे सागकेँ झाँपि देने अछि, ओकरे कमठौन करै छेलौं।''

सागक कमठौन सुनि हीरानन्द कहलखिन-

"चलू, जाबे बौएलाल अबैए, ताबे कनी हमहूँ देखि ली।"

कहि उठि विदा भेला। मास्टर साहैबकेँ ठाढ़ होइत देखि अनुपो ठाढ़ भऽ आगू-आगू विदा भेल। धूर दुइएमे साग बागु छेलै। साग देखि हीरानन्द बजला-

"जिनगीमे आइए हम एहेन गेनहारी देखलौं। ई तँ अद्भुत अछि। किएक तँ एक रंग पत्ताबला गेनहारी तँ अपनो उपजबै छी मुदा ई तँ फूल जकाँ लगैए। अदहा पात लाल आ अदहा पात हरिअर छै। केतएसँ ई बीआ अनलौं?"

मास्टर साहैबक जिज्ञासा देखि खुशी होइत अनुप बजला-

"हम सद्धुआरए नोत पूरए गेल रही। ओतै देखलिऐ। देखि कऽ मन हलसि गेल। ओतैसँ अनलौं। करीब दस बर्खसँ सभ साल करै छी। खाइत-खाइत जहन डाँट जुआ जाइ छै, तहन छोड़ि दइ छिऐ आ ओहीमे तेते बीआ भऽ जाइए जे अपनो बागु करै छी आ जे मंगलक तेकरो दइ छिऐ।"

"ऐ बेर हमरो थोड़े देब।"

"बड़बढ़ियाँ।"

दुनू गोटे घूमि कऽ आबि पुनः एकचारीमे बैसला। तैबीच बौएलालो चाह बनौने आएल। दुनू गोटेकेँ चाह दऽ आँगन जा, अपनो लेलक आ माएओकेँ देलक। चाह पीब बौएलालक माए रधिया घोघ तनने दुआरपर आबि मास्टर साहैबकेँ गोर लगलकनि। सूखल शरीर, पाकल केश आ धँसल आँखि रधियाक। रधियाक देह देखि मास्टर साहैबक मन तरे-तर बाजि उठलनि, हाए, हाए रे गरीबी, आगिओसँ तेज धधड़ा गरीबीक होइए! पैंतीस-चालिस बर्खक शरीरक ई दशा बना दइए।

मुस्की दैत एकटा आँखि उघारि रधिया बाजलि-

"आइ हमर भाग जगि गेल जे मास्टर-साहैब एला। बिनु खेने-पीने नै जाए देबनि। जे कन-सागक उपए अछि से बिनु खुऔने नै जाए देबनि।"

रधियाक सिनेह भरल शब्द सुनि हीरानन्दक आँखि सिमसि गेलनि। दुनू तरहथीसँ दुनू आँखि पोछैत बजला-

> ''ओना तँ घुमैक विचारसँ आएल छेलौं मुदा अहाँ सबहक सिनेह बिना खेने जाइए नै दिअ चाहैए। जरूर खाएब।''

घरमे सुपारी नै रहने बौएलाल सुपारी आनए दोकान गेल। तैबीच मास्टर साहैब अनुपकेँ पुछलखिन-

> ''अहाँक पुरखा केते दिनसँ ऐ गाममे रहैत आएल छथि?''

हीरानन्दक प्रश्न सुनि अनुप छगुन्तामे पड़ि गेल। मोने-मन सोचए लगल, एहेन बात तँ आइ घरि कियो ने पुछने छला। मास्टर साहैब किए पुछलनि। मुदा मास्टर-साहैबक उपकार अनुपक हृदैमे ऐ रूपे बैसल अछि जे हिनका, आत्माक दोसर रूप बुझैए। हुनके पाबि बेटा दू आखर पढ़बो केलक आ मनुक्खोक रस्ता सिखैए। हँसैत अनुप कहए लगलनि-

> ''मास्टर साहैब, हमरा बाउकेँ अपना घराड़ीओ ने रहै। अनके जमीनमे घरो बन्हने रहै आ अनके हरो-फाड़ जोतै। अनके खेतमे रोपनि-कमठौन सेहो करै। हम धानोक सीस आ रब्बी मासमे खेसारीओ-मौसरी लोढ़ी। अनके गाएओ पोसियाँ नेने रहै। सालमे जेते पाबनि-तिहार होइ आ अनदिनो जे करजा-बरजा लिअए ओ ओही गाएक दूधो बेचि कऽ आ लेरू जे होइ, ओहो बेचि कऽ करजा सदहाबै। एक दिन बाउक मन खराप रहै। गिरहत आबि कऽ बेटी ओइठाम फोक्चाहा भार दऽ अबैले कहलकै। बाउक मन बेसी खराब रहै तँए जाइसँ नासकार गेल। तैपर ओ बेटाकेँ शोर पड़लकै। बेटा एलै। दुनू बापूत हमरा बाउकेँ गरियेबो केलकै आ अँगनाक टाट-फड़क उजाड़ि कऽ कहलकै जे हमर घराड़ी छोड़ि दे। हमर बाउ केतेक गोरेकेँ कहबो केलकै मुदा सभ ओकरे दिस भऽ गेलै। तखनि हमर बाउ की करैत, आखिरिमे माटिक तौला-कराही छोड़ि, थारी-लोटा, नुआ-बसतर, हाँसु-खुरपीक मोटरी बान्हि बाउ, माए आ हम तीनू गोरे ओइ गामसँ भागि गेलौं। गामसँ निकलि, बाधमे एकटा आमक गाछ रस्तेपर रहै, ओइठिन जा कऽ बैसलौं।

बाउकँ बुकौर लगै। दुनू आँखिसँ दहो-बहो लोर खसै। माएओ कानए। थोड़े खान ओइठिन बैसलौं। तखनि फेर विदा भेलौं।''

बजैत-बजैत अनुपक दुनू आँखिमे नोर आबि गेलै। अनुपक नोर देखि हीरोनन्दोक आँखिमे नोर आबि गेलनि। रूमालसँ नोर पोछि पुनः पुछलखिन-

''तब की भेल?''

अनुपक हाथ मटियाएल रहै तँए गट्टासँ नोर पोछि पुनः बाजए लगल-

''ई मात्रिक छी। नाना जीविते रहए। हुनका एक्केटा बेटी रहनि। हमरे माएटा। जखनि तीनू गोरे ऐठाम एलौं तँ ननो आ नानीओ अँगनेमे रहए। नानी आ माए दुनू, बाँहिसँ दुनू गरदनिमे जोड़ि कानए लगल। बाउओ कानए लगल। नाना हमरा कोरामे उठा लोर पोछैत अँगनासँ निकलि, डेढ़ियापर बुलबए लगल। थोड़े खान नानी कानि, मोटरीकँ घरमे रखि हाँइ-हाँइ चुल्हि पजारए लगल। मुदा माए कनिते रहल।''

बिच्चेमे हीरानन्द पुछलखिन-

''नाना गुजर केना करै छला?''

हीरानन्दक प्रश्न सुनि अनुप गुदगुदाइत बाजल-

''अहाँसँ लाथ कोन माहटर साहैब। महिनामे आठ-दस साँझ भानसो ने होइ। हम बच्चा रही तँए नानी बाटीमे बसिया भात-रोटी रखि दिअए। सएह खाइ छेलौं।''

अनुपक बात सुनि हीरानन्दक हृदए पघिलए लगलनि। अनुपकँ कहलखिन-

''जाऊ, काजो देखिऔ। बौएलाल तँ आबिए गेल।''

मास्टर साहैबक कहलासँ अनुप फेरो साग कमाइले चलि गेल। बौएलाल आ हीरानन्द रमाकान्तक चर्चा करए लगला। बौएलाल बाजल-

"करीब पनरह दिनक धक लगि गेल हएत, अखनि धरि बाबा किए नै एला। बाजि कऽ गेल रहथि जे आठ दिनक भीतरे चलि आएब। किछु भऽ नै तँ गेलनि।"

हीरानन्द-

"अखनि धरि कोनो खबरिओ नै पठौलनि, जे बुझितिऐ।"

दुनू गोटे उठि कऽ बाड़ी दिस टहलैले विदा भेला। अनरनेबाक गाछकेँ हीरानन्द हिया-हिया कऽ देखए लगला। पहिल खेपक फड़, तँए नम्हर-नम्हर रहै। गोर-दसेक नम्हर आ जेना-जेना फड़ ऊपर होइत गेल रहै तेना-तेना छोटो आ खिच्चो। पान-सातटा फड़ छिटकल। जइमे एकटाकेँ लाली पकड़ि नेने रहए। हीरानन्द बौएलालकेँ ओंगरीसँ देखबैत बजला-

"बौएलाल, ओ फड़ तोड़ि लैह। खूब तँ पाकल नै अछि मुदा खाइ जोकर भऽ गेल आछि। हम सभ तँ दँतगर छी किने।"

गाछ बेसी नम्हर नै। हाथेसँ बौएलाल ओइ फड़केँ तोड़ि, डंटीसँ बहैत दूधकेँ माटिपर रगड़ि देलक। दुनू गोटे घूमि कऽ आबि हीरानन्द चौकीपर बैसलथि आ बौएलाल अनरनेबा रखि आँगन गेल। आँगनसँ कत्ता आ एकटा छिपली नेने आएल। कत्तासँ अनरनेबाकेँ सोहि टुकड़ी-टुकड़ी कटलक। छिपली भरि गेल। भरलो छिपली बौएलाल हीरानन्दक आगूमे देलकनि। भरल छिपली देखि हीरानन्द बजला-

"एते हमरे बुते खाएल हएत। पान-सातटा खंडी खाएब। बाँकी आँगन लऽ जाह।"

बौएलाल सएह केलक। अनरनेबा खा पानि पीब हीराननद बौएलालकेँ कहलखिन-

"चलू, थोड़े टहलि आबी?"

दुनू गोटे रस्ते-रस्ते टहलए लगला।

जाधरि दुनू गोटे टहलि-बूलि कऽ एला ताधरि रधिया अरबा चाउरक भात, माछक तीमन आ माछक तरूआ बनौलनि। भानस कऽ

रधिया चिक्कनि माटिसँ ओसार नीपि, हाथ धोइ, कम्मल चौपेत कऽ बिछौलक। थारी, बाटी, लोटा आ गिलासकेँ छाउरसँ माँजि धोलक। लोटा-गिलासमे पानि भरि कम्मलक आगूमे रखि बौएलालकेँ बजौने आबैले कहलक। आँगन आबि हीरानन्द कम्मलपर बैसि मोने-मन सोचए लगला। भोजनसँ तँ पेट भरैए मुदा मन तँ सिनेहेसँ भरैए जे भेट रहल अछि। तैबीच बौएलाल घरसँ थारी निकालि आगूमे देलकनि। गम-गम करैत भात तैपर माछक नम्हर-नम्हर तरल कुटिया। जम्बीरी नेबोक खंड। बाटीमे तीमन। भोजन देखि, मुस्की दैत हीरानन्द रधियाकेँ कहलखिन-

> "अलबत्त ढंगसँ भोजनक बेवस्था केने छी। देखिए कऽ पेट भरि गेल।"

मास्टर साहैबक बात सुनि खुशीसँ रधियाकेँ नै रहल गेलै, बाजलि-

> "माहटर बाबू, अहाँ पैघ छी। देवता छी। हमर भाग जे हमरा सन गरीब लोकक ऐठाम भात खाइ छी।"

रधियाक बात सुनि हीरानन्द बूझि गेलखिन जे भातकेँ अशुद्ध बूझि कहलनि। मुदा ओइ विचारकेँ झँपैत कहलखिन-

> "बौएलाककेँ छोट भाए बुझै छिऐ आ परिवारकेँ अपन परिवार बुझै छी। तखनि भात-रोटी खाइमे कोन संकोच।"

हीरानन्दक विचार सुनि रधियाक हृदए सौनक मेघ जकाँ उमड़ि पड़लनि। मनमे हुअ लगलनि जे अपन जिनगीक सभ बात कहि सुनबियनि। उत्साहित भऽ बाजए लगली-

> "माहटर बाबू, एहनो दुख कटने छी जे एक दिन पिसियौत भाए आएल रहए। घरमे एक्को तम्मा चाउर नै रहए। चिन्ता भऽ गेल जे भायकेँ खाइले की देबै। तीन-चारि अँगना चाउर पैंचले गेबो केलौं मुदा सबहक हालति खराबे रहै। अपने ने रहै तँ हमरा की दैत। हारि कऽ मरुआ रोटी आ सीम-भाँटाक तीमन रान्हि कऽ भैयोकेँ खाइले देलिऐ आ अपनो सभ खेलौं। मुदा अखनि तँ रमाकान्त कक्का परसादे सभ किछु अछि।"

थारीमे बाटीसँ झोर ढारैत हीरानन्द पुछलकनि-

“पहुलका आ अखुनकामे केते फरक बूझि पड़ैए?”

“माहटर बाबू, अहाँसँ लाथ कोन! ओइ हिसाबे अखनि राजा भऽ गेलौं। पहिने कल्लर छेलौं। हरिदम पेटेक चिन्ता धेने रहै छेलए।”

मुँहक भात आ माछ चिबबैत रहथि आकि दाँतक गहमे एकटा काँट गड़ि गेलनि। भात घोंटि आँगुरसँ काँट निकालि थारीक बगलमे रखि हीरानन्द पुछलखिन-

“पहिने जेते खटै छेलौं तइसँ अखनि बेसी खटै छी आकि कम?”

“पहिने बेसी खटै छेलौं। बोइन कऽ कए आबी तखनि अँगनाक काजमे लगि जाए। अँगनाक काज सम्हारि भानस करी। भानस करैत-करैत बेर झूकि जाए। तखनि खाइ।”

ओसारपर बैसल अनुप रधियाकेँ चोहटैत बाजल-

“मास्टर साहैबकेँ भोजन करए देबहुन आकि नै?”

अनुपक बात सुनि हीरानन्द बजला-

“अहाँ तमसाइ किए छियनि। भोजनो करै छी आ गप्पो सुनै छी। जे बात काकी कहै छथि ओ बड्ड नीक लगैए।”

मास्टर साहैबक समर्थन पाबि रधियाक मनमे आरो उत्साह जगि गेलै। होइ जे जेते बात पेटमे अछि, सभ बात मास्टर साहैबकेँ सुना दियनि। बाजलि-

“माहटर बाबू, बर्खमे अदहासँ बेसी दिन सागे रान्हि तीमन खाइ छेलौं। माघ-फागुनमे जखनि खेसारी-मसुरी उखड़ै आ बोइन जे हुअए तइ दिनमे खाली दस-पाँच दिन दालि खाइ। नै तँ बाड़ी-झाड़ीमे जे तीमन-तरकारी हुअए, से खाइ। बेसी काल सागे। खेसारी मासमे महिना दिन दुनू साँझ चाहे खेसारी साग खाइ नै

तँ बथुआ।''

खेसारी सागक नाओं सुनि हीरानन्द पुछलकनि-

''खेसारी साग केना बनबै छी?''

मास्टर साहैबक प्रश्न सुनि अनुपोकेँ पछिला बात मन पड़िते खुशी एलै। मुस्की दैत बाजल-

''राँड़िन बुते केतौ खेसारी साग रान्हल हुअए।''

अनुपक बातकेँ धोपैत हीरानन्द बजला-

''खेसारी सागमे कँचका मिरचाइ आ लसुनक फोरन दऽ हमरो कनियाँ बनबै छथि। हमरा बड़ सुन्दर खाइमे लगैए।''

व्यंग्यक टोनमे अनुप बाजल-

''अहाँ सबहक कनियाँक पड़तर राँड़िनकेँ हेतै। हमहीं छी जे एहेन लोकक गुजर चलै छै। नै तँ...?''

व्यंग्यक भाव बूझि हीरानन्द चुप्पे रहला। मुदा फनैक कऽ रधिया एक लाड़नि चलबैत बाजलि-

''नै तँ सासुरमे बास नै होइतए?''

अनुप-

''मन पाड़ू जे जइ दिन ऐठीम आएल रही तइ दिन कोन-कोन लूरि रहए। जौं सासु नै सिखबैत तँ कोनो लूरिओ होइत?''

पासा बदलैत रधिया बाजलि-

''माए आ सासुमे की अन्तर होइ छै। जहिना अपन माए तहिना घरबलाक माए। सिखलौं तँ।''

रधिया अनुप दिस तकैत, अनुप रधिया दिस। मुदा दुनूक मनमे क्रोध नै सिनेह रहए। तँए वातावरण मधुर रहए। हीरानन्द सागक सम्बन्धमे कहए लगलखिन-

"अपना सबहक पूर्वज बहुत गरीब छला। अखुनका जकाँ समैओ नै छल। बेसी काल ओ सभ सागे खाइ छला।"

जेहने भोजन बनल, तेहने पवित्र वर्तन छेलनि। आ ताहूसँ नीक बैसैक जगहक संग ऐतिहासिक गप-सप्प। जेते वस्तु हीरानन्दक आगूमे आएल छेलनि रसे-रसे सभ खा लेलनि। पानि नै पीलनि, किएक तँ ने गारा लगलनि आ ने बेसी करु रहै। भोजन कऽ बाटीएमे हाथ धोइ उठला। उठि कऽ बौएलालकेँ कहलखिन-

"एते कसि कऽ आइ धरि भोजन नै केने छेलौं।"

आँगनसँ निकलि एकचारीमे आबि सोझहे पड़ि रहला। पड़ले-पड़ल अनुपो आ बौएलालोकेँ कहलखिन-

"आब अहूँ सभ भोजन करै जाउ। हमरा सुतैक मन होइए।"

हीरानन्द असबिस करैत रहथि। लगले-लगले करौट बदलैत रहथि। मोने-मन सोचए लगला जे एतबे दिनमे अनुप केते उन्नति कऽ गेल। उन्नतिक कारण भेलै सही ढंगसँ परिवारकेँ बढ़ाएब। जे परिवार जेते सही दिशामे चलत ओ परिवार ओते तेजीसँ आगू बढ़त। मुदा जिनगीक रस्ता तँ बाँस जकाँ सोझ नै अछि। टेढ़-टूढ़ अछि, जइमे बौआए जाइए। जिनगीक रस्तामे डेग-डेगपर तिनबट्टी-चौबट्टी अछि। जइसँ लोक भटकि जाइए। तहूमे जेकरा रस्ताक आदि-अंतक ठेकान नै छै ओ तँ आरो ओझरा जाइए। एहेन-एहेन ओझरी सभ जिनगीक रस्तामे अछि जइमे ओझरेलापर कियो बताह भऽ जाइए तँ कियो घर-दुआरि छोड़ि चलि जाइए। क्षणिक सुखक खातिर स्थायी सुखक रस्ता छूटि जाइ छै। क्षुद्र सुख पैघ सुखक रस्तासँ धकेलि एहेन पहाड़ जकाँ ठाढ़ भऽ जाइ छै जे पार करब मोसकिल भऽ जाइ छै। जिनगीक रस्ता एक नै अनेक अछि मुदा पहुँचैक स्थान एक अछि। जेते मनुख तेते रस्ता अछि। एक मनुखक जिनगी दोसरसँ भिन्न होइए। अनभुआरो आ बुझिनिहारो, अज्ञानीओ आ ज्ञानीओ लगले -जिनगीक शुरूहे- मे नै बूझि पबै छथि जे कोन रस्ता पकड़लासँ सही जगहपर पहुँचब आ नै पकड़ने छूटि जाएब। मनुखक उद्धारक बात तँ सभ सम्प्रदाय, किस्सा-पिहानी सभ कहैए मुदा रस्तामे घुच्ची केते छै जैठाम जा लोक खसैए, से बुझैएमे ने अबै छै! मुदा ईहो

तँ सत छै जे निस्सकलंक जिनगी बना ढेरो लोक ओइ स्थानपर पहुँच चुकल छथि आ ढेरो जा रहल छथि, जे जरूर पहुँचता। भलहिं हुनका भरि पेट अन्न आ भरि देह वस्त्र नै भेटैत होन्हि। सूखल गाछ रूपी समाजकेँ जाधरि गंगाजल सन पवित्र पानिसँ नै पटौल जाएत ताधरि ओइमे केना कलश कलशत आ फूल फुलाएत? अगर जौं समए पाबि कलशबो करत तँ किछुए दिनमे मौलाए जाएत। दुखो थोड़ दिनक नै अछि, जड़िआएल अछि। अनेको महान् बेकती ऐ दिशाकेँ देखबैक रस्ता अदम्य साहस आ शक्ति लगा केलनि मुदा जड़िसँ दुख कहाँ मेटाएल? हमहूँ-अहाँ ऐ मातृभूमिक सन्तान छी, तँए हमरो अहाँक दायित्व बनैए जे माएक सेवा करी। छठिआरे राति समाजक माए-बहिन कोरामे लऽ छाती लगौलनि मुदा ओकरा बिसरि केना जाइ छी? की सभ बिराने छथि? अपन कियो नै?''

बेर खसैत हीरानन्द चलैक विचार करए लगला। बौएलाल चाह पीबैक आग्रह केलकनि। मुदा भरियाएल पेट बूझि हीरानन्द चाहक इनकार करैत कहलखिन-

''खाइ बेरमे पानि नै पीने छेलौं, एक लोटा पानि पिआबह।''

आँगनसँ लोटामे पानि आनि बौएलाल देलकनि। लोटो भरि पानि पीब हीरानन्द बाजला-

''बूझि पड़ैए जे अखने खा कऽ उठलौं। चाह नै पीबह, सिरिफ एक जूम तमाकुल खुआ दैह।''

अनुप तमाकुल चुनबए लगल। तैबीच हीरानन्द बौएलालकेँ कहलखिन-

''तूँ तँ आब धुरझार किताब पढ़ए लगलह। आब तोहूँ पड़ोसीक बच्चा सभकेँ, जखनि समए खाली भेटह, पढ़ाबह। ऐसँ ई हेतह जे कखनो बेकारी सेहो नै बूझि पड़तह आ थोड़-थाड़ बच्चो सभ पढ़ै दिस झुकत।''

पढ़बैक नाओं सुनि अनुप बाजल-

''मास्टर साहैब, केकरा बच्चाकेँ बौएलाल पढ़ौत!''

ओंगरीसँ देखबैत आगू बाजल-

"देखै छिऐ, ओ तीन घर कुरमी छी। ओकरासँ खनदानी दुश्मनी अछि। ने खेनाइ-पीनाइ अछि आ ने हकार-तिहार।"

फेर ओंगरीसँ देखबैत बाजल-

"तहिना ओ घर मलाहक छी, भरि दिन जाल लऽ कऽ चर-चाँचरसँ लऽ कऽ पोखरि-झाखड़िमे मछबारि करैए। जेकरा बेचि कऽ गुजरो करैए आ ताड़ी-दारू पीब कऽ औत आ झगड़ा-झाटी शुरू कए देत। तहिना ओ कुजरटोली छी। अछि तँ सभटा गरीबे मुदा बेवसायी अछि। स्त्रीगण सभ तरकारी बेचै छै आ पुरुख सभ पुरना लोहा-लक्करक कारोबार करैए। जातिक नाओंपर सदिखन अराड़िए करैत रहैए। तहिना हम दस घर धानुक छी। हमहींटा गरीब रही, बोइन करै छेलौं। आब तँ अपनो रमाकान्त देल दू बीघा खेत भऽ गेल, तँए खेती करए लगलौं, नै तँ सभ खबासी करैए। जुआन-जहान बेटी सभकँ माथपर चंगेरा दऽ आन-आन गाम पठबैए। तँए ओकरा सबहक एकटा पाटी छै आ हम असगरे छी। ने खेनाइ-पीनाइ अछि आ ने कोनो लेन-देन। आब अहीं कहू जे केकरा बच्चाकँ बौएलाल पढ़ौत?"

अनुपक बात सुनि हीरानन्द गुम्म भऽ गेला। मोने-मन सोचए लगला जे समाजक विचित्र स्थिति छै। एहेन समाजमे घूसब महाग-मोसकिल अछि। कनीकाल गुम्म रहि हीरानन्द कहलखिन-

"कहलौं तँ ठीके मुदा ई सभ बिमारी पहुलका समाजमे बेसी छेलै। ओना अखनो थोड़-थाड़ छइहे मुदा बदलि रहल अछि। आब लोक गाम छोड़ि शहर-बजार जा-जा कल-कारखानामे काज करए लगल अछि। संगे गाममे चाह-पानक दोकान खोलि-खोलि जिनगी बदलि रहल अछि। खेती-बाड़ी तँ मरले अछि तँए ऐमे ने काज छै आ ने लोक करए चाहैए। करबो केना करत? गोटे साल रौदी तँ गोटे साल बाढ़ि आबि सभटा नष्ट कऽ दइए। जहिना गरीब लोक मर-मर करैए तहिना खेतोबला सभ।

खेतोबला सभकेँ देखते छिऐ बेटीक बिआह, बिमारी आ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ, बिना खेत बेचने नै कए पबैए। ओना सबहक जड़िमे मुरुखपना छै, जे बिना पढ़ने-लिखने नै मेटाएत। धिया-पुताकेँ पढ़बैक इच्छा सभकेँ छै मुदा ओ मने भरि छै। बेवहारमे एको पाइ नै छै। ईहो बात छै जे जेकरा पेटमे अन्न नै, देहपर वस्त्र नै रहतै ओ केना पढ़त?''

हीरानन्द आ अनुपक सभ गप बाड़ीमे टाटक पुरना करची उजाड़ैत सुमित्रा सुनै छेली। बारह-तेरह बर्खक सुमित्रा। अनुपक घरक बगलेमे ओकरो घर। तमाकुल खा हीरानन्द विदा भेला। हीरानन्दकेँ अरियातने पाछू-पाछू बौएलालो बढ़ै छल। थोड़े दूर आगू बढ़लापर हीरानन्दकेँ छोड़ि बौएलाल घूमि गेल।

जाबे बौएलाल घूमि कऽ घरपर आएल ताबे सुमित्रो जरनाक कड़ची आँगनमे रखि बौएलाल लग आएल। ओना परिवारक झगड़ासँ धिया-पुताकेँ कोन मतलब। धिया-पुताक दुनियाँ अलग होइए। सुमित्रा बौएलालकेँ कहलक-

''हमरा पढ़ा दे।''

बौएलाल किछु कहैसँ पहिने मोने-मन सोचए लगल जे हमर बाबू आ सुमित्राक बाबू राम प्रसादक बीच केते दिनसँ झगड़ा अछि, दुनूक बीच केता दिन गारि-गरौबलि होइत देखै छी, तखनि केना पढ़ा देबै। मुदा हीरानन्दक विचार मन रहै, तँए गुनधुन करए लगल। कनी काल गुनधुन करैत सुमित्राकेँ कहलक-

''पहिने माएसँ पूछि आ।''

सुमित्रा दौग कऽ आँगन जा माएकेँ पुछलक-

''माए, हम पढ़ब।''

माए-

''केतए पढ़मे?''

''बौएलाल लग।''

बौएलालक नाओं सुनि माए मोने-मन विचारए लगली जे हमरासँ तँ कम्मो-सम्म मुदा ओकरा (पति) सँ तँ बौएलालक बापकेँ झगड़ा छै। कनीकाल गुनधुन कऽ माए कहलकै-

"जौं बौएलाल पढ़ा देतौ तँ पढ़।"

खनदानी घरक बेटी सुमित्राक माए। आन-आन घरक बेटीओ आ पुतोहुओ चंगेरा उघैए मुदा सुमित्राक माए केतौ नै जाइत। अपने राम प्रसाद भार उघैए। मुदा स्त्री नै। जहिया कहियो अनुप आ राम प्रसादक बीच भार उघैक सबालपर झगड़ा होइत, तँ सुमित्रा माएक विचार अनुप दिसि रहै छेली। मुदा मरदक झगड़ामे केना विरोध करैत। तँए चुपचाप आँगनमे बैसि मोने-मन अपने पतिकेँ गरियबै छलि, जे कोन कुल-खनदानमे चलि एलौं।

घूमि कऽ सुमित्रा आबि बौएलालकेँ कहलकै-

"माएओ कहलक।"

"ठीक छै। मुदा पढ़मे कखनि कऽ। भरि दिन हमहूँ काजे उद्यममे लगल रहै छी आ साँझू पहरकेँ अपने पढ़ैले जाइ छी।"

दुनू गोटे गर लगबैत तँइ केलक जे काजक बेरसँ पहिने भोरमे पढ़ब।

OOO

७

तीन बजे भोरमे हीरानन्दक निन्न टुटलनि। निन्न टुटिते बाहर निकललथि तँ झल-अन्हार देखि पुनः ओछाइनपर आबि गेला। अनुपक बात हीरानन्दक मनकेँ झकझोड़ै छेलनि, समाजमे ऐ रूपे कटुता, विषमता पसरि गेल अछि जे घर-घर, जाति-जाति, टोल-टोलमे भैंसा-भैंसीक कनारि पकड़ि नेने अछि। एहेन स्थितिमे केना समाज आगू बढ़त? समाजकेँ आगू बढ़ैले एक-दोसरक बीच आत्मीय प्रेम हेबाक चाहिऐ। से केना हएत? ऐ प्रश्नकेँ जेते सोझराबए चाहै छला तेते ओझराइत छल। विचित्र स्थितिमे पड़ल हीरानन्द। अपने मनमे प्रश्न उठा, तर्क-वितर्क करैत आ अंत होइत-होइत प्रश्न पुनः ओझरा कऽ रहि जाइत। विवेक काजे ने करै छेलनि। तैबीच पूबारि भाग चिड़ैक चहचहेनाइ सुनलनि। चिड़ैक चहचहेनाइ सुनि फेर कोठरीसँ निकलि पूब दिस तकलनि। मेघ ललिआएल बूझि पड़लनि। घड़ीपर नजरि देलनि तँ पाँच बजै छेलै। पुनः कोठरी आबि लोटा लऽ मैदान दिस विदा भेला। मुदा मनकेँ एहेन गछाड़ि कऽ सबाल पकड़ने रहनि जे चलैक सुधिए ने रहलनि। जाइत-जाइत बहुत दूर चलि गेला। खुला मैदान देखि, लोटा रखि टहलबो करथि आ प्रश्नो सोझरबैक कोशिश करैत रहथि। मुदा तैयो निष्कर्षपर नै पहुँच सकला। पुनः घूमि कऽ घरपर आबि, दतमनि कऽ मुँह हाथ धोइ चाह बनबए लगला। ओना चाहक सभ समान चुल्हिएक ऊपरका चक्कापर राखल रहैए। मात्र केतली पखारब, गिलास धोअब आ ठहुरी जारनि डेढ़ियापर सँ आनए पड़लनि। सभ किछु सेरियाए हीरानन्द चाह बनबए बैसला मुदा मन बौआइ छेलनि। असथिरे नै होइ छेलनि। असगरे चाह पीनिहार मुदा भरि केतली पानि दऽ चुल्हिपर चढ़ा देलनि। जखनि चाह खौलए लगल तखनि मनमे एलनि जे अनेरे एते चाह किए बनबै छी। फेर केतली चुल्हि परसँ उतारि दू गिलास दूध मिलौल पानि कातमे राखल गिलासमे रखि, बाँकी दूध मिलौल पानि केतलीमे दऽ चढ़ेलनि।

मन बौआइते छेलनि। आँच लगबैत गेला मुदा चाह पत्ती केतलीमे देबे नै केलनि। आगिक तावपर दुनू गिलास पानि जरि गेलापर मन पड़लनि जे चाह पत्ती केतलीमे देबे ने केलिऐ। हाँइ-हाँइ कऽ डिब्बामे सँ

तरहत्थीपर चाह पत्ती लऽ केतलीक झँप्पा उठौलनि आकि नजरि केतलीक भीतर गेलनि तँ पानिए नै छेलै। सभटा पानि जरि गेल छेलै। तरहत्थी परहक चाह पत्ती डिब्बामे रखि पुनः केतलीमे पानि देलनि। चाह बनल। भिनसुरका समए दू गिलास पीलनि। एक तँ ओहिना मन समाजक समस्यामे ओझड़ाएल छेलनि तैपरसँ चाह आरो ओझरी लगा देलकनि।

चाह पीब दरबज्जापर बैसि विचारए लगला। मुदा चाहक गर्मी पाबि मन आरो बेसी बौआए लगलनि। जहिना केकरो कोनो वस्तु हरा जाइ छै आ ओ खोजए लगैए तहिना हीरानन्द समाजक ओइ समस्याक समाधान खोजए लगला जे समस्या समाजकेँ टुकड़ी-टुकड़ी कऽ देने अछि। दोसर कियो नै छेलनि जिनकासँ तर्क-वितर्क करितथि। असगरे हीरानन्द ओझराएल रहथि। अपने मनमे सबालो उठनि जवाबो खोजथि। अध्ययनो बहुत अधिक नहियेँ छन्हि। सिरिफ मैट्रिक पास छथि। मुदा तैयो समस्याक समाधान तैकिते रहला, छोड़लनि नै। जहिना पथिककेँ बिनु देखलो पथ हराइत-भोथिआइत भेटिए जाइ छै तहिना हीरानन्दोकेँ भेटलनि। अनासुरती नजरि मिथिलाक चिन्तनधारा आ मिथिला समाजक बुनाबटिक ढाँचापर गेलनि। चिन्तनोधारा आ सामाजिक ढँचो, दुनूपर नजरि पड़िते मनमे एकटा नव ज्योतिक उदय भेलनि। बिजलोकाक इजोत जकाँ मनमे चमकलनि। बिछानपर सँ उठि ओसारेपर टहलए लगला। अनासुरती मुँहसँ निकललनि-

> “वाह रे मिथिलाक चिन्तक! दुनियाँक गुरु। जे ज्ञान हजारो बरख पहिने मिथिलाक धरतीपर आबि गेल छल, वएह ज्ञान उन्नैसम शताब्दीमे मार्क्स कठिन संघर्ष करि कऽ अनलनि, जइसँ दुनियाँक चिन्तनधारा बदलल। मुदा मिथिलाक दुर्भाग्य भेलै जे समाजक निआमक धूर्तइ केलक। जे चिन्तक मनुखकेँ सभ मनुख मनुख छी, एक रूपमे देखलनि, ओइ रूपकेँ निआमक, शासनकर्ता टुकड़ी-टुकड़ी कऽ काटि देलनि। आइ जरूरति अछि ओइ सभ टुकड़ीकेँ जोड़ि कऽ एक रूप बनबैक। जे नान्हिटा समस्या नै अछि। तेतबे नै! अखनो टुकड़ी बनौनिहारक कमी नै अछि। जखनि कि भेल टुकड़ीकेँ स्वयं ओ चेतना नै छै जे टुकड़ी भेल कातमे पड़ल छी आ कौआ-कुकुर खाइए।

एहेन विचार हीरानन्दकेँ उपैकिते मन असथिर भेलनि। मनमे नव स्फूर्ति, नव चेतना आ नव उत्साह जगलनि। नव ढंगसँ सभ वस्तुकेँ देखए लगला। तैबीच शशिशेखर सेहो टहलि-बूलि कऽ एला।

हीरानन्दपर नजरि पड़िते शशिशेखरकेँ बूझि पड़लनि जे जेना कियो नहा कऽ पोखरिसँ ऊपर भेल हुअए, मुदा हीरानन्दक मन विचारमे डुमले रहलनि। मोने-मन सोचथि जे जहिना पटुआ सोन, सन्नैक सोन वा रूइक रेश महीन होइत मुदा कारीगर ओइ रेशकेँ टेरुआ वा टौकरीक सहारासँ समेटि कऽ सूत वा सुतरी बना कपड़ा वा बोरा वा मोटगर रस्सा बनबैए। तहिना समाजोक टुटल मनुखकेँ जोड़ि समाज बनबए पड़त। तखने नव समाजक निर्माण होएत। जे अद्दी-गुद्दी काज नै कठिन काज छी। कठिन काज लेल कठिन मेहनतिक जरूरति पड़ैए। सिरिफ कठिन मेहनते केलासँ सभ कठिन काज नै भऽ सकैए। कठिन मेहनतिक संग, सही समझ आ सही रस्ताक बोध सेहो जरूरी अछि। तँए कठिन मेहनति, गंभीर चिन्तन आ आगू बढ़ैक, काज करैक अदम्य साहस सेहो सभमे हेबाक चाहिऐ। अइक संग मजगूत संकल्प सेहो होएब जरूरी अछि। विचारक संग-संग हीरानन्दक मनमे कठिन कार्यक संकल्प सेहो अपन जगह बनबए लगलनि। भिनसुरका समए तँए लाल सुरूजमे ठंढ़ापन सेहो देखए लगला। एक टकसँ सुरूज दिस देखैत अपन विचारकेँ संकल्प लग लऽ जाए दुनूकेँ हाथ पकड़ि दोस्ती करौलनि। दुनूक बीच दोस्ती होइते मनक नव उत्साह शरीरमे तेजी आनए लगलनि।

दरबज्जाक आगुऐ देने उत्तरे-दछिने रस्ता। हीरानन्द शशिशेखरकेँ कहलखिन-

"चलू, कनी बुलिओ-टहलि लेब आ एकटा गप्पो कऽ लेब।"

दुनू गोटे दरबज्जापर सँ उठि आगू बढ़ला आकि उत्तरसँ दछिन मुहेँ तीनटा ढेरबा बच्चाकेँ जाइत देखलनि। तीनूक देह कारी खटखट। केश उड़िआइत। डोरीबला फाटल-कारी झामर पेन्ट तीनू पहिरने। देहमे केकरो कोनो दोसर वस्त्र नै। तीनूक हाथमे पुरना साड़ीक टुकड़ाकेँ चारू कोण बान्हल झोरा। तीनू गप-सप्प करैत उत्तरसँ दछिन मुहेँ जाइत रहए। तीनूकेँ एक टकसँ देखि हीरानन्द तीनूक गप-सप्प सुनैले कान पाथि देलनि। मुस्की दैत बेङबा बाजल-

''रतुका बसिया रोटी आ डोका तीमन तेते ने खेलियौ जे चललो ने होइए। पेट ढब-ढब करैए।''

दहिना हाथ बढ़बैत फेर बाजल-

''हे सुंगही हमर हाथ केहेन गमकै छै। जेना बूझि पड़तौ जे कटुक-मसल्ला लागल छै।''

हाथ समेटि बाजल-

''तूँ की खेलँह गै रोगही?''

सिरसिराइत रोगही बाजलि-

''हमरा माए कहलक जे जो डोका बीछि कऽ ला गे। ताबे हमहूँ मड़ूआ उला-पीसि कऽ रोटी पका कऽ रखबौ। डोका चटनी आ रोटी खइहेँ।''

रोगहीक बात सुनि बेङबा कबूतरीकेँ पुछलक-

''तूँ गै कबूतरी?''

''काल्हि जे माए डोका बेचैले गेल रहै, ओम्हरेसँ मुरही किनने आएल। सएह खेलौं।''

कबूतरीक बात सुनि बेङबा पनचैती केलक जे तोहर जतरा सभसँ नीक छौ। आइ तोरा सभसँ बेसी डोका हेतौ। सभसँ बेसी तोरा, तइसँ कम हमरा आ सभसँ कम रोगहीकेँ हेतै।''

बेङबाक पनचैतीक विरोध करैत रोगही बाजलि-

''बड़ तूँ पंडित बनै छँह। तोरे कहने हमरा कम हएत आ तोरा सभकेँ बेसी। हमरा जकाँ तोरा दुनू गोरेकेँ डोका बीछैक लूरि छौ? घौदिआएल डोका केतए रहै छै से बुझै छीही?''

मुँह सकुचबैत बेङबा पुछलक-

''केतए रहै छै से तोँहँए कह?''

''किए कहबौ। तूँ खेलएँ से हमरा बाँटि देलँह।''

बेङबा-

"बाँटि दैतियौ से हम अगरजानी जननिहार भगवान छी। तूँ कहलेहँ अखनी आ बाँटि दैतियौ अँगनेमे।"

बेङबाक बात सुनि रोगही निरूत्तर भऽ गेल। हीरानन्द आ शशिशेखर तीनूक बात चुपचाप ठाढ़ भऽ सुनलनि। ताधरि तीनू गोटे हीरानन्दक लग पहुँच गेल रहए। हाथक इशारासँ तीनू गोटेकेँ हीरानन्द शोर पाड़ि पुछलखिन-

"बौआ, तूँ सभ केतए जाइ छह?"

हीरानन्दक प्रश्न सुनि बेङबा धाँए दए उत्तर देलकनि-

"डोका बीछैले।"

"डोका बीछि कऽ की करै छहक?"

"अपनो सभतूर खाइ छी आ माए बेचबो करैए। बाउ कहने अछि जे डोका बेचि कऽ पाइ हेतौ तइसँ अंगा-पेन्ट कीनि देबौ। घुरना बिआहमे पिहिन कऽ बरियाती जइहें।"

बेङबाक बात सुनि हीरानन्द रोगहीकेँ पुछलखिन-

"बच्चा तूँ?"

रोगही उत्तर दैत कहलकनि-

"हमहूँ डोके बीछैले जाइ छी। माए कहलक जे डोकासँ जे पाइ हेतौ, तइसँ शिवरातिक मेलामे महकौआ तेल, महकौआ साबुन, केश बन्हैले फीता आ किलीप कीनि देबौ।"

मुस्कीआइत हीरानन्द बातक समर्थनमे मुड़ीओ डोलबैत आ मोने-मन विचारबो करैत जे केते आशासँ गरीबोक बच्चा जीबैए। शशिशेखर दिस देखि आँखिक इशारासँ कहलखिन-

"एकरा सबहक बगए देखियौ आ आशा देखियौ।"

तेसर बचिया कबूतरीकेँ पुछलखिन-

''बौआ, तूँ?''

हीरानन्दक आँखिमे आँखि गड़ा कबूतरी कहए लगलनि-

''हमरा माए कहने अछि जे डोका पाइसँ सल्बार-फराक कीनि देबौ।''

काजक समए नष्ट होइत देखि हीरानन्द तीनूकेँ कहलखिन-

''जाइ जाह।''

हीरानन्द आ शशिशेखर घूमि कऽ दरबज्जापर एला। ओ तीनू बच्चा गप-सप्प करैत आगू बढ़ल। थोड़े आगू बढ़लापर कबूतरी बेङबाकेँ पुछलक-

''बेङबा, तूँ बिआह कहिया करमे?''

बिआह सुनि बेङबाकेँ मनमे खुशी भेलै। ओ हँसैत बाजल-

''अखनी बिआह नै करबै। मामा गाम गेल रहिऐ ते भैया कहलक जे कनी और बढ़मे तँ तोरा भिबन्डी नेने जेबौ। ओतै नोकरी करबै। जखनि बहुत रूपैआ हेतै तब ईंटाक घरो बनेबै आ बिआहो करबै।''

बिच्चेमे रोगही कहलकै-

''तोरा सनक ढहलेल बुते बहु सम्हारल हेतौ?''

बौहुक नाओं सुनि बेङबाक हृदए खुशीसँ गदगद भऽ गेलै। हँसैत कहलक-

''आँइ गे रोगही, तूँ हमरा पुरुख नै बुझैछँ। हम तँ ओहेन पुरुख छी जे एगोकेँ के कहए जे तीन गो बहुकेँ सम्हारि लेब।''

कबुतरी-

''खाइले बहुकेँ की देबही?''

बेङबा-

''भिबन्डीमे जब नोकरी करबै तब बुझै छीही जे केते कमेबै। दू हजार रूपैआ एक्के महिनामे हेतै।''

हँसैत रोगही बिच्चेमे टिपकल-

''दू हजार रूपैआ गनलो हेतौ?''

''बीस-बीस कऽ गनबै। रूपैआ हेतै तँ फुलपेन्ट सिएबै, खूब चिक्कन अंगा किनबै, घड़ी किनबै, रेडी किनबै, मोबाइल किनबै, डोरीबला जुत्ता किनबै। तब देखिअहै जे बेङबा केहेन लगै छै।''

''तोरा नोकरी के रखतौ?''

''गामबला भैया नोकरी रखा देतै। उ कहलक जे जही मालिक ऐठीम हम रहै छिऐ तही मालिक ऐठीम हमरो रखा देतै। बड़ धनीक मालिक छै। मारिते नोकर छै। हम जे मामा गाम गेल रही तँ भैयो गाम आएल रहए। ओ कहै जे हम मालिकक कोठीमे रहै छिऐ। दरमाहा छोड़ि कऽ बाइलिओ खूब कमाइ छै। मालिककँ एकटा बेटी छै। उ बड़का स्कूल-कौलेजमे पढ़ै छै। अपनेसँ हवागाड़ी चलबै छै। सभ दिन हमर भैया ओकरा स्कूल संगे जाइ छै। उ पढ़ै छै आ हमर भैया गाड़ी ओगरै छै। जखनी छुट्टी भऽ जाइ छै तखनी दुनू गोरे संगे अबै छै। उ मलिकाइन हमरा भैयाकँ मानबो खूम करै छै। संगे-संग सिलेमा देखैले जाइ छै। बजार घुमैले जाइ छै। बड़का दोकान-होटलमे दुनू गोरे खूम लड्डू खाइए। अन्ना तँ बड़का मालिक सभ नोकरकँ दीयाबत्तीमे चिक्कनका नुआ दइ छै, हमरो भैयाकँ दइ छै। छोटकी मलिकाइन अपने दिसनसँ निकहा-निकहा फुलपेन्ट, निकहा-निकहा अंगा कीनि-कीनि दइ छै। रूपैओ खूम दइ छै।''

तीनू गोटे बाध पहुँच गेल। बाध पहुँचिते तीनू तीन दिस भऽ गेल। तीन दिस भऽ तीनू गोटे डोका बीछए लगल। ऊपरे सभमे डोका चरौर करैले निकलल रहए। डोका बीछि तीनू गोटे घूमि गेल।

दरबज्जापर आबि हीरानन्द शशिशेखरकँ पुछलखिन-

"शशि, की सभ ओइ बच्चा सभमे देखलिऐ?"

मुँह बिजकबैत शशि बजला-

"भाय, ओइ बच्चा सभकेँ देखि छुब्द छेलौं। ओकरा सबहक बगए देखै छलिऐ आ मनक खुशी देखै छलिऐ। जेना दुनियाँदारीसँ कोनो मतलब नै। निर्विकार। अपने-आपमे मग्न छल।"

हीरानन्द-

"कहलौं तँ ठीके मुदा एकटा बात तर्कक छल। अपना सबहक समाज तेते नम्हर अछि जइमे भिखमंगासँ राजा धरि बसैए। एक दिस बड़का-बड़का कोठा अछि तँ दोसर दिस खोपड़ी। एक दिस अझुका विकसित मनुख अछि तँ दोसर दिस आदिम युगक मनुक्ख सेहो अछि। एते पैघ इतिहास समाज अपना पेटमे रखने अछि, ने ओइ इतिहासकेँ कियो पढ़निहार अछि आ ने बुझनिहार।"

"ठीके कहलौं भाय।"

"आइ धरि, हम सभ समाजक जइ रूपकेँ देखै छी ओ ऊपरे-झापरे देखै छी। मुदा देखैक जरूरति अछि ओकर भीतरी ढाँचाकेँ। जहिना समुद्रक ऊपरका पानि आ लहरि तँ सभ देखैए मुदा ओइक भीतर की सभ अछि से देखनिहार कअए गोटे अछि।"

भोरकेँ बौएलाल अपनो पढ़ैत आ सुमित्रोकेँ पढ़ा दैत। जाधरि टोल-पड़ोसक लोक सुति कऽ उठैत ताधरि बौएलाल आ सुमित्रा एक-डेढ़ घंटा पढ़ि लिअए। एक तँ चफलगर दोसर पढ़ैक जिज्ञासा सुमित्रामे, तँए एक्के दिनमे अ, आसँ य-र-ल-व तक सीखि गेल। कब्बीरकाने सीखि सुमित्रा बाल-पोथी आ खाँत सिखब शुरू केलक।

सुमित्राकेँ पढ़ैत देखि माए-बापकेँ खुशी होइ। ओना माएओकेँ आ बापोक मनमे शुरूहेसँ रहै जे बच्चा सभकेँ पढ़ाएब मुदा समैक फेर आ परिवारक विपन्नताक चलैत, मनक सभ मनोरथ मनेमे गलि कऽ विलीन

भऽ गेल रहै। मुदा जहियासँ सुमित्रा पढ़ए लागलि तहियासँ पुनः ओ मनोरथ अंकुरित हुअ लगलै। मनुखक जिनगीक गति मनुखक विचार आ बेवहारकेँ सेहो बदलैए। अनुपक प्रति जे कटुता आ दुर्विचार रामप्रसादक मनकेँ गहिया कऽ धेने छेलै ओ नहुँए-नहुँए पघिलए लगलै। सुमित्राक माए अनुपक आँगन अबैत जाइ छेली। तीमन-तरकारीक लेन-देन पतिसँ चोरा कऽ सेहो करै छेली। मुदा तैयो रामप्रसादक मनमे पछिला दुश्मनी नीक-नहाँति नै मेटाएल छेलै। जहिना बरसातमे सुखाएल धारमे पानि अबिते जीवित धारक रूप-रेखा पकड़ि लैत तहिना विद्याक प्रवेशसँ रामप्रसादोक परिवारक रूप-रेखा बदलए लगलै। भाय-भैयारीमे भैंसा-भैसीक दुश्मनी बदलए लगलै।

मिरचाइ, तरकारी आ चुन कीनैले अनुप हाट गेल रहए। कोसे भरिपर कछुआ हाट अछि। तैबीच रामप्रसाद केता बेर अनुपक डेढ़ियापर आबि-आबि अनुपक खोज केलक। रामप्रसादक अधला विचारकेँ धिक्कारि कऽ भगा नीक-विचार अपन जगह बना लेलक। दोसरि साँझमे अनुप हाटसँ घूमि कऽ रस्तेमे अबै छल आकि रामप्रसाद फेर तकैले पहुँचल। अनुपपर नजरि पड़िते रामप्रसाद कठहँसी हँसि कहलक-

"बहुत दिन जीबह भैया। बेरूए पहरसँ केतए हरा गेल छेलह?"

रामप्रसादक बदलल चेहरा आ विचार सुनि अनुप मोने-मन तारतम्य करए लगल। जे आइ सुरूज किम्हर उगला। जिनगी भरिक दुश्मनी एकाएक एना बदलि केना गेलै? पछिला गप अनुपकेँ मन पड़लै। अखनि धरि रमपसदबा संग हमरा दुश्मनी ओकर अधले काजक दुआरे ने छल। मुदा ताराकान्तकेँ धैनवाद दिऐ जे वेचारा मारिओ खा, जहलो जा गाममे खबासी प्रथा मेटौलक। जाबे रमपरसदबा अधला काज करै छल ताबे जौं दुश्मनी छल तँ ओहो नीके रहए। किएक तँ हमहूँ अपना डारिपर छेलौं। आब जौं ओ ओइ काजकेँ छोड़ि देलक तँ हमरो मिलान करैमे हरज कथी? कालोक गति तँ प्रबल होइ छै। समैओ बदलि रहल अछि। एक तँ पहुलका जकाँ भारो-दौर लोक नै दइए, दोसर पहिने लोक कान्हपर भार उघै छल आब गाड़ी-सवारीमे लऽ जाइए। तेतबे नै, आब सबहक समांग परदेश सेहो खटए लगल अछि। गामक मालिको-मलिकानाक पहुलका रूतबा कमले जाइ छै।

रामप्रसादक बात सुनि अनुप बाजल-

"हाट जेनाइ जरूरी छेलए। घरमे ने मिरचाइ छल आ ने चुन। जे चुनवाली चुन बेचए अबै छेलए ओकर सासु मरि गेलै। ऐ साल एक्को दिन कटहरक आँठी देल खेरही दालि सेहो नै खेने छेलौं तँए मन लगल छेलए।"

कहि अनुप सोझहे आँगन जाए ओसारपर आँठी आ मेरिचाइक मोटरी रखि, कोहीमे चुन रखलक। एकचारीमे बैसि रामप्रसाद तमाकुल चुनबै छल। चुनक कोही खोल्हियापर रखि अनुप बाहर आबि रामप्रसादकेँ कहलक-

"ताबे तमाकुल लगाबह, कनी हाथ-पएर धोइ लइ छी। एक तँ कच्ची रस्ता तहूमे तेते टेक्टर सभ चलै छै जे भरि ठेहुन कए गरदा रस्तामे भऽ गेल अछि। जहिना लोकक पएर थाल-पानिमे धँसै छै तहिना गरदोमे धँसै छै।"

कहि अनुप इनारपर जा हाथ-पएर धोइ कऽ आबि रामप्रसाद लग बैसल। अनुपकेँ तमाकुल दैत रामप्रसाद बाजल-

"भैया, दुपहरेसँ मनमे आएल जे तोरो बड़दक भजैती आन टोलमे छह आ हमरो अछि। दुनू गोरे ओकरा छोड़ा कऽ अपनेमे लगा लैह। जइसँ दुनू गोरेकेँ सुविधा हेतह।"

थूक फेक अनुप कहलै-

"ई बात तँ केते दिनसँ बौएलाल कहै छेलए जे जेते काल बड़द अनैमे लगै छह ओते कालमे एकटा काज भऽ जेतह।"

मुड़ी डोलबैत रामप्रसाद बाजल-

"काल्हि जा कऽ तोहूँ अपन भजैतकेँ कहि दहक आ हमहूँ कहि देबै। परसूसँ दुनू गोरे एक्केठीन जोतब।"

आँगन बहरनाइ छोड़ि रधिया सेहो आबि कऽ टाटक कातमे ठाढ़ भऽ गेल छेली। किएक तँ बहुतो दिनक पछाति दुनू गोटेकेँ मुँहा-मुँही गप करैत देखलनि। बड़दक भजैतीक गप कऽ अनुप रामप्रसादकेँ कहलक-

''अबेर भऽ गेल। अखनि तोहूँ जाह, हमहूँ पर-पैखाना दिस जाएब।''

जहिना सड़ल-सँ-सड़ल पानिमे कमल फुलेलासँ भगवान माथपर चढ़ैक अधिकारी भऽ जाइए तहिना बौएलालक सेवा सभ लेल हुअ लगल। जइसँ गाममे बौएलाल चर्चाक विषय बनि गेल। हीरानन्दक असरा पाबि बौएलाल रामायण, महाभारत, कहानी, कविता पढ़ब सीखि लेलक। जइ गाममे लोक भरि-भरि दिन ताश खेलैत, जुआ खेलैत तइ गाममे बौएलालक दिनचर्या सभसँ अलग बितए लगल। जइसँ बौएलालक जिनगीक रस्ता बदलि गेलै। अधिककाल हीरानन्द बौएलालकेँ कहथिन-

''बौएलाल, गरीबक सभसँ पैघ दोस्त मेहनति छी। जे कियो मेहनतिकेँ दोस्त बना चलत वएह गरीबी रूपी दुष्टकेँ पछाड़ि सकैए। तँए सदिखन समैकेँ पकड़ि सही रस्तासँ मेहनति केनिहार जे अछि, वएह ऐ धरती आ दुनियाँक सुख भोगि सकैए।''

OOO

८

रतुके गाड़ीसँ रमाकान्त तीनू गोटे अपना टीशनमे उतरला। अन्हार राति। भकोभन स्टेशन। खाली दुइए गोटे, स्टेशन मास्टर आ पैटमेन, स्टेशनक घरमे केबाड़ बन्न कऽ जगल रहए। लेम्प जरैत। ने एक्कोटा इजोत प्लेटफार्मपर आ ने मुसाफिरखनामे। अन्हारेमे तीनू गोटे अपन सभ समान मुसाफिरखानामे रखि, जाजीम बिछा बैसि रहला। गाड़ीक झमारक संग दू रातिक जगरनासँ तीनू गोटेक देह ओङहीसँ भँसिआइत रहनि। प्लेटफार्मक बगलमे ने एक्कोटा चाहक दोकान खुगल आ ने एक्कोटा दोकनदार जगल रहए। ने कोनो दोकानमे इजोत होइ छेलै आ ने गाड़ीसँ एक्कोटा दोसर पसिंजर उतरल। निन्न तोड़ै दुआरे रमाकान्त चाह पीबए चाहथि मुदा कोनो जोगार नै देखि कखनो समान लग बैसथि तँ कखनो उठि कऽ टहलए लगथि। जुगेसर आ श्यामा सुति रहल। मुदा रमाकान्तक मनमे होन्हि जे जौं कहीं सुति रहब आ सभ समान चोरि भऽ जाए तखनि तँ भारी जुलुम हएत। निन्न तोड़ैक एकटा नीक उपए छेलनि जे ढाकीक-ढाकी मच्छर रहए। तँए जुगेसरो आ श्यामो चद्दरि ओढ़ि, मुँह झाँपि कऽ सूतल रहथि।

प्लेटफार्मपर पनरह-बीसटा अनेरुआ कुकुर एम्हर-सँ-ओम्हर करैत रहए। प्लेटफार्मक पछबारि भागक माल-जालक हड्डीक ढेरीसँ गंध से अबैत रहै। सकरीक एकटा बेपारी हड्डीक कारोबार करैए। गाम-घरमे जे माल-जाल मरैत ओकर हड्डी गामे-घरक छोटका बेपारी, भारपर उघि-उघि अनैए, ओही बेपारी ऐठाम बेचि-बेचि गुजर करैए। जखनि बेसी हड्डी जमा भऽ जाइ छै, तखनि ओ मालगाड़ीक डिब्बामे लादि बाहर पठबैए। जाधरि हड्डी प्लेटफार्मक बगलमे रहैए ताधरि अनेरुआ कुत्ता सभ ओइ हड्डीकेँ चिबबैक पाछू तबाह रहैए। दिन रहौ आकि राति, जेते टीशनक कातक कुकुर अछि, सभ ओही इर्द-गिर्द मर्ड़ाइत रहैए। ओना आनो-आनो गामक कुकुर गाम छोड़ि ओतए रहैए। एकटा पिल्ला एकटा पिल्लीक संग प्लेटफार्मक पुबारि भागसँ अबिते छल आकि एकटा दोसर कुत्ताक नजरि पड़लै। बिना बोली देनइ ओ कुकुर दौग कऽ ओइ पिल्ला-पिल्लीक लग पहुँच गेल। आगू-आगू पिल्ली आ पाछू-पाछू पिल्ला नाङरि डोलबैत रहए।

ओ दोसर कुकुर पिल्लीक मुँह सूँघलक। मुँह सुँघिते पिल्ली मुँह चियारि कऽ ओइ कुत्तापर टुटल। पिल्लीकेँ टुटिते पछिला पिल्ला जोरसँ भुकलक। कुत्ताक अवाज सुनिते, जेते अनेरुआ कुकुर प्लेटफार्मपर रहए, सभ भुकैत दौग कऽ ओइ पिल्लीकेँ घेरि लेलक। सभ सभपर भूकए लगल। मुदा पिल्ली डराएल नै। रानी बनि हस्तिनीक चालिमे पछिम मुहेँ चलल। अबैत-अबैत टिकट घरक सोझहाँमे बैसि रहल। पिल्लीकेँ बैसिते सभ पिल्ला पटका-पटकी करए लगल।

प्लेटफार्मक पछबारि भाग, कदमक गाछक निच्चाँमे मघैया डोम सभ डेरा खसौने रहए। ओहीकाल एकटा छौंड़ा एकटा छौंड़ीक संग, डेरासँ थोड़े पछिम जाए लट्टा-पट्टी करैत रहए। कुत्ताक अवाज सुनि एक गोटेकेँ निन्न टुटलै। निन्न टुटिते आँखि तकलक आकि पछबारि भाग दुनू गोटेकेँ लट्टा-पट्टी करैत देखलक। ओ केकरो उठौलक नै! असगरे उठि कऽ ओइ दुनू लग पहुँचल। ओहो दुनू देखलकै। छौंड़ा ससरि कऽ झाड़ा फीड़ैले कातमे बैसि गेल। मुदा छौंड़ी चलाक। फरिक्केसँ ओइ आदमीकेँ छौंड़ी कहलकै-

"कक्का।"

'कक्का' सुनि ओ किछु बाजल नै मुदा घुरबो नै कएल। आगुए मुहेँ ससरैत बढ़ल। छौंड़ीओ ओकरे दिस ससरल। लगमे पहुँचिते छौंड़ी कन्हापर दहिना हाथ दैत फुसफुसा कऽ कहलकै-

"कक्का...।"

कान्हपर हाथ पड़िते कक्काक मन बदलए लगलनि। जहिना शिकारीकेँ दोसराक शिकार हाथ लगलापर खुशी होइत तहिना कक्कोकेँ भेलनि। ओहो अपन दहिना हाथकेँ छौंड़ीक देहपर देलखिन। देहपर हाथ पड़िते छौंड़ी हल्ला केलक। छौंड़ो देखैत। उठि कऽ ओहो हल्ला करए लगल। हल्ला सुनि सभ मघैया उठि-उठि दौगल।

स्टेशनक टिकटघरमे टिकट मास्टर पैटमेनकेँ कहलक-

"रघू, प्लेटफार्मपर बड़ हल्ला होइ छै। जा कऽ देखहक तँ।"

पैटमेन जवाब देलकनि-

''टीशन छिऐ। सभ रंगक लोक ऐठाम अबै-जाइए। जौं हम ओम्हर देखैले जाइ आ एम्हर स्टेशन घरमे चोर चलि आबए तँ असगरे अहाँ बुते सम्हारल हएत। भने केबाड़ बन्न छै। दुनू गोटे जागलटा रहू। नै तँ सरकारी समान चोरि भेने दुनू गोरेक नोकरी जाएत। कोनो कि सुरक्षा गार्ड अछि जे चोरिक दोख ओकरा लगतै।''

पैटमेनक बात स्टेशन मास्टरकेँ नीक बूझि पड़लनि, बजला-

''ठीके कहलह।''

दुनू गोटे गप-सप्प करए लगला। लेम्प जरिते रहै। केबाड़क दोग देने पैटमेन प्लेटफार्म दिस तकलक तँ देखलक जे कुत्ता सभ पटका-पटकी करैए। अन्हार दुआरे मघैया सभकेँ देखबे नै केलक।

एक दिस कुत्ता सबहक झौहड़ि आ पटका-पटकी दोसर दिस मघैया सबहक गारि-गरौबलिसँ प्लेटफार्म गदमिशान होइत। मोने-मन रमाकान्त सोचथि जे भने भऽ रहल अछि। लोकक हल्लासँ हमर समान तँ सुरक्षित अछि। जुगेसरकेँ उठबैत कहलखिन-

''कनी आगू बढ़ि जा कऽ देखहक तँ कथीक हल्ला होइ छै?''

जुगेसर उठि कऽ कहलकनि-

''कक्का, कोन फेरामे पड़ै छी बस-स्टेण्ड आ रेलबे स्टेशनमे अहिना सदिखन झूठ-फूसि लेल हल्ला होइते रहै छै। अपन जान बचाउ। अनेरे केतए जाएब।''

भोर होइते टमटमबला सभ आबए लगल। थोड़े हटि कऽ उत्तरबारि भाग ठकुरबाड़ीमे घड़ीघंट बजनाइ शुरू भेल। घड़ीघंटक अवाज सुनि रमाकान्त नम्हर साँस छोड़लनि। जुगेसरकेँ कहलखिन-

''ओडहीसँ मन भकुआएल अछि। चाहो दोकानपर लोक सभकेँ गल-गुल करैत सुनै छिऐ। कनी चाह पीने अबै छी। ताबे तूँ समान सभ देखैत रहऽ।''

कहि रमाकान्त उठि कऽ कलपर जाए कुरुड़ केलनि। पानि

पीलनि। पानि पीब चाहक दोकानपर जाए चाह पीलनि। चाह पीब पान खाए घूमि कऽ आबि जुगेसरकेँ कहलखिन-

“आब तोहू जाह। चाह पीब दूटा टमटम सेहो केने अबिहऽ।”

जुगेसर उठि कऽ कलपर जाए कुरुड़ केलक। कुरुड़ केला पछाति सोचलक जे अखनि भिनसुरका पहर छै। तोहूमे तीनिए-चारिटा टमटमबला आएल अछि। जौं कहीं चाह पीबैले चलि जाइ आ एम्हर टमटमबला दोसर गोरेकेँ गछि लइ तखनि तँ पहपटि भऽ जाएत। तइसँ नीक जे पहिने टमटमेबलाकेँ कहि दिऐ। सएह केलक। टमटमबला लग पहुँच कऽ पुछलकै-

“भाय, टमटम खाली छह?”

“हँ।”

“चलबह।”

“हँ, चलब।”

पहिल टमटमबला जे छल, ओकर घरवाली दुखित छेलै। दस बजेमे डाक्टर ऐठाम जेबाक छेलै। एक्कोटा पाइ नै रहने भोरे स्टेशन पहुँच गेल, जे एक्को-दूटा भाड़ा कमा लेब तँ औझुका जोगार भऽ जाएत। किएक तँ कम-सँ-कम पचास रूपैआ दबाइ-दारू, तेकर बाद घरक बुतात, घोड़ाक खरचा आ दस रूपैआ बैंकबलाकेँ सेहो देबाक अछि।

जुगेसरक पुछिते टमटमबला मोने-मन सोचए लगल, भिनसुरका बोहनि छी तँए एकरा छोड़ैक नै अछि। साला टमटमबला सभ जे अछि ओ उपरौंज करैत रहैए। कहैले अपनामे युनियन बनौने अछि मुदा बान्ह कोनो छइहे नै। लगले बैसार करि कऽ विचारि लेत आ जहाँ दस रूपैआ जेबीमे एलै आ ताड़ी पीलक आकि मनमाना करए लगैए। अपनामे सभ विचारने अछि जे बर-बिमारीमे सभ चंदा देबै मुदा हमरे कएटा पैसा चंदा देलक। पनरह दिनसँ घरवाली दुखित अछि, जइ पाछू रेजानिस-रेजानिस भऽ गेल छी। ने एक्को मुट्ठी घोड़ाकेँ बदाम दइ छिऐ आ ने अपने भरि पेट खाइ छी। धिया-पुता सभ अन्न बेतरे टौआइत रहैए। तखनि तँ धैनवाद ओही बच्चा सभकेँ दिऐ, जे भुखलो माएक सेवा-टहल करैए। अपनो

घोड़ाक संग-संग टमटम घिचै छी। जौं से नै करब आ सोल्होअना घोड़े भरोसे रहब तँ ओहो मरि जाएत। वएह तँ हमर लक्ष्मी छी। ओकरे परसादे दू पाइ देखै छी। ओकरा केना छोड़ि देबै। तहिना घरोवाली कमजोर अछि। जिनगी भरि तँ ओकरे संग सुखो केलौं, छोट-छोट बच्चोकेँ तँ वएह थतमारि कऽ रखलक। हम तँ भरि दिन बोनाएले रहै छी। घर तँ ओही वेचारीक परसादे चलैए।

टमटमबला सोचिते छल, तही बीच जुगेसर पुछलकै-

"केते भाड़ा लेबहक?"

भाड़ाक नाओं सुनि टमटमबला सोचए लगल, एक तँ भिनसुरका बोहनि छी, दोसर डाकडरो ऐठीम जाइक अछि। जौं भाड़ा कहबै आ ओते नै दिअए तखनि तँ बक-झक हएत। जौं कहीं दोसर टमटम पकड़ि लिअए तखनि तँ ओहिना मुँह तकैत रहि जाएब। तइसँ नीक जे पहिने समानो आ पसिन्जरो चढ़ा ली। एते बात मनमे अबिते बाजल-

"जे उचित भाड़ा हएत सएह ने लेब। हम तोरा एक हजार कहि देबह तँ कि तूँ दाइए देबह।"

टमटमबलाक बात सुनि जुगेसर कहलकै-

"अच्छा ठीक छै। पहिने चाह पीब लैह।"

दुनू टमटमोबला आ जुगेसरो चाहक दोकानपर जाए चाह पीलक। चाह पीब तीनू गोटे तमाकुल खेलक। चाहबलाकेँ जुगेसरे पाइ देलकै। तीनू गोटे रमाकान्त लग आबि समान सभ उठा-उठा टमटमपर लादलक। एकटा टमटमपर श्यामा, जुगेसर चढ़ल आ दोसरपर असगरे रमाकान्त समानक संग चढ़ल। किछु दूर आगू बढ़लापर रमाकान्त टमटमबलाकेँ पुछलखिन-

"घोड़ा एते लटल छह, खाइले नै दइ छहक?"

रमाकान्तक बात सुनि टमटमबला बेवशक आँखिए रमाकान्त दिस देखि उत्तर दिअ चाहैत मुदा कानैत हृदए मुँहसँ बकारे नै निकलए दइ। टमटमबलाक आँखि-पर-आँखि दऽ रमाकान्त पढ़ए लगला। तैबीच

टमटमबलाक आँखिमे नोर ढबढबा गेलै। कान्ह परहक तौनीसँ आँखि पोछि टमटमबला कहए लगलनि-

> ''सरकार, यएह टमटम आ घोड़ा हमर जिनगी छी। अहीपर परिवार चलैए। जइ दिनसँ भनसिया दुखित पड़ल तइ दिनसँ जे कमाइ छी से दबाइए-दारूमे खरचा भऽ जाइए। अपनो बाल-बच्चाकेँ आ घोड़ोकेँ खेनाइक तकलीफ भऽ गेलैए। की करबै! कहुना पराण बचेने छिऐ। पराण रहतै तँ मासु हेबे करतै।''

टमटमबलाक धैर्य आ बेवश देखि रमाकान्तक हृदए पघिल कऽ इनहोर पानि जकाँ पातर भऽ गेलनि। बिना किछु बजने मोने-मन सोचए लगला जे एक तरहक मजबूर ओ अछि जे किछु करबे (कमेबे) नै करैए आ दोसर तरहक ओ अछि जे दिन-राति खटैए मुदा ओकरा प्राकृतिसँ लऽ कऽ मनुख धरि ऐ रूपे संकट पैदा करै छै जइसँ ओ मजबूर होइए। ई टमटमबला दोसर श्रेणीक मजबूर अछि, तँए एहेन लोकक मदति करब धरमक श्रेणीमे अबैए। जरूर एहेन लोकक मदति करैक चाहिऐ। मुदा मेहनतिकश आदमीक मोन एते सक्कत होइए जे दोसरसँ हथउठाइ नै लिअ चाहैए। जौं हम किछु मदति करए चाहिऐ आ ओ लइसँ नासकार जाए तखनि तँ मनमे कचोट हएत। अही असमंजसमे रमाकान्त पड़ि गेला। फेर सोचए लगला जे कोन रूपे एकरा मदति कएल जाए। सोचैत-सोचैत सोचलनि जे हम अपने नै किछु कहि एकरेसँ पुछिऐ जे अखनि तूँ जइ संकटमे पड़ल छह ओइमे केते सहयोग भऽ गेलासँ तोरा पार लगि जेतह। ई विचार मनमे अबिते पुछलखिन-

> ''अखनि तोरा केते मदति भऽ गेलासँ पार लगि जेतह।''

रमाकान्तक बात सुनि टमटमबलाक मनमे संतोखक छोट-छीन रेगहा घिचा गेल। मोने-मन सभ हिसाब बैसबैत बाजल-

> ''सरकार, अगर अखनि पाँच दिनक परिवारोक आ घोड़ोक बुतात आ एक सए रूपैआ भऽ जाए तँ हम अपन जिनगीकेँ पटरीपर आनि लेब। जखने जिनगी पटरीपर आबि जाएत तखने जिनगीक सरपट चालि पकड़ि लेब। स्त्रीक इलाज, परिवार आ कारोबार तीनू काज एहेन अछि जे एक्कोटा छोड़ैबला नै अछि।''

टमटमबलाक बोलीमे रमाकान्तकेँ मदतिक आशा बूझि पड़लनि। आशा देखि खुशी भेलनि। खुशी अबिते विचारलथि जे अगर पाँच दिनक बदला दस दिनक बुतात आ सए रूपैआक बदला दू सए रूपैआ जौं मदति कऽ देबै तँ विरोध नै करत। संगे जखने समस्यासँ निकलैक आशा जगि जेतै तँ काजो करैक साहस बढ़ि जेतै। मुदा असगरे तँ नै अछि, दूटा टमटमबला अछि। की दुनू गोटेकेँ मदति करब आकि एकरेटा?'' ई प्रश्न रमाकान्तक मनमे ठाढ़ भऽ गेलनि।

ऐ सबालपर सोचए लगला। मनमे एलनि जे मुसीबत तँ ऐ वेचारेकेँ छै। दोसर टमटमबालासँ तँ गप नै भेल जे बुझितिऐ। मुदा एकर तँ बुझलिऐ। तँए एकरा मदति करबै। दोसर टमटमबलासँ पूछि लेबै जे तोहर भाड़ा केते भेलह। जेते कहत तेते दऽ देबै। मुदा सोझहामे एकठाम कम-बेसी देनाइओ उचित नै। तँए पहिने ओकरा भाड़ा दऽ विदा कऽ देबै आ एकरा रोकि पाछू कऽ सभ किछु दऽ विदा कऽ देबै। गरीबक हृदैकेँ जुड़ाएब बड़ पैघ काज होइत। एते सोचैत-सोचैत रमाकान्त घरपर पहुँच गेला।

घरमे ताला लगा हीरानन्द पैखाना गेल रहथि। दुनू टमटम पहुँच दलानक आगूमे ठाढ़ भेल। टमटम ठाढ़ होइते सभ कियो उतरला। टमटमोबला आ जुगेसरो सभ समानकेँ उतारि दरबज्जाक ओसारपर रखलक। ताबे हीरानन्दो बाध दिससँ आबि पोखरिक पुबरिया महार लग पहुँचला। महार लग अबिते दरबज्जापर टमटम लागल देखलनि। टमटम देखि हीरानन्द बूझि गेलखिन जे रमाकान्त आबि गेला। हाँइ-हाँइ कऽ दतमनि-कुरुड़ कऽ लफरल दरबज्जापर आबि घरक ताला खोलि देलखिन। हाथे-पाथे तीनू गोटे सभ सामानकेँ कोठरीमे रखलनि। दोसर टमटमबलाकेँ भाड़ा पूछि रमाकान्त दऽ देलखिन। पहिल टमटमबलाकेँ आँखिक इशारासँ रूकैले कहलखिन। दोसर टमटमबला चलि गेल। पहिल टमटमबलाकेँ दू सए रूपैआ आ दस दिनक बुतात -दू पसेरी बदाम आ तीन पसेरी चाउर- दए कऽ विदा केलनि। टमटमपर चढ़ि मोने-मन गद-गद होइत टमटमबला गीत 'सबहक सुधि अहाँ लइ छी यौ बाबा हमरा किए बिसरल छी यौ...।''

गुनगुनाइत विदा भेल।

पसीनासँ गंध करैत कुरता-गंजी निकालि रमाकान्त चौकीपर रखलनि। भकुआएल मन रहनि। मुदा निकेना घर पहुँचलासँ मन खुशी होइत रहनि। हीरानन्दक पुछैसँ पहिने रमाकान्त पुछलखिन-

“गाम-घरक हाल-चाल बढ़ियाँ अछि किने?”

“हँ।”

कहि हीरानन्द पुछलखिन-

“यात्रा बढ़ियाँ रहल किने?”

“एह, यात्राक सम्बन्धमे की कहू! अखनि तँ मनो भकुआएल अछि आ तीन दिनसँ नहेबो ने केलौं हेन। तँए पहिने नहाइले जाए दिअ। तखनि निचेनसँ यात्राक सम्बन्धमे कहब।”

जुगेसरकेँ जे विदाइ मद्रासमे भेटल छेलै ओ चारिटा काटुनमे रहै। चारू काटुन जुगेसर फुटा कऽ ओसारेपर रखने रहए। जुगेसरक घरवाली आ धिया-पुता सेहो आबि गेलै। चारू काटुन जुगेसर अपना घरवालीकेँ देखबैत कहलक-

“ई अपन छी। अँगना नेने चलू।”

अपन सुनि घरोवाली आ धियो-पुतो चपचपा गेल। चारू काटुन लऽ आँगन विदा भेल।

रमाकान्तक अबैक समाचार गाममे बिहाड़ि जकाँ पसरि गेल। धिया-पुतासँ लऽ कऽ चेतन धरि देखैले आबए लगलनि। दरबज्जापर लोकक भीड़ बढ़ए लागल। रमाकान्त नहाएब छोड़ि जुगेसरकेँ कहलखिन-

“जुगे, सनेसबला काटुन एतै नेने आबह।”

सनेसमे डाक्टर महेन्द्र टुकड़ी बनौल दू काटुन नारियल देने रहनि। जुगेसर कोठरी जा एकटा काटुन उठौने आएल। जहियासँ रमाकान्त ब्रह्मचारीजीक आश्रम गेलथि तहियासँ विचारे बदलि गेलनि। अपन सुख-दुखकेँ ओते महत नै दिअ लगला, जेते दोसराक। दरबज्जापर लोक थहा-थही करए लगल। जेना लोकक हृदए रमाकान्तक हृदैमे मिझराए लगलनि आ रमाकान्तक हृदए लोकमे। अपन नहाएब, दतमनि

करब आ आँखिपर लटकल ओङही, सभटाकेँ बिसरि जुगेसरकेँ कहलखिन-

> ''चेतनकेँ दू-दूटा टुकड़ी आ बाल-बोधकेँ एक-एकटा टुकड़ी बाँटि दहक। दरबज्जापर आएल एक्को गोटे ई नै कहए जे हमरा नै भेल।''

काटुन खोलि जुगेसर नारियलक टुकड़ी बिलहए लगल। हाथमे पड़िते, की चेतन की धिया-पुता, नारियल खाए लगल। एक काटुन सठि गेल मुदा देखिनिहार, जिज्ञासा केनिहार नै ओराएल। दोसरो काटुन जुगेसर खोललक। दोसर काटुन सठैत-सठैत लोको पतरा गेल। लोकक भीड़ हटल देखि रमाकान्त नम्हर साँस छोड़ैत जुगेसरकेँ कहलखिन-

> ''आब तोहूँ जा कऽ खा-पीअ गे। हमहूँ जाइ छी।''

आँगन आबि जुगेसर अपन चारू काटुन खोललक। मद्रासमे काटुनक भितरका समान नै देखने छल तँए देखैक उत्सुकता रहै। एक-एकटा काटुन चारू गोटे- महेन्द्र, रविन्द्र, जमुना आ सुजाता- देने रहथिन। महिन्द्रक देल पहिल काटुन, महेन्द्रबलामे एक जोड़ धोती, एक जोड़ साड़ी, एकटा कुरता कपड़ाक पीस, एकटा आडीक पीस, एकटा चद्दरि, एकटा गमछा, जुगेसर लेल एक जोड़ जुत्ता आ घरवाली लेल एक जोड़ चप्पल, दुनू बच्चाले पेन्ट-शर्टक संग तीन सए रूपैआ रहै। अहिना तीनू काटुनमे सेहो रहै। चारू काटुनक समान देखि जुगेसरक परिवारक मनमे खुशीक बिहाड़ि उठि गेलै। दुनू बच्चा अपन कपड़ा देखि खुशीसँ एक-एकटा पहिरि आँगनमे नाचए लगल। कपड़ाक एहेन सुख जिनगीमे पहिल दिन भेटल छेलै। दुनू परानी जुगेसरकेँ सेहो खुशीसँ मन गद-गद भऽ गेलै। जुगेसर हिसाब जोड़ए लगल जे जौं ओरिया कऽ पहिरब तँ दुनू गोरेक जिनगी भरि पार लगि जाएत। एहेन चिक्कन कपड़ा आइ धरि नसीब नै भेल छेलए। एक आँखि जुगेसर समानपर देने आ दोसर आँखि घरवालीक आँखिपर देलक।

दुनू गोटेक आँखिमे जिनगीक वसन्त आबए लगलै। अपन बिआह मन पड़लै। जुगेसरकेँ होइ जे घरवालीकेँ दुनू बाँहिसँ पजिया कऽ छातीमे लगा ली आ घरवालीकेँ होइ जे घरबलाक कोरामे बैसि एकाकार भऽ

जाइ। मुदा तीन दिनक गाड़ीक झमारसँ जुगेसरक देहो भँसिआइ आ ओङहीओ आँखिक पिपनीकेँ झलफलबैत रहै। जुगेसर घरवालीकेँ कहलक-

"पहिरैले एक-एक जोड़ कपड़ो आ जुत्तो बाहर रखू आ बाँकीकेँ खूब सेरियाए कऽ रखि लिअ, जे दुरि नै हुअए।"

बेर टगि गेल। जुगेसर नवका धोती, गंजी पहिरि कान्हपर गमछा नेने रमाकान्त ऐठाम पहुँचल। दरबज्जापर रमाकान्त सुतले रहथि। आँगन जाए श्यामाकेँ देखलक तँ ओहो सुति उठि कऽ मुँह-हाथ धोइ छेली। जुगेसरकेँ देखि, श्यामा एक टकसँ निङहारि मुस्की दैत पुछलखिन-

"आइ तँ अहाँ दुरगमनियाँ वर जकाँ लगै छी जुगेसर।"

हँसैत जुगेसर उत्तर देलकनि-

"काकी, महिन्दर भायक देलहा छी।"

महेन्द्रक नाओं सुनि श्यामा कहलखिन-

"भगवान भोग देथि। की सभ बच्चा देलनि?"

जुगेसर बाजल-

"अहाँसँ लाथ कोन काकी, तेते कपड़ा-लत्ता आ जुत्ता-चप्पल चारू गोरे देलनि जे जिनगी भरि केतबो धाँगि कऽ पहिरब तैयो ने सठत।"

बेटा-पुतोहुक बड़ाइ सुनि श्यामाक हृदए उमड़ि पड़लनि। आह्लादित भऽ पुछलखिन-

"पाइओ-कौड़ी देलनि आकि कपड़े-लत्ताटा?"

"रूपैआ तँ गनलिऐ नै मुदा बूझि पड़ल जे दस-पनरहटा नमरी अछि।"

"बाह! मालिक देखलनि की नै?"

"ओ तँ सुतले छथि। हुनके देखबैले पहिरि कऽ एलौं।"

"हम ताबे चाह बनबै छी। दरबज्जापर जा कऽ हुनको उठा

दियनु।''

''बड़बढ़ियाँ।''

कहि जुगेसर दरबज्जापर आबि रमाकान्तकेँ उठबए लगलनि। आँखि खोलि रमाकान्त देबालक घड़ीपर नजरि देलनि। चारि बजैत। पड़ले-पड़ल सुतैक हिसाब जोड़लनि। हिसाब जोड़ि घुनघुना कऽ बजला-

''एहेन निन्न तँ जुआनीओमे नै अबै छल।''

ओछाइनपर सँ उठि जुगेसरकेँ कहलखिन-

''कनी चाह बनौने आबह। अखनो बूझि पड़ैए जे निन्न आँखिएपर लटकल अछि। ताबे हमहूँ कुरुड़ कऽ लइ छी।''

कहि रमाकान्त पहिने लघी करए गेला। लघी करै काल बूझि पड़नि जे चाहोसँ धीपल लघी होइए। तेतबे नै जेते लघी चारि बेरमे करै छी, तोहूसँ बेसी भऽ रहल अछि। लघी कऽ कलपर आबि आँखि-कान पोछि, कुरुड़ कए दमसा कऽ भरि पेट पानि पीलनि। पानि पीबिते बूझि पड़लनि जे अदहा निन्न पड़ा गेल। जुगेसर चाह अनलक। रमाकान्त चाह पीबिते रहथि आकि हीरानन्दो स्कूलसँ आबि गेला। शशिशेखर सोहो आबि गेल। हीरानन्द जुगेसरकेँ पुछलखिन-

''जात्रा बढ़ियाँ रहल किने?''

हँसैत जुगेसर बाजल-

''जाइ काल टेनमे बड़ भीड़ भेल। जाबे गाड़ीमे रही ताबे ने एक्को बेर झाड़ा भेल आ ने सुतलौं। किएक तँ रिजफ सीट रहबे ने करए। जइ डिब्बामे बैसल रही ओइमे लोकक करमान लागल रहै। तैपरसँ जइ टीशनपर गाड़ी रूकै सभ टीशनमे एगो-दूगो लोक उतड़ै आ दस-बीस गोरे चढ़ि जाए। मुदा भगवानक दयासँ कहुना-कहुना पहुँच गेलौं। जखनि मद्रास टीशनपर उतरलौं तँ दोसरे रंगक लोक देखिऐ। अपना सभ दिस अछि किने जे सभ रंगक लोक मिलल-जुलल अछि। से नै देखिऐ। बेसी लोक कारीए रहै। गोटे-गोटे लोक उज्जर बूझि पड़ै। जखनि डेरापर

पहुँचलौं तँ मकान देखि बिसबासे ने हुअए जे अपन छियनि। बड़का भारी मकान। तइमे कोठलीक कमी नै।''

''भरि मोन देखलौं किने?''

''एह, की कहू मास्टर साहैब, महिन्दर भाय अपने मोटरसँ भरि-भरि दिन बुलबैत रहथि। मोटरो तेहेन जे जहाँ बैसी आ खुगै आकि ओङही लगि जाए। केतए की देखलौं से मनो ने अछि।''

रमाकान्तक मद्राससँ एनाइक समाचार सुनि महेन्द्रक स्कूलक संगी सुबुध सेहो एला। सुबुध हाइ स्कूलमे शिक्षक छथि। महेन्द्र आ सुबुध हाइ स्कूल धरि, संगे-संग पढ़ने रहथि। महेन्द्र साइंसक विद्यार्थी आ सुबुध आर्टक। बी.ए. पास केलापर सुबुध शिक्षक भेला आ महेन्द्र डाक्टरी पढ़ि डाक्टर बनला। महेन्द्रक कुशल-क्षेम बुझला पछाति सुबुध रमाकान्तकेँ पुछलखिन-

''अपना ऐठामक लोक आ मद्रासक लोकमे की अंतर देखलिऐ?''

दुनूठामक लोकक तुलना करैत रमाकान्त कहए लगलखिन-

''ओत्तुका आ अपना ऐठामक लोकमे अकास-पतालक अन्तर अछि। ओइठामक लोक अपना ऐठामक लोकसँ अधिक मेहनती आ इमानदार अछि।''

बिच्चेमे शशिशेखर प्रश्न केलकनि-

''की मेहनती?''

''मनुखक तुलना करैसँ पहिने अपन इलाका आ मद्रासक माटि-पानिक तुलना सुनि लिअ। जेहेन सुन्नर माटि अपना सबहक अछि, देखते छिऐ जे केते मुलाइम आ उपजाऊ अछि। पानिओ केते बढ़ियाँ अछि, एहेन मद्रासमे नै छै। अपना सभसँ बेसी गरमीओ पड़ै छै। जहाँ धरि लोकक सबाल अछि, अपना ऐठामक लोक अधिक आलसी अछि। समैकेँ कोनो महत नै दइए। वा ई कहियौ जे ऐठामक लोक समैक महत बुझबे नै करैए। कियो बुझबो करैए तँ ओ परजीवी बनि जिनगी बितबए

चाहैए। हँ, किछु गोटे एहेन जरूर छथि जे मर्यादित मनुख बनि जिनगी जीब रहल छथि। जे पूजनीय छथि मुदा सामाजिक बेवस्था सदिखन हुनको झकझोड़िते रहै छन्हि। ओइठामक लोक समैक संग चलैए जइसँ कमजोर इलाका रहितो नीक-नहाँति जिनगी बितबैए। ओइठामक लोक भीखकेँ अधला बूझि नै मंगैए मुदा अपना ऐठाम लोक उपार्जनक स्रोत बुझैए।''

बिच्चेमे सुबुध पुछलकनि-

''पढ़ाइ-लिखाइ केहेन छै?''

''स्कूल, कौलेज, युनिवर्सिटी सभ देखलौं। लड़का-लड़कीक स्कूल शुरूहेसे अलग-अलग अछि। मुदा तैयो दुनूकेँ संगे-संग पढ़ैत सेहो देखलौं। अपना ऐठामसँ बेसी लड़की ओइठाम पढ़ैए। अपना ऐठाम लड़के पछुआएल अछि तँ लड़कीक कोन हिसाब। गाड़ी, ट्रेन, बसमे सेहो अलग-अलग बेवस्था छै। जखनि कि अपना ऐठाम सभ संगे-संग चलैए।''

सुबुध-

''खाइ-पीबैक केहेन बेवस्था छै?''

''गरीब लोकक खान-पान दब होइते छै। मुदा एक हिसाबसँ देखल जाए तँ अपना सबहक नीक अछि। कपड़ो-लत्ता पहिरब अपना ऐठाम नीक अछि।''

रमाकान्तक छोटकी पुतोहु सुजाता एक काटुन फलक बनल शराबक पेटी सेहो देने रहनि। आँखिक इशारासँ रमाकान्त जुगेसरकेँ एक बोतल ब्राण्डी अनैले कहलखिन। जुगेसर उठि कऽ भीतर गेल आ ब्राण्डीक एकटा बोतल नेने आएल। दरबज्जापर आबि चाहेक गिलासकेँ धोइ, सभमे शराब दऽ सबहक आगूमे देलकनि। आगूमे पड़िते रमाकान्त गट दऽ पीब गेला। मुदा हीरानन्दो, शशिशेखरो आ सुबुधोकेँ डर होइ छेलनि। कहियो पीने नै रहथि। दोहरी गिलास पीबैत रमाकान्त सभकेँ कहलखिन-

''पीबै जाइ जाउ, फलक रस छिऐ। कोनो अपकार नै करत।''

मुदा तैयो सभ-सबहक मुँह तकैत रहथि। दोहरा कऽ फेर रमाकान्त सभकेँ कहलखिन। मोने-मन सुबुध सोचलनि जे कोनो जहर-माहूर थोड़े छिऐ जे मरि जाएब। अगर मरबो करब तँ पहिने कक्के ने मरता। बूझल जेतै। आगूमे राखल गिलास उठा आस्तेसँ दू घोंट पीब, गिलास रखि हीरानन्दकेँ कहलखिन-

''पीबू, पीबू मास्टर साहैब। सुआद तँ कोनो अधला नहियेँ बूझि पड़ैए।

सुबुधक बात सुनि हीरानन्दो आ शशिशेखरो गिलास उठा कऽ पीलनि। ताबे तेसरो गिलास रमाकान्त चढ़ा देलखिन। तेसर गिलास पीबिते आँखिमे लाली आबए लगलनि। मन हल्लुक सेहो हुअ लगलनि। बजैक ताउ सेहो चढ़ए लगलनि। जहिना आगिपर चढ़ल पानिक वर्तनमे ताउ लगलापर निच्चाँक पानि गर्म भऽ ऊपर उठैत रहैए तहिना रमाकान्तोकेँ हुअ लगलनि। धीरे-धीरे रंग चढ़ैत-चढ़ैत नीक जकाँ चढ़ि गेलनि। हीरानन्द, सुबुध आ शशिशेखरक आँखि सेहो तेज हुअ लगलनि। तेज होइत नजरिसँ सुबुध पुछलखिन-

''कक्का, महेन्द्र भाय मस्तीमे रहै छथि किने?''

बजैक वेग रमाकान्तकेँ रहबे करनि तैपरसँ महेन्द्रक मस्ती सुनि कहए लगलखिन-

''मेहनति आ कमाइ देखि क्षुब्द भऽ गेलौं। अपन बड़का मकान, चारिटा गाड़ी, बजारमे अइल-फइलक बास तैपरसँ बैंकोमे ढेरी रूपैआ जमा केने अछि। ऐठामक सम्पतिक ओकरा कोनो जरूरति नै छै। किएक रहतै? जेकरा अपने कमाइ अम्बोह छै।''

बिच्चेमे सुबुध टोकि देलकनि-

''तखनि ऐठामक खेत-पथार गरीब-गुरबाकेँ दए दियौ?''

बिना किछु आगू-पाछू सोचने रमाकान्त बजला-

''बड़ सुन्नर बात अहाँ कहलौं। अनेरे हम एते खेत-पथार रखने छी। यएह खेत जे गरीबक हाथमे जेतै तँ उपजबो बेसी करतै आ ओकर जिनगीओ सुधरि जेतै।''

जहिना धधकल आगिमे हवा सहायक होइत तहिना रमाकान्तोकेँ भेलनि। एक तँ ब्राण्डीक निशाँ, दोसर परिवारमे चारि-चारिटा डाक्टरक कमाइ, तैपरसँ अपार सम्पति देखि मन उधियाइ छेलनि। समाजक सिनेह सेहो बढ़ि गेल छेलनि। तेतबे नै, अद्वैत दर्शन हृदैकेँ पैघ बना देने छेलनि।

हँसैत रमाकान्त सबहक बीच, कहलखिन-

''अखनि धरि हम गुल्लरिक कीड़ा बनल छेलौं मुदा आब दुनियाँकेँ देखलिऐ। दू सए बीघा जमीन अछि। किएक हम एते रखने छी। एकटा जमीनदारक खेतसँ सैकड़ो गरीब परिवार हँसी-खुशीसँ गुजर कऽ सकैए। जखनि कि ओतेक सम्पतिक सुख एकटा परिवार करैए। ई केते भारी अनुचित छी। सभ मनुख मनुख छी। सभकेँ सुख-दुखक अनुभव होइ छै। कियो अन्न बेतरे काहि कटैए तँ केकरो अन्न सड़ै छै। घोर अन्याय मनुख-मनुखक संग करैए।''

कहि जुगेसरकेँ कहलखिन-

''जुगे, इलाइची देल पान लगाबह?''

जुगेसर पान लगबए गेल। तैबीच बौएलाल सेहो आएल। रमाकान्तकेँ गोर लागि कातमे बैसल। बौएलालकेँ बैसिते रमाकान्त हीरानन्दकेँ कहलखिन-

''मास्टर साहैब, महेन्द्र कहने छल जे एकटा लड़का आ एकटा लड़की दू गोरेकेँ मद्रास पठा दिअ। ओइ दुनू गोटेकेँ अपना संग रखि छोट-छोट बिमारीक इलाज केनाइ सिखा देबै। गाममे इलाजक बड़ असुविधा अछि। तेतबे नै, गरीबीक चलैत लोक रोग-बियाधिसँ मरि जाइए मुदा इलाज नै करा पबैए। तँए एकटा छोट-छीन अस्पताल सेहो बना देब, जइमे लोकक मुफ्त इलाज

हेतै। तइले जेते दबाइ-दारूमे खरच हएत से हम देब। हम सभ चारि गोटे छी। बेरा-बेरी चारू गोटे सालमे एक-एक मास गाममे रहब आ लोकक इलाज करब। तैबीच छोट-छोट बिमारी लेल सेहो दू आदमीकेँ तैयार कऽ देबाक अछि। जौं कहीं बीचमे नम्हर बिमारी केकरो हेतै तँ ओकर इलाजक खरच सेहो देबै। तँए दू आदमीकेँ मद्रास पठा दियौ, मासुल हम देबै।''

रमाकान्तक बात सुनि सभ कियो बौएलाल आ सुमित्राकेँ मद्रास पठबैक विचार केलनि। बौएलालकेँ हीरानन्द कहलखिन-

''बौएलाल, सबहक विचार तँ तूँ सुनिए लेलह। काल्हि तूँ आ सुमित्रा दुनू गोरे मद्रास चलि जाह।''

OOO

९

कछ-मछ करैत हीरानन्द भरि राति जगले रहि गेला। मनमे कखनो होन्हि जे रमाकान्तक देल जमीन समाजक बीच केना बाँटल जाए, तँ कखनो हुनक उदार विचार नचैत रहनि। कखनो होन्हि जे निशाँक झोकमे बजला मुदा निशाँ टुटलापर जौं कहीं नठि जाथि। बात बदलब धनीक लोकक जनमजात आदति छी। मुदा हम तँ शिक्षक छी, शिक्षकक प्रति आदर आ निष्ठा सभ दिनसँ समाजमे रहलै आ रहतै। ऐ विचारक बीच जेते गोटे छेलौं ओइमे हम आ सुबुध शिक्षक छी। आन कियो तँ कम्मो मुदा हम दुनू गोटेतँ बेसी घिनाएब। कोन मुँह लऽ समाजक बीच रहब। विचित्र स्थितिमे हीरानन्द रहथि। फेर अपनेपर शंका भेलनि जे हमहूँ शराबेक निशाँमे ने तँ बौआइ छी। ई बात मनमे उठिते, उठि कऽ बाहर निकलि चारू भर तकलनि। अन्हार गुप-गुप रहए। सन-सन करैत राति छेलै। हाथ-हाथ नै सुझै छेलै। मुदा मेघ साफ। सिंगहारक फूल जकाँ तरेगन चकचक करैत। हवा तँ कोनो नहियेँ बहैत रहै मुदा राति ठंढ़ाएल रहए। पुनः बाहरसँ कोठरी आबि बिछानपर पड़ि रहला। मुदा निन्नक केतौ पता नै! मनसँ जमीन हटबे ने करैत रहनि। पुनः उठि कऽ कोठरीसँ निकलि लघुशंका करैले कातमे बैसला। भरिपोख पेशाब भेलनि। पेशाब होइते मन हल्लुक भेलनि। मन हल्लुक होइते ओछाइनपर आबि पड़ि रहला। ओछाइनपर पड़िते निन्न आबि गेलनि।

सुबुध सेहो भरि राति जगले बितौलनि। मुदा हीरानन्द जकाँ ओ ओझरीमे नै ओझराएल रहथि। समाजशास्त्रक शिक्षक होइक नाते स्पष्ट सोच आ समाज चलैक स्पष्ट दिशा छेलनि तँए मन दृढ़ संकल्प आ सक्कत विचारसँ भरल छेलनि। सभसँ पहिने मनमे उठलनि जे जहिना आर्थिक दृष्टिसँ टुटल समाजकेँ रमाकान्त कक्काक सहयोगसँ मजगूत बल भेटतै तहिना तँ ओइ बलकेँ चलबैक सेहो मजगूत रस्ता भेटक चाही! जे रमाकान्त कक्का बुते नै हेतनि। इमानदारी आ उदार स्वभावक चलैत तँ ओ सम्पतिक तियाग केलनि। मुदा ओ सम्पति आगू मुहेँ केना बढ़तै। जहिना मनुखक परिवार दोबर, तेबर, चारिबरक रफ्तारसँ आगू मुहेँ बढ़ैए तहिना तँ सम्पतिओक गति हेबाक चाहिऐ। मुदा सम्पतिमे ओ गति तखने

औत जखनि कि ओइमे श्रमक इंजिन लगौल जाएत। ओना श्रमक इंजन लगौनिहार श्रमिक सेहो पर्याप्त अछि मुदा ओकरा श्रमकेँ कोन रूपमे बढ़ौल जाए। एक रूपक ई होइत जे सोझहे-सोझही ओकरा नव कार्यक ढाँचामे ढालल जाए, नव काज देल जाए, जे संभव नै अछि! किएक तँ नव औजार, नव तरीका, बिना नव ज्ञाने संभव नै अछि, जे नै अछि। दोसर जे लूरि आ औजार अछि, ओकरे धारदार बना आगू बढ़ौल जाए। जे संभबो अछि आ उपयुक्तो होएत। मुदा अहूले पथ-प्रदर्शकक जरूरति होएत। जेकर अभाव अछि। हमहूँ तँ नोकरीए करै छी। सात दिनमे एक दिन रवि-रवि गाममे रहै छी, बाँकी छह दिन अनतै रहै छी। तइसँ काज केना चलि सकैए? किएक तँ समाजो नम्हर अछि आ समस्यो ढेर अछि। हर समस्याक समाधानक रस्तो फराक-फराक होइत। जेना बुद्धदेव कहने छथि जे दुश्मनकेँ सूइयाक नोको बरबरि जौं सुराक भेट जाएत तँ ओहू दऽ कऽ हाथी सन विशाल जानवरकेँ प्रवेश करा लेत। समाजक समस्यो तँ ओहने अछि।

अनासुरती मनमे उपकलनि, जहिना रमाकान्त कक्का अपन सभ सम्पति समाजकेँ दइले तैयार छथि तहिना हमहूँ नोकरी छोड़ि अपन ज्ञान समाजकेँ दऽ देबै। सभ किछु बुझितौं सड़ल-गलल रस्ता अपन अरामक दुआरे धेने चलि रहल छी। सात बीघा जमीन, एकटा पोखरि, दस कट्ठा गाछी-कलम आ खढ़होरि अछि। जइसँ पिताजी नीक-नहाँति गुजरो करै छला आ हमरो पढ़ौलनि। मुदा हम नोकरीओ करै छी, खेतो-पथार ओहिना अछि मुदा केते आगू मुहेँ बढ़लौं? हँ, एते जरूर भेल अछि जे घरोवालीकेँ आ बेदरो-बुदरीकेँ, धनिकक मंदिरक मुरती जकाँ नीक-नीक परसाद, नीक-नीक सजावटिसँ सजा काहिल बनौने छी। की हम ई नै देखै छी जे झक-झक करैत छातीक हाड़बला मनुख रिक्शा घीचैए, साठि बर्खक महिला चिमनीमे पजेबा उघैए, मरैबला पुरुख बड़दक संग हर ठेलैए। अन्नक बोझ उघैए। की ओकर देह लोहाक बनल छै आ हमरा सबहक कोढ़िलाक बनल अछि! ई सभ धन आ बुधिक करामात छी। आइ धरिक समाज आ समाजक निआमक एकरे पोसक रहला जे सुधारैक अछि। नै तँ मनुख आ जानवरमे की अन्तर रहतै। जइ समाजमे मनुख जानवरक जिनगी जीबए ओइ समाजक प्रबुद्ध लोककेँ चुरुक भरि पानिमे डुमि कऽ नै

मरि जेबाक चाहियनि। एते बात मनमे अबिते सुबुध तँइ केलनि जे सभसँ पहिने काल्हि स्कूलमे तियागपत्र दऽ देब। आइ धरि जे जिनगी जीलौं मुदा काल्हिसँ नव जिनगीक सूत्रपात करब। ऐ संकल्प-विकल्पक बीच मन घुरियाइत रहनि।

भोर होइते सुबुध ओछाइन परसँ उठि मैदान दिस विदा भेला। हाथमे लोटा मुदा मन ओही विचारमे डुमल छेलनि। थोड़े दूर गेलापर गाममे गल्ल-गुल होइत सुनलनि। रस्तेपर ठाढ़ भऽ अकानए लगला। जे कथीक गल्ल-गुल भऽ रहल अछि। सोझहामे केकरो नै देखथि जे पुछिओ लैतथि। मोने-मन अनुमान करए लगला जे भरिसक रातिमे केतौ कोनो घटना घटि गेलै। या तँ केकरो साँप-ताँप काटि लेलकै वा केतौ चोरि भऽ गेलै। मुदा से सभ नै छेलै। साँझमे जे विचार रमाकान्त बेक्त केने रहथिन ओ राता-राती बिहाड़ि जकाँ सगरे गाम पसरि गेलै। रस्तेसँ घूरि सुबुध कड़चीक दतमनि तोड़ि दतमनि करैत घरपर एला। घरपर अबिते देखलनि जे सुकना बैसल अछि। मुदा सुकनाक नजरि सुबुधपर नै पड़लै, किएक तँ ओ अँगनाक दुआरि दिस तकैत रहए। सुबुध सुकनाकेँ पुछलखिन-

"भोरे-भोर किम्हर सुकन?"

सुबुधक बात सुनि अकचकाइत सुकन चौकीपर सँ उठि, दुनू हाथ जोड़ि बाजल-

"मालिक, अहाँ तँ जनिते छी जे कोनो काज-उद्यममे सभ तूर मिलि सम्हारि दइ छी। गरीबोपर नजरि रखबै।"

सुबुधकेँ सुकनक बातक कोनो अर्थे ने लगलनि। पुछलखिन-

"सुकन भाय, तोहर बात हम नै बुझलियऽ।"

"लोक सभ कहलकहैँ जे रमाकान्त कक्का अपन सभ खेत गरीब-गुरबाकेँ दऽ देथिन, जे अहीं बँटबै।"

सुकनक बात सुनि सुबुध मोने-मन सोचए लगला जे जमीन-जयदादक सबाल अछि। औगता कऽ केना हेतै। जौं आम लोकक बीच विचार कएल जाएत तँ हो-हल्ला हेतै। हो-हल्ला भेने काजो बिगड़ि जेतै।

तँए असथिरसँ विचार करैक जरूरति अछि। मुदा अखनि जौं सुकनकँ ई बात कहबै तँ दुख हेतै। तँए आशाक बात कहक चाही। कहलखिन-

“सुकन भाय, जखनि गरीबक बीच खेतक बँटबारा हएत तँ तोहूँ गरीबे छह। तखनि तोरा किएक ने हेतह। अखनि जाह।”

सुकन विदा भेल। कलक आगूमे ठाढ़ भऽ सुबुध सोचए लगला। अजीब स्थिति भऽ गेल। एक दिस गरीबक सबाल अछि। जौं कनीओं चूक हएत तँ जिनगी भरि बदनामीक मोटरी माथपर चढ़ि जाएत। तँए इमानदारीक जरूरति अछि। मुदा इमानदारी दिस तकै छी तँ अपनोमे बेइमानी घूसल अछि। परिवारोमे तहिना देखै छी आ समाजोमे तँ अछिए। गरीबोमे देखै छी, जे मेहनती अछि ओ बहुत किछु कमा कऽ बनाइओ नेने अछि। जेना रहैक घर, पानि पीबैक कल, जीबैले बटाइ खेतीक संग पोसियाँ मालो-जाल खुट्टापर रखने अछि। जखनि कि जे आलसी अछि ओकरा सभ कथूक अभाबे छै। तेतबे नै जौं हम इमनदारीओसँ विचार रखए चाहब तैयो उलझन होएत, हमहींटा तँ नै छी। आरो गोटे रहता। सबहक नेत सबहक प्रति एक्के रंग हेतनि, सेहो बात नै अछि। जौं कियो मुँह देखि मूंगबा बँटता, सेहो भऽ सकैए। ओइठाम जौं हुनका कहबनि तँ हमरे बात मानि लेता, सेहो संभव नै अछि। जौं रमाकान्त कक्का केकरो बेसी दिअ चाहथिन तँ की कहबनि, सम्पति तँ हुनके छियनि। ऐ सभ विचारक जंगलमे सुबुध बौआए लगला। दतमनिक घुस्सा कखनो चलै आ कखनो बन्न भऽ जाइ छेलनि। एक तँ भरि रातिक जगरना तैपरसँ अमरलत्ती जकाँ ओझरी कँ सोझराएब असान नै बूझि पड़नि, कनीओं किम्हरो जोर पड़त तँ टन दऽ टूटि जाएत। तँए समाजक मूल रोगकँ जड़िसँ नै पकड़ल जाएत तँ सभ गूड़ गोबर भऽ जाएत। तैबीच मुनमा डाबामे दूध नेने सुबुधक आँगन जाए डाबा रखि, सुबुध लग आबि दुनू हाथ जोड़ि कहलकनि-

“भाय, अबलोपर दया करबै?”

एक तँ सुबुधक मन अपने घोर-घोर भेल रहनि, तैपरसँ लोकक पैरबी आरो घोर कऽ देलकनि। मन मसोसि कऽ सुबुध कहलखिन-

“अखनि जाह। जखनि जमीनक बँटबारा हुअ लगतै तँ तोरो

बजा लेबह।''

दतमनि कए सुबुध आँगन जाए पत्नीकेँ पुछलखिन-

''डाबामे मुनमा कथी नेने आएल छल?''

''दूध।''

''दाम देलिऐ।''

''नै।''

''किएक?''

''हमरा भेल जे अहीं पठेलौं, तँए।''

पत्नीक जवाब सुनि सुबुधक मनमे आगि लगि गेलनि। खिसिया कऽ पत्नीकेँ कहलखिन-

''झब दे चाह बनाउ। स्कूल जाएब।''

पत्नी-

''अखने किए जाएब? आन दिन खा कऽ जाइ छेलौं आ आइ भोरे किए जाएब?''

''रतुका खेलहा ओहिना कंठ लग अछि। तँए नै खाएब।''

कहि सुबुध लुंगी बदलि धोति पहिरए लगला आकि पत्नी चाह नेने एलखिन। कुरता पहिरि चाह पीब सुबुध विदा भेला।

जिनगी भरिमे रमाकान्तकेँ एहेन निन्न कहियो नै भेल छेलनि जेहेन राति भेलनि। समैक अन्दाजसँ जुगेसर आबि खिड़की देने हुलकी देलक तँ देखलक जे रमाकान्त ठर्र पाड़ै छथि। रमाकान्तकेँ सूतल देखि जुगेसर जोरसँ केबाड़ ढकढकौलक। केबाड़क अवाज सुनि रमाकान्त आँखि मोलैत उठला। जुगेसर रमाकान्तकेँ उठा चाह आनए आँगन गेल। रमाकान्तो उठि कऽ कलपर जा कुरुड़ केलनि। ताबे जुगेसरो चाह नेने आबि गेलनि। रमाकान्त चाह पीबिते रहथि आकि मनमे एलनि जे बाबा चाणक्य ठीके कहने छथिन जे धन केकराले रक्खी। हमरो तँ पितेजीक अरजल छी। जाधरि ओ जीबै छला, हमरा कोनो मतलब नै छल। मुदा

हुनका मुइने तँ सभटा हमरे भेल। दुनू बेटा तेते कमाइए जे ऐ धनक ओकरा जरूरते ने छै। हम केते दिन जीबे करब। तहन तँ सभ धन ओहिना नष्ट भऽ जाएत। कौआ-कुकुर लूझि-लूझि खाएत। तइसँ नीक जे समाजक गरीब-गुरबाकेँ दऽ दिऐ। जहिना तिब्बतक ८म-९अम शताब्दीक राजकुमार चेनपो अपन सभ सम्पति लोकक बीच बाँटि देलखिन तहिना हमहूँ बाँटि देबै। तइसँ समाजमे भाए-भैयारीक सम्बन्ध सेहो मजगूत बनतै। आइ जौं व्यास बाबा जीबैत रहितथि तँ ओ जरूर बिना कहनौं आबि कऽ असिरवाद दैतथि। अगर स्वर्ग जेबाक रस्ता तियागो होइए तँ हमहूँ किएक ने जाएब। धैनवाद सुबुध आ हीरानन्द मास्टर साहैबकेँ दियनि जे हमर अज्ञानताक केबाड़ खोललनि। बेटा-पुतोहु सभ जखनि सुनत तँ मोने-मन खूब खुशी हएत। की हमर कएल धरम ओकरा नै हेतै?

चाह पीब, पान खा लोटा लऽ रमाकान्त गाछी दिस चलला। कृष्णभोग आमक गाछ तर लोटा रखि, टहलि-टहलि गाछ सभकेँ निङहारि-निङहारि देखए लगला। गाछक जे रूप आइ रमाकान्त देखि रहल छथि से रूप आइसँ पहिने कहियो ने देखने छला। गाछ देखि बूझि पड़नि जे पत्ता-पत्ता हँसि रहल अछि। धरतीक शक्ति पाबि ऐश्वर्यवान बनल अछि। दोसराक सेवा लेल उत्साहित अछि। एक टकसँ गाछक रूप देखि रमाकान्तक हृदए गद-गद भऽ गेलनि। गाछ सभकेँ देखि लोटा उठा पैखाना दिस बढ़ला। तैबीच जय-जयकारक अवाज सुनलखिन। अवाज दूरमे रहै तँए स्पष्ट नै मुदा सुनै छेलखिन। रसे-रसे अवाज लग अबैत गेलनि। पैखानासँ उठि ओ अवाजकेँ अकानए लगला। जय-जयकारक संग अपनो नाओं सुनाइ छेलनि। अपन नाओं सुनि आरो चौकन्ना भऽ कानक पाछूमे हाथक तरहत्थी रखि अवाज अकानए लगला। लोकक समूह जेते लग अबैत जाइत तेते अवाज स्पष्ट भेल जाइ छेलै। हाँइ-हाँइ कऽ लोटा नेने पोखरिक घाटपर आबि, कुरुड़ कऽ घर दिस विदा भेला। अपन नाओंक संग जय-जयकार सुनि सोचए लगला जे की बात छिऐ? किएक लोक जय-जयकार कऽ रहल अछि। छातीक धुकधुकी सेहो तेज हुअ लगलनि। मनमे गुदगुदी सेहो लागए लगलनि। उत्साहसँ छाती सेहो फुलैत जान्हि। जाबे लोकक जुलुस घर लग पहुँचल, तइसँ पहिने

दरबज्जापर आबि रमाकान्त देखए लगला। हीरानन्द आ शशिशेखर सेहो दलानक आगूमे ठाढ़ भऽ देखै छला। की बूढ़, की जुआन, की बच्चा, सभ एक्के सुरमे। सभ मस्त। सभ उत्साहित। सभ नचैत। सबहक मुँहमे हँसी छिटकै छेलै।

दरबज्जाक आगूमे जुलुस आबि कऽ रुकल। आगू-आगू घोड़ाक नाच। -पाँच गोरेकँ बाँसक बत्तीकँ ललका कपड़ासँ सजा, घोड़ा बनौने-पाँचो घोड़े जकाँ दौगैत। कखनो हीं-हीं करैत तँ कखनो पाछूसँ चौतार फेकैत। तइ पाछू डफरा-बौसलीक धून। वसन्तक बहार छिड़ियबैत रहए। तइ पाछू लोक नचबो करैत आ जय-जयकारो करैत रहए। रमाकान्त अपन उत्साहकँ रोकि नै सकला। दलानक ओसारसँ उतरि सोझहे जुलुसमे सन्हिया नाचए लगला। के छोट, के पैघ, के बूढ़, के जवान, सभ बाढ़िक पानि जकाँ उधियाइत रहए। घर-घरसँ स्त्रीगण सेहो आबि चारूकात पसरि गेली।

आँगनसँ श्यामा आबि दरबज्जाक आगूमे ठाढ़ भऽ नाचो देखैत आ रमाकान्तोपर आँखि गड़ौने छेली। रमाकान्तोकँ नचैत देखि ओ मोने-मन सोचए लगली जे एना किएक भऽ रहल अछि। लोक सभकँ कोनो चीजक खुशी हेतै तँए नचैए। मुदा हिनका की भेटलनि जे एना बुढ़ाड़ीमे कुदै छथि। छोट बुधि श्यामाक, तँए बुझबे ने करैत जे धार जखनि समुद्रमे मिलए लगैए तखनि दुनूक पानि अहिना नचैए। एक दिस नदीक पानि गतिशील होइत तँ दोसर दिस समुद्रक असथिर होइए। ओइमे सिरिफ लहरि उठैए।

अखनि धरिक जुलुस आ नाच गामक उत्तरबारि टोलसँ आएल छेलै। दछिनबारि टोलसँ दोसर जुलुस, मोर-मोरनीक नाचक संग सेहो पहुँचल। दुनू नाचक बीच सौंसे गामक लोक हृदए खोलि कऽ नचैत। कातमे ठाढ़ भेल हीरानन्द, शशिशेखरकँ कहलखिन-

> ''अखनि जे आनन्द अछि ओ समाजमे सभ दिन केना बनल रहत?''

हीरानन्दक प्रश्नक उत्तर शशिशेखरकँ नै फुरलनि। मुदा प्रश्नक पाछू मन जरूर दौगलनि। गंभीर प्रश्न। तँए धाँइ दऽ उत्तरो देब शशिशेखर उचित नै बूझि चुप्पे रहला। मुदा एते बात जरूर मनमे अबैत रहनि जे

जौं सुकर्मक रस्तासँ मनुख उत्साहित भऽ चलैत रहत, तँ जरूर एहने आनन्द जिनगी भरि बनल रहतै।

जुलुसक बीच रमाकान्त नचैत-नचैत घामे-पसीने तर-बत्तर भऽ गेल रहथि। मुदा तैयो मन नचैले उधकैत रहनि। एकटा छौंड़ा जे अखरहो देखने, नचैत-नचैत रमाकान्त लग आबि दुनू हाथे पजिया कऽ रमाकान्तकेँ उठा कन्हापर लऽ नाचए लगल। सभ कियो दुनू हाथे थोपड़ी बजबैत जय-जयकार करए लगल। कातमे ठाढ़ भेल हीरानन्दकेँ भेलनि, जे कहीं रमाकान्त बाबू खसि-तसि नै पड़थि, तँए लफरि कऽ बीचमे जाए रमाकान्तकेँ डाँड़ पकड़ि निच्चाँ केलकनि। निच्चाँ उतरिते रमाकान्त दुनू हाथे थोपड़ी बजबैत फेर नाचए लगला। दुनू हाथ उठा कऽ हीरानन्द सभकेँ शान्त होइले कहलखिन। हाथक इशारा देखि सभ शान्त भऽ गेल। धोतीक खूटसँ रमाकान्त पसीना पोछि कहए लगलखिन-

"अहाँ सबहक बीच कहै छी, जे खेत-पथार आइ धरि हम्मर छल, अखनिसँ ओ अहाँ सबहक भऽ गेल।"

रमाकान्तक बात सुनि सबहक मुँहसँ धानक लाबा जकाँ हँसी भरभरा गेल। जे समाज आर्थिक विपन्नताक चलैत अखनि धरि मौलाएल छल ओइमे खुशीक नव फुल फुलाए लगल। सभ कियो हँसी-चौल करैत अपन-अपन घर दिस विदा भेल।

घरसँ निकलि सुबुध सोझहे अपन डेरा गेला, डेरामे पहुँच तियाग-पत्र लिखलनि। मेसबलाकेँ सभ हिसाब फड़िछा स्कूल जाए प्रध्यानाध्यापककेँ तियाग पत्र दैत कहलखिन-

"मास्टर साहैब, आइसँ सेवामे सहयोग नै कऽ सकब।"

कहि ऑफिससँ निकलए लगला। ऑफिससँ निकलैत देखि कुरसीसँ उठि प्रध्यानाध्यापक कहलखिन-

"सुबुध बाबू, कनी सुनि लिअ।"

हेडमास्टरक आग्रह सुनि सुबुध रूकि गेला। मुस्की दैत कहलखिन-

"की कहलौं मास्सैब?"

हेडमास्टरक छातीक धड़कन तेज भेल जाइ छेलनि। तँए बोलीक गति तेज हुअ लगलनि। कहलखिन-

> ''सुबुध बाबू, अहाँ जल्दीबाजीमे निर्णए कऽ लेलौं। अखनो कहब जे अपन कागत आपस लऽ लिअ।''

निशंक आ गंभीर स्वरमे सुबुध कहलकनि-

> ''मास्सैब, आइ धरि अहाँ सबहक संग रहलौं मुदा आब हम वैरागीक संग जाए रहल छी। तँए एक्को क्षण एतए अँटकैक इच्छा नै अछि। एक्को पाइ हमरा दुख नै भऽ रहल अछि। बेक्तिगत जिनगी बना अखनि धरि जीलौं मुदा आब सामाजिक जिनगी जीबैले जाए रहल छी। तँए अपनौसँ आग्रह करब, जे असिरवाद दिअ।''

एक दिस सुबुधक मुखमंडल नव ज्योतिसँ प्रखर होइत जाइत तँ दोसर दिस हेडमास्टरक मुखमंडल मलिन होइत गेलनि। सुबुधक तियागपत्रक समाचार शिक्षकक बीच सेहो पहुँचल। सभ शिक्षक अपना कोठरीसँ उठि हेडमास्टरक चेम्बरमे पहुँच गेला। दुनू हाथ जोड़ि सुबुध सभकेँ कहलखिन-

> ''भाय लोकनि, आइ धरिक जिनगी संगे-संग बितेलौं, तैबीच जौं किछु अधला भेल हुअए ओ बिसरि जाएब। आइ धरि किताबी ज्ञानक बीच ओझराएल छेलौं मुदा आब ओइ ज्ञानकेँ बेवहारिक धरतीपर उताड़ैले जाए रहल छी।''

जहिना सूर्योदयसँ पूर्ब थलकमल उज्जर रहैत मुदा सुरूजक रोशनी पाबि धीरे-धीरे लाल हुअ लगैए तहिना सुबुधक हृदए समाजक प्रखर रोशनीक प्रवेशसँ हृदए बदलि गेलनि।

कहि सुबुध तेज गतिसँ स्कूलक ओसारसँ निच्चाँ उतरि गेला। सुबुधक तेज चालि देखि विवेक बाबू सेहो नम्हर-नम्हर डेग बढ़बैत सुबुध लग आबि कहलखिन-

> ''सुबुध भाय, अहाँ जे किछु केलौं, अपन विचारक अनुकूल केलौं। तँए ओइ सम्बन्धमे हमरा किछु कहैक नै अछि। किएक

तँ जहिया स्कूलमे नोकरी शुरू केलौं आ जेते बुझै छेलिऐ, ओइसँ बेसी आइ जरूर बुझै छिऐ, तँए ओइ दिनक विचारक अनुरूप केलौं आ आइ औझुका विचारक अनुकूल कऽ रहल छी। मुदा हमर अहाँक सम्बन्ध सिरिफ शिक्षकेक नै अछि, बल्की विद्यार्थीओक अछि।''

सुबुध आ विवेक हाइए स्कूलसँ संगी। हाइ स्कूलसँ कौलेज धरि दुनू गोटे संगे-संग पढ़ने रहथि। मुदा विवेकसँ सुबुध तीन दिन जेठ छथि। जे बात सुबुधोकेँ आ विवेकोकेँ बूझल छन्हि। स्कूलोमे आ कौलेजोमे सुबुध विवेकसँ नीक विद्यार्थी रहथि। तँए विवेकसँ अधिक नम्बर परीक्षामे सुबुधकेँ अबैत रहनि। ओना दुनू एक्के डिवीजनसँ पास करै छला मुदा अंकमे किछु तरपट रहै छेलनि। विवेक सुबुधकेँ सीनियर बुझै छथि। जेकर उदाहरण अछि जे जइ दिन दुनू गोटेक बहाली स्कूलमे भेल छेलनि, ओइ दिन सभ कागजात विवेकक अगुआएल रहितो स्वेच्छासँ विवेक सुबुधकेँ तीन नम्बर शिक्षक आ अपनाकेँ चारि नम्बर शिक्षक लेल हेडमास्टरकेँ कहने रहथिन। जेकरा चलैत सुबुधक बहालीक चिट्ठीक समए बदलि हेडमास्टर रजिस्टर मेनटेन केने रहथि। विवेकक प्रति सुबुधक हृदैमे वएह सिनेह रहनि।

दुनू गोटे विवेकक डेरा एला। डेरामे अबिते विवेकक पत्नी चाह बना, दुनू गोटेक आगूमे दऽ बैठकखानासँ निकलि खिड़की लग ठाढ़ भऽ गेली। एक जिनगीक टुटैत सम्बन्धसँ कँपैत हृदए विवेक बाबूक रहनि। थरथराइत स्वरमे पुछलखिन-

''एक्को दिन पहिने तँ ई बात नै बाजल छेलौं! अनासुरती एहेन निर्णए केना कऽ लेलिऐ?''

मुस्कीआइत सुबुध उत्तर देलखिन-

''पहिनेसँ निआर नै छल। ऐ बेर जे गाम गेल छेलौं तखनि भेल। जहिना देव-असुर मिलि समुद्र मंथन केने रहथि तहिना समाजक मंथनक परिस्थिति बनि गेल अछि। जइले हमरो जरूरति समाजकेँ छै। समाजक पढ़ल-लिखल लोक तँ हमहूँ छी तँए अपन दायित्व पूरा करैले नोकरी छोड़लौं। महान् जिनगी

लेल सेवा जरूरी होइए। जौं नोकरीकेँ सेवा कहल जाए तँ खेतमे काज करैबला बोनिहारकेँ की कहबैक? किएक तँ बोइन-मजूरी लेल ओहो काज करैए आ नोकरीओ केनिहार। मुदा पेटक जिनगी लेल तँ कमेनाइओ जरूरी अछि। जौं से नै करब तँ खाएब की आ दोसरकेँ खुएबै केना? भूखलकेँ भोजन चाही। चाहे ओ अन्नक भूखल हुअए आकि ज्ञानक। तँए चाहे नोकरी होइ वा आन उपार्जनक काज, ओइकेँ इमानदारीसँ निमाहैत आगू बढ़ि किछु करब, चाहे ज्ञानक क्षेत्र होइ वा जीवनक, भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्सा, शिक्षा, ओ सेवा होइत। ज्ञानक सेवा ताधरि अपन महत्वक स्थान नै पबैत जाधरि ओ जीवनसँ जुड़ि कर्मक रूप नै लइए। सिरिफ वैचारिके धरातलसँ होइतै तँ मिथिलामे महान्-महान् पैघ-पैघ विचारक, मनुखक उद्धार लेल रस्ता बतौलनि। मुदा अखनो समाजमे ओहेन मनुख अछिए जे हजारो बरख पूर्बमे छेलै। हँ, किछु आगुओ बढ़ल, ईहो बात सत अछि। मुदा जे कियो बौद्धिक, आर्थिक क्षेत्रमे आगू बढलथि ओ पछुआएलकेँ डेन पकड़ि आगू मुहेँ घिचलनि वा पाछू मुहेँ धकेललनि? जौं बाँहि पकड़ि आगू मुहेँ घिचए चाहितथि तँ एतेक जाति, सम्प्रद्राय, कर्मकांड पैदा करैक की प्रयोजन? राजसत्ता आ समाजसत्ता- दुनू पछुआएल लोककेँ आरो पाछूए मुहेँ धकेललक।''

एते कहि सुबुध उठि कऽ ठाढ़ होइत कहलखिन-

''आब एक्को क्षण ऐठाम नै रूकब। हमर बाट रमाकान्त कक्का तकैत हेता।''

सुबुधकेँ दुनू बाँहि पकड़ि बैसबैत विवेक पत्नीकेँ कहलखिन-

''झब दऽ थारी साँठू। सुबुध भाय जाइले औगताइ छथि।''

भोजन कऽ सुबुध विवेकक डेरासँ विदा भऽ गेला। दुनू हाथ जोड़ि विवेक कहलकनि-

''हमरोपर धियान रखब।''

गामक सीमामे प्रवेश करिते सुबुध घरक सुधि बिसरि गेला। सौंसे गाम परिवारे जकाँ बूझि पड़ए लगलनि। एक टकसँ खेत, पोखरि, गाछी-कलम, खढ़होरि देखि मोने-मन सोचए लगला, जौं ऐ सम्पतिकेँ ढंगसँ आगू बढ़ौल जाए, विकसित ढंगसँ कएल जाए तँ निश्चित गामक लोकमे खुशहाली ऐबे करत। अखनि धरि जहिना खेत मरनासन्न भऽ गेल अछि तहिना पोखरि-झाखड़ि सेहो अछि। सभसँ पैघ बात तँ ई अछि जे लोको दबैत-दबैत एते दबि गेल अछि जे सिरिफ मनुखक ढाँचा मात्र रहि गेल अछि। तँए सभमे नव चेतना, नव ढंग नव तकनीकक नव औजारक उपयोग आवश्यक अछि। तखने शिशिरक सिकुड़ल रूप वसन्तक विकसित रूपमे बदलि सकैए। सोचैत सुबुध राजिनदरक घर लग पहुँचला। राजिनदरक घर देखि सुबुध रस्ता छोड़ि ओकरा ओइठाम रूकि गेला। राजिनदरकेँ तीनटा घर। अँगनाक एकभागमे टाट लगौने रहए। दछिनबरिया घरमे मालो बन्है छल आ अपनो बैसार बनौने। बैसारमे दूटा चौकी देने रहए। एकटापर अपने सुतैत आ दोसरकेँ पाहुन-परक लेल रखने रहए। सुबुधकेँ देखि राजिनदर चौकी परसँ उठि, दुनू हाथ जोड़ि बाँहि पकड़ि चौकीपर बैसौलकनि। सुबुधकेँ चौकीपर बैसाए घरवालीकेँ दरबज्जे परसँ कहलक-

"मास्टर साहैब एला हेन, झब दे एक लोटा पानि नेने आउ?"

राजिनदरक बात सुनि गुलबिया लोटामे पानि नेने आबि ओलती लग ठाढ़ भऽ गेली। मुँह झँपने। स्त्रीकेँ ठाढ़ देखि राजिनदर बाजल-

"हिनका नै चिन्है छियनि, सुबुध भाय छथि। मुँह किए झँपने छी।"

राजिनदरक बात सुनि सुबुध मुस्की दैत बजला-

"हम तँ गाममे रहितो अनगौआँ भऽ गेल छी। जहियासँ नोकरी शुरू केलौं, गाम छूटि गेल। सप्ताहमे एक दिन अबै छी जइसँ गाममे घुमियो-फीरि नै पबै छी। तँए नै चिन्है छथि। मुदा आब गाममे रहै दुआरे नोकरी छोड़ि देलौं। आब चिन्हती।"

सुबुधक बात सुनि राजिनदर स्त्रीकेँ कहलक-

"सुबुध भाय पैघ लोक छथि। जखनि दुआरपर पएर रखलनि तखनि बिना किछु खुऔने-पीऔने केना जाए देबनि। जाउ बाड़ीसँ ओरहाबला चारिटा मकइ बालि तोड़ि, ओड़ाहि कऽ नेने आउ।"

राजिनदरक बात सुनि गुलबिया मुस्की दैत विदा भेली। राजिनदर सुबुधकेँ पुछलकनि-

"भाय नोकरी किए छोड़ि देलिऐ?"

राजिनदरक प्रश्नक सही उत्तर देब सुबुध उचित नै बूझि कहलखिन-

"नै मन लगल। अपनो खेत-पथार अछि, आब खेतीए करब।"

चारू ओड़ाहल बालि, नून-मेरिचाइ थारीमे नेने गुलबिया आबि सुबुधक आगूमे रखि, अपने निच्चाँमे बैसि गेली। मकइ ओरहा देखि सुबुध तिरपित भऽ एकटा बालि हाथमे लऽ गौरसँ दाना देखए लगला। सुभ्भर बालि, एक्कोटा दाना भौर नै। बालिकेँ देखि कहलखिन-

"बड़ सुन्नर मकइ अछि। अपना ऐठामक गिरहत तँ उपजबिते नै अछि, जौं उपजौल जाएत, खूब हेतै। बेगूसराय, सहरसा आ मुजफ्फरपुर इलाकामे देखै छिऐ जे मकइ उपजासँ गिरहस्त धनिक भऽ गेल अछि। सालो भरि मकइ खेती होइ छै। जहिना खेती तहिना उपजा। पाँच मन छह मन कट्ठा मकइ उपजैए। खाइओमे नीक। रोटी, सतुआ, भुज्जा, ओरहा सभ किछु मकइक बनैए। बदाम आ मकइक सतुआ तँ बुझू जे बिनु दाँतबला बूढ़ लेल अमृते छी।"

वामा हाथमे बालि दहिना हाथक ओंगरीसँ दाना छोड़ा मुँहमे लैत पुछलखिन-

"राजिनदर भैया, बाल-बच्चा कएटा अछि?"

सुबुधक प्रश्न सुनि राजिनदर चुप्पे रहल मुदा गुलबिया बाजलि-

"तीन भाए-बहिन अछि। जेठकी सासुर बसैए। बड़ बढ़ियाँ जकाँ गुजर चलै छै। दोसरोक बिआह केलौं। मुदा जमाए बौर गेल।

दिल्लीमे नोकरी करैत रहै, ओतैसँ बौर गेल, ने एक्कोटा चिट्ठी-पुरजी पठबै आ ने रूपैआ-पैसा। छह मास बेटीकेँ सासुरमे रहए देलिऐ, तेकर बाद अपने ऐठाम लऽ अनलिऐ। दिल्लीसँ जे कोइ आबै आ पुछिऐ तँ कोइ कहए दोसर बिआह कऽ लेलक, तँ कोइ कहए अरब चलि गेल। कोइ कहए मलेटरीमे भरती भऽ गेल तँ कोइ कहए उग्रवादी भऽ गेल। कोनो भाँजे ने लगल। आखिरिमे चारि बरिस अपना ऐठीम बेटीकेँ रखलौं। मुदा गामोमे तेहेन लुच्चा-लम्पट सभ अछि जे अनका इज्जतकेँ कोनो इज्जत ने बुझै छै।''

हाथक इशारा सँ देखबैत-

''उ घर देखै छिऐ, ओइ अँगनाक एकटा छौंड़ा कहियो माछ कीनि कऽ नेने आबए तँ कहियो फोटो घिचबैले संगे लऽ लऽ जाइ। हम दुनू परानी बाध-बोनमे भरि-भरि दिन रहै छेलौं। गाम परहक खेल-बेल बुझबे ने करै छेलिऐ। जखनि गामक लोक कुट्टी-चौल करए लगल तखनि बुझलिऐ। जेठकी बेटी आएल रहए। ओकरा कहलिऐ। ओ अपने संगे नेने गेलै। दोसर बिआह ऐ दुआरे नै करिऐ जे जौं कहीं जमाए जीविते हुअए। फेर जेठके जमाएसँ बिआह कऽ लेलक। दुनू बहिन एक्के घरमे रहैए। दुनूकेँ सखा-पात सेहो छै। छोट बेटा अछि। ओकरो बिआह-दुरागमन कऽ देलिऐ।''

मुस्कीआइत सुबुध पुछलखिन-

''दान-दहेजमे की सभ देलक?''

दान-दहेजक नाओं सुनि गुलबिया हँसैत कहए लगलनि-

''समैध अपने एला। संगमे सार -लड़कीक माम- रहनि। दुआरपर अबिते भोला बापक पुछाड़ि केलनि। हम चिपड़ी पथैत रही। नुआक फाँड़ बन्हने रही। माथ परहक साड़ी ससरि कऽ गरदनिपर रहए। दुनू हाथमे गोबर लगल रहए। केना गोबराएल हाथे साड़ी सम्हारितौं। तँए ओहिना चिपड़ी पथिते रहि गेलौं।

कोनो की चिन्हैत रहिऐ। ओहो तँ हमरा नहियेँ चिन्हैत रहथि। अनठीया ओहो आ अनठीया हमहूँ रही। ओहो मनुखे छथि आ हमहूँ मनुखे छी, तखनि बीचमे कथीक लाज?''

गुलबियाक बात सुनि दाँत पिसैत राजिनदर बिच्चेमे बाजल-

''आबो एक उमेरक भेलौं तैयो समरथाइक ताउ कम्म नै भेलैए। जे मनमे अबै छै, बकने जाइए।''

राजिनदरक बातकेँ दबैत बजली-

''कोनो की झूठ बात बजै छी, जे लाज हएत। मास्टर बौआ की कोनो अनगौआँ छथि जे रस्ते-रस्ते ढोल पीटता।''

बीच-बचाव करैत सुबुध कहलखिन-

''तेकर बाद की भेल?''

''ताबे ईहो एला। दुनू गोरेकेँ चौकीपर बैसाए गप-सप्प करए लगला। हमरो गोबर सठि गेल। चलि गेलौं। हाथ-पएर धोइ पछबरिया टाट लग ठाढ़ भऽ गप-सप्प सुनए लगलौं। लड़कीक माम उचक्का जकाँ बूझि पड़ै। मुदा बाप असथिर बूझि पड़ल। वेचारा बड़ सुन्नर गप बजलथि। ओ कहलकनि जे देखू अहाँक बेटा छी आ हम्मर बेटी। दुनियाँमे जेते लोक अछि ओ अपने बेटा-बेटी लेल सभ किछु करैए। जहिना अहाँ छी तहिना तँ हमहूँ छी। जहिना अपन नून-रोटीमे अहूँ गुजर करै छी तहिना हमहूँ करै छी। कौआसँ खैर लूटाएब मुरुखपना छी। हमरे एकटा पितियौत सार अपन बेटाक बिआह केलक। एक लाख रूपैआ नगद नेने रहै। तेते लाम-झामसँ काज केलक जे अपनो जे बैंकमे साठि हजार रूपैआ रहै, सेहो सठि गेलै। हम ओहेन काज नै करब। बेटी-जमाएकेँ एकटा चापाकल गड़ा देबै। दू कोठरीक मकान बना देबै। एक जोड़ा गाए ली वा महिंस, से देब। दुनू गोटेकेँ लत्ता-कपड़ा, वर्तन-बासन, लकड़ीक सभ आवश्यक सामानक संग बिआहक खरच करब। अहाँकेँ ऐ दुआरे नै खरच कराएब जे जे खरच भऽ जेतै ओ तँ ओही दुनूक जेतै

किने। हमरा पसिन्न भऽ गेल। मन कछ-मछ करए लगल जे सूहकारि ली। मुदा पुरुखक बीच गप चलैत रहै। मनमे ईहो हुअए जे जौं कहीं कोनो बाते दुनू गोरेमे रक्का-टोकी भऽ गेल तखनि तँ कुटुमैतीओ नै हएत। मन कछ-मछ करए लगल। एक बेर खोंखी केलौं जे ओ (पति) आबए मुदा से नै भेल। तखनि दुनू हाथे थोपड़ी बजेलौं। तैयो सएह। आब की करितौं? काज पसिन्नगर अछि मुदा जौं कहीं कोनो बाधा उपस्थित भऽ गेल तखनि तँ सभ नाश भऽ जाएत मुँह उघारनहि हम दुआरपर गेलौं। आगूमे ठाढ़ भऽ हिनका कहलियनि, भैया, बड़ सुन्नर बात समैध कहै छथुन, भोलाक बिआह कऽ लैह। कहि चोट्टे घूमि कऽ आँगन आबि शर्बत बनेलौं। अपनेसँ जा कऽ तीनू गोटेकेँ पिएलौं। कुटमैती पक्का भऽ गेल। बिआह भऽ गेलै।"

तैबीच चारू बाइलो सुबुध खा लेलनि। पानि पीब घर दिसक रस्ता पकड़लनि।

थोड़े दूर आगू बढ़लापर सुबुधक मनमे आबए लगलनि, घरपर जाइ आकि रमाकान्त काका ऐठाम। दुबट्टी लग ठाढ़ भऽ गुनधुन करए लगला। एक मन होन्हि जे भरि दिनक थाकल छी, कनी आराम करब जरूरी अछि। तँए घरपर जेनाइ जरूरी अछि। दोसर मन होन्हि जे ऐ जुआनीमे जौं आराम करब तँ जिनगी छुटत। फेर मनमे भेलनि जे नोकरी छोड़ैक समाचार घर पहुँचेनाइ जरूरी अछि। तत्-मत् करैत रमाकान्त घर दिसक रस्ता छोड़ि मलहटोलीबला एकपेड़िया पकड़ि घर दिस बढ़ला। घर लग अबिते सभ किछु बदलल-बदलल बूझि पड़लनि। जेना सभ किछु खुशीसँ मस्त हुअए। दरबज्जाक चुहचुही सेहो नीक बूझि पड़ए लगलनि। दुआरपर आबि कुरता खोलि चौकीपर रखि पत्नीकेँ शोर पाड़ि कहलखिन-

"कनी एक लोटा पानि नेने आउ। बड़ पियास लगल अछि।"

पतिक अवाज सुनि किशोरी लोटामे पानि नेने एली। हाथसँ लोटा लऽ लोटो भरि पानि पीब सुबुध पत्नीकेँ कहलखिन-

"आइसँ नोकरी छोड़ि देलौं विद्यालयमे तियागपत्र दऽ देलौं।"

पतिक बात सुनि किशोरी चौंकि गेली। मुदा पति-पत्नीक बीच

मजाको होइ छेलनि। किशोरीकेँ सोलहन्नी बिसबास नै भेलनि मुस्की दैत बजली-

"नीक केलौं। आठ दिनपर जे भेँट होइ छेलौं से दिन-राति भेँट होइते रहब। हमरो नीके।"

किशोरीक बात सुनि सुबुधक मनमे भेलनि जे भरिसक पन्नी समाचारकेँ मजाक बुझलनि। दोहरबैत कहलखिन-

"अहाँ मजाक बुझै छी। सत बात कहलौं।"

जेबीसँ तियागपत्रक नकल निकालि कहलखिन-

"हे देखियौ कागत।"

तैबीच मंगल सेहो आएल। मंगलकेँ देखि किशोरी ससरि गेली। मुस्कीआइत सुबुध मंगलकेँ कहलखिन-

"काका, नौकरी छोड़ि देलौं। आब गामे रहि खेतीओ-पथारी करब आ जहाँ धरि भऽ सकत समाजक सेवा करब।"

सुबुधक बात सुनि मंगल कहलकनि-

"बौआ, हम तँ उमेरेमे ने अहाँसँ जेठ छी मुदा अहाँ पढ़लो-लिखल छी मास्टरीओ करै छी तँए नीके जानि कऽ ने नोकरी छोड़ने हएब।"

मंगलक बात सुनि सुबुधक मनमे सबुर भेलनि। मुस्की दैत बजला-

"कक्का जाधरि पढ़ल-लिखल लोक समाजमे रहि समाजक क्रिया-कलापकेँ आगू मुहेँ नै धकेलत ताधरि समाज आगू केना बढ़त।"

सुबुध आ मंगल गप-सप्प करिते रहथि आकि किशोरी आँगनमे अर्ड़ाहटि मारि कानए लगली। सुबुध बूझि गेला तँए असथिरसँ बैसले रहला। मुदा अकलबेराक कानब सुनि टोलक जनिजाति दौग-दौग आबए लगली। सौंसे आँगन जनिजातिसँ भरि गेलनि। नवानीवाली किशोरीकेँ पुछलखिन-

"कनियाँ की भेल हेँ जे एना अकलबेरामे कानै छी?"

मुदा किछु उत्तर नै दऽ किशोरी आरो जोर-जोरसँ कानै छेली। टोलक जेते बहिना, फुल, पान, गुलाब, कदम, चान, पार्टनर किशोरीक छेलनि सभ कियो एक्केटा प्रश्न पुछै छेलनि-

"की भेल?"

जेते संगी-साथी सभ किशोरीसँ पुछै छेलनि तेते किशोरी जोर-जोरसँ कानै छेली। केकरो कोनो अर्थे नै लगैत। मुदा अनुमानक बजार तेज भेल जाइ छल। कियो किछु बुझैत तँ कियो किछु।

दरबज्जापर बैसल-बैसल सुबुध मोने-मन खुशी होइत रहथि। सोचैत रहथि जे जाधरि पुरना चालि-ढालिक लोकक -चाहे मरद हुअए वा स्त्रीगण- चालि नै बदलत ताधरि नव समाज केना बनि सकैए? ई प्रश्न तँ सिरिफ समाजे लेल नै परिवारो लेल छै। आ परिवारे किए मनुक्खो लेल छै। तँए सुबुध किछु बजबे नै करथि।

अकलबेराक समए रहबे करए। बाध दिससँ गाए, महिंस, बकरी चरि-चरि अबैत रहए। घसबहिनी घासऽ पथिया नेने अबै छेली। गोबर बीछनिहारि गोबरक छितनी माथपर नेने अबै छलि। बुधनी आ सोमनी, घासऽ छिट्टा माथपर नेने अबै छेली आकि सुबुधक अँगनामे कानब सुनलनि। दुनू गोटे अकानि कऽ बुझलनि जे सुबुधक कनियाँ कानै छथिन। सोमनी बुधनीकेँ कहलक-

"बहिन, छिट्टा रखि कऽ चल देखैले।"

बुधनी कहलक-

"गै बहिन, ऐ चमचिकनी सबहक भभटपन सुनि कऽ की करबीही। भरि दिन चाह-पान घोटैत रहैए, बुझैए जे एहने दुनियाँ छै। मरदकेँ किछु हुअए, मौगी सभ रानी छी। जाबे एतए बरदेमे ताबे गामेपर चलि जेमे। घास-भूसा झाड़ब, जरना-काठी ओरियाएब। थैर खर्ड़ब। बासन-कुसन धुअब आकि ऐ भभटपनवालीक भभटपन सुनब।"

सोमनी मुड़ी डोलबैत बाजलि-

"बेस कहले बहिन, जेकरा जेते सुख होइ छै ओ ओते कानैए।

अपने सभ नीक छी जे कमाइ छी खाइ छी। चैनसँ रहै छी। ऐ ललमुहीं सबहक किरदानी सुनबीही तँ हेतौ जे मुहेँपर थुक दए दिऐ।"

ooo

१०

भरि दिन सुबुधक मनमे इहए खुट-खुट्टी धेने रहलनि जे जइ गामक लोकमे एते उत्साह बढ़ल अछि, ओइ गाममे जौं बिहाड़िक पूर्ब हवा खसै तँ लोकक मनमे अनदेसो बढ़ि सकैए। समाज छिऐ, के की बाजत की नै बाजत, तेकर कोन ठेकान। कियो सोचि सकैए जे जेते विचारक सभ अछि ओ पाइ-कौड़ीक भाँजमे कहीं टौहकी ने तँ लगबैए। मुदा लोकक धाराकेँ रोकलासँ खतरो उपस्थित भऽ सकैए। जहिना अधिक रफ्तारसँ चलैत गाड़ीमे एकाएक ब्रेक लगौलासँ दुर्घटनो भऽ सकैए तहिना काजमे ढील-ढाल भेलापर भऽ सकैए। ओना भरि दिन तँ अपने चक्करमे फँसल रहलौं, से के बूझत। गामक लोक तँ गामक काजे भेलासँ बुझता। अचताइत-पचताइत सुबुध रमाकान्त ऐठाम विदा भेला। मुन्हारि साँझ भऽ गेल छेलै। थोड़े दूर आगू बढ़लापर रस्ताक पछबारि भाग रतिया घरक आगूमे, पान-सात गोटे बैसि गप-सप्प करैत रहथि। एक गोटे अनुभवी जकाँ बाजल-

> ''खेतक बँटबाराक ढोल तँ रमाकान्त कक्का पीटि देलखिन मुदा बँटै कहाँ छथिन। धनक लोभ केकरा नै छै। ओ थोड़े खेत बँटथिन। ई सभ सभटा धनिक लोकक चालबाजी छिऐ। लोक थोड़े नीक-अधलाक विचार करैए, जे सुनलक ओ कौआ जकाँ काँइ-काँइ कऽ सगरे गाम बिलहि दइए। मुदा तइसँ की, अगर जौं ओ खेत नहियेँ बँटथिन तँ की लोक मरि जाएत?''

रस्तापर ठाढ़ भऽ सुबुध सुनैत रहथि। दोसर बाजल-

> ''जे अपने ठकि-फुसिया कऽ एते धन जमा केलक ओ सुहरदे मुहेँ थोड़े लोककेँ जमीन दऽ देतै। तखनि तँ गरीबक कपारेमे दुख लिखल छै, से तँ भोगै पड़तै। केहेन निरलज्ज जकाँ रमाकान्त नाचि-नाचि लोककेँ कहलकै।''

एते सुनैत सुबुधक मनमे आगि लगि गेलनि। सोचए लगला, भरि दिन तँ हमहूँ अनतै छेलौं, गाममे ने तँ किछु भऽ गेलै। मुदा बिना किछु बजने सुबुध आगू बढ़ि गेला।

रमाकान्त ऐठाम पहुँचिते हीरानन्द बाजि उठला-

''जिनके चरचा करै छेलौं से आबिए गेला।''

रमाकान्त सुबुधकेँ कहलखिन-

''केता बेर तोरासँ गप करैक मन भेल मुदा तोँ तँ भरि दिन निपत्ते रहलह। केतौ गेल छेलह की?''

रमाकान्तक बात सुनि सुबुध कहलखिन-

''भरि दिन एते बेस्त रहलौं जे अखनि फुरसति भेल। घरसँ बहार धरि परेशान-परेशान दिन भरि होइते रहलौं।''

रमाकान्त-

''की परेशान?''

''काल्हि रातिमे जखनि ओछाइनपर गेलौं तँ अहाँक कहलाहा बात मन पड़ल। मन पड़िते पेटमे घुरियाए लगल। बड़ी काल धरि सोचैत-विचारैत रहलौं। नीनो ने हुअए। अंतमे यएह मनमे आएल जे जहिना अहाँ अपन सभ सम्पति समाजकेँ दए देलिऐ तहिना हमहूँ नोकरी छोड़ि, देहसँ समाजक सेवा करब। जहिना गाड़ी इंजिनक बले चलैए तहिना तँ समाजोमे इंजिनक जरूरति छै। तैबीच एकटा इतिहासक घटना मन पड़ल।''

'इतिहासक घटना' सुनिते उत्सुकतासँ हीरानन्द सुबुधकेँ पूछि देलखिन-

''की बात मन पड़ल?''

सुबुध बाजए लगला-

''तिब्बतमे एकटा राजकुमार चेन-पो नामक भेला। ओ अपना राजमे धनीक-गरीबक बीच खाधि देखलनि। ओइ खाधिकेँ पाटैले अपन सभ सम्पति प्रजाक बीच बाँटि देलखिन। मुदा किछुए दिनक उपरान्त फेर ओहिना-क-ओहिना भऽ गेलै। धनिक धनिक बनि गेल आ गरीब गरीब बनि गेल। राजकुमार क्षुब्ध भऽ गेला,

जे एना किएक भऽ गेलै?''

खिस्सा सुनि बिच्चेमे शशिशेखर पूछि देलकनि-

''एना किएक भेलै?''

''हम समाजशस्त्रक विद्यार्थी छी तँए ऐ बातकेँ जनै छी। जाधरि बेवस्था नै बदलत ताधरि मनुखक जिनगी नै सुधरत। तँए हम अपन दायित्व बूझि नोकरी छोड़लौं। गामक गरीबसँ लऽ कऽ अमीर धरि आ बच्चासँ लऽ कऽ बूढ़ धरिक, गाम सबहक छिऐ। तँए हम तिब्बत जकाँ हूसल काज नै करब।''

रमाकान्तक मन पहिलुके प्रशंसा सुनि, कान नेने उड़ि गेलनि, राजकुमारक खिस्सा सुनबे नै केलनि। मुदा हीरानन्दोक आ शशिशेखरोक धियान ओइ खिस्सामे घुमए लगलनि। तैबीच जुगेसर चाह अनलक। सभ कियो चाह पीबए लगला। चाह पीब रमाकान्त कहलखिन-

''देखू, हम अपन सभ खेत समाजकेँ दए देलिऐ। आब हमरा कोनो मतलब ओइ खेतसँ नै अछि। मुदा एकटा बात जरूर कहब जे कोनो तरहक गड़बड़ी समाजमे नै हुअए। सभकेँ खेत होइ।''

रमाकान्तक बात सुनि शशिशेखर अपन विचार रखलनि-

''गामक गरीब-लोकक परिवार जेते अछि, ओकरा जोड़ि लिअ आ खेतकेँ जोड़ि एक रंग कऽ बाँटि दियौ।''

शशिक विचार सुनि हीरानन्द नाक मारैत कहलखिन-

''उँ-हूँ।''

मुँहपर हाथ नेने सुबुध मोने-मन सोचैत रहथि, कियो एहनो अछि जेकरा घराड़ीओ नै छै। आ कियो एहनो अछि जेकरा घराड़ीक संग दू कट्ठा धनखेतीओ छै। केकरो पाँचो कट्ठा छै। जौं जमा सम्पतिमे एक्के रंग देल जाए तँ सभकेँ एक रंग केना हेतै। ऐ ओझरीमे सुबुध पड़ल रहथि। हीरानन्द सोचैत रहथि, गरीबो तँ सभ एक रंग नै अछि। कियो मेहनती अछि तँ कियो नमरी कोइढ़। कियो निशाँखोर अछि तँ कियो सात्विक।

गरीबोक स्थिति तँ विचित्र छै। लेकिन मूल प्रश्न अछि समाजकेँ ऊपर उठबैक। सभकेँ गुम्म देखि रमाकान्त मुँहमे पान लऽ जरदा फँकैत बजला-

"एना सभ गुम्म किए छी? हम समाजक दॉउ-पेंच तँ नै बुझै छिऐ मुदा अहाँ सभ तँ पढ़ल-लिखल होशगर छी। तखनि कियो किछु किए ने बजै छी?"

अपन बुधिक कमजोरी बेक्त करैत हीरानन्द सुबुधकेँ कहलखिन-

"भाय, जे सोचै छी ओ ओझरा जाइए। तँए अहीं सोझरबैत कहिऔ।"

गंभीर भऽ सुबुध कहए लगलखिन-

"अपन समाज बहुत पछुआएल अछि। पछुआएल समाजमे घनेरो समस्या, समाढ़ जकाँ पकड़ने रहैए। जे बिना समाधान केने आगू नै ससरए दैत। मुदा समाधानो तँ कागतपर नक्शा बनौने नै होएत। समस्या लोकक जिनगीकेँ चुड़ीन जकाँ पकड़ने अछि। जहिना चुड़ीन लोकेक देहमे घोंसिया अपन करामात करैए तहिना समस्यो अछि। तँए अखनि मात्र दूटा सबालकेँ पकड़ू। पहिल, सभकेँ एक रंग खेत होइ। आ दोसर खेतक संग-संग आरो जे पूजी अछि ओकरो उपयोग ढंगसँ कएल जाए।"

सुबुध बजिते रहथि आकि बिच्चेमे जुगेसर टपकि गेल-

"मास्सैब, कनी बिकछा कऽ कहिऔ। एना जे पौतीमे राखल वस्तु जकाँ झाँपि कऽ कहबै तँ हम सभ केना बुझबै।"

जुगेसरक बातसँ सुबुधकेँ तकलीफ नै भेलनि। मुस्कीआ कऽ कहए लगलखिन-

"ठीके अहाँ नै बुझने होएब जुगे। नीक जकाँ बिकछा कऽ कहै छी। देखियौ, सिरिफ खेते रहने उपजा नै भऽ जाइ छै। ओकरा उपजबए पड़ै छै। तामि-कोड़ि कऽ तैयार करए पड़ै छै। बर्खा

होइ वा पटा कऽ बीआ पाड़ए पड़ै छै। बीआ जखनि रोपाउ होइ छै तखनि उखाड़ि कऽ रोपल, कमठौन कएल जाइ छै। तखनि ने उपजा हएत। खेतक संग-संग मेहनति जे होएत से ने पूजी भेलै। मेहनति करैले ओजारोक जरूरति होइए। ओजारोक नम्हर इतिहास रहल अछि। शुरूमे लोक साधारण औजारसँ काज करै छल। जेना-जेना औजारो उन्नति करैत गेल तेना-तेना लोकक हालत सुधरैत गेल। मुदा अपन गाम बहुत पछुआएल अछि। तँए नव औजारसँ काज करब संभव नै अछि। नव औजार लेल अधिक पैसोक जरूरति होइत, जे नै अछि। अखनि साधारणे औजारसँ काज चलबए पड़त। जेना-जेना हालत सुधरैत जाएत, तेना-तेना औजारो सुधरैत जाएत।''

सुबुधक बात सुनि जुगेसर भक दऽ निशाँस छोड़ि बाजल-

''हँ, आब बुझलौं। सुआइत लोक कहै छै जे पढ़ि-लिख कऽ जौं हरो जोतब तँ सिरौर सोझ हएत।''

हीरानन्द बजला-

''बड़ सुन्दर बात कहलिऐ सुबुध भाय। आब खेतक बँटबाराक सम्बन्धमे कहिऔ।''

कनडेरिए आँखिए हीरानन्दकेँ देखि सुबुध कहए लगलखिन-

''हीरा बाबू, गाममे जेते एक बीघा खेतसँ निच्चाँबला गरीब लोक छथि हुनका सभकेँ एक-एक बीघा खेत भऽ जेतनि। सिरिफ रमाकान्ते कक्काबला जमीनटा नै, हुनकर अपनो जमीन ओइमे जोड़ा जेतनि। जेना देखियौ, किनको घराड़ीओ नै छन्हि, हुनका बीघा भरि खेत दिअए पड़त। मुदा जिनका पाँच कट्ठा छन्हि हुनका तँ पनरहे कट्ठा दिअए पड़त। तेतबे नै जिनका ओहूसँ बेसी छन्हि, हुनका आरो कम दिअए पड़त।''

सुबुधक बात सुनि रमाकान्त ठहाका मारि बजला-

''बड़ सुन्नर, बड़ सुन्नर। बड़ सुन्नर विचार सुबुधक छन्हि। आब

रातिओ बेसी भऽ गेल। खाइओ-पीबैक बेर उनहि जाएत। रोटी गरमे-गरम खाइमे नीक होइ छै। तँए आब गप-सप्प छोड़ू। काल्हि भोरे ढोलहो दिआ सभकेँ बजा लेबनि आ सबहक बीचमे अपन निर्णए सुना देबनि। खेत बँटैक भार हुनके सभपर छोड़ि देबनि। नै तँ अनेरे हो-हल्ला करता।''

भोरे ढोलहो पड़ल। एक तँ ओहिना सबहक कान ठाढ़ रहनि, तैपरसँ ढोलहो पड़ल घरा-घरी सभ पहुँचला। जहिना केस लड़निहार फैसला सुनैले उत्सुक रहैए तहिना बैसारमे सभ रहथि। अस्सी बर्खक सोने बाबा सेहो आएल छथि। ओना सोनेलाल बाबाकेँ अपने अढ़ाइ बीघा खेत छन्हि मुदा गाममे नव उत्सवक उत्साहसँ आएल छथि। बैसले-बैसल ओ मुड़ी उठा कऽ देखि बजला-

''कोनो टोलक कियो छुटलो छथि। सभ अपन-अपन टोलक लोककेँ गनि लिअ।''

सोनेबाबाक गप सुनि सभ अपन-अपन टोलक लोक मिलबए लगल। सिरिफ दू आदमी बैसारमे नै आएल छला। दुनू टोलक दू आदमीकेँ पठा दुनूकेँ बजौल गेलनि। दुनू आदमीकेँ देखिते सोनेबाबा पूछि देलखिन-

''तोरा दुनू गोटेकेँ ढोल्होक अवाज कानमे नै पहुँचल छेलौं?''

बौका बाजल-

''ढोलहो तँ बुझलिऐ। मगर नोकरी करै छी ने, ने माए-बाप अछि आ ने बहु, तखनि खेत लऽ कऽ की करब? बिआहो होइते ने अछि। लोक ढहलेल बुझैए। तखनि अनेरे किए अबितौं।''

बौकाक बात सुनि सोनेबाबा मुड़ी डोला स्वीकार केलनि। आब दोसर, गोसैमा बाजल-

''हम दुनू परानी तँ बुढ़े भेलौं किने। बेटा अछिए नै। लऽ दऽ कऽ एकटा ढेरबा बेटी अछि। ओकरो बिआह ऐ बेर कइए देबै। बिआह हेतै, अपन घर जाएत। भोगिनिहार के रहत जे अनेरे

हम खेत लेब?''

गोसैमोक विचार सुनि सोनेबाबा मुड़ी डोला स्वीकार केलनि। बौका आ गोसैमाक दुनू गोटेक बात सुनि सोनेबाबा सोचए लगला जे समाजमे दूटा परिवार कमि जाएत। तँए दुनू परिवारकेँ तँ नै बचौल जा सकैए मुदा दुनूकेँ जोड़ि कऽ एकटा परिवार तँ बनौल जाए सकैए। कहलखिन-

''बौका तँ सिरिफ नामक अछि। केहेन बढ़ियाँ बजैए। गोसौमाक बेटी आन गाम चलि जेतै। जइसँ बाप-माए दुनू गोटेकेँ बुढ़ाड़ीमे दुख हेतै। तँए बौकाक बिआह गोसैमाक बेटीसँ करा देने एक परिवार भऽ जाएत।''

सोनेबाबाक विचार सुनि अदहासँ बेसी गोटे समर्थन कऽ देलक। मुदा किछु गोटे विरोध करैत बजला-

''एक गाममे लड़का-लड़कीक बिआहक चलनि तँ नै अछि। जौं हएत तँ अनुचित हएत।''

औगता कऽ उठैत लखना जोरसँ बाजल-

''कोन गाम आ कोन समाज एहेन अछि जइमे छौंड़ा-छौंड़ी छह-पाँच नै करैए। चोरा कऽ छह-पाँच केलासँ बड़ बढ़ियाँ मुदा देखाकेँ करत से बड़ अधला हेतै।''

लखनाक विचारकेँ सभ सहमति दऽ देलनि। दुनूक बिआहक बात पक्का भऽ गेल। सुबुधक मनमे फेर एकटा प्रश्न उठि गेलनि जे बौका आ गोसैमाक दुनू परिवारकेँ एक मानि जमीन देल जाए वा दू मानि। तर्क-वितर्क करैत, मिला कऽ एक परिवार मानि हिस्सा दैक सहमति बनल।

फेर प्रश्न उठल जे जमीनक नाप-जोख के करत? रमाकान्त कहि देलखिन जे अपनेमे अहाँ सभ बाँटि लिअ।''

सुबुधोक मनमे भेलनि जे रमाकान्त कक्का ठीके कहलनि। काजकेँ बाँटि कऽ नै करब तँ गल्ती हएत। सभ काज जौं अपने करए चाहब तँ एते गोटे जे समाजमे छथि ओ सभ की करता। जौं कहीं कोनो गलतीओ हेतै तँ सुधरि जेतै। कहलखिन-

''खेत नपैक लूरि केते गोटेकेँ छह? किएक तँ जौं अमीन लऽ कऽ बँटबारा करब तँ बहुत खरच हएत। जे खरच बँटैमे करब ओइ पैसासँ दोसरे काज किए नै कऽ लेब। पैसाक काज तँ बहुत अछि, तँए अन्ट सन्ट खरच नै कऽ सुपत-सुपत खरच करब नीक होएत। देखते छिऐ जे जहिना देशक संविधान ओकीलकेँ सालो भरि हरिअरी देने रहैए तहिना तँ सर्वेओ अमीनकेँ अछि। कौआसँ खैर लूटाएब नीक नै। जहिना अहाँ सभकेँ मंगनीमे खेत भेट रहल अछि तहिना सही-सलामत हाथमे खेत चलि जाए। जौं अमीन सबहक भाँजमे पड़ब तँ ओहिना हएत जहिना लोक कहै छै 'जेतेमे बहु नै तेतेमे लहठी...।'''

सुबुधक बात सुनि, जोशमे बिलटा उठि कऽ ठाढ़ भऽ बाजल-

''माघसँ लऽ कऽ जेठ धरि हम सभ खेत तमिया करै छी। कोनो एक्के साल नै, सभ साल करै छी। सेहो कोनो आइएसँ नै जहियासँ ज्ञान- पराण भेल तहिएसँ। कोन अमीन आ कमिश्नर नपैले अबैए। अपन गामक कोन बात जे चरिकोसीमे तमनी करै छी। तेतबे नै, नेपालो जा-जा तमै छी। तेतबे नै साले-साल नपैत-नपैत तँ सौंसे गामक खेत जनै छी जे कोन कोला केतेक अछि तँए नपैक जरूरतो नै अछि। मुँहजुआनीए कहि देब जे कोन कोला केते अछि। एक गोरे कागतपर लिखि लिअ जे केकरा केते खेत देबै। हमरा कहैत जाएब, हम कोला फुटबैत जाएब। एकटा पंडीजी बड़ बढ़ियाँ नाओं कहने रहथिन मुदा मन नै अछि, जे ओ तीनिए डेगमे दुनियाँकेँ नापि नेने रहथि। तहिना हमहूँ तीन डेगक लग्गी बना, एक गामक कोन बात जे परोपट्टाक जमीन नापि देब।''

बिलटाक बात सुनि रमाकान्त कहलखिन-

''बड़ बढ़ियाँ, बड़ बढ़ियाँ।''

सभ कियो उठि-उठि विदा भेला।

बेर झुकिते सौंसे गामक स्त्रीगण, ढेरबा बचिया छोटका-छोटका ढेन-बकेन चिकनी माटिक खोभार दिस विदा भेल। सबहक हाथमे खुरपी-

पथिया। सभकेँ हाथमे खुरपी पथिया नेने जाइत देखि श्रीचन मोने-मन सोचए लगल जे एना किए लोक कऽ रहल अछि। दसमीओ तँ अखनि नै एलै। कोनो पावनिओ-तिहार नहियेँ छिऐ। तहन स्त्रीगणमे एना उजैहिया किए उठि गेलै। कोन बुढ़ियाजादू तरे-तर गाममे पसरि गेल जे मरद बुझबे ने केलक आ मौगी सभ बूझि गेल? अनकर कोन अपनो घरवाली रमकल जाइए। जेते श्रीचन सोचैत ओते ओझरीए लगल जाइत। तत्-मत् करैत रुदल ऐठाम विदा भेल। रुदलक घर लगेमे। श्रीचने जकाँ रुदलो छगुन्तामे पड़ल रहए। श्रीचनकेँ देखिते रुदल पूछि देलकै-

> "आँइ हौ श्रीचन भाय, मौगी सभकेँ कथीक रमकी चढ़लै जे एते रौदमे माटि आनैले जाइ जाइए।"

रुदलक बात सुनि श्रीचन आरो छगुन्तामे पड़ि गेल। मनमे एलै जे हम गामपर नै छेलौं तँए नै बुझलिऐ। मगर ई तँ गामेपर रहए। किए ने बुझलकै। फेर सोचलक जे जखनि घरवाली माटि लऽ कऽ औत तँ पूछि लेबै। मन असथिर भेलै। मुदा रुदलक मुँहक रंगसँ बूझि पड़ै जे केते भारी काज स्त्री बिना पुछिनहियेँ कऽ लेलकै। भीतरसँ खुश मुदा ऊपरसँ गंभीर होइत श्रीचन रुदलकेँ कहलक-

> "आँइ हौ रुदल भाय, तोरा भनसियासँ मिलान नै रहै छह, जे बिन पुछनइ चलि गेलखुन।"

श्रीचनक मनक बात नै बूझि खिसिया कऽ रुदल बाजल-

> "की कहियऽ भाय, मौगीपर बिसबास नै करी। जखनि अपन काज रहतै तँ हँसि-हँसि बजतह मुदा जखनि तोरा कोनो काज हेतह तँ कहतह जे माथ दुखाइए।"

मुँह दाबि श्रीचन मोने-मन खूब हँसैत मुदा रुदल तामसे भेर भेल जाइत। विदा होइत श्रीचन कहलकै-

> "जाइ छिअ भाय। मौगी सबहक किरदानी देखि हमरा किछु फुरबे ने करैए।"

सह पाबि रुदल गरजि उठल-

''बड़बुधियार मौगी सभ भऽ गेल हौ, चलै चलह तँ हमरा संगे कोदारि पाड़ए।''

थोड़े दूर आगू बढ़ि श्रीचन रूकि कऽ कहलकै-

''भाय की करबहक, आब मौगीए सबहक राज भेलै।''

''हमरा कोन राज-पाटसँ मतलब अछि, हर जोतै छी, कोदारि पाड़ै छी, तीन सेर कमा कऽ अनै छी, खाइ छी। एते दिन पुरुखे चोर होइ छेलै, आब मौगीओ चोरनी हएत। भने जहल जाएत आ पुलिसबासँ यारी लगौत।

श्रीचन बढ़ि गेल। रुदल, दुनू हाथ माथपर लऽ सोचए लगल।

सभ कियो माटि आनि-आनि अपन-अपन अँगनाक माटिक ढेरीपर रखलनि। घामे-पसीने सभ जनानी तर-बत्तर। कनीकाल सुसतेला पछाति दिआरी बनबैले मुंगरी, लोढ़ीसँ माटि फोड़ए लगली। मेहीसँ माटि फोड़ि, इनार-कलसँ अछिनजल पानि भरि-भरि अनलनि। माटिमे पानि दऽ सानए लगली, सूखल माटिमे पानि पड़िते सोन्हगर सुगंध सौंसे गाममे पसरि गेल। गामक हबे बदलि गेल। जहिना साँझू पहरमे सिंगहार-रातिरानी फूलसँ वातावरण महमहा उठैत तहिना माटि-पानिसँ जनमल सुगंध गामकेँ महमहा देलक। माटि सानि, छोट-छोट दिआरी सभ बनबए लागलि। दिआरी बना, पुरान साफ सूती वस्त्रकेँ फाड़ि-फाड़ि दहिना हाथक तरहत्थीसँ जाँघपर रगड़ि-रगड़ि टेमी बनौलनि। टेमी बना दिआरीमे करुतेल दऽ टेमी सजौलनि। दिआरी सजा कियो फुलडालीमे तँ कियो चङेरीमे तँ कियो छिपलीमे तँ कियो केरा पातपर रखलनि। दिआरी रखि सभ नहेली, अजीब दृश्य। नव उत्सव। नव जिज्ञासा। नव आशा सबहक मनमे छेलनि। सुरूज डुमबो नै कएल मुदा निच्चाँ जरूर उतरि गेल रहथि, गाछो सभ परहक रौद बिला गेल छल, सभ अपन-अपन गोसाउनिक घर जा सिरा आगूमे दिआरी नेसिलनि, दिआरी नेसि एकटँगा दऽ आराधना करए लगली, जे आएल लक्ष्मी पुनः पड़ाए नै। गोसाँइकेँ गोर लागि सभ गामक देव स्थान दिस चलली। अपन-अपन आँगनमे तँ सभ असगरे-असगर छेली मुदा आँगनसँ निकलिते देवस्थान दिस विदा होइते संगबे सभ भेटए लगलनि। संगबे मिलते सभ कियो जइ स्थान

दिस जाइत रहथि ओइ देवताक, गीत गाबए लगली। सौंसे गाम सभ रस्तामे एक नै अनेक समूह गीत गबैत मगनसँ देवस्थान पहुँचए लगली। सबहक मनमे जमीनक खुशी तँइ सभ देवतोकेँ मुस्कीआइत देखैत। सबहक मनमे नचैत जे एकसँ एक्कैस हुअए।

दिआरीक इजोत जकाँ गामक सभ गरीब-गुरबाक मनमे आशाक दीप खेत पाबि जरए लगलनि। हजारो बर्खसँ पछुआबैत गरीबीमे एकाएक आड़ि पड़ि गेल। सभ कियो नव-नव योजना मनमे बनबए लगला। जइसँ जिनगी दुखक बेड़ीकेँ टपि सुखक सीमामे पएर रखलक। नव जिनगी जीबैक उत्कंठा सबहक मनमे जगलनि।

OOO

११

खेत भेटलासँ भजुआ परिवारक सभ समांगक विचारो बदलल। नओ बापूत बैसि विचार करैत रहए जे जहिना रमाकान्त काका हमरा सभकेँ रखि लेलनि तहिना हमहूँ सभ समाजक एक अंग बनि कऽ रहब। सभसँ पहिने रमाकान्त, सुबुध, शशिशेखर आ मास्टर साहैबकेँ अपना ऐठाम भोजन करैबनि। मुदा अखनि धरिक जे हमरा सबहक चालि-ढालि रहल अछि, ओकरा तँ अपने बदलए पड़त। अँगना-घर आ दुआर-दरबज्जाक जे छिछा-बिछा अछि से नीक लोकक बैसै जोकर नै अछि। सभ दिन अपना सभ एहनेमे रहलौं तँए रहै छी मुदा नीक लोक एहेन जगहमे केना औता। देखिए कऽ मन भटकि जेतनि। तँए पहिने सभ समांग भोरेसँ दुआर-दरबज्जा आ अँगना-घरकेँ चिक्कन-चुनमुन बनाबह। मरदो आ मौगीओ जे भदौस जकाँ नुआ-बस्तर बनौने रहै छी, ओकरो बदलह। जखनि अपन काज करै छी तखनि जे फटलो-पुरान आ मैलो-कुचैल कपड़ा पहिरै छी तँ बड़ बढ़ियाँ। मुदा जखनि किनको नोत दए कऽ खाएले बजेबनि तखनि एहेन बगए-बानिसँ काज नै चलत।

भजुआक जेठ बेटाक सासुर दरभंगा बेला मोड़पर अछि। जखनि ओ सासुर जाइत आ ओइठामक रहल-सहन, बात-विचार देखैत तँ मन जरूर आगू मुहेँ बढ़ैक कोशिश करैत। मुदा गामक जे गरीबीक अवस्था छै ओ सभ विचारकेँ दाबि दइ छै। मुदा तैयो दरभंगाक देखल परिवार नजरिमे तँ रहबे करै। भजुआक जेठ बेटा झोलिया सातो भाँइक भैयारीमे सभसँ जेठ। तँए सभ भाँइ झोलियाक बात मानैए। झोलिया बाजल-

> ''सातो भाँइक बीच रमाकान्त बाबा सात बीघा जमीन देलखुन। पाइ तँ एक्कोटा नै लेलखुन। दुनियाँमे केकरा के एना दइ छै। जँए हुनका मनमे हमरो सबहक प्रति दया एलनि तँए ने। तहिना हमहूँ सभ हुनका ओते पैघ बूझि आदर करबनि। गामेमे भाड़ापर कुरसी, समेना, शतरंजी, जाजीम, सिरमा सभ भेटैए। जहिना बरियाती लेल लोक भोजनसँ लऽ कऽ रहै तक, सभ बेवस्था करैए तहिना हमहूँ सभ करब।''

झोलियाक विचार सुनि छबो भाँइओ आ बापो-पित्ती, सभ कियो मुड़ी

डोला समर्थन कऽ देलक। झोलिया फेर बाजल-

> "बाउ, तूँ रमाकान्त बाबा ऐठाम चलि जइहऽ। हुनका चारू गोटेकेँ नोतो दऽ दिहनु आ संगे-संग बजेनौं अबिहनु। दू भाँइ भाड़ापर सभ समान आनि जोगार करिहऽ। दू समाङग बजारसँ खाइक सभ समान कीनि आनिहऽ। सभ सभ काजमे भोरेसँ लगि जइहऽ।"

दलानपर बैसि रमाकान्त आ हीरानन्द चाहो पीबैत रहथि आ गामेक गप-सप्प करैत रहथि। गामक गप-सप्प करैत रमाकान्तक नजरि बौएलाल आ सुमित्रापर गेलनि। गिलास रखि रमाकान्त हीरानन्दकेँ कहलखिन-

> "महेन्द्र बौआ कहने रहथि जे छअ मास सिखा-पढ़ा दुनू गोटेकेँ पठा देब मुदा अखनि धरि किएक ने आएल?"

हीरानन्द बजला-

> "कोनो कारण भेल हेतै तँए ने अखनि धरि नै आएल। ओना चिकित्सा कठिन विद्या छी। सुढ़िआइमे तँ किछु समए लगबे करतै।"

दुनू गोटे गप-सप्प करिते रहथि आकि भजुआ आबि रमाकान्तकेँ गोर लगलकनि, रमाकान्तकेँ गोर लागि हीरानन्दोकेँ लगलकनि। हीरानन्दकेँ गोर लगिते ओ असिरवाद दैत पुछलखिन-

> "भजू भाय, नीके रहै छह कीने?"

> "हँ मास्टर बौआ। हमरा तँ गामसँ भगैक नौवत आबि गेल छेलए।"

रमाकान्त दिस देख-

> "मुदा, कक्का नै भागए देलनि।"

हलचलाइत रमाकान्त पुछलखिन-

> "से की, से की"

गाममे बसैक खिस्सा भजुआ कहए लगलनि-

“ऐ गाममे पहिने हम्मर जाति नै रहए। मुदा डोमक काज तँ सभ गाममे जनमसँ मरन धरि रहै छै। हमरा पुरखाक घर गोनबा रहै। पूभरसँ कोसी अबैत-अबैत गोनबो लग चलि आएल। अखार चढ़िते कोसी फुलेलै। पहिलुके उझूममे तेहेन बाढ़ि चलि आएल जे बाधक कोन गप जे घरो सभमे पानि ढूकि गेल। तीन दिन तक ने माल-जाल घरसँ बहराएल आ ने लोके। पीह-पाह करैत सभ समए बितौलक। मगर पहुलका बाढ़ि रहै, तेसरे दिन सटकि गेल। हम्मर बाबा दुइए परानी। ताबे हम्मर बाउ नै जनमल रहै। बाढ़िक पानि सटकिते दुनू गोरे दसोटा सुगर आ घरक समान लऽ गामसँ विदा भऽ गेल।”

कनी रूकि फेर-

“जखनि गामसँ विदा भेल तँ दादी बाबाकेँ कहलकै, अनतए केतए जाएब। हमरो माए-बाप जीविते अछि, तँइ ओतै चलू। बबो मानि गेल। दुनू परानी अही गाम देने जाइत रहए। गाममे अबिते सुगरकेँ चरैले छोड़ि देलकै आ अपने दुनू परानी सुसताए लगल। ऐ गाममे डोम नै तँए गामक बेदरा-बुदरी सभ सुगर देखैले जमा भऽ गेल। गामोमे हल्ला भऽ गेलै। गामक बाबू-भैया सभ आबि हमरा बाबाकेँ कहलकै जे अही गाममे रहि जा। हमर बाबा रहि गेल। गामक कातमे एकटा परती रहै। ओही परतीपर सभ बाबू-भैया एकटा घर बना देलकै। ओइ दिनमे परती नम्हर रहै। मगर चारू भाग जोता खेत रहै। चारू भागक खेतबला सभ परतीकेँ छाँटि-छाँटि खेतमे पियबैत गेल। परती छोट होइत गेलै। रहैत-रहैत घर-अँगना आ खोबहारे भरि रहलै। मगर तैयो दिक्कत नै होइ। हमर बाउओ भैयारीमे असगरे। मुदा हम दू भाँइ भेलौं। जखनि दुनू भाँइ भीन भेलौं तँ घराड़ीओ बँटा गेल आ गिरहतो। मुदा तैयो गुजरमे दिक्कत नै हुअए। अखनि दुनू भाँइक बीच सातटा बेटा अछि। चारिटा हमरा आ तीनटा भाएकेँ। गुजर तँ कमा कऽ सभ कऽ लइए मुदा घरक दुख तँ सभकेँ होइते छै।”

भजुआक खिस्सा सुनि रमाकान्त कहलखिन-

"आब तँ बहुत खेत भेलह?"

"हँ कक्का! केते पीढ़ी आनन्दसँ रहब। अखनि घर तँ नै बन्हलौं मुदा खेती केनाइ शुरू कऽ देलिऐ।"

बिच्चेमे हीरानन्द पुछलखिन-

"सबेरे-सबेरे केम्हर चललह, भज्जु भाय?"

भजुआ-

"रातिमे सभ समाङग विचारलक जे जहिना रमाकान्त कक्का सभकेँ समाजक अंग बना खेत देलनि तहिना हमहूँ सभ हुनका नोत दए कऽ खुऐबो करबनि आ धोती पहिरा विदाइओ करबनि। सहए नोत दइले एलौं हेन।"

न्योतक नाओं सुनिते रमाकान्त कहलखिन-

"कहियाक नोत दइ छह? ईहो तीनू गोटे -सुबुध, शशि आ हीरानन्द- जेथुन। हिनको सभकेँ कहि दहुन।"

"हँ कक्का, अहीं टाकेँ थोड़े लऽ जाएब। हिनको सभकेँ लए जेबनि। ऐठाम तँ अहीं दू गोरे छी। शशिभाय आ सुबुध भाय नै छथि। ताबे अहाँ दुनू गोरे नहाउ-सोनाउ, हम ओहू दुनू गोरेकेँ बजौने अबै छियनि।"

हीरानन्द-

"औझुके नोत दइ छह?"

"हँ, मास्टर साहैब!"

रमाकान्त कहलखिन-

"बड़ बढ़ियाँ! शशि तँ पोखरि दिस गेलखुन, अबिते हेथुन। ताबे सुबुधकेँ कहि अबहुन।"

भजुआ सुबुध ऐठाम विदा भेल। चाह पीब सुबुध दुनू बच्चाकेँ

पढ़बैत रहथि। भजुआकेँ देखिते सुबुध पूछि देलखिन-

''भज्जु भाय, केम्हर-केम्हर?''

प्रणाम करैत भजुआ कहलकनि-

''भाय, अहीं ऐठाम ऐलौं हेन। रमाकान्तो काकाकेँ कहि देलियनि आ अहूँकेँ कहैले एलौं हेन।''

''की कहैले एलह?''

''नोत दइले एलौं।''

''कोन काज छिअह?''

''काज-ताज नै कोनो छी। ओहिना अहाँ चारू गोरेकेँ खुअबैक विचार भेल।''

भजुआक बात सुनि सुबुधक मनमे द्वन्द्व उत्पन्न भऽ गेलनि। मनमे प्रश्न उठलनि, भजुओ तँ अही समाजक अंग छी। जहिना शशीरमे नीक-सँ-नीक आ अधला-सँ-अधला अंग अछि, जइसँ शरीरक क्रिया चलैए तहिना तँ समाजोमे अछि। मुदा शरीर आ समाजकेँ तँ एक नै मानल जाएत। समाजकेँ जाति आ सम्प्रदाय ऐ रूपे पकड़ि नेने अछि जे सभ सभसँ ऊपरो अछि आ निच्चो अछि। एक दिस धर्मक नाओंपर सभ हिन्दू छी मुदा रंग-बिरंगक जाति भीतरमे अछि। एक जाति दोसर जातिक ने छूअल खाइए आ ने कथा-कुटमैती करैए। तेतबे नै, हिन्दूक जे देवी-देवता छथि ओहो बँटाएल छथि। जे देवी-देवताकेँ एक जाति मानैए, दोसर नै मानैए। जौं मानितो अछि तँ ने हुनकर पूजा करैए आ ने परसाद खाइए। भरिसक हृदैसँ प्रणामो नहियेँ करैए। देवतोकेँ मोने-मन अछोप, शूद्र इत्यादि बुझै छथि। जौं ई प्रश्न हल्लुक-फल्लुक रहैत तँ कोनो बात नै! मुदा प्रश्न तँ जड़िआएल छै। एहेन ने हुअए जे नान्हिटा प्रश्नक चलैत समाजमे विस्फोट भऽ जाए। समाजक लोक ऐ दुनू प्रश्नक बीच तेना ने बन्हाएल अछि, जे जिनगीक सभसँ पैघ वस्तु एकरे बुझै छथि। जहन कि, छी नै। मुस्कीआइत सुबुध भजुआकेँ कहलखिन-

''ताबे तूँ रमाकान्त काका ऐठाम बढ़ह। हम नहेने अबै छी।''

भजुआ विदा भेल। मुदा सुबुध मोने-मन सोचिते रहला जे की कएल जाए। तर्क-वितर्क करैत सुबुधक मन धीरे-धीरे सक्कत हुअ लगलनि। अंतमे ऐ निष्कर्षपर पहुँच गेला जे जाधरि ऐ सभ छोट-छीन बातकेँ कड़ाइसँ पालन नै कएल जाएत ताधरि समाज आगू मुहेँ नै ससरत। समाजकेँ पछुआइक ईहो मुख्य करण छी। तँए एकरा जेते जल्दी हुअए तोड़ि देनाइ उचित हएत। ई बात मनमे अबिते सुबुध नहाइले गेला। नहा कऽ कपड़ा पहिरि रमाकान्त ऐठाम विदा भेला। जाबे सुबुध रमाकान्त ऐठाम पहुँचथि ताबे रमाकान्त शशिशेखर आ हीरानन्द नहाकऽ कपड़ा पहिरि तैयार रहथि। सुबुधकेँ पहुँचिते हीरानन्द कहलखिन-

"सुबुधो भाय आबिए गेला। आब अनेरे बिलम करब उचित नै।"

सुबुध बैसबो नै केला। सभ कियो विदा भऽ गेला। आगू-आगू रमाकान्त पाछू-पाछू सभ। थोड़े दूर आगू बढ़लापर हीरानन्द भज्जुकेँ पुछलखिन-

"कथी सबहक खेती केलह हेन भज्जु?"

मजबूरीक स्वरमे भज्जु कहए लगलनि-

"भाय, अपना बड़द नै अछि। कोदारिओ ने छेलए मुदा छौड़ा सभ जोर केलक आ दस गो कोदारि कीनि अनलक। सभ बापूत भोरे सुति कऽ उठै छेलौं आ खेत तामए चलि जाइ छेलौं। पनरह दिनमे सभ खेत तामि लेलौं। बड़ बढ़ियाँ जजाति सभ अछि। ऐ बेर हएत तँ बड़दो कीनि लेब।"

"जखनि खेत भेलह तँ बड़द किए ने कीनि लेलह?"

"एक्केटा दिक्कत नै ने अछि। बड़द कीनितौं तँ बान्हितौं केतए। खाइले की दैतिऐ। जे सभ काज-बड़द कीनिनाइ, घर बनौनाइ, खाइक जोगार केनाइ- एक्के बेर शुरू करितौं तँ ओते काज पार केना लगैत। तँए एका-एकी सभ काज करब।"

"बड़ सुन्दर विचार केलह?"

गप-सप्प करैत सभ कियो भजुआ ऐठाम पहुँचला। घरक आगूमे दू

कट्ठा जमीन। ओइमे समियाना टँगने। एक भाग कुरसी लगौने। दोसर भाग शतरंजी, जाजीम, तकिया लगौने। भजुआक सभ समाङग मरदसँ मौगी धरि- नहाकऽ नवका वस्त्र पहिरने। जहिना केतौ बरियातीक बेवस्था होइ छै। तहिना बेवस्था केने अछि। बेवस्था देखि चारू गोटे क्षुब्ध भऽ गेला। किनको बुझिए ने पड़नि जे डोमक घर छिऐ। चारू गोटे चारू कुरसीपर बैसला। कुरसीपर बैसिते भजुआक एकटा बेटा शर्बत अनलक। सभसँ पहिने रमाकान्त दू गिलास शर्बत पीब ढकार करैत कहलखिन-

"आब पान खुआबह।"

जेते काल शर्बत पीबथि, तैबीच भजुआक पोती चाह नेने आबि गेली। हाँइ-हाँइ कऽ शशिशेखर शर्बत पीलनि। स्टीलबला कपमे चाह। शुद्ध दूधक बनल। ने अधिक मीठ आ ने फिक्का। चाहक रंगो तेहने। तैपर कॉफी चक-चक करैत। चाह पीबैत-पीबैत रमाकान्तक पेट अफरि गेल। भरियाएल पेट बूझि रमाकान्त कहलखिन-

"ई तीनू गोटे- कुरसीपर बैसता, हम ओछाइनेपर पड़ब।"

कहि उठि कऽ ओछाइनपर जाए पड़ि रहला। पान आएल। सभ कियो पान खेलनि। मुँहमे पान सठबो नै कएल छेलनि आकि जलखै करैक आग्रह भजुआ केलकनि। भजुआक आग्रह सुनि रमाकान्त कहलखिन-

"हम ओछाइनेपर खाएब। हुनका सभकेँ टेबुलपर दहुन।"

भजुआक सभ समाङग दासो-दास रहए। जखनिसँ चारू गोटे एला तखनिसँ भजुआक परिवारमे नव उत्साहक लहरि उमरि पड़लै। की मरद की स्त्रीगण। जे स्त्रीगण सदिखन झगड़ेमे ओझराएल रहै छलि, सबहक मुँहमे हँसी छिटकैत। मनुखे ऐ दुनियाँक सभसँ पैघ कर्ता-धर्ता छी, ई विचार सबहक मनमे नाचए लगलनि। भजुआक पोती, जेकर मात्रिक दरभंगा छिऐ आ ओतै बेसी काल रहबो करैए, हाइ स्कूलमे पढ़बो करैए, ओकर संस्कार आ काज करैक ढंग देखि सुबुध आ हीरानन्द, दुनू गोटे आँखिएक इशारामे गप करए लगला। आँखिएक इशारामे सुबुध हीरानन्दकेँ कहलखिन-

''जौं मनुखकेँ नीक वातावरण भेटै तँ ओ किछु-सँ-किछु कऽ सकैए, चाहे ओकर जनम केहनो गिरल परिवारमे किएक ने भेल होइ।''

सुबुधक बात सुनि हीरानन्द कहलखिन-

''ई सभ ढोंग छी जे लोक कहैए जे पूर्ब जनमक कर्मक फल लोक ऐ जनममे पबैए। हँ, जौं एकरा ऐ रूपे मानल जाए जे ऐ जनमक पूर्ब पक्षपर पछातिक जिनगी निर्भर करैए, तँ एक तरहक विचार भेल। देखियौ जे यएह बचिया -भजुआक पोती कुशेसरी- अछि, केते बेवहारिक अछि। अही परिवारमे तँ एकरो जनम भेल छै मुदा अगुआएल इलाका आ अगुआएल परिवारमे रहने केते अगुआएल अछि। की पैघ घरक बेटीसँ कम अछि।''

चूड़ा, दही, चिन्नी, केरा, अचार, डलना तरकारीक संग पाँचटा मिठाइ सेहो जलखैमे छेलै। चारू गोटे भरि मन खेलनि। खेला पछाति अस-बीस करए लगला। हाथ धोइ रमाकान्त बिछानेपर ओंघरा गेला। मुदा गप-सप्प करै दुआरे सुबुधो आ हीरानन्दो कुरसीएपर बैसल रहला। सभ समाङग भज्जु जलखै करि कऽ सरियाती जकाँ बैसल रहए। सुबुध पुछलखिन-

''जखनि एते समांग छह तखनि माल-जाल किए ने पोसने छह?''

नओ समांगमे झोलिया सभसँ होशगर। अपनो सभ समांग झोलियाकेँ गारजन बुझैत। सुबुधक सबालक उत्तर झोलिया दैत कहलखिन-

''मास्सैब, अखनि धरि हमरा सबहक परिवारमे सुगर पोसल जाइत रहल अछि। मुदा सुगर सिरिफ खाइक जानवर छी। आन काज तँ ओकरासँ होइ नै छै। ने हर जोतल जाइ छै आ ने दूध होइ छै। छोट जानवरक दुआरे गाड़ीओ नहियेँ जोतल जेतै। जेकरा नूनो-रोटी नै भेटै छै ओ मासु केतएसँ खाएत। तैयो हम सभ पोसै छी। अपन पोसल रहैए तँए पावनि-तिहारमे

कहियो-काल खाइओ लइ छी। खेनिहारक कमी दुआरे नेपाल जा-जा बेचै छेलौं। नेपालमे अपना ऐठामसँ बेसी लोक खाइए। किएक तँ सुगरक मासु खस्सी बकरीसँ बेसी गरम होइ छै। अपना ऐठामक मौसिम सेहो गरम अछि। तँए सुगर मुख्यतः ठंढ़ इलाकाक खेनाइ छी। मुदा तैयो सुग्गरो पोसै छेलौं, किएक तँ गाए-महिंस जौं पोसबो करितौं तँ हमरा सबहक दूध के कीनैत?''

झोलियाक बात सुनि सुबुध पुछलखिन-

''सेहो तँ नै देखै छिअह?''

झोलिया-

''पहिने जेरक-जेर सुगर रहै छेलै। पोसैओ मे असान होइ छेलए। एक्के गोटेकेँ बरदेलासँ सए-पचास सुगर पला जाइ छल। भोरे किछु खा कऽ सुगरकेँ खोबहारीसँ निकालि चरबैले चलि जाइ छेलै। घरपर खुअबै-पिअबैक कोनो जरूरते नै। साल भरि पोसै छेलौं आ सालमे एक बेर नेपाल लऽ जाए बेचि लइ छेलौं। परुँका साल डेढ़ सए सुगर लए कऽ बाउओ आ कक्को नेपाल गेल। ओइठिन एकटा मंगलक हाट लगै छै। जइ हाटमे सभसँ बेसी सुगर बिकै छै। बड़का-बड़का पैकार सभ ओइ हाटमे रहैए। हाटक एक भागमे हमरो सुगर छल। एक भाग बाउ बैसल आ दोसर भाग कक्का। एकटा पैकार पान-सात गोरेक संग आएल। दाम-दीगर हुअ लगलै। दाम पटि गेलै। सभ सुगरक गिनती करि कऽ, एकटा पैकार रहल आ बाँकी गोरे सुगर हाँकि कऽ विदा भेल। ओ पैकार हमरा बाउओ आ कक्कोकेँ कहलक जे चलू पहिने किछु खा-पी लिअ। हमरो बड़ भुख लगल अछि। एकटा दोकानमे तीनू गोटे गेल। जलखै करए लगल। जलखैमे किछु मिला देने छेलै। खाइते-खाइते दुनू गोरेकेँ निशाँ लगि गेलै। लटुआ कऽ दुनू गोरे दोकानेमे खसि पड़ल। तैबीच की भेलै से बुझबे ने केलक। दोसर दिन निन्न टुटलै तँ ने ओ पैकार आ ने दोकान। किएक तँ दोकान हाटे-हाटे लगैत रहै। दुनू भाँइ कानैत-खिजैत विदा भेल। ने संगमे एकोटा पाइ आ ने

खाइक कोनो वस्तु। भूखे लहालोट होइत, कहुना-कहुना कऽ डगमारा आएल। डगमारा अबैत-अबैत दुनू भाँइ बेहोश भऽ गेल। डगमारामे हम्मर एकटा कुटुम अछि। दुनू भाँइक दशा देखि ओ कुटुम गुम्म भऽ गेला। किछु फुरबे नै करनि। बड़ी काल पछाति दुनू भाँइकेँ होश भेलै। होश अबिते दुनू भाँइ पानि पीलक, जखनि कनी मन नीक भेलै तँ नहाएल। नहा कऽ खेलक। खा कऽ सूतल। सुति कऽ उठला बाद आरो मन नीक भेलै। दू दिन औतै रहल। तेसर दिन गाम आएल। ओइ दिनसँ सुगर उपटि गेल।''

सुबुध-

''अपना घरमे रूपैआ-पैसा नै छह?''

झोलिया-

''थोड़बे रूपैआ अछि जे बाबा बाउकेँ देने रहै आ कहने रहै जे जब हम मरब तँ ऐ रूपैआसँ भोज करिहेँ। रूपैआ गनल नै अछि। बाँसक चोंगामे, सुगरक खोबहारीमे राखल अछि।''

हलचला कऽ रमाकान्त कहलखिन-

''नेने आबह तँ। देखिऐ केते रूपैआ छह?''

सातो चोंगा भजुआ सुगरक खोबहारीसँ निकालि रमाकान्तक आगूमे रखि देलकनि। फोंकगरहा बाँसक पोरक चोंगा, एक भाग गिरहेसँ बन्न आ दोसर भागमे कसि कऽ लत्ता कोंचने। सातो चोंगाक लत्ता निकालि रमाकान्त आगूमे रूपैआ निकालि-निकालि रखलनि। एकटा रूपैआ उठा रमाकान्त निङहारि कऽ देखलनि तँ चानीक रूपैआ रहए। रूपैआक ढेरीपर सबहक आँखि रहनि। जे जेत्तै रहथि से तत्तैसँ रूपैआपर आँखि गड़ौने रहथि। रमाकान्त हीरानन्दकेँ कहलखिन-

''मास्सैब, ऐ रूपैआकेँ गनियौ तँ।''

कुरसी परसँ उठि हीरानन्द रूपैआ लग आबि गनए लगला। सातो चोंगामे सात सए चानीक रूपैआ। सात सए चानीक रूपैआ सुनि सुबुध

मोने-मन हिसाब जोड़ए लगला जे एक रूपैआक कीमत पचहत्तरि रूपैआ होइए। एक सएसँ पचहत्तरि सए होएत। सात सएसँ बाबन हजार पाँच सए हएत। अगर एक जोड़ बड़द किनत तँ पाँच हजार लगतै। एकटा बोरिंग-दमकल लेत तँ पनरह हजारमे भऽ जेतै। जौं तीन नम्बर ईंटा लऽ ओकरा गिलेबापर जोड़ि, ऊपरमे एसबेस्टस दऽ कऽ सात कोठरीक घर बनौत तँ पच्चीस-तीस हजारमे भऽ जेतै। अपनो सभ समाङग कमाइते अछि आ सात बीघा खेतोक उपजा हेतै। साले भरिमे बढ़ियाँ किसान-परिवार बनि जाएत। जे अछैते पूजीए लल्ल अछि। सभ कथूक दिक्कत छै। विचित्र स्थिति सुबुधक मनमे उठि गेलनि। एक नजरिसँ देखथि तँ खुशहाल परिवार बूझि पड़नि आ दोसर दिस देखथि तँ ने रहैले घर आ ने खाइ-पीबैक समुचित उपए छै। मुदा एकटा गुण भजुआक परिवारमे सुबुध जरूर देखलनि, आन गामक डोम जकाँ ताड़ी-दारूक चलनि परिवारमे नै छै। सिरिफ बुझैक आ बुझबैक जरूरति परिवारमे छै। नम्हर साँस छोड़ैत सुबुध भजुओ आ भजुआक सभ समांगोकेँ कहए लगलखिन-

> "भजु भाय, हम सभ समाजकेँ हँसैत देखए चाहै छी, कनैत नै। तँए केकरो अधला होइ से नै सोचै छी। सबहक नीक होइ, सबहक परिवार हँसी-खुशीसँ चलैत रहै। सबहक बेटा-बेटीकेँ पढ़ै-लिखै, रहैक नीक घर होइ, दबाइ-दारू दुआरे कियो मरै नै, तँए हम कहब जे ऐ रूपैआकेँ रस्तासँ खरच करू। ओना बाबू श्राद्धक भोज लेल कहने छथि, सेहो थोड़थार कऽ लेब, जौं एते दिन नै केलौं तँ किछु दिन आरो टारू। पहिने घर, बड़द आ बोरिंगमे खरच करू तखनि जे उपजा बाड़ी हएत तँ भोजो कए लेब।"

सुबुधक विचारक समर्थन करैत रमाकान्त कहलखिन-

> "बड़ सुन्दर विचार सुबुध देलखुन भज्जु। जिनगीकेँ बुझह जे जिनगी केकरा कहै छै आ केना बनतै। से जाधरि नै सिखबह ताधरि अहिना बौआइत रहि जेबह।"

भजुआ तँ चुप्पे रहल मुदा झोलिया टपाक दनि बाजल-

"बाबा जे कहलनि ओ गिरह बान्हि लेलौं। अहाँ सभ हमरो छोट

भाए बुझू। जाबे हमर परिवार रहत आ हम सभ रहब, ताबे अहाँ सबहक संगे-संग चलैत रहब।''

झोलियाक विचार सुनि हीरानन्द खुशीसँ झूमि उठला। हँसैत कहलखिन-

''भज्जुभाय, अहाँ तँ आब बूढ़ भेलौं तँए नवका काज दिस नजरि नहियोँ जाएत मुदा बेटा-भातीज सभ जुआन अछि, नव काज दिस बढ़ए दियौ। जाधरि लोक समैक हिसाबसँ नव काज दिस नै बढ़त ताधरि समैक संग नै चलि औत। नै तँ बाढ़िक पानि जकाँ समए आगू बढ़ैत जाएत आ खढ़-पात जकाँ मनुख अर्ड़ा लगल रहत। तँए समैकेँ पकड़ि कऽ चलैक कोशिश करू। आब अपनो सभ भाँइ मिला कऽ सात बीघा खेत भेल। सात बीघा खेतबला बढ़ियाँ गिरहस्त तखने बनि सकैए जखनि कि खेती करैक सभ जोगार कऽ लिअए। पानिक बिना जजाति नै उपजि सकैए। तहिना बड़दोक जरूरी अछि। खेतक महत तँ तखने हएत जखनि कि ओकरा उपजबैक सभ जोगार कऽ लेब। बहुत रास रूपैआ अछि, ऐ रूपैआक उपयोग जिनगी लेल करू।''

गप-सप्प चलिते छल कि हहाएल-फुहाएल डाक्टर महेन्द्र आ बौएलाल पहुँच गेला।

महंथ जकाँ रमाकान्त ओछाइनपर पँजरा तरमे सिरमा देने पड़ल छला। महेन्द्रकेँ देखिते सभ अचंभित भऽ गेला। महेन्द्र आ बौएलाल सोझहे रमाकान्त लग पहुँच गोर लगलकनि। महेन्द्रकेँ असिरवाद दैत रमाकान्त कहलखिन-

''ऐठाम किएक एलह। कनीए काल पछाति तँ हमहूँ सभ ऐबे करितौं। गाड़ीक झमारल छह, पहिने नहैतह-खैतह अराम करितह। हम कि केतौ पड़ाएल जाइ छेलौं जे भेँट नै होइतियऽ।''

महेन्द्र डाक्टरक नजरिसँ चुपचाप पिताकेँ देखै छला। पिताकेँ देखि मोने-मन अपशोच करए लगला जे गलत समाचार पहुँचल। मुदा किछु

बजै नै छला। तैबीच भजुआ झोलियाकेँ कहलक-

"बौआ, पहिने दुनू गोरेकेँ खुआबह।"

महेन्द्रो आ बौएलालोकेँ खुअबैक ओरियान झोलिया करए लगल। ओरियान तँ रहबे करै। लगले परसि दुनू गोटेकेँ खुऔलनि। दुनू गोटे खा कऽ घर दिस विदा भेला। पाछूसँ कुशेसरी महेन्द्रकेँ शोर पाड़ि कहलकनि-

"चाचाजी, पान-सुपारी लए लिअ।"

कुशेसरीक आग्रह सुनि दुनू गोटे रस्तेपर ठाढ़ भऽ गेला। झटकि कऽ कुशेसरी, तस्तरीमे पान-सुपारी नेने, लगमे पहुँचल। लगमे पहुँच अपने हाथे पान सुपारी नै दऽ तस्तरीए महेन्द्रक आगूमे बढ़ौलकनि। पान सुपारी देखि महेन्द्र कहलखिन-

"बुच्ची, हम तँ पान नै खाइ छी। अगर घरमे इलायची आ सिगरेट हुअ तँ नेने आबह।"

कुशेसरी चोट्टे घूमि कऽ आँगन आएल। आँगन आबि सिगरेटक पौकेट, सलाइ आ इलायची नेने पहुँचल। उत्तरमुहेँ घूमि महेन्द्र ओरिया कऽ सिगरेट लगौलनि जे कहीं पिताजी ने देखि लथि। दुनू गोटे गप-सप्प करैत विदा भेला। कुशेसरीकेँ देखि महेन्द्र अचंभित नै भेला। किएक तँ मिथिलाक गाम लेल कुशेसरी अचंभित लड़की भऽ सकै छेली। मुदा मद्रास लेल नै। पछुआएल जातिमे कुशेसरी सन-सन ढेरो लड़की अछि।

महेन्द्रकेँ गामसँ एकटा गुमनाम पत्र गेल रहनि। ओइमे लिखल छेलै जे पिताजी बताह भऽ गेल छथि। अन्ट-सन्ट काज गाममे कऽ रहल छथि। तँए समए रहैत हुनका इलाज नै करेबनि तँ निच्छछ पागल भऽ जेता। पत्र पढ़िते महेन्द्र घर अबैक विचार केलनि। भाए रविन्द्रसँ विचारि लेब जरूरी बूझि महेन्द्र एक दिन रूकि गेला। दोसर दिन महेन्द्रक भाबो सुजाता, महेन्द्र, बौएलाल आ सुमित्रा, चारू गोटे गाड़ी पकड़ि गाम विदा भेला।

गाम अबिते महेन्द्र पिताकेँ नै देखि मोने-मन आरो सशंकित भऽ गेला। माएकेँ पिताक सम्बन्धमे पुछलनि। माएकेँ मात्र एतबे पुछलनि जे

'बाबू केतए छथि?'। माए कहलखिन। एटैची रखि महेन्द्र बौएलालक संग सोझहे भजुआ ऐठाम चलला। डाक्टर सुजाता घरेपर रहि गेली। गामक परम्पराकेँ बुझबैत सासु सुजाताकेँ मनाही कए देलखिन जे अहाँ नै जाउ।

चारि बजि गेल। खाइक इच्छा ने रमाकान्तकेँ आ ने आरो किनको रहनि। भानस भऽ गेलै। जेते बिलम होएत, ओते वस्तु सुआदहीन बनत। तँए भजुआ चाहै छल जे गरम-गरम खेनाइ सभ कियो करथि। मुदा भूख नै रहने चारू गोटे टाल-मटोल करैत रहथि। असमंजस करैत भजुआ रमाकान्तकेँ कहलकनि-

"कक्का, भानस भऽ गेल अछि। जएह मन मानए सएह...।"

ढकार करैत रमाकान्त उत्तर देलखिन-

"जखनि भोजन बना लेलह तँ नै खाएब तँ मुँहो छूताइए लेब। मुदा सच पूछह तँ एक्को रत्ती खाइक मन नै होइए।"

"जेतबए मन मानए तेतबे...।"

भजुआ कहलकनि।

चारू गोटे उठि कऽ आँगन गेला। सौंसे आँगन चिक्कनि माटिसँ टटके नीपल, तँए माटिक सुगंधसँ अँगना महमह करैत। आँगन तँ छोटे मुदा बेसी लोकक दुआरे पैघ बूझि पड़ैत। कम्मल चौपेत कऽ बिछौल। जेना आइए कीनि कऽ अनने हुअए तेहने थारी, लोटा, बाटी, गिलास चमचम करैत। भोजनक विन्यास देखि रमाकान्त क्षुब्ध भऽ गेला। की पवित्रता, की सुआद। मोने-मन रमाकान्त सोचथि जे अगर खूब भूख लागल रहैत तँ खूब खइतौं। मुदा भूखे ने अछि तँ की खाएब।"

भोजन कऽ चारू गोटे विदा हुअ लगला। विदा होइसँ पहिने झोलिया रंगल चंगेरामे चारि जोड़ धोती आनि चारू गोटेकेँ आगूमे रखि देलकनि। धोती देखि रमाकान्त कहलखिन-

"झोली, तूँ सभ गरीब छह। अपनेले घोती रखि लैह। तूँ पहिरौलह हम पहिरलौं। भऽ गेलै।"

OOO

१२

मद्रासमे महेन्द्र चारि बजे उठि अपन जिनगी लीलामे लगि जाइ छथि। मुदा गाममे चारि बजे भोरमे महेन्द्रकेँ कड़गर निन्न पकड़ने रहनि। एना किए भेल? छह बजे उठला पछाति महेन्द्र सोचए लगला। की मिथिलाक माटि, पानि, हवाक गुण छै वा काजक कमी रहने एना भेल? रमाकान्त सुति-उठि कऽ महेन्द्रक कोठरीमे जा कऽ देखलखिन जे ओ ठर्र पाड़ैत घोर नीनमे सूतल अछि। नै उठेलखिन। मनमे एलनि जे बापक राजमे बेटा अहिना निश्चिन्त भऽ रहैए। अपने लोटा लऽ कलम दिस विदा भेला। टहलि-बूलि, दिशा-मैदानसँ होइत अपन घरक रस्ता छोड़ि टोलक रस्ता पकड़ि घुमला। टोलमे प्रवेश करिते, रस्ता कातेक चापाकलपर मुँह-हाथ धुअ लगला। कलक बगलेमे मंगलक घर। रमाकान्तकेँ मंगल देखि चुपचाप अँगनासँ बेंतबला कुरसी आ टेबुल आनि डेढ़ियापर लगौलक। मुँह-हाथ धोइ रमाकान्त अपना घर दिस चलला। रस्ता कटैत देखि मंगल कहलकनि-

"काका, कनी एक रत्ती अहूठाम बैसियौ।"

मंगलक बातकेँ कटलनि नै, मुस्कीआइत आबि कुरसीपर बैसि गेला। कुरसीपर बैसि रमाकान्त कहलखिन-

"बड़ सुन्नर कुरसी छह। कहिया बनौलह?"

"आठम दिन छौंड़ा दिल्लीसँ आएल। वएह अनलक।"

मंगलक बेटा रविया, अँगनामे चाह बनबैत रहए। चाह बना, तस्तरीमे बिस्कुट नमकीन भुजिया आ चाहक गिलास नेने अबि रमाकान्तक आगूमे टेबुलपर रखि, गोर लागि कहलकनि-

"बाबा, कनी चाह पीब लियौ।"

रवियाक बात सुनि रमाकान्त सोचए लगला जे यएह मंगला छी जे बिहाड़िमे जखनि घर उधिया गेल रहै तँ सात दिन अपनो सभतूरकेँ आ मालो-जालकेँ अपना मालक घरमे रहैले देने रहिऐ। आइ वएह मंगला छी जे केहेन सुन्दर घरो बना लेलक आ कुरसीओ टेबुल कीनि लेलक।

मुस्की दैत पुछलखिन-

"बेटा, केतए नोकरी करै छह मंगल?"

"दिल्लीमे, कक्का। बड़ बढ़ियासँ रहैए।।"

रमाकान्त भुजिया, बिस्कुट खाए पानि पीब चाह पीबैत रहथि आकि तैबीच रविया आँगन जाए जर्मनीक बनलाहा एकटा पौकेट रेडियो नेने आबि रमाकान्तक आगूमे रखैत कहलकनि-

"बाबा, ई अहींले अनलौं हेन।"

रेडियो देखि रमाकान्त कहलखिन-

"ऐ सबहक सख आब ऐ बुढ़ाड़ीमे की करब। रखि ले। तूँ सभ अखनि जुआन-जहान छँह, छजतौ। हम लऽ कऽ की करब।"

दहिना हाथसँ रेडियो आ बामा हाथे रमाकान्तक गट्टा पकड़ि हाथमे दैत रविया कहलकनि-

"बाबा, अहींले किनने आएल छी।"

चाह पीब, कुरसीपर सँ उठि रमाकान्त घर दिसक रस्ता पकड़लनि। आगू-आगू रमाकान्त पाछू-पाछू मंगल हाथमे रेडियो नेने घरपर तक चल आएल।

एक बाँस सुरूज ऊपर उठि गेल। महेन्द्र ओसारपर बैस, दतमनि-बुरूस करैत रहथि। पान-सातटा बचिया माथपर पथिया आ हाथमे लोटा नेने पहुँचल।

महेन्द्र बुरूस करैत रहथि आ चुपचाप हिनका सभकेँ देखबो करैत रहथि। लोटा पथिया ओसारपर रखि एकटा बचिया महेन्द्रकेँ पुछलकनि-

"बाबा कहाँ छथिन?"

बचियाक प्रश्नक उत्तर महेन्द्र नै देलखिन, किएक तँ नै बूझल रहनि। सबहक पथिया आ लोटाकेँ निङहारि-निङहारि महेन्द्र देखए लगला। कोनो पथियामे कोबी, कोनोमे टमाटर, कोनोमे करैला तँ कोनोमे भँट्टा रहए। लोटामे दूध रहए। दूध आ तरकारी देखि महेन्द्र सोचए

लगला जे ई की देखि रहल छी! किए ई सभ ऐठाम अनलकहेँ। गुन-धुन करए लगला। मुदा कोनो अर्थे ने लगै छेलनि। मन घुरियाइ छेलनि। कनी काल पछाति पुछलखिन-

''बौआ, ई सभ किए अनलह?''

एकटा ढेरबा बचिया जे बजैमे चड़फड़ अछि, कहलकनि-

''बाबा अपन सभ खेत हमरे सभकेँ दए देलखिन। अपनाले किछु ने रखलखिन, तँ खेथिन की तँइ...?''

बचियाक बात सुनि महेन्द्र गुम्म भऽ गेला। सोचए लगला जे हम बेटा छियनि। हुनकर चिन्ता हमरा हेबाक चाही। सुआइत कहल गेल अछि जे 'जेहेन करब तेहेन पएब।' मुँहपर हाथ नेने महेन्द्र सोचैत जे अनेरे लोक अपन आ दोसर बुझैए। जेकरा लेल करबै, ओ अहूँले करत। चाहे अपन हुअए आकि आन। सोचिते रहथि आकि पिताजीकेँ अबैत देखलनि। पिताकेँ देखिते उठि कऽ कुरुड़ करैले गेला। रमाकान्तपर नजरि पड़िते सभ बचिया ओसारपरसँ उठि गोर लागए लगलनि। आगू बढ़ि रमाकान्त लोटामे दूध आ पथियामे तरकारी देखलखिन। तरकारी देखि बजला-

''बच्चा, एते किए अनलह? अच्छा आनिए लेलह, तँ आँगनमे रखि आबह।''

सभ बचिया अपन-अपन पथिया-लोटा लऽ जा कऽ आंगनमे रखि आएल।

महेन्द्रक अबैक जानकारी गाममे सभकेँ भऽ गेलनि। एका-एकी लोक आबि-आबि अपन-अपन रोगक इलाज करबए चाहलक। मुदा महेन्द्र तँ निआरि कऽ नै आएल छला तँए ने जाँच करैक कोनो यंत्र अनने रहथि आ ने दबाइ। मुदा तैयो बौएलाल आ सुमित्राकेँ बजा अनैले जुगेसरकेँ कहलखिन। जुगेसर बौएलालकेँ बजबए गेल। जेते जाँच-पड़ताल करैक यंत्र, चीड़-फाड़ करैक औजार बौएलाल आ सुमित्राकेँ कीनि देने रहथिन ओ सभ सामान नेने दुनू गोटे पहुँचल। बौएलाल महेन्द्र लग बैसल आ सुमित्रा सुजाताक संग दरबज्जाक पाछूक ओसारपर

बैसलि। जनिजाति सुजाता लग जाँच करबैले जाए लगली आ पुरुख महेन्द्र लग। चारिए-पाँच गोटेकेँ महेन्द्र जाँच केलनि आकि चारि-पाँचटा रोगी खाटपर टाँगल अबैत देखलखिन। ओ सभ दोसर गामक छेलै। खाट देखि महेन्द्रकेँ भेलनि जे भरिसक हैजा-तैजा भऽ गेलै। ओसारपर सँ उठि महेन्द्रो आ बौएलालो निच्चाँमे ठाढ़ भऽ गेला। खाटोबला आबि गेल। सभ कुहरैत रहए। केकरो कपार फुटल तँ केकरो डेन टुटल। केकरो मारिक चोटसँ देह फुलल। अपना लग कोनो दबाइ महेन्द्रकेँ नै रहनि। हाँइ-हाँइ महेन्द्र बौएलालकेँ ड्रेसिंग-पलस्तरक सभ समान आ दबाइक पुरजी बना, बजारसँ जल्दी अनैले कहलखिन। साइकिलसँ बौएलाल खूब रेसमे विदा भेल।

रमाकान्त रोगी लग आबि, एकटा खाट उठौनिहारकेँ पुछलखिन-

"केना कपार फुटलै?"

डरसँ कँपैत ओ कहलकनि-

"मारिसँ कपार फुटलै।"

सुनिते रमाकान्त महेन्द्रकेँ कहलखिन-

"बौआ, सबहक इलाज नीक जकाँ कऽ दहुन।"

कहि ओसारपर बिछौल बिछानपर बैस, खाट उठौनिहार सभकेँ शोर पाड़लखिन। सभ कियो लगमे आबि बैसल। पुछलखिन-

"मारि कखनि भेलह?"

"खाइ-पीबै रातिमे।"

"तब तँ खेनौं-पीनौं नै हेबह?"

"नै।"

भुखल बूझि रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन-

"पहिने सभकेँ खुआबह।"

पनरह-बीस गोटेक जलखै तँ घरमे छेलनि नै। जुगेसर सुमित्राकेँ शोर पाड़ि कहलक-

"बुच्ची, काकी तँ बुढ़े छथि, डाक्टर साहिबा -सुजाता- अनभुआरे छथि। झब दे बड़का वर्तन चढ़ा कऽ खिचड़ी बना। वेचारा सभ रतुके भुखल अछि। हम सभ समान जोड़िया दइ छियौ। तोरो सभ किछु बूझल नै छौ।"

जहिना जुगेसर सुमित्राकेँ कहलक तहिना सुमित्रो भानसमे जुटि गेल। सुजाता सेहो लगि गेली।

जहिना बौएलाल निछोह साइकिल हाँकि बजार गेल तहिना लगले सभ समान कीनि आबिओ गेल। बौएलालकेँ अबिते महेन्द्रो आ बौएलालो सभ रोगीकेँ दरदक सुइया देलखिन। सूइ पड़िते कनीए कालक उपरान्त, सभ कुहरनाइ बन्न केलक। खिच्चड़ि-तरकारी बना सुजातो आ सुमित्रो रोगी लग एली। मन शान्त होइते, सबहक खून लगलाहा कपड़ा बदलि, खिच्चड़ि खुआ इलाज शुरू भेल। तीन गोटेकेँ कपार फुटल रहै आ दू गोटेकेँ डेन टुटल रहै। सुजाता आ सुमित्रा दुनू गोटेक पलास्टर करए लगली। महेन्द्र कपारमे स्टीच करैत रहथि। बौएलाल दौग-बड़हामे लागल रहए। कखनो किछु अनैत तँ कखनो किछु।

दू घंटा पछाति सभ चैन भेल।

रमाकान्त पुछलखिन-

"मारि किए भेलह?"

नोर पोछैत जोखन कहए लगलनि-

"मकशूदनक बेटी सितिया भाँटा बेचए हाट गेल रहै। सतरह-अठारह बर्खक उमेर हेतै। नमगर कद। दोहरा देह। चाकर मुँह। गोल आँखि ओकर छै। परुँके साल दुरागमन भेल छेलै। ओना हाट ओकर माए करै छै मुदा पान-सात दिनसँ ओ दुखित अछि। डेढ़ कट्ठा खेतमे भाँटा केने अछि। खूब सहजोर फड़लो छै। भाँटाकेँ जुआइ दुआरे सितिया छाँटि-छाँटि कऽ नम्हरका भाँटा तोड़ि लेलक। एक छिट्टा भेलै। भँट्टोकेँ बेचनाइ आ माएले दबाइओ कीनिनाइ जरूरी छेलै। दबाइक पुरजी साड़ीक खूटमे बान्हि लेलक जे घुमै कालमे दबाइ किनने आएब। हाटमे भँट्टा बेचि दोकानमे दबाइ कीनि कऽ असगरे विदा भेल। गोसाँइ डुमि

गेलै। खूब अन्हार तँ नै मुदा झलफल भऽ गेल छेलै। धीरे-धीरे रस्तो चलनिहार पतराए लगल छेलै। हाट गेनिहार तँ साफे बन्न भऽ गेल छेलै। मगर हाटसँ घुमनिहार गोटे-गोटे रहबे करए। पाँतरमे जखनि सितिया आएल तँ पाछूसँ ललबा आ गुलेतिया सेहो साइकिलसँ अबै छल। गुलेतिया ललबाक नोकर। ललबा बापक असगर बेटा। बीस-पच्चीस बीघा खेत छै। बच्चेसँ ललबा बहसल तँ अछिए। दुनू गोरे दारू पीने रहए। अन्ट-सन्ट बजैत घर दिस अबैत रहए। जखनि दुनू गोटे सितियाक लगमे आएल तँ ललबा बाजल, 'गुलेती, शिकार फँसलौ। रउ।'

ललबाक बात सुनियो कऽ सितिया किछु नै बाजलि। मुदा मनमे आगि सुनगए लगलै। आरो डेग नम्हर केलक। आगू बढ़ि ललबा साइकिलसँ उतरि, रस्ताकँ घेरि साइकिल ठाढ़ कऽ देलकै। साइकिल ठाढ़ कए जेबीसँ सिगरेट आ सलाइ निकालि, लगा पीबए लगल। सितियाक मनमे शंका भेलै मुदा डराएल नै। साइकिल लग आबि रस्ताक बगल देने आगू टपि गेल। आगूमे ललबो आ गुलेतीओ ठाढ़ भऽ सिगरेटो पीबैत आ चढ़ा-उतरीक गप्पो-सप करैत फेर आगू बढ़ल। मुँहमे सिगरेट रखि ललबा सए रूपैआक नोट ऊपरका जेबीसँ निकालि सितिया दिस बढ़ौलक। रूपैआ देखि सितियाक देह आगिसँ लह-लह करए लागल। मुदा ने किछु बाजल आ ने रूकल। लफरल आगू बढ़ैत रहल। सितियाकँ आगू बढ़ैत देखि ललबो पाछूसँ हाथमे रूपैआ नेने बढ़ल। दुनू गोटेकँ पछुअबैत देखि सितिया ठाढ़ भऽ गेल। माथ परहक छिट्टाकँ दहिना हाथे आरो कसिया कऽ पकड़ि सोचलक जे छिट्टेसँ दुनूकँ चानिपर मारब। तामसे भीतरे-भीतरे जरिते छल सितिया। ललबा दहिना हाथे नोट सितिया दिस बढ़ौलक। लगमे ललबाकँ देखि, मौका पाबि सितिया तेना कऽ रूपैआपर थूक फेकलक जे रूपैआपर कम्मे मुदा ललबाक मुँहपर बेसी पड़लै। मुँहपर थूक पड़िते ललबा सितियाक बाँहि पकड़ि घिचए चाहलक। पहिनेसँ सितिया छिट्टाकँ पकड़ि अजमेने रहए। धाँइ-धाँइ दू छिट्टा ललबाकँ लगा देलक। दुनू गोटे दुनू बाँहि पकड़ि सितियाकँ घिचलक। छिट्टा नेनहि सितिया रस्ताक निच्चाँ खेतमे खसि पड़ल। खेतमे खसिते हिम्मत कऽ उठि दहिना तरहत्थीक मुक्का बान्हि, मुक्को आ

दहिना पएरो अनधुन चलबए लागलि। मारिक डरसँ गुलेतिया कात भऽ गेल। मुदा ललबा नै मानलक। ओहो अनधुन मुक्का चलबए लगल। गुलेतियाकेँ कातमे देखि सितियोक जोश बढ़लै। ललबा दारू पीनहि रहए, तिलमिला कऽ खसल। जहाँ ललबा खसल आकि सितिया एँड़े-एँड़ मारए लागलि। तही-बीच हाटसँ तरकारी बेचिनिहारिक जेर अबैत रहै। तरकारी बेचिनिहारिक चाल-चुल पाबि सितियाक जोश आरो बढ़ि गेलै। एक तँ समरथाइक शक्ति सितियाक देहमे, दोसर इज्जत बँचबैक प्रश्न, बाघ जकाँ सितिया मारि कऽ ललबाकेँ बेहोश कऽ देलक। तरकारीओ बेचिनिहारि सभ लगमे आबि गेली। सितियाक काली रूप देखि हसीना पुछलकै, 'बहिन, की भेलौ?'

सितिया बाजलि, 'अखनि किछु ने पूछ। ऐ छुतहरकेँ खून पीब लेबै।'

बजबो करैत आ अनधुन एँड़ो देहपर बरिसबै छल। चारि गोरे सितियाकेँ पकड़ि कात करए चाहलनि। मुदा चारूकेँ झमारि सितिया पुनः आबि कऽ दस लात ललबाकेँ फेर मारलक। फेर चारू गोरे हसीना, जलेखा, रेहना आ खातून घेरि सितियाकेँ पँजिया कऽ पकड़ि घिचने-तिरने विदा भेली। अबैत-अबैत जखनि गामक कात आएल कि सितिया फेर चारू गोरेकेँ झमारि, अपन डेन छोड़ा फेर ललबाकेँ मारए दौगल। मुदा रेहना आ खातून दौग कऽ सितियाकेँ आगूसँ घेरलक। हसीना आ जलेखा सेहो दौग कऽ आबि पकड़लक। सितियाक मन क्रोधसँ उफनैत रहै। मनमे होइ जे ललबाक खून पीने बिना नै छोड़बै। चाहे फाँसीपर किए ने चढ़ऽ पड़ए। चारू गोटे सितियाकेँ पकड़ने घरपर पहुँचल। सौंसे गाम घटनाक समाचार बिहाड़ि जकाँ पसरि गेल। गाम डोल-माल करए लगल। तनावक वातावरण बनए लगलै। राति भारी हुअ लगलै। गामक बुढ़बा चोट्टासँ लऽ कऽ नवका चोट्टा धरिक चलती बढ़ि गेलै।''

तैबीच चारि गोटे ललबाकेँ खाटपर टाँगि सेहो अनलक। ललबाक बेहोशी तँ टूटि गेलै मुदा कुहरनी धेनहि रहै। ललबाक पितियौत भाए डाक्टर बजा ललबाक इलाज करबए लगल। स्लाइन लगा डाक्टर बगलमे बैसि पानिक गति देखैत रहए। ललबाक पितियौत भाए गाममे लाठी संगोर करए लगल। जेते गामक मुँहगर-कन्हगर लोक सभ छल से सभ

ललबाक पक्ष लेलक। ललबाक बाप बाजल-

"जखनि इज्जत चलिए गेल तँ समपैते रखि कऽ की करब।"

'दुर्गा-महरानी की जय' कहि पनरह-बीसटा गामक हुड़दंगहा, लाठी लऽ सितिया ऐठाम विदा भेल। रस्तोमे सभ जय-जयकार करैत रहए।

मकशूदनक टोल मात्र बारह परिवारक। गरीब घरक टोल तँए समांगो सभ मरदुआरे। मुदा तैयो जेते पुरुख रहै, लाठी लए-लए गोलिया कऽ बैसि विचारलक जे इज्जतक खातिर मरि जेनाइ धरम छी। तँए जे हेतै से हेतै मुदा पाछू नै हटब। दोसर दिस टोलक सभ जनिजाति सेहो तैयार होइत निर्णए केलक, जे जाधरि पुरुख ठाढ़ रहत ताधरि अपना सभ कातमे रहब। मगर पुरुखकेँ खसिते अपना सभ लाठी उठाएब। एक तँ सितियाक देहमे आगि लगले रहै आरो धधकि गेलै। बाजलि, 'जेते जुआन बेटी छँह आ जुआन पुतोहु, सभ अपन-अपन साड़ीकेँ कसि कऽ बान्हि ले। माथमे साड़ीएक नम्हर मुरेठा कसि कऽ बान्हि ले, जइसँ कपार नै फुटौ। बुढ़िया सभकेँ छोड़ि देही। मरुआ बीआ पटबैबला जे पटै घरमे छौ से निकालि कऽ एकठाम करि कऽ राख। आ देखैत रही जे की सभ होइ छै। जहिना सभ बहिन मिलि मरब तहिना संगे संगे सभ बहिन जनमो लेब।"

टोलक जेते छोट बच्चा रहै, सभकेँ घरक बूढ़-बुढ़ानुस लए-लए टोलसँ हटि गाछीमे चलि गेल। दोसर हँसेड़ी टोलक लग आबि जय-जयकार केलक। जय-जयकार सुनि सितियाकेँ होइ जे असगरे सभसँ आगू जा हँसेड़ीकेँ रोकी। मुदा लड़ाइमे अनुशासन आ निर्णएक महत बढ़ि जाइ छै। तँए सितिया आगू नै बढ़ि ठाढ़े रहल। टोलक लोक, अपना तागत भरि हँसेड़ीकेँ रोकलक। अनधुन लाठी दुनू दिससँ चललै। मुदा पछड़ि गेल। पाँच गोटे घाइल भेल। हँसेड़ी घुमल नै धन आ इज्जत लूटैक खियालसँ आगू बढ़ल। अपन समांगकेँ खसल आ हँसेड़ीकेँ आगू बढ़ैत देखि मुरेठा बन्हने आगू-आगू सितिय आ तइ पाछू टोलक सभ स्त्रीगण, पटै लऽ हँसेड़ीकेँ रोकलनि। की बिजलोका चमकै छै तहिना गामक बेटी अपन चमकी देखौलनि। वाह रे मिथिलाक धी। मिथिला सिरिफ कर्मभूमिए आ धर्मभूमिए नै, वीरभूमि सेहो छी। चारि आदमीक कपार असगरे सितिया ढाहलक। चारू खसलै। खूनक रेत चललै।

हँसेड़ीमे हूड़ भेलै। सभ पाछू मुहेँ पड़ाएल। ईहो सभ भागल हँसेड़ीकेँ रबाड़लनि। मुदा किछु दूर रबाड़ि घूमि गेली।

अपन सभ समांगकेँ उठा-उठा सभ अनलक। मुदा दोसर दिसक लोककेँ अपन समांग अनैक साहसे नै होइ छेलै। होइ जे कहीं हमहूँ सभ अनैले जाइ आ हमरो सभकेँ ओहिना हुअए। तखनि की हएत। बड़ी काल पछाति चोरा कऽ अपना समांग सभकेँ ओहो सभ लऽ गेल। गाममे दुइएटा डाक्टर। सेहो डिग्रीधारी नै, गमैया प्रेक्टिश्नर। सेहो दुनू ललबे ऐठाम रहथि। रातिमे केतए जाएब, कोनो डाक्टर भेटता आकि नै भेटता, संगे संग दोहरा कऽ आक्रमणक डर सेहो रहए। सभ तत-मतमे पड़ल रही। मुदा जेहो सभ घाइल छल ओकरो मुँह मलिन नै छेलै। मनमे खुशी होइत रहै। तँए दर्दकेँ अंगेजने सभ रहए। इनहोर पानि करि कऽ सभकेँ स्त्रीगण सभ ससारए लगली, कपारक फाटल जगहमे सिन्नुर दए-दए खून बन्न केलक। भरि राति कियो सूतल नै। जहाँ-तहाँ अहींक चरचा बेसीकाल चलैत रहैए। डाक्टर महेन्द्रकेँ गाम अबैक जानकारी सेहो सबहक जानकारीमे छेलए तँए एलौं।

जोखनक बात सुनि रमाकान्त बमकि उठला। ठाढ़ भऽ जोर-जोरसँ कहए लगलखिन-

> "जदी कियो अपन इज्जत-आबरू बँचबैले हमरा कहत तँ हम अपन सभ सम्पति ओइ पाछू फुकि देब। मुदा छोड़बै नै। बौआ, जेते तोरा हुन्नर छह तइमे कोताही नै करिहक। खेनाइ-पीनाइ, दबाइ-दारू सभ कथुक मदति कऽ दहक। फेर ऐ धरतीपर जनम लेब। ई कर्मभूमि छिऐ। मनुख किछु करैले धरतीपर अबैए। सिरिफ अपनेटा नै आनो जे कर्मनिष्ट अछि, ओकरो जहाँ धरि भऽ सकत मदति करबै। जोखन, जे भऽ गेल से भऽ गेल मुदा सुनि लैह जहिया-कहियो कोनो भीड़ पड़ह, हमरो एक बेर खोज करिहऽ। जाधरि घटमे पराण अछि ताधरि जरूर मदति करबह।"

बेर टगैत चारिटा बचिया अपना आदमी सभ लेल खाएक लऽ कऽ पहुँचली। एक कठौत भात बड़का डोलमे दालि आ छोटका डोलमे तरकारी रहै। खाइले केराक पात आ दूटा लोटा सेहो अनने छेली।

चारू बचियाकेँ देखि रमाकान्त पुछलखिन-

"बुच्ची, खाएक किए अनलह?"

रमाकान्तक बात सुनि सितिया कहलकनि-

"बाबा, हमरा सभकेँ नै बूझल छेलए, तँए अनलौं।"

"अच्छा, अनलह तँ सभकेँ पूछि लहुन जे खाएब आकि घुरौने जाएब।"

सितियाक संग रमाकान्त गप-सप्प करिते रहथि आकि जोखन बाजल-

"कक्का, यएह सभ बचिया मारि कऽ ओइ पाटीकेँ भगौलक।"

अकचकाइत रमाकान्त बजला-

"आँ-आँइ, यएह सभ छी। वाह-वाह। तोरे सभ सन-सन बेटी ऐ धरतीक मान रखि सकैए।"

बिहाड़ि जकाँ जोखनक बात, रमाकान्तक दरबज्जा आँगनसँ लऽ कऽ गाम धरि पसरि गेलै जे सितिया सभ मरदक हँसेड़ीकेँ अनधुन मारबो केलकै, कपारो फोड़लक आ गामक सीमा धरि खेहारबो केलकै। ई समाचार सुनि गामक स्त्रीगण मरद सभ उनटि कऽ ओइ बचिया सभकेँ देखैले आबए लगली। अजीब दृश्य बनि गेल। श्यामा आँगनसँ सुमित्रा दिया समाद पठौलनि जे कनी ओइ बचिया सभकेँ अँगना पठा दियौ जे हमहूँ सभ देखब। दरबज्जापर आबि सुमित्रा रमाकान्तकेँ कहलकनि। अँगनाक समाद सुनि रमाकान्त चारू बचियाकेँ कहलखिन-

"बेटी, कनी आँगन जाइ जाह।"

चारू बचियाकेँ संग केने सुमित्रा आँगन गेली। ओसारपर ओछाइन ओछा श्यामो आ सुजातो बैसल छेली। आगू-आगू सुमित्रा आ पाछू-पाछू चारू बचिओ छलि। आँगन जाए चारू बचिया श्यामा आ डाक्टर सुजाताकेँ गोर लगलकनि। एकाएकी गामक स्त्रीगण, गामक बेटी अँगने जाए-जाए सितिया सभकेँ देखए लगली। अपने लगमे चारू बचियाकेँ

श्यामा बैसौने रहथि। सुजाता निङहारि-निङहारि चारूकेँ ऊपरसँ लऽ कऽ निच्चाँ धरि, देखै छेली, अजीब शक्ति चारूक चेहरामे बूझि पड़लनि। चारू बचिओ आँखि उठा-उठा कखनो श्यामापर तँ कखनो गामक स्त्रीगण सभपर दइ छेली। सबहक मनमे खुशी रहितो, मुँहसँ हँसी नै निकलै छेलनि। जेना खुशीक पाछू अदम्य उत्साह, अदम्य साहस आ जोश सबहक चेहरापर नचैत रहनि। चारूक विशेष आकर्षण सभकेँ अपना दिस घिचै छल। जेहो स्त्रीगण कनी हटि कऽ ठाढ़ भऽ देखै छेली, ओहो सहटि-सहटि सितियाक लगमे आबए चाहै छेली। श्यामा सुमित्राकेँ कहलखिन-

> ''सुमित्रा, एहेन लोककेँ आँगनमे कहिआ देखबीही। तँए बिना किछु खेने-पीने केना जाए देबै।''

श्यामाक बात सुनि सुजाता उठि कऽ अपन आनल मद्रासी भुजियाक डिब्बा घरसँ उठेने एली। भुजियाक डिब्बा देखि सितिया बाजलि-

> ''बाबी, लगले खा कऽ विदा भेल छेलौं। एको-रत्ती खाइक छुधा नै अछि।''

तैबीच रमाकान्त चारू गोटेकेँ बजबैले जुगेसरकेँ अँगना पठौलखिन। जुगेसर अँगना आबि सभकेँ कहलक। उठि कऽ चारू गोटे श्यामाकेँ गोर लगलनि। असिरवाद दैत श्यामा कहलखिन-

> ''भगवान हमरो औरदा तोरे सभकेँ देथुन जे हँसैत-खेलैत जिनगी अहिना बिताबह।''

चारू गोटेकेँ अँगनासँ निकलिते सभ विदा भेल।

चारिक अमल। रौदक गरमीओ कमए लगल। महेन्द्र जोखनकेँ कहलखिन-

> ''ऐठाम रोगी सभकेँ रखैक जरूरति नै अछि। घरेपर साँझ-भिनसर सभ दिन बौएलाल जाए-जाए कऽ सूइया दऽ-दऽ औत। गोटी सेहो लगातार चलबैत रहब। पनरह-बीस दिनमे पूरा ठीक भऽ जाएत।''

पएरे सभ विदा भेल।

साँझू पहर, रमाकान्त आ जुगेसर दरबज्जापर बैसि मद्रासेक गप-सप्प शुरू केलनि। मुस्की दैत जुगेसर कहलकनि-

"कक्का, एक बेर आरो मद्रास चलू।"

नाक मारैत रमाकान्त कहलखिन-

"धुर बूड़िबक। गाड़ीमे लोक मरि जाइए। ऐठाम केहेन निचेनसँ रहै छी। ओम्हर ने गाड़ी बसमे शान्ती आ ने रस्ता-पेराक ठेकान। सड़क धऽ कऽ चलू। तहूमे सदिखन लोकेक धक्का लगैत रहत। केहेन सुन्दर अपना सबहक गाम अछि जे रस्ताक कोन बात जे आड़िए-धुरे, खेते-पथारे जेतए मन हुअए तेतए जाउ। ने गाड़ी बसक धक्काक डर आ ने पएरमे काँटी शीशा गड़ैक कोनो डर। जेकरासँ मन हुअए तेकरासँ गप करू। कुशल-समाचार पूछि लिऔ। ओइठाम तँ जेना मुँहमे बकारे नै रहए तहिना बौक भेल रहै छेलौं।"

व्यंग्य करैत जुगेसर कहलकनि-

"केहेन ठंढ़ा घरमे रहै छेलौं। ने नहाएले केतौ जाइ पड़ै छेलए आ ने पर-पैखानाले।"

रमाकान्त-

"धुत् बूड़ि। ओइठाँ जौं दुइओ मास रहितौं तँ कोढ़ि भऽ जइतौं। उठैओ-बैसैओमे आसकैते लगैत रहए। सच पुछँह तँ एते दिन रहलौं मुदा ने कहियो भरि मन पानि पीलौं आ ने पैखाना भेल। सभ दिन जेना कब्जियते बूझि पड़ैत रहए। जखने पानि मुँह लग लऽ जाइ आकि मन भटकि जाए।"

फेर मुस्की दैत जुगेसर कहलकनि-

"अंगुरक रस पीबैमे केहेन लगैत रहए?"

अंगुरक रस सुनि थोड़े असथिर होइत रमाकान्त कहलखिन-

"लोक कहै छै जे अंगुरमे बड़ तागति छै मुदा अपना सबहक जे केरा, आम, बेल लताम इत्यादि अछि, ओते तागति अंगुरमे केतएसँ औत। अंगुरेक शराब बनैए मुदा अपना ऐठामक भाँगक पड़तर करतै? अंग्रेजीआ शराब सनसना कऽ मगजपर चढ़िओ जाइ छै आ लगले उतरिओ जाइ छै। मुदा अपन जे भाँग अछि ओ रइसी निशाँ छी। ने अपराध करैले सनकी चढ़ौत आ ने एको मिसिआ चिन्ता आबए दइ दै।"

रमाकान्त आ जुगेसरक गप-सप्प सुजातो अढ़सँ सुनैत रहथि। दुनू गोटेक गप्पो सुनैत आ मोने-मन विचारबो करै छेली। तखने हीरानन्द आ शशिशेखर सेहो टहलि-बूलि कऽ एला। दुनू गोटेकेँ बैसिते रमाकान्त हीरानन्दकेँ कहलखिन-

"मास्सैब, खेतक झंझटि तँ सम्पन्न भेल। बड़ बढ़ियाँ भेल। एकटा बात कहू जे जेते लोक गाममे अछि, सभ अपन गाम कहैए किने?"

हीरानन्द-

"हँ। ई तँ कोनो नव नै अछि। अदौसँ कहैत आएल अछि आ आगूओ कहैत रहत।"

"जखनि गाम सबहक छिऐ तँ गामक सभ किछु ने सबहक भेलै?"

"तइमे थोड़े गड़बड़ अछि। गड़बड़ ई अछि जे अखनि धरि जे बनैत-बनैत समाज आ गाम अछि ओ टुटैत टुटैत खण्ड-पखण्ड भऽ गेल अछि। तँए एक-एककेँ जोड़ि कऽ समाज बनबए पड़त जे लगले नै भऽ सकैए।"

हीरानन्द बजिते रहथि आकि उत्तर दिससँ सुबुध आ दक्षिण दिससँ महेन्द्र आ बौएलाल सेहो आबि गेला। रमाकान्त बौएलालकेँ कहलखिन-

"बौएलाल, आब तँ तूँ डाक्टर बनि गेलेँ मुदा तैयो ऐठाम, सभसँ बच्चा तोँही छँह। जो, चाह बनौने आ।"

डाक्टरक नाओं सुनि महेन्द्रो आ हीरानन्दो मोने-मन खुश भेला। किएक तँ दुनू गोटेक पढ़ौल बौएलाल अछि। मुस्कीआइत बौएलाल चाह बनबए विदा भेल। रमाकान्त सुबुधकेँ कहलखिन-

"सुबुध, जमीनक ठौर तँ लगि गेल खाली पोखरि बँचल अछि। शशि नौजवानो छथि। पढ़लो-लिखल छथि आ लूरिओ छन्हि। पोखरिमे माँछ पोसैत।"

सुबुध-

"बड़ सुन्दर विचार अपनेक अछि काका। हमहूँ यएह सोचै छेलौं जे गाममे तँ दुइएटा चीज माटि आ पानि अछि। तँए दुनूकेँ एहेन ढंगसँ उपयोग कएल जाए जे जहिना एक गोटेकेँ पाँचटा बेटा भेने पाँच गुना परिवार बढ़ि जाइ छै। तहिना खेतो आ पाइनोक होइ। ढंगसँ मेहनति आ नव तरीका अपनौल जाए। जइसँ मनुखे जकाँ ओहो पाँचो गुनाक रफ्तारसँ किएक ने आगू बढ़त। जौं एहेन रफ्तार पकड़ि लइ तँ गामकेँ बढ़ैमे केते देरी लगत। बीस बीघासँ ऊपरे गाममे पानि अछि जे बैशाखो-जेठमे नै सुखैए। अगर जौं महाग-अकालो पड़ि जाएत तैयो बोरिंगक सहारासँ उपजि सकैए। अखनि धरि सभ पोखरि ओहिना पड़ल अछि। सौंसे पोखरिकेँ केचली-घास छाड़ने अछि। ने नहाए जोकर अछि आ ने माछ-मखान करै जोकर। जे इलाका माछ-मखानक छी, ओइ इलाकाक लोककेँ माछ-मखान नै भेटै, केते लाजक बात छी। ऐ लाजक कारण की हम सभ नै छिऐ? जरूर छिऐ। भलहिं हरसी-दीरघी कए अपनाकेँ निर्दोष साबित कऽ ली मुदा...। अखनि देखै छी जे किछु सुभ्यस्त परिवारकेँ तँ माछे-मखानक कोन बात जे अहूसँ नीक-नीक वस्तु भेटैए। मुदा विशाल समूहक गति की छै? खाली जितिया पावनिमे माछसँ भेँट होइ छै आ कोजगरामे दूटा मखान देखैए। तँए मनुखकेँ खुशहाल बनैले वस्तुक परियाप्तता जरूरी अछि। जौं वस्तुक कमी रहत तँ खुशहाली औत केना?"

सुबुध बजिते रहथि आकि बौएलाल चाह नेने आएल। चाह देखिते

कियो कुरुड़ करए उठला तँ कियो तमाकुल थुकरैले। जुगेसर चाह बँटए लगल। एक घोंट चाह पीब हीरानन्द महेन्द्रकेँ पुछलखिन-

"डाक्टर साहैब, केते दिनक छुट्टीमे आएल छी?"

हीरानन्दक प्रश्न सुनि महेन्द्र असमंजसमे पड़ि गेला। मोने-मन सोचए लगला जे केना चिट्ठीक चरचा करब। चिट्ठीक बात तँ सोलहन्नी झूठ निकलल। जौं बेसी दिनक छुट्टीक चरचा करब तँ सेहो झूठ हएत। औगताइमे आएल छी। की कहियनि की नै कहियनि। विचित्र स्थितिमे महेन्द्र पड़ि गेला। मुदा बिच्चेमे जुगेसर टपकल-

"एह मास्सैब! डाकडर साहैब तँ आला भऽ गेला। कोनो चीजक कमी नै छन्हि। जखनि अपना गाड़ीमे चढ़ा कऽ बुलबै छला तँ बूझि पड़ै छल जे इन्द्रासनमे छी।"

हीरानन्दक बात तर पड़ि गेलनि। मोने-मन सोचलनि जे महेन्द्र भरिसक पिता दुआरे गुमकी लधने छथि। सभ कियो चाह पीब-पीब गिलास बौएलालकेँ देलखिन। सभ गिलास लऽ बौएलाल अखारैले कलपर गेल। तैबीच सुबुध महेन्द्रकेँ कहलखिन-

"महेन्द्र भाय, गामक लोककेँ जे देह देखै छिऐ तइसँ की बूझि पड़ैए? बूझि पड़ैए ने जे किछु-ने-किछु रोग सभकेँ पछारनइ छै। तँए सभकेँ जाँचि कऽ इलाज कए दियौ।"

सुबुधक प्रश्न महेन्द्रकेँ जँचलनि। कहलखिन-

"अपनो विचार अछि। चारि-पाँच दिन जँचैमे लगत। सभकेँ जाँचि, जहाँ धरि भऽ सकत तहाँ धरि इलाजो कइए दितिऐ। आइ तँ भरि दिन दोसरे ओझरीमे ओझरा गेलौं मुदा काल्हिसँ ऐमे लगि जाएब।"

शशि पुछलकनि-

"डाक्टर साहैब, बुढ़हा जे अपन सभ खेत बाँटि देलनि तइले अपनेक...?"

शशिशेखरक बात सुनि मुस्कीआइत महेन्द्र कहलखिन-

"दू भाँइ छी दुनू भाँइकेँ डाक्टर बना देलनि। ऐसँ बेसी एक पिताक पुत्रक प्रति की बाँकी रहि जाइए जे किछु कहबनि। खेतक बात अछि, हम थोड़े खेती करए आएब। तखनि तँ जे खेती करैबला छथि जौं हुनका हाथमे गेलनि तँ ऐसँ बेसी उचित की होएत। बाबाक अरजल खेत छियनि, जेकर हकदार तँ वएह छथि। जौं अपन सम्पति लूटाइए देलनि तइसँ हमरा की। वैरागी पुरुषकेँ रागी बनेनाइ पाप छी।"

पुनः शशिशेखर पुछलखिन-

"मद्रासमे केहेन लगैए?"

किछु मन पाड़ैत कनी रूकि कऽ महेन्द्र कहए लगलखिन-

"जहिया डाक्टरीक शिक्षा पेलौं तहिया नीक बूझि मद्रास गेलौं। मुदा अखनि ऐठामक सिनेह हृदैकेँ तेना पकड़ि लेलकहेँ जेना छातीमे लगल तीरसँ चिड़ै छटपटाइए। होइए जे मद्रासक सभ किछु छोड़ि-छाड़ि अहीठाम रही। केतएसँ जिनगीक लीला शुरू कएल जाए, ई गंभीर प्रश्न अछि। ऐ प्रश्नक बीच मन ओझरा गेल अछि। स्पष्ट उत्तर नै भेट रहल अछि। किएक तँ ऐ प्रश्नक उत्तर दृष्टिकोणक मुताबिक भिन्न-भिन्न भऽ जाइए।"

OOO

१३

गामक दुखताहक दुख जाँचि दबाइ देबाक समाचार गाममे पसरि गेल। काल्हि भिनसरसँ सभ टोलक दुखताहकेँ बेरा-बेरी जाँचो होएत आ दबाइओ देल जाएत।

भिनसर होइते ओइ टोलक लोक आबए लगला जइ टोलक पार छेलनि। मरदक जाँच डाक्टर महेन्द्र करथि आ स्त्रीगणक डाक्टर सुजाता। डाक्टर महेन्द्रक मदति लेल बौएलाल आ सुजाता लेल सुमित्रा रहथि।

तीन दिनमे सौंसे गामक रोगीक जाँच भेलनि। दबाइओ भेटलनि। लोकक बीच एहेन खुशी दौग आएल जेना गामसँ बिमारीए पड़ा गेल होइ। सबहक मनक खुशी एक्के रंगक रूप बना नाचए लगल छेली। मनमे एहेन खुशी जे आब ने हमरा देहमे कोनो रोग अछि आ ने मरब। खुशीक नाच एहेन छल जेना रोग देखिए कऽ भागि गेल होइ। मुदा जिनगीमे तँ इएहटा रोग तँ नै अछि, आरो बहुत तरहक छै। मुदा ई तँ मनक बात छल। ई मनक बात छी मुदा वास्तविक बात की अछि? से तँ लोकेमे देखए पड़त।

सभ दिन भलेसराकेँ देखै छेलिऐ जे दुखताहे अछि जइसँ काज काज-उद्यम छोड़ि देने छल मुदा आइ बड़का छिट्टामे छाउर गोबर नेने खेत फेकैले जाइ छल। रस्तामे सोनमा पुछलकै तँ कहलकै जे आब देहमे कोनो दुख नै अछि। जाइ छी छाउरो फेक लेब आ गरमा धानो काटि कऽ नेने आएब। तहिना तेतरो पटैमे गाँथि, दूटा धानक बोझ कन्हापर उठेने अबैत रहए।

सोनमाक मनमे नाचए लगलै जे एना केना भेलै? देखै छिऐ जे लहेरियासराय असपतालमे छअ-छअ मास रोगीकेँ लोहाबला खाटपर रखि, सुइओ पड़ै छै आ गोलीओ खाइले देल जाइ छै, तैयो मरि जाइए। मुदा ऐ गामक दुखताहक दुख केना एते असानीसँ पड़ा गेलै। अजीब भेलै। ओह! भरिसक दुख केकरा कहै छै से बुझबे ने करै छी। जब अपने बुझबे नै करै छी तब बूझब केना? जौं अपने सोचि बुझए चाहबै आ गलतीए सोचा जाए तखनि तँ गलतीए बुझबै। गलती बूझब आ नै बूझब,

दुनू एक्के रंग। बिनु बुझलो काज लोक करए लगैए आ गलतीओ काज करैए। भलहिं दुनूक फल अधले होइ मुदा करै तँ अछि। तब की करब? जेकरा बुझै छिऐ जे फल्लाँ बुझनिहार अछि जौं ओकरो नै बूझल होइ आ झुठे अन्ट-सन्ट कहि दिअए। तेतबे नै जे बुझिनिहारो अछि आ ओकरा पुछिऐ जौं ओ गलतीए कहि दिअए, तैयो तँ ओहिना रहि जाएब। मुदा तोहूमे एकटा बात अछि जे, जे ओ कहै आ हम करी आ तेकर फल गल्ती होइ तँ दोखी के हएत? तब की करब? आब उमेरो ने अछि जे स्कूलोमे जा कऽ पढ़ब। धिया-पुता सभ स्कूलमे पढ़ैए। मुदा जखनि स्कूल जाइबला रही तखनि किए ने पढ़लौं। पढ़लौं केना नै, स्कूलमे नाओं लिखौने रही। पाँच किलास तक पढ़बो केलौं। तँ छोड़ि किए देलिऐ? छोड़लिऐ की मास्टर मारि कऽ छोड़ा देलक। मास्टर मारि कऽ किए छोड़ा देलक? जखनि छअ किलासमे गेलौं आ अंग्रेजी मास्टर आबि कऽ पढ़बए जे बी.यू.टी.- बट। पी.यू.टी.- पुट। तहीपर ने कहने रहिऐ जे अहाँ गलती पढ़बै छिऐ। कोनो गलती कहने रहिऐ। जब गलती नै कहने रहिऐ तब ओ मारलक किए। नै पढ़बैक मन रहै तँ ओहिना कहितए जे तोरा नै पढ़ेबौ। स्कूलसँ चलि जो। मारलक किए। जौं मारबो केलक तँ हमरा मनकँ तँ बुझा दइतए। हमर मन मानि लैत। मन मानि लैत, भऽ गेलै। से तँ नै केलक। तँए ने हम मुरुख रहि गेलौं। नै तँ हमर की हाथ-पएर कोनो पातर-छितर अछि जे दरोगा नै बनलौं। हमर जे दरोगाक नोकरी गेल से उ मास्टर हमरा देत। जे मारि कऽ स्कूल छोड़ा देलक। धिया-पुतामे सएह भेल, चेतनमे तहिना देखै छी। आब केना जीब? भरिसक हमरो ने तँ बतहा दुख पकड़ि लेलकहें। केकरासँ पुछबै, के कहत, सभकँ तँ सएह देखै छिऐ। की हम भरि जिनगी हरे जोतैत रहब, घोड़ापर चढ़ि कऽ शिकार खेलैले कहिया जाएब? दुनू हाथ माथपर लऽ सोनमा गाछक निच्चाँमे बैसल गुनधुनमे पड़ल सोचैत रहए, जहिना आमोक गाछ रोपल जाइ छै तहिना तँ खएरो-बगुरक रोपल जाइ छै। मुदा आममे मीठहा फल फड़ै छै, खएर-बगुरमे काँट होइ छै। रोपैक इलम तँ एक्के होइ छै। ओना अनेरुओ होइ छै। आमोक गाछ अनेरुओ होइ छै आ खाइरो-बगुरक।

सातो दिनक छुट्टीमे महेन्द्र गाम आएल छला। आठ दिन पहिने छुट्टी

बीति गेलनि। मद्रास अबै जाइक रस्ता सेहो पाँच दिनक अछि। छुट्टी बढ़बए पड़तनि। काल्हि भोरका गाड़ीसँ चलि जेता, ई बात सुबुधोकेँ बूझल छेलनि। तँए सुबुधक मनमे एलनि जे महेन्द्र बच्चेक संगी छी मुदा भरि मन गप एक्को दिन नै केलौं। काल्हि भोरमे चलिए जाएत। तँए आइए भरि समए अछि। ई सोचि सुबुध अपन सभ काज छोड़ि महेन्द्रसँ गप करैले एला।

दरबज्जापर बैसि महेन्द्र पिताकेँ कहैत रहथिन-

''बाबू, गामक जेते रोगीकेँ जँचलौं ओइमे एक्को गोटे पैघ रोग, जेना टी. वी., कैंसर, एड्स इत्यादिसँ ग्रसित नै अछि। तँए आश्चर्य लगैए जे बिमारी शहर-बजारमे धरहल्लेसँ होइए। ओइ रोगक नामो-निशान गाममे नै अछि। जे खुशीक बात छी।''

महेन्द्रक रिपोर्ट सुबुधो सुनलनि। खुशीक बात सुनि रमाकान्त पुछलखिन-

''तखनि जे एते लोक बिमार अछि, ओकरा कोन रोग छै?''

मुस्की दैत महेन्द्र कहलखिन-

''साधारण रोग। जे बिना दबाइओ-दारूसँ ठीक भऽ सकै छै। अगर ओकर खान-पान सुधरि जाए तँ ई सभ रोग लोककेँ नै हेतै। अदहासँ बेसी रोगी ओहेन अछि जेकरा कोनो रोग नै, सिरिफ शंका छै। मुदा जौं ओकरा दुइओ-चारिटा गोली नै दितिऐ तँ मन नै मानितै। तँए पुरजो बना देलिऐ, आलासँ छातीओ जाँचि लेलिऐ आ दू-चारिटा गोलीओ दऽ देलिऐ।

महेन्द्रक बात सुनि रमाकान्तो आ सुबुधो मोने-मन हँसए लगला। हँसी रोकि सुबुध महेन्द्रकेँ पुछलखिन-

''महेन्द्र भाय, काल्हि तँ तूँ चलि जेबह, फेर कहिया भेँट हेबह कहिया नै। तँए तोरेसँ गप-सप्प करैले अपन सभ काज छोड़ि एलौं। जिनगीक तँ ढेरो गप होइत मुदा तौं डाक्टर छिअह आ हम शिक्षक छेलौं, जे आब नै छी। मुदा रोगक कारण बुझैक जिज्ञासा तँ जरूर अछि। तँए अखनि रोगेक सम्बन्धमे किछु

बुझए चाहै छी।''

''की?''

''पहिल सबाल बताहेक लैह। जखनि बताह दिस तकै छी तँ बूझि पड़ैए जे जेते मनुख अछि सभ बताह अछि।''

औगता कऽ रमाकान्त बिच्चेमे पूछि देलखिन-

''से केना?''

सुबुध कहलकनि-

''कक्का, जे एक नम्बर प्रशासक छथि, जे एक इलाकासँ लए कऽ देश भरिक शासनमे दक्ष रहै छथि ओ परिवारक शासनमे लटपटा जाइ छथि। तहिना देखै छी जे, जे बड़का-बड़का हिसाबी गणितज्ञ छथि ओ जिनगीक हिसाबमे फेल कऽ जाइ छथि। तहिना देखै छी, जे बड़का-बड़का इंजीनियर छथि ओ परिवारक नक्शा बनबैमे चूकि जाइ छथि। नेताक तँ कोनो बाते नै। किएक तँ जहिना गोटे साल मानसुन अगते उतरि खूब बरिसैए जइसँ बेंगक वृद्धि अधिक भऽ जाइ छै। तहिना ओकरो छै।

मुस्की दैत रमाकान्त कहलखिन-

''हँ, ठीके कहै छहक।''

''तेतबे नै कक्का, कियो ताड़ी-दारू पीबै पाछू बताह अछि, तँ कियो धनक पाछू। कियो पढ़ैक पाछू बताह रहैए, तँ कियो ऐश-मौजक पाछू। कियो खाइ पाछू बताह तँ कियो ओढ़ै-पहिरै पाछू बताह। कियो काजेक पाछू बताह रहैए, तँ कियो अरामेक पाछू। कियो खेले-कुदक पाछू बताह रहैए, तँ कियो नाचे-तमाशाक पाछू। एते बताहक इलाज केतए हएत। तेतबे नै, एक रंगक बताह दोसरकेँ बताह कहै छै आ दोसर तेसरकेँ। तहिना कियो शरीरक रोगसँ दुखित वा रोगी कहबैए तँ कियो अन्नक अभावसँ, तँ कियो वस्त्रक अभाव वा घरक अभावसँ दुखी

अछि। तहिना कियो कोनो उकड़ू बात सुनलासँ होइत दुखी भऽ जाइए। ऐ दृष्टिए जौं देखल जाए तँ केते लोक निरोग अछि? तेतबे नै जौं एक-एक गोटेमे देखल जाए तँ कए-कएटा रोग धेने छै। मुदा ई सभ उपरी बात भेल। मूल प्रश्न अछि जे वसन्त ऋृतुक गुलाब जकाँ जिनगी सभदिन फुलाइत रहै जे...।''

गुलाबक फूल जकाँ फुलाइत जिनगी सुनि महेन्द्र नम्हर साँस छोड़लनि। आँखि उठा सुबुधक आँखिपर देलनि। सुबुधक नजरिसँ नजरि मिलते जेना महेन्द्रकेँ बूझि पड़लनि जे अथाह समुद्रमे सुबुध हेलि रहल छथि। आ हम छोट-छीन पोखरिमे उग-डुम कऽ रहल छी। ई बात मनमे अबिते महेन्द्र अपन माए-बापसँ लए कऽ अपन भैयारी होइत, धिया-पुता दिस नजरि दौड़ौलनि। जे केते आशासँ पिताजी हमरा दुनू भाँइकेँ पढ़ौलनि मुदा हम हुनकासँ केते दूर हटि कऽ रहै छी। एते दूर हटल रहलापर केना हुनका सेवा कऽ सकबनि। आब हुनका सेवाक जरूरति दिनोदिन बेसीए होइत जेतनि। उमेरो अधिक भेलनि आ दिनानुदिन बढ़िते सेहो जेतनि। जेते उमेर बढ़तनि तेते शरीरक अंग कमजोर हेतनि। जेते अंग कमजोर हेतनि तेते शरीरक क्रियामे रूकाबटि हेतनि। जइसँ केते नव-नव रोग शरीरमे प्रवेश करतनि। जेते रोग शरीरमे प्रवेश करतनि तेते कष्ट हेतनि। की ओइ कष्टक जिम्मेदार हम नै हेबै। तइले करै की छी? किछु नै। अखनि हम सभ दुनू भाँइ आ दुनू पत्नी जवान छी मुदा किछु दिनक उपरान्त तँ हमहूँ सभ हुनके जकाँ बूढ़ होएब। कोनो जरूरी नै अछि जे हमरो सबहक बेटा हमरे सभ लग रहत। अखनि तँ हम देशेमे छी। अंतर एतबे अछि जे देशक एक छोरपर ई सभ छथि आ दोसर छोरपर हम सभ छी। मुदा आइक जे हवा बहि रहल अछि जे आन-आन देशमे जाए लोक नोकरी करैए आ जीवन-यापन करैए। जौं कहीं हमरो संगे सएह हुअए तखनि की हएत? एते बात मनमे अबैत-अबैत महेन्द्रक चेहरा उदास हुअ लगलनि। मन बौआए लगलनि। देहसँ पसीना निकलए लगलनि। बूझि पड़ए लगलनि जे देह शक्ति विहिन भऽ रहल अछि। एक्को पाइ लज्जति देहमे अछिए नै। पसीनासँ तर-बत्तर होइत महेन्द्र सुबुधकेँ कहलखिन-

''सुबुध भाय, जिनगीक अजीब रस्ता अछि। जेते मनुख ऐ

धरतीपर जनम नेने अछि, ओकरा तँ जिनगी बितबए पड़तै। मुदा जिनगीक रस्ता एहेन पेंचगर अछि जे बिड़ले कियो-कियो बूझि पबैए, बाँकी सभ औनाइते रहि जाइए।''

मुस्कीआइत सुबुध महेन्द्रकेँ कहलखिन-

''महेन्द्र भाय, अहाँ तँ डाक्टर छी। पढ़ल-लिखल लोकक बीच सदिखन रहबो करै छी। अहाँ किए एहेन बात कहि रहल छी। हम तँ जाबे मास्टरी केलौं ताबे धिया-पुताकेँ पढ़ेलौं आ जखनि नोकरी छोड़ि गाममे रहै छी तखनि जेहेन समाजमे रहै छी से देखबे करै छी।''

महेन्द्र-

''भाय, अहाँ जे बात कहलौं ओ तँ आँखिक सोझहामे जरूर अछि मुदा अहाँमे मनुख चिन्हैक आ ओकर चलैक रस्ताक लूरि जरूर अछि। अहाँ अपनाकेँ छिपा रहल छी।''

महेन्द्रक बात सुनि रमाकान्तकेँ भेलनि, जे आदमी घरसँ हजारो कोस दूर हटि, कमा कऽ एते बनेलक ओ अपनाकेँ एते कमजोर किए बूझि रहल अछि। मुदा दुनू संगीक बीच नै आबि गुम्मे रहला। बैसले-बैसल एक बेर महेन्द्रकेँ देखथि आ एक बेर सुबुधकेँ।

अपनाकेँ छिपाएब सुनि सुबुध बजला-

''महेन्द्र भाय, जइ प्रश्नक बीच अहाँ ओझरा रहल छी ओ प्रश्न एतेक ओझड़ाउठ नै अछि। मुदा असानो नै अछि। सिरिफ आँखिमे ज्योति आनि देखि-देखि कऽ चलैक अछि।''

दलानक आँगना दिसक भितुरका कोठरीमे बैसि सुजाता खिड़की देने सभकेँ देखबो करैत आ गप्पो-सप सुनैत रहथि। कखनो मनमे खुशीओ अबै छेलनि तँ कखनो मन करुएबो करनि। मुदा किछु बाजथि नै। बाजब उचितो नै बुझै छेलखिन। ओना पढ़ल-लिखल रहने, कखनो कऽ बजैक मन जरूर होइ छेलनि। मुदा किछुए दिनमे सासु मिथिलाक रीति-रेवाज आ बेवहारक सम्बन्धमे तेना कऽ बुझा देलकनि जे मद्रासक सुजाता मिथिलाक सुजाता बनि गेली। मुँहपर नुआ रखब तँ उचित नै

बुझथि मुदा बाजब-भुकबपर नजरि जरूर रखए लगली। किनकासँ कोन ढंगे बाजी, केते अवाजमे बाजी, कोन शब्दक प्रयोग करी, ऐ सभपर नजरि अबस्स रखए लगली। तँए बोली संयमित भऽ गेलनि। ओना ऐठामक चालि-ढालि पूर्ण रूपेण अंगीकार नै कऽ सकल रहथि मुदा अंगीकार करैक पूर्ण चेष्टा करए लगली।

सुबुधक ऊट-पटाँगो बातसँ महेन्द्रकेँ दुख नै होइ छेलनि। हल्लुको बातमे ओ गंभीर रहस्यक अनुमान करए लगला। भलहिं ओ गंभीर नै हल्लुके किएक ने होइ। महेन्द्रक गंभीर मुद्रा देखि सुबुध सोचलनि जे आब ओ गंभीर बात बुझैक चेष्टामे उताहुल भऽ रहल छथि। तँए जिनगीक गंभीर बातकेँ खोलि देब उचित होएत। कहलखिन-

> “महेन्द्र भाय, अपना गाममे सभसँ अगुआएल परिवार अहाँक अछि। चाहे धन-सम्पतिक हुअए वा पढ़ाइ-लिखाइ। मुदा कनी गौर करि कऽ देखियौ जे एते धन-सम्पतिक उपरान्तो धनेक पाछू हजारो कोस घरसँ हटि कऽ रहै छी। अहीं कहू जे केते धन भेलापर मनमे संतोख होएत। मुदा ऐ प्रश्नक दोसरो पक्ष अछि, आ ओ अछि, ‘विश्व-बंधुत्व’क विचार। अपनो ऐठामक महान्-महान् चिन्तक ऐ विचारकेँ सिरिफ मानबे नै केलनि बल्की बनबैक प्रयासो केलनि। ओना सैद्धान्तिक रूपमे विश्व-बंधुत्वक विचार महान् अछि मुदा जेते महान् अछि ओइसँ कनीओं कम बेवहारिक बनबैमे असान नै अछि। लोक गामक वा आन गामक देवस्थानमे दीप जरबैसँ अर्थात् साँझ दइसँ पहिने अपना घरक गोसाँइ आगूमे दीप जरबैए, जे उचिते नै गंभीर विचारक दिग्दर्शन सेहो छी। तहिना सभकेँ अपना लगसँ जिनगीक लीला शुरू करक चाहिऐ। अपनासँ आगू बढ़ि समाज, समाजसँ आगू बढ़ि इलाका, इलाकासँ आगू बढ़ि देश-दुनियाँ दिस बढ़ैक चाहिऐ। जौं से नै कऽ कियो परिवार-समाज छोड़ि आगू बढ़ि करैए, तँ केतौ-ने-केतौ गड़बड़ जरूर हेतै। जहिना दुनियाँमे समस्याग्रस्त मनुख असंख्य अछि तहिना तँ ओइ समस्यासँ मुकबलो करैबला मनुख असंख्य अछि। एक्के आदमीक केलासँ तँ दुनियाँक समस्या नै मेटा सकत। तँए, जे जेतए जनम नेने छी ओ ओतइ इमानदारी आ

मेहनतिसँ कर्ममे लगि जाउ।''

सुबुधक प्रश्नकेँ स्वीकार करैत महेन्द्र कहलखिन-

''हँ, ई दायित्व तँ मनुखमात्रक छी।''

सुबुध-

''जखनि ई दायित्व सभ मनुखक छी तँ अपने गाममे देखियौ! ऐ सालसँ, जखनि सभकेँ खेत भेलै, थोड़-बहुत खुशहाली गाममे आएल। मुदा ऐसँ पहिने तँ देखै छेलिऐ जे ने सभकेँ भरि पेट खेनाइ भेटै छेलै आ ने भरि देह वस्त्र। ने रहैले सुरक्षित घर छेलै, ओना अखनो नै छै, आ ने रोग-बियाधिसँ बचैक कोनो उपए । बाजू, छेलै की नै छेलै?''

''हँ से तँ ठीके।'' धीमी स्वरमे डाक्टर महेन्द्र बजला।

''आब अहीं कहू जे हमर-अहाँक जनम तँ अही समाजमे भेल अछि। की हम ओते कमजोर छी जे गाम छोड़ि पड़ा जाएब, पड़ाइक मतलब, जेतए पेट भरत। जौं कियो पड़ाइए तँ ओकरा कायर-कामचोर छोड़ि की कहबै? मुदा तैयो लोक जाइ किए अछि? एकरो कारण छै। एकर कारण छै अधिक पाइ कमाएब वा कम मेहनतिसँ जिनगी जीब। मुदा कम मेहनति आ असानीसँ जिनगी जीनाइ ताधरि संभव नै अछि, जाधरि मेहनतिसँ देशकेँ समृद्धिशाली नै बना लेब। अगर जौं किछु गोटेकेँ समृद्धशाली भेने देशकेँ समृद्धशाली बूझब तँ ओ बुझनाइ नेने-नेने गुलामीक जीनजीरमे बान्हि देत। कोनो देश गुलाम नै होइए, गुलाम होइए ओइ देशक मनुख आ गुलामी होइ छै ओकर जिनगीक क्रिया। पाइबला सबहक जादू समाजमे ओइ रूपे चलि रहल अछि जहिना हम-अहाँ पोखरिमे कनीक बोर दऽ बनसी पाथि दइ छिऐ आ नम्हर-नम्हर माछ भोजनक लोभे फँसि जाइए तहिना मनुक्खोक बीच चलि रहल अछि। ओइकेँ नजरि गड़ाकेँ देखए पड़त।''

सुबुधक विचारकेँ महेन्द्र मुड़ी डोला मानि लेलनि। मुदा मुड़ी

डोलौलाक उपरान्तो मनमे किछु शंका रहबे कएल छेलनि। जे सुबुध मुँहक हाव-भावसँ बूझि गेलखिन। पुनः अपन विचारकेँ आगू बढ़बैत कहए लगलखिन-

"अपना ऐठामक दशा देखियौ। जेकरा अपना सभ क्रीम ब्रेन कहै छिऐ, ओ छी वैज्ञानिक, इंजीनियर, डाक्टर इत्यादि। ओ सभ आन-आन देश जाए अपन बुधिकेँ पाइबलाक हाथे बेचि लइ छथि। भलहिं किछु अधिक पाइ कमा लैत हेता मुदा ओ ओइ धनिककेँ आरो धन बढ़बै छथि। नव-नव मशीन, नव-नव हथियारक अनुसंधान करि कऽ पछुएलहा देशपर आक्रमण कऽ वा बेपारिक माल बेचि आरो पछुअबैए। एकटा सबाल आरो मनमे अबैत होएत। ओ ई जे अपना देशमे ओतेक साधन नै अछि जे ओ अपन बुधिक सदुपयोग कऽ सकता। तँए अपन बुधिक सदुपयोग करैले आन देश जाइ छथि। मुदा हमरा बुझने ऐ तर्कमे कोनो दम्म नै छै। आइ धरिक जे दुनियाँक इतिहास रहल ओ यएह रहल जे सम्पन्न देश सदिखन कमजोर माने पछुआएल देशकेँ लूटैत रहलै। चाहे लड़ाइक माध्यमसँ होइ वा बेपारक माध्यमसँ। जइसँ जेहो सम्पति-साधन ओइ देशकेँ रहैत, ओहो लूटा जाइए। जखनि ओ लूटा जाएत तखनि आगू मुहेँ केना ससरत?"

माथ कुड़ियबैत महेन्द्र सुबुधकेँ पुछलखिन-

"तखनि की करक चाही?"

सुबुध-

"आँखि उठा कऽ देखियौ जे दुनियाँमे कियो बिना अ-आ पढ़ने विद्वान् बनि सकल अछि वा बनि सकैए? जौं से नै बनि सकैए तँ पछुआएल देश वा लोक, बिना कठिन मेहनति केने आगू बढ़ि सकैए? नै। तँए पछुआएल देश वा लोककेँ ऐ बातकेँ बुझए पड़तनि। जौं से नै बूझि अगुएलहाक अनुकरण करता, तँ पुनः गुलामीक बाटपर चलि औता। केते लाजिमी बात छी जे हम अपने बनौल हथियारसँ अपने घाइल होइ। आब दोसर दिस

चलू!''

डाक्टर महेन्द्रक चेहरा दिस देखैत पुन: सुबुध बाजए लगला-

''अपना ऐठाम जे पारिवारिक ढाँचा, अदौसँ रहल, ओ दुनियाँमे सभसँ नीक रहल अछि। आइक चिन्तनमे दुनियाँ परिवारवाद दिस बढ़ल अछि। जे हमरा सबहक संयुक्त परिवारक धरोहर रूपमे अछि। मनुखक जिनगी केतेटा होइ छै, ऐपर नजरि दियौ। तीन अवस्था तँ सबहक होइ छै। बच्चा, जुआनी आ बुढ़ाड़ीक। ऐमे दू अवस्था बच्चा आ बुढ़ाड़ीमे सभकेँ दोसराक मदतिक जरूरति पड़ै छै। जे एकाकी परिवारमे नै भऽ पाबि रहल छै। आइक जे एकाकी परिवार बनि गेल अछि, ओ कुम्हारक घराड़ी जकाँ भऽ गेल अछि। जहिना कुम्हारक घराड़ी बेसी दिन धरि असथिर नै रहैत तहिना भऽ रहल अछि। बाप-माए केतौ, बेटा-पुतोहु केतौ आ धिया-पुता केतौ रहए लगल अछि। मानवीय सिनेह नष्ट भऽ रहल अछि। सभ जनै छी जे काँच वर्तन जकाँ मनुख होइए। कखनि की ऐ शरीरमे भऽ जाएत, तेकर कोनो गारंटी नै छै। स्वस्थ अवस्थामे तँ मनुख केतौ रहि जीब सकैए मुदा अस्वस्थक अवस्थामे तँ से नै भऽ सकै छै। तखनि केहेन कष्टकर जिनगी मनुखक सामने उपस्थित भऽ जाइ छै। तोहूपर तँ नजरि दिअए पड़त।''

सुबुधक विचार महेन्द्रकेँ झकझोड़ि देलकनि। देहमे कम्पन आबि गेलनि। बोली थरथराए लगलनि। कनीकाल असथिर भऽ मनकेँ थिर केलनि। मन थिर होइते सुबुधकेँ कहलखिन-

''सुबुध भाय, भलहिं हाइ स्कूल धरि संगे-संग पढ़लौं मुदा जिनगीकेँ जइ गहराइसँ अहाँ चिन्हलौं, हम नै चीन्हि सकलौं। सच पुछी तँ आइ धरि अहाँकेँ साधारण हाइ स्कूलक शिक्षक बुझै छेलौं मुदा ओ भ्रम हमर छल। संगी रहितो अहाँ गुरु छी। कखनो काल, जखनि एकांत होइ छी, अपनो सोचै छी जे एते कमाइ छी मुदा दिन-राति खटैत-खटैत चैन नै भऽ पबै छी। कोन सुखक पाछू बेहाल छी से बुझिए ने रहल छी। टी.भी.

घरमे अछि मुदा देखैक समए नै भेटैए। खाइले बैसै छी तँ चिड़ै जकाँ दू-चारि कौर खाइत-खाइत मन उड़ि जाइए, जे फल्लाँकँ समए देने छिऐ, नै जाएब तँ आमदनी कमि जाएत। तहिना सुतैयोमे होइए। मुदा एते फ्रीसानीक लाभ की भेटैए। सिरिफ पाइ। की पाइए जिनगी छिऐ?''

महेन्द्रक बदलल विचार सुनि, मुस्की दैत सुबुध कहलखिन-

''भाय, पाइ जिनगी चलैक साधन छी, नै कि जिनगी। पाइक भीतर एते पैघ दुर्विचार छिपल अछि जे मनुखकँ कुकर्मी बना दइए। कुकर्मी बनलापर मनुषत्व समाप्त भऽ जाइ छै। जइसँ चीन-पहचीन समाप्त भऽ जाइ छै। आपराधिक वृत्ति पनपए लगै छै। आपराधिक वृत्ति, मनुखमे एलापर पैघ-सँ-पैघ अपराधमे मनुखकँ धकेलि दइ छै। तँए अपन जिनगीकँ देखैत परिवार, समाजक जिनगी देखब जिनगी छी। ओना मनुखमात्रक सेवा लेल सेहो सदिखन तत्पर रहक चाही। जहाँ धरि भऽ सकए, करबो करी। मुदा कर्मक दुनियाँ बड़ कठिन अछि। एते कठिन अछि जे कर्मठ-सँ-कर्मठ लोक रस्तेमे थाकि जाइ छथि। मुदा ओ थाकब हारब नै जीतब छी। जे समाज रूपी गाछ मौला गेल अछि ओइ जड़िमे तामि-कोड़ि-पटा कऽ नव जिनगी देबाक अछि। जइसँ ओइमे फूल लगत आ अनवरत फुलाइत रहत। ऐ काजमे अपनाकँ समरपित कऽ देबाक अछि।''

सुबुधक संकल्पित विचारसँ महेन्द्रक विचार सेहो सक्कत बनए लगलनि। आँखिमे प्रखर ज्योति आबए लगलनि। दृढ़ स्वरमे पितो आ सुबुधोकँ कहलखिन-

''दुनू गोटेक बीच बजै छी जे सालमे एक्को दिन ओहेन नै बँचत जइ दिन हमरा चारू -दुनू भाँइ आ दुनू स्त्रीगण- गोटेमे सँ कियो-ने-कियो ऐठाम नै रहब। ओना मद्रासोमे अज-गज बहुत भऽ गेल अछि, ओकरो छोड़ब नीक नै होएत मुदा परिवारो आ समाजोकँ नै छोड़ब। मद्रासक कमाइ परिवारो आ समाजोमे लगाएब। अखनि तँ ओते अनुभव नै अछि मुदा चाहब जे

समाजमे बिमारी लेल जे खरच हएत ओ पूरा करब। जहिना पिताजी समाजक खाइक ओरियान कऽ देलखिन तहिना स्वस्थ्य लेल ओरियान जरूर कऽ देब। समाजकेँ कहि दियनु जे जेकरा केकरो कोनो रोग बिमारी होइ ओ आँखि मूनि कऽ ऐठाम चलि आबथि। ओकर इलाज जरूर हेतै। ऐ बेर बिना निआरे गाम आएल छेलौं तँए किछु लए कऽ नै एलौं। मुदा कहै छी जे जहाँ धरि रोग जँचैक औजारक जोगार भऽ सकत ओ मद्रास जाइते पठा देब। तत्काल अखनि भाबो -सुजाता- रहती। बौएलाल आ सुमित्रा रहबे करत। आब जे आएब ओ बेसी दिन लेल आएब। आ ऐठाम आबि अधिक-सँ-अधिक गोटेकेँ चिकित्साक ज्ञान करा गामसँ रोगकेँ भगा देब। समाज हम्मर छी, हम समाजक छिऐ।''

OOO

(२००४ ई.)

Blank page

जगदीश प्रसाद मण्डल शिल्पी छथि, कथ्यकेँ तेना समेटि लइ छथि जे पाठक विस्मित रहि जाइत अछि। मुदा हिनका द्वारा कथ्यकेँ (कथा, उपन्यास, नाटक, प्रेरक-कथा सभमे) उद्देश्यपूर्ण बनेबाक आग्रह आ क्षमता हिनका मैथिली साहित्यमे ओइ स्थानपर स्थापित करैत अछि, जेतएसँ मैथिली साहित्यक इतिहास ''जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पर्ब'' आ ''जगदीश प्रसाद मण्डलसँ'' ऐ दू खण्डमे पाठित होएत।

समाजक सभ वर्ग हिनकर कथ्यमे भेटैत अछि आ से आलंकारिक रूपमे नै वरन् अनायास, जे मैथिली साहित्य लेल एकटा हिलकोर एबाक समान अछि। हिनकर कथ्यमे केतौ अभाव-भाषण नै भेटत, सभ वर्गक लोकक जीवन शैलीक प्रति जे आदर आ गौरव ओ अपन कथ्यमे रखै छथि से अद्भुत। हिनकर कथ्यमे नोकरी आ पलायनक विरूद्ध पारम्परिक अजीविकाक गौरव महिमा मंडित भेटैत अछि। आ से प्रभावकारी होइत अछि हिनकर कथ्य आ कर्मक प्रति समान दृष्टिकोणक कारणसँ आ से अछि हिनकर बेक्तिगत आ समाजिक जीवनक श्रेष्ठताक कारणसँ। जे सोचै छी, जे करै छी; सएह लिखै छी तइ कारणसँ। यात्री आ धूमकेतु सन उपन्यासकार आ कुमार पवन आ धूमकेतु सन कथा-शिल्पीक अछैत मैथिली भाषा जनसामान्यसँ दूर रहल। मैथिली भाषाक आरोह-अवरोह मिथिलाक बाहरक लोककेँ सेहो आकर्षित करैत रहल आ ओइ भाषाक आरोह-अवरोहमे समाज-संस्कृति-भाषासँ देखौल जगदीश जीक सरोकारी साहित्य मिथिलाक सामाजिक क्षेत्रटामे नै वरन् आर्थिक क्षेत्रमे सेहो कान्ति आनत। विदेहमे हिनकर आठटा उपन्यास, पाँचटा नाटक, पाँचटा एकांकी, दस दर्जनसँ बेसी कथा, नेना-भुटका-किशोर लेल सएसँ ऊपर प्रेरक कथा एवं तीस दर्जनसँ ऊपर पद्य ई-प्रकाशित भऽ विश्व भरिमे पसरल मैथिली भाषीकेँ दलमलित करैत मैथिली साहित्यक एकटा रिक्त स्थानक पूर्ति कऽ देने अछि।

गजेन्द्र ठाकुर
सम्पादक- विदेह
www.videha.co.in